

1. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853

১৪৮১/১৯৩৩



১৪৮১/১৯৩৩

কলিকতা--২ নং গোয়াবাগান  
 স্ট্রীট, ভিক্টোরিয়া প্রেস ডিপজিটরি হইতে  
 ত্রিনিদাদ বন্দোপাধ্যায় কর্তৃক  
 প্রকাশিত। ২নং গোয়াবাগান স্ট্রীট,  
 ভিক্টোরিয়া প্রেসে ত্রিবাধাআম দাস  
 দ্বারা মুদ্রিত। ষষ্ঠ সংস্করণ। ১লা  
 বৈশাখ, ১৩২২ সাল।

মূল্য ১৮/- মাত্র।



এই সংস্করণে মূল, তাহার সম্পূর্ণ  
 নীতি, পূজাবিধি, পাঠের নিয়ম প্রভৃতি  
 এক সঙ্গেই মুদ্রিত হইল। পূর্বের ছাপ  
 পৃথক দুইখানি পুস্তক কবা হইল না।  
 তবে বঙ্গভাবাদি (পত্র) অনেক জীলোকে  
 'ও' বাক্যকেও পাঠ কবিয়া থাকেন বলিয়া  
 কেবল তাহাই চিত্র সহ পৃথক মুদ্রিত  
 করা হইয়াছে। মূল্য ১০ আনা।

## বিজ্ঞাপন।

চণ্ডীর অনেকপ্রকার টিকা থাকিলেও গোপাল চক্রবর্তীর টিকাই সর্বোৎকৃষ্ট, এবং তজ্জন্তু অধিক আদর্শীয় ও দর্শন প্রচলিত। যাহারা সচিক চণ্ডী ছাপাইয়াছেন, তাহারা সকলেই গোপাল চক্রবর্তীর টিকাই দিয়াছেন। আমিও দিলাম। পূর্বে সংক্ষেপে দিয়াছিলাম, এবাব সম্পূর্ণই দিলাম। তবে তিনি যেখানে একই বিষয়ের বহুসংখ্যক প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়াছেন, সেখানে ছাত্র ও অধ্যাপকগণের অধ্যয়ন ও অধ্যাপনায় বিরতিবোধ হয় বলিয়া কতকগুলি রাখিয়া কতকগুলি ভাগ করিয়াছি, এবং অনাবশ্যক বোধে মঙ্গলাচরণ ও উপক্রমণিকাব কিয়দংশ ছাড়িয়া দিয়াছি। গোপাল চক্রবর্তী টিকার সহিত মূলত চণ্ডী অনেক থাকিতেও আমার ইহাতে হস্তক্ষেপ করিবার কারণ এই যে, অনেকই মঙ্গলপাঠিত সমস্ত পুস্তকের প্রতিই অধিক পক্ষপাতিস্ব প্রকাশ করেন বলিয়া কতিপয় অধ্যাপক মহাশয় মঙ্গলাচরণিত “চণ্ডী”, “আফিককৃত্য” এবং “সত্যনামায়ণ ও শুভচরিত্র কথা” পোষোহিতাপন্নীয়াব পাঠ্যরূপে নির্বাচিত করিতে ক্রতসঙ্কল্প হইয়া চণ্ডীর সম্পূর্ণ প্রচারিত “চণ্ডী”, “আফিককৃত্য” এবং “সত্যনামায়ণ ও শুভচরিত্র কথা” পোষোহিতাপন্নীয়াব পাঠ্যরূপে নির্বাচিত করিতে ক্রতসঙ্কল্প হইয়া চণ্ডীর সম্পূর্ণ



সীকা ছাপাইবার জন্য আমাদের অত্যন্ত অনুরোধ করেন। তাহারা বলেন যে, চণ্ডীর যে সমস্ত দৃষ্টান্তিখিত ও মুদ্রিত টীকা প্রচলিত আছে, তৎসমুদয়ই মন-  
প্রমাদে পরিপূর্ণ, তজ্জন্য অনেক স্থলেই অর্থগ্রহ করিতে পারা যায় না। আমিও দেখিলাম, বাস্তবিক তাহাই বটে। আরও একটি মহৎ আশ্চর্য দেখিলাম যে,  
অঙ্গদেশেও প্রত্যেক পুস্তকে অবিকল একরূপ পাঠই রহিয়াছে। ইহাতে স্পষ্টই বোধ হয় যে, সকলেই পরস্পরের অনুরণন করিয়া “বথা দৃষ্টং, এথা মুদ্রিতং”  
করিয়াছেন; ভ্রম সংশোধনের জন্য কেহই প্রয়াস পান নাই। নিতান্ত আক্ষেপের বিষয় এই যে, কতিপয় লক্ষপ্রতিষ্ঠ অধ্যাপকের সংশোধিত ও মুদ্রিত টীকাও  
অবিকল ঐ একইরূপ ভ্রমাত্মক পাঠে পূর্ণ। তাহাদের আলস্য ও উদাসীন্যই যে ইহার কারণ, তাহাষ্যে সন্দেহ নাই। দৃষ্টান্তস্বরূপ সমস্ত ভ্রম দেখাইয়া দেও  
একখানি বৃহৎ পুস্তক হইয়া পড়ে। অতএব স্বধীর্ণগণের সমালোচনাথে (ক) চিহ্ন দিয়া কয়েকটিমাত্র প্রচলিত পাঠ, এবং তাহাদের পার্থক্য (খ) চিহ্ন দিয়া  
আমার সংশোধিত পাঠও উদ্ধৃত করিয়া দেখাইতেছি।—

২ অঃ ৫৬ শ্লোঃ (ক) চুরাদিত্বাং লিঙ্। (খ) চুরাদিত্বাং গিঙ্ (সংক্ষিপ্তসারে নিচ্ বা ক্রিকে গিঙ্ বলে)।

৩ “ ৮ ” (ক) হে নৃপনন্দন স্বরথ। যদ্বা নৃপনন্দনতীতি নৃপনন্দনঃ বিশেষণপীতি ব্যবস্থয়া পাচাদিত্বাং ডঃ গট্, বা হে নৃপনন্দ পকাল ক্রিয়ানিপ্পত্তৌ

সমর্থো নাভুং ফল নিষ্পত্তৌ । (খ) :- যদ্বা নৃপান্ নন্দয়তীতি নৃপনন্দঃ ( বিশেষণোপপত্তিঃ \* ব্যবস্থয়া পচাদিত্বাং ঙঃ, গট্, বা ক ) হে নৃপনন্দ, ন পক্ষাণ ক্রিয়া-  
নিষ্পত্তৌ সমর্থো নাভুং ; ফল নিষ্পত্তৌ ।

৪ অঃ ৭ শ্লোঃ (ক) যো হি বিকারী ভবতি, স বচনবিষয়ো ভবতি ভবতু তথাত্মাভাবান্ন বিকারপ্রসঙ্গঃ । তং কৃতঃ পরমা পরমীশ্বরং মাতি জ্ঞারভাসেন বদ্বাতি  
পরমা । (খ) যো হি বিকারী ভবতি, স বচনবিষয়ো ভবতি ; তব তু তথাত্মাভাবাং ন বিকারপ্রসঙ্গঃ । তং কৃতঃ ? পরমা, পরম্ ঈশ্বরং মাতি ভাবভাবেন  
বদ্বাতি পরমা ।

৪ " ১২ " (ক) তদুক্তং গীতাস্থ দেবান্ ভাবয়তানেন তদেব ভাবয়ন্ত ব ইতি । (খ) ... "দেবান্ ভাবয়ন্ত বঃ" ইতি ।

৪ " ১২ " (ক) যদ্বা আপ্তা অভ্যুত্ তরঙ্গা ইব কট্ ক্রোধো যস্য । (খ) যদ্বা আপ্তা অভ্যুত্ তরঙ্গা ইব কট্ ক্রোধো যস্য ।

৪ " ১৪ " (ক) এতং মহিষং অস্ম মহিষাস্তুরস্ম সুবিপুলং বলঞ্চ অশুং নীতং ক্লীবাক্লীবয়োঃ ক্লাবঃ স চৈকবদেতি ক্লীবৈককত্বে । (খ) এতং মহিষং অস্ম মহিষা-  
স্তুরস্ম...বলঞ্চ । (এষ চ এতচ্চ এতৎ) ।

\* বিশেষণোপপত্তিঃ : বাধতে ন কচিং কৃতি ।

† কল্পণো গৃহি ।

## চণ্ডীপাঠের উদ্দেশ্য ।

ধর্ম, অর্থ, কাম, মোক্ষ—এই চতুর্কর্গই পুরুষার্থ অর্থাৎ মানবজীবনের প্রধান লক্ষ্য । সেই পুরুষার্থ সাধনের জন্য উপযুক্ত শক্তির প্রয়োজন । যদিও শক্তি সকল পদার্থেই আছে—শক্তি ভিন্ন কিছুই থাকিতে পারে না, তথাপি উপাসনা ব্যতিরেকে সেই শক্তির উদ্দীপনা ও আধিক্য হয় না । এই জন্যই সর্ববর্ণের সর্বোগ্র শক্তির আরাধনা করা আবশ্যক । চণ্ডীপাঠই শক্তি-আরাধনার সর্বপ্রধান উপায় । চণ্ডীতে ও অন্যান্য শাস্ত্রে উক্ত হইয়াছে যে, যিনি ঐশী শক্তি—মহামায়া, তিনি বিজ্ঞা ও অবিজ্ঞারূপিণী, এবং তিনি ঈশ্বরেরই মূর্ত্যন্তর । তিনি অবিজ্ঞারূপে জগৎকে মোহাচ্ছন্ন করিয়া রাখেন, এবং বিজ্ঞারূপে মুক্তি প্রদান করিয়া থাকেন ; তিনি দৈত্যদিগকে বধ করিয়া দেবতাদিগের অভ্যাদয় বিধান করিয়াছিলেন ; সুরথ রাজা তাঁহার আরাধনা করিয়া নষ্ট রাজ্য পুনঃপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন, এবং সমাধি বৈজ্ঞা তাঁহার আরাধনার ফলে মুক্তি লাভ করিয়াছিলেন । ইহার তাৎপর্য এই যে, মানবমাত্রেই এরূপ শক্তির আরাধনা করা আবশ্যক, যজ্ঞার। রজঃ ও তমোগুণ নষ্ট

করিয়া আত্মনিক ভাব পরিত্যাগপূৰ্ণক শুদ্ধমস্তৃপ্তপে অবস্থিত হইয়া দেবভাব অবলম্বন করিতে পারা যায়। এইরূপ বিজ্ঞান গতিতে শক্তিমান হইয়া, যিনি স্বপক্ষেণ জায় কক্ষী বা গংসারী, তিনি কক্ষক্ষেত্র সংসারে প্রবেশ করিবেন, এবং যিনি সমাধির জায় জ্ঞানী বা মুমুক্শু, তিনি মোক্ষদ্বারগে আগমন হইবেন। তাহা হইলেই অবলম্বিত কার্য্য সিদ্ধিলাভ ঘটিবে; অন্যথা ত্রিগুণমিশ্রিত শক্তিতে পদে পদে বিপদে পতিত হইতে হইবে।

## দেবীচরিত-তত্ত্ব।

চণ্ডীতে দেবীর তিনটি চরিত আছে,—প্রথম মধুকৈটভবধ, দ্বিতীয় মহিষাসুরবধ, তৃতীয় শুভনিগুণবধ। এই তিনটি চরিত—মৃষ্টি স্থিতি-প্রদায়ের কবিতা-ভূত তিন মহাব্যাহিতিকপে পরিগণিত। ১ম ‘ভূ’ এই মহাব্যাহিতির গায়ত্রী ছন্দঃ, অগ্নি দেবতা.—২য় ‘ভুবঃ’ এই মহাব্যাহিতির উষিক্ ছন্দঃ, বায়ু দেবতা—এবং ৩য় ‘স্বঃ’ এই মহাব্যাহিতির অহুষ্ঠপ্ ছন্দঃ, সূর্য্য দেবতা—যেৰূপ উক্ত আছে, সেইরূপ দেবীরও প্রথম চরিতের গায়ত্রী ছন্দঃ, মহাকালী দেবতা, জ্যৈষ্ঠ তম্ব (যজ্ঞপ),—দ্বিতীয় চরিতের উষিক্ ছন্দঃ, মহালক্ষ্মী দেবতা, বায়ু তম্ব,—এবং তৃতীয় চরিতের অহুষ্ঠপ্ ছন্দঃ, সরস্বতী দেবতা, সূর্য্য তম্ব উক্ত হইয়াছে।

প্রথমে—ব্রহ্মার আরাধনায় যোগনিদ্রারূপিণী তামসী মহাকালী আবির্ভূত হইয়া মধু-কৈটভ-নামক অম্বরদ্বয়কে বিনাশ করিয়াছিলেন। তাহাদের মেদ দ্বারা পরিপ্লুত হইয়া, প্রলয়সমুদ্রমগ্না মেদিনী উদ্ধৃত হইয়াছিল। এই জগ্ৰহ প্রথম চরিতের সৃষ্টিকর্তা ব্রহ্মা ঋষি, মহাকালী দেবতা, ও জগদীজ অগ্নি তত্ত্ব।

দ্বিতীয়ে—প্রথমতঃ কুপিত বিষ্ণুর মুখ হইতে তেজ নিগত হয়। তৎপরে অগ্নাত্ম দেবতাদিগেরও শরীর হইতে তেজ নিগত হইয়াছিল। সেই তেজঃসমষ্টি হইতে ভগবতী আবির্ভূত হইয়া মহিষাসুরকে বধ করিয়া জগৎ রক্ষা করিয়াছিলেন। এই জগ্ৰহ দ্বিতীয় চরিতের পালনকর্তা বিষ্ণু ঋষি, জগৎপোষণকারিণী সত্ত্বময়ী মহালক্ষ্মী দেবতা, জগৎপ্রাণ বায়ু তত্ত্ব।

তৃতীয়ে—দেবী কৌষিকী মূর্তিতে আবির্ভূতা হন। তাহার শরীর হইতে শুভ্রবর্ণা দেবী (শিবদূতী) নিগত হইয়া শিবকে দূত করিয়া শুভ ও নিশুভের নিকট প্রেরণ করেন। এই জগ্ৰহ তৃতীয় চরিতের সংহারকর্তা রুদ্র ঋষি, শুক্লবর্ণা নরস্বতী দেবতা, জগৎসংহারক দ্বাদশাত্মা সূর্য্য তত্ত্ব।—অবিজ্ঞায় অর্থাৎ অজ্ঞানেনই সংসার ( অর্থাৎ সৃষ্টি ) ; এবং বিজ্ঞায় ( অর্থাৎ জ্ঞানে ) সংসারনাশ ( অর্থাৎ মহাপ্রলয় )। সেই জগ্ৰহ তমো-রূপিণী মহাকালী প্রথম চরিতের দেবতা, এবং জ্ঞান-রূপিণী নরস্বতী তৃতীয় চরিতের দেবতা।

## উপক্রমণিকা।

ব্যাসপিশ্য জৈমিনি সমগ্র মহাভারত পাঠ করিয়া কয়েকটি বিষয়ে সন্দেহান হইয়াছিলেন। সেই সকল সন্দেহ ভঙ্গমার্গ, বেদব্যাসের অবকাশ না। গাণ্ডারি, মহর্ষি মার্কণ্ডেয়ের নিকট গমন করিয়া নিজ অভিপ্রায় ব্যক্ত করিলেন। মার্কণ্ডেয় কহিলেন—আমার এখন অবসর নাই; বিশেষতঃ ক্রিয়াকাল উপস্থিত, অতএব তুমি বিদ্যাচলে গমন কর। সেথায় চারিটি মূনিপুত্র পিতৃশাপে পক্ষিযোনি প্রাপ্ত হইয়া বাস করিতেছে। তপস্যা ও বেদাধ্যয়নের প্রভাবে তাহাদের পূর্ণস্মৃতি বিলুপ্ত হয় নাই, এবং তাহারা মনুষ্যের গায় বা ক্যা উদ্ধারণ করিতেও সমর্থ। তাহাদিগকে জিজ্ঞাসা করিলে, তোমার সকল সন্দেহ অপনীত হইবে।

ইহা শুনিয়া জৈমিনি বিদ্যাচলে গিয়া ই চারিটি পক্ষীর নিকট আপন প্রশ্ন সকল উপাশন করিলেন। তাহারাও সেই সকল প্রশ্নের যথাবধি উত্তর প্রদান করিয়া, প্রসঙ্গক্রমে যে সৃষ্টি-প্রকরণ বলিয়াছিলেন, তাহার স্থূল মর্ম এই,—

৪২,২০০০ বৎসরে সত্য জ্যেষ্ঠা দ্বাপর কলি—এই চারি যুগ হয়। এই চারি যুগে দেবতাদিগের এক যুগ। এক্ষণ এক হাজার দৈব যুগই এক এক চুড়ির পরিমাণ-কাল; অর্থাৎ প্রতিচুড়িতে এক হাজার বার সত্য জ্যেষ্ঠা দ্বাপর কলি—এই চারি যুগ হইয়া থাকে।

প্রত্যেক সৃষ্টিতে ১৪ জন করিয়া মনু অর্থাৎ সৃষ্টির অধিপতি হন; সুতরাং এক এক মনুর অধিকার-কালকে মন্বন্তর কহে। তন্মধ্যে ১ম মনু স্বায়ম্ভুব, ২য় মনু স্বারোচিষ, ৩য় উত্তম ( উত্তমজ বা উত্তমি ), ৪র্থ তামস, ৫ম রৈবত, ৬ষ্ঠ চাক্ষুয, ৭ম বৈবস্বত, ৮ম সাবর্ণি, ৯ম দক্ষসাবর্ণি, ১০ম ব্রহ্মসাবর্ণি, ১১শ ধর্মসাবর্ণি, ১২শ রুদ্রসাবর্ণি, ১৩শ রৌচ্য, এবং ১৪শ ভৌতা।

সম্প্রতি সপ্তম মন্বন্তরের অষ্টাবিংশ যুগ অর্থাৎ সপ্তম মনু বৈবস্বতের অষ্টাবিংশ যুগের কলিযুগ চলিতেছে। এই কলির অবসানে তাঁহার অষ্টাবিংশ যুগ শেষ হইবে। এইরূপে আরও ৪৩ দৈব যুগ গত হইলে, অর্থাৎ ৪৩ বার সত্য ত্রেতা দ্বাপর কলি হইয়া গেলে, তাঁহার অধিকার ফুরাইবে। তার পর অষ্টম মনু সাবর্ণির অধিকার আরম্ভ হইবে।

সেই সাবর্ণি পূর্বজন্মে সুরথ নামে রাজা ছিলেন। পরে ভগবতীর আরাধনা করিয়া, তাঁহার প্রসাদে, সুর্য্যের গুরসে সর্বাঙ্গী তদীর পত্নীর গর্ভে জন্মিয়াছেন, এবং বৈবস্বত-মন্বন্তর গত হইলে তিনিই অষ্টম মনু হইবেন—এই বর পাইয়াছেন। ( সুর্য্যের তিন পত্নী - সংজ্ঞা, ছায়া ও সর্বাঙ্গী। কেহ কেহ বলেন, সংজ্ঞার সমান বর্ণ বলিয়া ছায়ায়ই আর একটা নাম সর্বাঙ্গী। সর্বাঙ্গীর গর্ভে উৎপন্ন বলিয়া তাঁহার নাম সাবর্ণি হইয়াছে )।

দ্বিতীয় মন্তব্যস্বরূপে জ্যোতিষের নাম চৈত্র। সেই চৈত্রের বংশে সুরথ রাজ। জ্যোতিষ করিয়াছিলেন। তাঁহার প্রসিদ্ধ পুত্রপে দেবীর রূপ। হুইয়াছিল, সেই সকল বিষয় এই পুস্তকে সর্বস্তর বর্ণিত আছে। এই পুস্তকে চণ্ডী দেবীর মাহাত্ম্য বর্ণিত হইয়াছে বলিয়া ইহার নাম দেবীমাহাত্ম্য। দেবী চণ্ডীর সহিত অতিশ্রদ্ধা করিয়া এই পুস্তকেও চণ্ডী বলা হয়। ইহাতে ৭০০ শ্লোক আছে বলিয়া \* ইহার একটি নাম সপ্তশতী। ইহাতে ১৩টি অধ্যায় আছে। এক এক অধ্যায়কে এক এক মাহাত্ম্য কহে, এবং সম্পূর্ণ গ্রন্থ পাঠ করাকে ‘রূপ’ বা ‘আবৃত্তি’ কহিয়া থাকে।

দেবীমাহাত্ম্য-কথা প্রথমে (১) মেধা মূনি (২) সুরথ ও সমাধিকে বলেন, তৎপরে সেই কথা (৩) মার্কণ্ডেয় মূনি (৪) ভাউরিকে বলিয়াছিলেন। তাঁর পর সেই কথাই আবার (৫) পক্ষীর (৬) জৈমিনিকে কহিয়াছিলেন। এইরূপে এই দেবীমাহাত্ম্য যট সংবাদ হইয়াছে।

\* প্রথম অধ্যায়ে ১০৩, দ্বিতীয়ে ৭০, তৃতীয়ে ৪৪, চতুর্থে ৪২, পঞ্চমে ১২২, ষষ্ঠে ২৪, সপ্তমে ২৭, অষ্টমে ৩৩, নবমে ৪১, দশমে ৩২, একাদশে ৫৫, দ্বাদশে ৪১, ত্রয়োদশে ২৯। ইহার সকল শ্লোক ছন্দঃশাস্ত্রের নিয়মানুসারে চারিপাদ বিশিষ্ট নহে। কোনওটি দ্বিপাদ, কোনওটি বা পাদাংশমাত্র, কোনওটি বা পদাংশ ক্ষুদ্র বা কামাত্র।



## সংক্ষিপ্ত বিবরণ।

মার্কণ্ডেয় পুরাণের ৮১-তম ইহঁতে ৯০-তম অধ্যায় পর্য্যন্ত দেবীমাহাত্ম্য, স্তবরাং দেবীমাহাত্ম্যে ১৩টি অধ্যায় আছে। ১ম অধ্যায়ে—স্বরথ রাজার রাজ্যচ্যুতি, বনগমন, মেধা মুনির আশ্রমে অবস্থান, সমাধি বৈষ্ণোর সহিত সাক্ষাৎকার, মেধা মুনির নিকটে মোহোৎপত্তি বিষয়ে প্রশ্ন কথন, মেধা মুনি কর্তৃক তদুত্তর কথন, যধু-কৈটভের উৎপত্তি, ব্রহ্মকৃত দেবীস্তুতি, বিষ্ণুর সহিত যধু-কৈটভের যুদ্ধ, যধু-কৈটভ-বধ। ২য় অধ্যায়ে—মহিষাসুরের উপদ্রব, দেবগণের ভেজে ভগবতীর আবির্ভাব, দেবগণ কর্তৃক দেবীকে স্বহস্ত অস্ত্র প্রদান, দেবীর সহিত মহিষাসুর-সৈন্যগণের যুদ্ধ, মহিষাসুর-সৈন্য-বধ। ৩য় অধ্যায়ে—মহিষাসুরের সেনাপতিগণের যুদ্ধ ও বধ, মহিষাসুরের যুদ্ধ, মহিষাসুর-বধ। ৪র্থ অধ্যায়ে—ব্রহ্মর্ষি ও দেবগণ কর্তৃক দেবীর স্তুতি। ৫ম অধ্যায়ে—শুভ ও নিশুভের উপদ্রব, দেবগণ কর্তৃক দেবীর স্তুতি, কোম্বিকীর আবির্ভাব, শুভের নিকটে চণ্ড ও মুণ্ড কর্তৃক সেই সংবাদ দান, দেবীর নিকট স্থগ্ৰীব দূতের গমন ও কথোপকথন। ৬ষ্ঠ অধ্যায়ে—ধুম্রলোচনের যুদ্ধ ও বধ। ৭ম অধ্যায়ে—চণ্ড-মুণ্ডের যুদ্ধ, চামুণ্ডার আবির্ভাব, চণ্ড-মুণ্ড-বধ। ৮ম অধ্যায়ে—রক্তবীজের যুদ্ধ, ব্রহ্মাণী প্রভৃতি মাতৃগণের আবির্ভাব ও যুদ্ধ, রক্ত-বীজ-বধ। ৯ম অধ্যায়ে—নিশুভের যুদ্ধ ও পতন; শুভের যুদ্ধ, নিশুভের পুনরুত্থান, যুদ্ধ ও বধ। ১০ম অধ্যায়ে—দেবীশরীরে মাতৃগণের প্রবেশ, শুভের যুদ্ধ ও বধ।

১১শ অধ্যায়ে—দেবগণ কর্তৃক দেবীর স্তব, দেবীর বরদান, ভবিষ্যৎ আবির্ভাব কথন । ১২শ অধ্যায়ে—চণ্ডীপাঠের কল কীর্তন । ১৩শ অধ্যায়ে—জুয়থ ও সমাধি কর্তৃক দেবীর আরাধনা, বরপ্রাপ্তি, দেবীমাহাত্ম্য-সমাপ্তি ।

### আবৃত্তি-কল ।

বারাহীতন্ত্রে—চণ্ডীপাঠকলং দেবি শৃণু গদতো মম । একাবৃত্তাদিপাঠানং যথাবৎ কথ্যামি তে ॥ সঙ্কল্য পূর্নং সম্পূজ্যাস্তসাদেয়ং মনুন্ যত্নং । পাঠাদ্ বাপি-  
প্রদানাদ্ধি সিদ্ধিমাপ্নোতি মানবঃ ॥ উপসর্গোপশান্ত্যর্থং ত্রিরাবৃত্তং পঠেন্নরঃ । গ্রহোপশান্ত্যে কর্তব্যং পঞ্চাবৃত্তং দয়াননে ॥ যজ্ঞভয়ে সমুৎপন্নৈঃ সপ্তাবৃত্তমুদীরয়েৎ ।  
নবাবৃত্তান্ত্রবেচ্ছান্তির্ভাজপেয়কলং লভেৎ ॥ রাজবস্ত্রাং ভূত্যে চ কদ্রাবৃত্তমুদীরয়েৎ । অর্কীবৃত্তাং কাম্যগিদ্ধিবৈরহানিষ্ঠ জাগতে ॥ সন্যাস্তাদ্ বিপূর্বজ্ঞাং ত্র্য-  
বস্ত্রতামিহাং । সৌখ্যং পঞ্চদশাবৃত্তাচ্ছিন্নমাপ্নোতি মানবঃ ॥ কলাবৃত্তাং পুত্রপৌত্রধনপ্রাপ্ত্যগমং বিহুঃ ॥ রাজ্যং ভীতিবিমোক্ষায় বৈরস্যোচ্চাটনায় চ । ১২  
সপ্তদশাবৃত্তং তথাষ্টদশকং ত্রিয়ে ॥ বহাব্রণবিমোক্ষায় বিংশাবৃত্তং পঠেন্নরঃ । পঞ্চবিংশাবর্তনীচ ভবেদ্ধব্রবিমোক্ষণম্ ॥ সঙ্কটে সমজ্ঞাপ্রাপ্তে জুপ্তিকিংদ্যানয়ে তপা :  
জাতিসংসে কুলোচ্ছেদে আয়ুষো নাশ আগতে । বৈরবৃত্তৌ ব্যাধিবৃত্তৌ ধননাশে তথা ক্ষয়ে । তথৈব ত্রিবিধোৎপাতে তথা চৈবাতিপাতকে । দুর্ধ্যাদ্ যজ্ঞাচ্ছ-ভ-

বৃত্তং ততঃ সম্প্রত্যন্তে শুভম্ । শ্রিয়ো বৃদ্ধিঃ শতাবৃত্তাদ্রাজ্যব্যবৃদ্ধিশুভৈব চ ॥ মনসা চিন্তিতং দেবি সিধ্যদেষ্টোত্তরাচ্ছতং । শতান্বমেধযজ্ঞানাং ফলমাপ্নোতি  
 স্তব্রতে ॥ সহস্রাবৰ্ত্তনালক্ষ্মীরাবর্ণোতি স্বয়ং স্থিরা । ভুক্তং মনোরথান্ কামান্ নরো যোক্ষমবাপ্নুয়াং ॥ যথান্বমেধঃ ক্রতুরাড়্ দেবানাক্ষ যথা হরিঃ । স্তবানামপি  
 সর্বেষাং তথা সপ্তশতীস্তবঃ ॥ অথবা বহুনোক্তেন কিমেতেন বরাননে । চণ্ডাঃ শতাবৃত্তপাঠাং সৰ্ব্বাঃ সিধ্যন্তি সিদ্ধয়ঃ ॥

অর্থ—এই পুস্তক ১ রূপ পাঠ করিলে কার্য্যসিদ্ধি হয়, ৩ রূপ পাঠ করিলে উপসর্গশান্তি, ৫ রূপে গ্রহশান্তি, ৭ রূপে মহাভয়শান্তি, ৯ রূপে অত্রিবিধ শান্তি, ১১ রূপে  
 ঐশ্বর্য্য, ১২ রূপে অভীষ্টসিদ্ধি, ১৪ রূপে শত্রু বশ ও স্ত্রী বশ, ১৫ রূপে মিত্রতা, ১৬ রূপে পুত্র পৌত্র ধন ধাত্রাদি, ১৭ রূপে রাজভয় নিবারণ, ১৮ রূপে শত্রুদমন, ২০  
 রূপে মহাত্রাণশান্তি, এবং ২৫ রূপে বন্ধনমোচন হয় । অসাম্য রোগ, আয়ুঃক্ষয়, ধনক্ষয় ও ত্রিবিধ উৎপাত উপস্থিত হইলে ১০০ বার পাঠ করিবে । ১০৮ বার  
 পাঠ করিলে সকলপ্রকার অভীষ্ট সিদ্ধ হয় ; এবং ১০০০ বার পাঠ করিলে ইহকালে সৰ্ব্ববিধ সুখভোগ ও অন্তে মুক্তিলাভ হইয়া থাকে ।

### মুদ্রিত-চণ্ডীপাঠের প্রমাণ ।

তিথিতত্ত্বধৃত মৎস্যসূক্ত ও বারাহীতন্ত্রের বচন—“স্বয়ং লিখিতং যচ্চ কুতিনা লিখিতং ন যৎ । অত্রাঙ্গণেন লিখিতং তচ্চাপি বিফলং ভবেৎ ॥” ( বাহ!

আপনার লিখিত, ও যাহা পত্রিতের লিখিত নহে, এবং যাহা সভাসঙ্গণের লিখিত, তাহা পাঠ করিলে ফল হয় না।) এই বচনে ‘সিগন্ত’ শব্দের প্রয়োগ আছে। লিখিত শব্দের অর্থ লেখনী দ্বারা অঙ্কিত পুস্তকট পাঠ করা নির্দিষ্ট বুঝাইতেছে; মুদ্রিত পুস্তক সম্বন্ধে নিষেধ বুঝাইতেছে না। খজয়ালাত্তরের—“তোমরা লিখিতং বিদ্রোহমুদ্রিতবিস্তৃতং যং। শিল্পাদিনিষিতং যচ্চ পাঠ্যং যাপ্যঞ্চ সর্বদা।।” (বিদ্বান্ ব্রাহ্মণ কর্তৃক লেখনী দ্বারা যাহা লিখিত, মুদ্রা দ্বারা যাহা অঙ্কিত, এবং যাহা শিল্পনিষিত, তাহা সর্বদা পাঠ্য ও যাপ্য) এই বচনে মুদ্রিত পুস্তক পাঠ্যবও বর্ণিত আছে। (বিদ্বান্ ব্রাহ্মণের নুতানাদি কার্য অনভ্যন্ত বর্ণিত পদের কেবল গ্লিখিত পাদেপ সহিতই অন্তর্ভুক্ত হইবে)।

### পাঠের নিয়ম।

পবিত্র ও একাগ্রচিত্ত হইয়া পূর্বমুখে বা উত্তরমুখে বসিয়া অর্থবোধ লবিশুদ্ধ উচ্চারণসহকারে ভক্তিপূর্বক ইহা পাঠ করিতে হয়। পাঠকালে ভ্রান্তি কখনও না, অন্তর্যমস্ক বা নিদ্রাকষ্ট হইবে না, এবং অধ্যায় শেষ না করিয়া বিরাম করিবে না। অধ্যায়ের মধ্যে বিরাম করিলে পুনর্বার সেট অধ্যায়ের প্রথম হইতে পাঠ করিবে। পুস্তক হাতে ধরিয়া বা মৃৎপাত্রের উপর রাখিয়া পাঠ করিতে নাই। অজুয়ার, বিসর্গ, সীর্গধন প্রভৃতি যথাযথ উচ্চারণ করিবে। ‘ও’ ইত্যাদি সুপ্ত

অকার বলে ; ইহার উচ্চারণ নাই । পাঠিকালে গাত্রভঙ্গ, হাই তোলা, নিদ্রা, ইচ্ছা, খুখু ফেলা, অগ্রমনস্ক হওয়া, অল্প কথা বলা, এই সকল পরিত্যাগ করিবে । গাত্রভঙ্গ হইতে ইচ্ছা পৰ্য্যন্ত দৈবাৎ ঘটিলে দক্ষিণ কর্ণ স্পর্শ করিবে । অবশিষ্ট ঘটনায় আচমন ও বিষ্ণুস্মরণ করিয়া পুনর্বার সেই অধ্যায়ের প্রথম হইতে পাঠ করিবে ।

পাঠের পূর্বে সঙ্কল্প করিয়া দেবীর পূজা করিবে । স্বয়ং পাঠে অসমর্থ হইলে জ্ঞানাপন্ন অপর ব্রাহ্মণ দ্বারা পাঠ করাইবে । ব্রাহ্মণ ভিন্ন মূল চণ্ডী পাঠে অন্তের অধিকার নাই ।

### তন্ত্রোক্ত চণ্ডী-পূজাবিধি ।

শুচি হইয়া প্রাতঃসঙ্ক্যা সমাপনান্তে পূর্বমুখে বা উত্তরমুখে বসিয়া আচমনপূর্বক বিষ্ণুস্মরণ করিবে । বগা—

ওঁ তদ্বিক্ষোঃ পরমং পদং, সাদা পশুন্তি সুরয়ঃ । দিবীং চক্ষুরাততম্ ॥ ওঁ বিষ্ণুঃ ওঁ বিষ্ণুঃ ওঁ বিষ্ণুঃ । তৎপরে ওঁ আত্মতত্ত্বায় স্বাহা, ওঁ বিদ্যাভাসায় স্বাহা, ওঁ শিবতত্ত্বায় স্বাহা—বলিয়া ৩ বার তান্ত্রিক আচমনও করিবে ।

অর্চনা ।—ওঁ এতেতো গঙ্গাদিত্যো নমঃ ( ৩ বার বলিয়া গঙ্গপুষ্পাদি পূজার অব্যো ৩ বার জল প্রক্ষেপ করিবে ) । এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ এতেতো গঙ্গাদিত্যো নমঃ । এতে গঙ্গপুষ্প এতদধিপত্যে ওঁ বিষ্ণবে নমঃ । এতৎসম্প্রদানেভাঃ ওঁ পূজনীসদেবতাভ্যো নমঃ ।

( শালগ্রামে বা জলে পূজা করিবে ) এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ নারায়ণায় নমঃ । এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ গুরুবে নমঃ । এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ আদিত্যাদিনবগ্রহেভ্যো নমঃ । এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ ব্রাহ্মণেভ্যো নমঃ । এতে গঙ্গপুষ্প ওঁ ক্রীহর্যায় নমঃ । ( তাম্রপাত্রে অম্বা মাজাইয়া ) ইদমর্ঘ্যং ( পায়ের পিঠি ও যজুর্বেদী )—এমোতমঃ । ওঁ ক্রীহর্যাতট্টারকায় নমঃ ।

স্বস্তি বাচন ।—( উত্তর মুখে বসিয়া কুশীতে আতপ-তুল লইয়া ) ওঁ কর্তব্যোহস্মিন্ দেবীমাহাত্ম্যাপাঠকর্ম্মণি ওঁ পূণ্যাহং ভবন্তো ক্রবন্তু ওঁ পূণ্যাহং ভবন্তো ক্রবন্তু ওঁ পূণ্যাহং ভবন্তো ক্রবন্তু ( ওঁ পূণ্যাহং ওঁ পূণ্যাহং ) । ওঁ কর্তব্যোহস্মিন্ দেবীমাহাত্ম্যাপাঠকর্ম্মণি ওঁ স্বস্তি ভবন্তো ক্রবন্তু ওঁ স্বস্তি ভবন্তো ক্রবন্তু ( ওঁ স্বস্তি ওঁ স্বস্তি ওঁ স্বস্তি ) । ওঁ কর্তব্যোহস্মিন্ দেবীমাহাত্ম্যাপাঠকর্ম্মণি ওঁ স্বস্তি ভবন্তো ক্রবন্তু ওঁ স্বস্তি ভবন্তো ক্রবন্তু ( ওঁ স্বস্তি ভবন্তো ক্রবন্তু ) ॥ ( স্বস্তিযুক্ত ) ॥ ( স্বস্তিযুক্ত ) ওঁ স্বস্তি ন ইচ্ছো বৃদ্ধশ্রবঃ, স্বস্তি নঃ পূয়া বিশ্ববেদাঃ । স্বস্তি নস্তাক্ষ্যে, স্বস্তি নো বৃহস্পতির্দধতি ॥ ওঁ স্বস্তি স্বস্তি স্বস্তি ॥—বলিয়া চাউলগুলি ছড়াইয়া দিবে ।

সাক্ষ্যম্ভ্র।—(কুতাপ্তলি ইয়া) ও সূর্য্যঃ সোমো যমঃ কালঃ, সন্ধ্যো ভূতান্যহঃ ক্ষপ। পবনো দিকপতিভূমি-রাকশং খচরামরাঃ। ব্রাহ্মাণ শাসনমাহারি,  
কল্পধর্মিহ সন্নিধিং ॥

সঙ্কল্প।—তাত্রাপাত্রে কুশ তিষ্ম ফল (হরীতকী) ও জল লইয়া, দক্ষিণ জানু পাতিয়া উত্তর মুখে বসিয়া—

বিষুয়ে'। তৎ সং, অদ্য অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতির্থো অমুকগোত্রঃ শ্রীশ্রমুক-দেবশর্ম্মা গনোভৌষ্টসিদ্ধিকামঃ (শ্রীচণ্ডিকা প্রীতিকামঃ) শ্রীকৃষ্ণদ্বৈপায়না-  
ভিধান-মহর্ষিবেদব্যাস-প্রোক্ত-জয়াথা-মার্কণ্ডেয়পুরাণান্তর্গত—সাবর্ণিঃ-সূর্য্যতনয়-ইত্যাদি-সাবর্ণিভবিভা-গনুরিত্যন্ত-দেবীমাহাত্ম্যাস্ত্র সক্রুং পাঠকন্মাহং করিষ্যে।

[জ্ঞাতব্য—ঋাহারা বেদ বিভাগ করিয়াছেন, তাঁহাদিগকেই বেদব্যাস বা ব্যাস বলে। বেদব্যাস অনেক। অষ্টাদশ-পুরাণ-কর্ত্তা বেদব্যাসের নাম কৃষ্ণ, এবং দ্বীপে  
জন্ম বলিয়া আর একটি নাম দ্বৈপায়ন। কৃষ্ণ নামে অপর ব্যক্তিও আছেন বলিয়া 'কৃষ্ণদ্বৈপায়ন' বলিলে উক্ত বেদব্যাসকেই বুঝায়। শ্রীকৃষ্ণদ্বৈপায়ন-নামক মহর্ষি  
বেদব্যাসের উক্ত জয়-নামক যে মার্কণ্ডেয় পুরাণ, এই দেবীমাহাত্ম্য তাহার অন্তর্গত। অষ্টাদশ পুরাণ, রামচরিত (রামায়ণাদি), বিষ্ণুধর্ম্ম, শিবধর্ম্ম, মহাভারত,  
সৌরধর্ম্ম, মানব ধর্ম্মশাস্ত্র—ইহাদের নাম জয়। অষ্টাদশ পুরাণের অন্তর্গত বলিয়া মার্কণ্ডেয় পুরাণকেও জয় বলে।

কেহ কেহ 'সঙ্কল্পবাক্যে' "মার্কণ্ডেয় উবাচ সাবর্ণিঃ সূর্য্যতনয় ইত্যাদি" এরূপ বলিয়া থাকেন। তজ্জগু চণ্ডীর স্তুত্রসিদ্ধি টীকাকার গোপাল চক্রবর্ত্তী এ বিষয়ে যে

বিচার করিয়াছেন, তাহা টীকাব প্রথমেই দেওয়া হইয়াছে। দেখিলে সন্দেহ-ভঞ্জন হইবে। আর এক কথা—প্রথমে “মার্কণ্ডেয় উবাচ” বলিলে, শেষে “সার্বভৌমতা যত্নঃ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বভৌমত্বং দেবীমাহাত্ম্যং সমাপ্তমিত্যাক্তং” বলাও উচিত হয়; কিন্তু তাহা কেহই বলেন না।

২ রূপ, ৩ রূপ ইত্যাদি পাঠের সঙ্কল্পে ‘সঙ্কল্পঃ’ পদের পরিবর্তে বিঃ, ত্রিঃ, চতুঃ, পঞ্চকুতুঃ, ষট্ কুতুঃ ইত্যাদি বসিতে হইবে।

পর্যার্থে সঙ্কল্পে—‘শ্রীঅমুক-দেবশর্মা’ ইহার পর ‘অমুকগোত্রস্ত্রীঅমুকদেবশর্মাঃ’ এবং ‘করিস্যো’ ইহার পরিবর্তে ‘করিস্যামি’ বসিতে হইবে।]

পারদীয় পূজাষ চণ্ডীপাঠের সঙ্কল্প যথা—বিষ্ণুরে। তৎ সৎ অগ্ন আশ্বিনে নাসি অমুকে পক্ষে অমূর্হা তপৌ আবভ্য যশানবগাং নবৎ বার্নিক-পরাং কপৌন-দুর্গা-বহা-পূজ্যায়াম্ অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা সর্বাধিপা-বিনিন্মুক্ত-ধনধাতুহুতাগ্নিতমকায়ঃ (শ্রীজগদ্রীতিনমঃ) শ্রীমুকুতৈবরনাত্তিপান ইত্যাদি। (পর্যার্থে পূর্ববৎ নির্দেশঃ)।

সঙ্কল্পের পর ঈশান কোণে জল ফেলিয়া, কোশা উপুড় করিয়া, ঘণ্টাপানিসহকারে তত্পার পুষ্প বা আতঙ্গ-তঙ্গুল দিয়া সঙ্কল্পহকু পাঠ করিবে। যথা—

(সামবেদী) ওঁ দেবো বো অবিগোদাঃ পূর্ণাং বিবষ্ট্যাসিচং। উদ্ বা সিঞ্চধ-মুপ বা পৃঞ্চধ-বাদিদ্ব বো দেব গহং ০ ৥ (যজুর্বেদী) ওঁ যজ্ঞাগ্রভো দূর্নমুদোঁ গদৈবং, তদু হুগুগু তদৈবৈতি। দূর্নমং জ্যোতিষাং জ্যোতিরেকং, তন্মে মনঃ শিবসকলমস্তু ০ ৥ (ঋগ্বেদী) ওঁ যা গুগুগু। সিনীবলী, যা রাব। যা গদবলী। ইন্দ্রাগীমল উতয়ে, রুপানীং শৃশয়ে ০ ৥ ওঁ সঙ্কল্পিত্তেইশ্মিন্ কদগ্নি সিদ্ধিরস্তু (ওঁ অস্তু)। ওঁ অয়মারভঃ শুভায় ভবতু (ওঁ ভবতু)।



তাত্ত্বিক ঘটস্থাপন ।—মূর্ত্তিকার উপর পঞ্চশস্ত্র দিয়া তত্বপরি ফলপল্লবাদিযুক্ত ঘট স্থাপন করিবে । ক্লীং (জলপ্রোক্ষণ) । ক্লীং (শোধন) । ক্লীং (স্থাপন) । ক্লীং (জলপূরণ) । ওঁ গঙ্গাত্মাঃ সরিতঃ সর্বাঃ সরাংসি জলদা নদাঃ । হ্রদাঃ প্রস্রবণাঃ পুণ্যাঃ স্বর্গপাতালভূগতাঃ । সর্বতীর্থানি পুণ্যানি ঘটে কুর্বন্ত সন্নিধিং (তীর্থগ্রাস) । ক্লীং ( পল্লব ) । হুং ( ফল ) । ক্লীং ( স্থিরীকরণ ) । যং ( পুষ্প ) । ক্লীং ( দূর্বা ) । ওঁ ( অভুক্ষণ ) । হুং ফট্ স্বাহা ( কুশে তাড়ন ) ।

[ তাত্ত্বিক পঞ্চপল্লব—কঁটাল, আত্র, অশথ, বট, বকুল । ]

জলশুদ্ধি ।—ভূমিতে ত্রিকোণ, তদ্বাহে গোল, তদ্বাহে চতুষ্কোণ মণ্ডল লিখিয়া তত্বপরি—ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ, ওঁ কূর্মায়ে নমঃ, ওঁ অনন্তায় নমঃ, ওঁ পৃথিব্যে নমঃ—বলিয়া গঙ্গপুষ্প দিয়া, তত্বপরি কোশা পাতিয়া, ‘নমঃ’ মন্ত্রে জল ঢালিয়া, কোশার অগ্রভাগে অর্ঘ্য সাজাইয়া, ‘ওঁ’ মন্ত্রে জলে গন্ধ পুষ্প তুলসী দিয়া, ওঁ গঙ্গে চ যমুনে চৈব গোদাবরি সরস্বতি । নমঃদে সিন্ধু কাবেরি জলেহস্মিন্ সন্নিধিং কুরু ॥—বলিয়া ঐ জলের উপর ‘ওঁ’ ৮-বার জপ করিবে ।

ভূতাপসারণ ।—‘ফট্’ মন্ত্র ৭ বার জপ করিয়া শ্বেতসর্গপ বা আতপ-তণ্ডুল লইয়া, ওঁ অপসর্পন্ত তে ভূতা যে ভূতা ভুবি সংস্থিতাঃ । যে ভূতা বিদ্বকর্তার-স্তে নশন্ত শিবাজ্জয়া ॥—বলিয়া ছড়াইয়া দিবে ।

আসন-শুদ্ধি ।—ওঁ ক্লীং আধারশক্তয়ে কমলাসনায় নমঃ ( আসনে গঙ্গপুষ্প দিয়া, আসন ধরিয়া ) আসনমন্ত্রস্ত্র মেরুপৃষ্ঠ ঋষিঃ সূতলাং ছন্দঃ কুর্মে। দেবতা

আসনোপবেশনে বিনিয়োগঃ। ওঁ পৃথ্বী স্বয়া ধৃত্য লোক। দেবি স্বং বিষুনা ধৃত্য। অথ ধারয় মাং নিত্যং পবিত্রং কুরু চাসনং ॥ (কৃত্যজালি হইয়া বায়ভাগে নমস্কার করিবে) ওঁ গুরুভ্যো নমঃ, ওঁ পরমগুরুভ্যো নমঃ, ওঁ পরাপরগুরুভ্যো নমঃ। (দক্ষিণে) ওঁ গণেশায় নমঃ। (উত্তরে) ওঁ ব্রহ্মণে নমঃ। (সম্মুখে) ওঁ হ্রীং চন্ডিকার্যে নমঃ। *ওঁ হ্রীং মাত্রেয়ৈ নমঃ*

প্রাণায়াম।—দক্ষিণ হস্তের অঙ্গুষ্ঠ দ্বারা দক্ষিণ নাসিকা টিপিয়া বায়ু আকর্ষণপূর্বক বায়ু হস্তে ৪ বার 'হ্রীং' বীজ জপ করিবে; অন্যমিকা ও কনিষ্ঠা দ্বারা বাম নাসিকাও টিপিয়া শ্বাস বন্ধ করিয়া ১৬ বার জপ করিবে; এবং দক্ষিণ নাসিকা ছাড়িয়া দিয়া পোরে দ্বীপের নিশ্বাস ফেলিতে ফেলিতে ৮ বার জপ করিবে।

করাঙ্গাস।—হ্রীং অঙ্গুষ্ঠাভাং নমঃ, হ্রীং তর্জুনীভাং স্বাহা, হ্রীং মধ্যমাভাং বষট্, হ্রীং অনাগিকাভাং হং, হ্রীং কনিষ্ঠাভাং বৌষট্, হ্রীং অঙ্গায় ফট্ ॥ ০ ॥

হ্রীং স্বদয়ায় : নমঃ, হ্রীং শিরসে স্বাহা, হ্রীং শিখায় বষট্, হ্রীং নেত্রত্রয়ায় বৌষট্, হ্রীং অঙ্গায় ফট্। *হ্রীং অঙ্গায় ফট্।*  
 স্বাধ্যাত্যাস।—অশ্রু সপ্তশতীস্তোত্রস্ত্র নারদ ঋষির্গায়ত্ৰী ছন্দঃ, দক্ষিণায়ুর্জিৎদেবতায়ৈ নমঃ। (হ্রদয়ে) ওঁ দক্ষিণায়ুর্জিৎদেবতায়ৈ নমঃ। (মুখে) ওঁ গায়ত্ৰীছন্দসে নমঃ। (হ্রদয়ে) ওঁ দক্ষিণায়ুর্জিৎদেবতায়ৈ নমঃ। (পাদদ্বয়ে) ওঁ স্বাহাশক্তয়ে নমঃ। *হ্রীং অঙ্গায় ফট্।*

ধ্যান।—ওঁ ময়োম্মুখাঙ্গি মণিমণ্ডপব্রহ্মবেদী, সিংহাসনোপরিগতাং পরিপীতবর্ণাং। পীতাশ্বয়াং কনকমালাবিভূষিতাজীং, দেবীং শ্রবাসি ধৃতমুদার-বৈরিকিঙ্করাং ॥ *দক্ষিণায়ুর্জিৎদেবতায়ৈ নমঃ।*

মুখ্য পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী। পুষ্টি-সামগ্রী।

অথবা—ও বদ্ধ ক-কুসুমভাসাং পঞ্চমুণ্ডাধিবাসিনীং । ফু বসন্তকলা-রত্ন-মুকুটাং মুণ্ডমালিনীং । ত্রিনেত্রাং রক্তবসনাং পীনোগতঘটন্তনীং । পুস্তকক্ষাফালাধা  
বরধাভয়কং ক্রমাং । দধতীং সংস্বরেমিত্য-মুত্তরায়ামানিতাং ॥

নিজ মস্তকে সেই পুষ্প দিয়া, মানসপূজা করিবে।—হৃদয়মধ্যে দেবীকে চিত্তা করিয়া হৃৎপদ্ম আসন, শিরঃস্থিত সহস্রদল পদ্ম হইতে গলিত অমৃত পাত, মন  
জর্ঘা, উক্ত অমৃত আচমনীয় ও স্নানীয় জল, গন্ধতত্ত্ব পুষ্প, প্রাণ ধূপ, তেজস্তত্ত্ব দীপ, হৃৎপদ্মমধ্যে কর্ণিত সুধাসমুদ্রের জল ( অর্থাৎ সুধা ) নৈবেদ্য দিবে ।

বিশেষাঘাস্থাপন।—স্বীয় বামভাগে ত্রিকোণ মণ্ডল লিখিয়া তন্মধ্যে 'হুং' লিখিবে, তত্পরি 'ফট্' মন্ত্রে প্রক্ষালিত ত্রিপদিক। সহ পাণিশঙ্খ রাখিয়া 'হ্রীং' মন্ত্রে জল  
গন্ধ-পুষ্প দুর্বাঙ্কতাং তাহাতে দিয়া, মং দশকলাবাপ্তবহ্নিমণ্ডলায় নমঃ ( ত্রিপদিকায় ), অং দ্বাদশকলাবাপ্তসূর্য্যামণ্ডায় নমঃ ( শঙ্খ ), উং ষোড়শকলাবাপ্তসোমামণ্ড-  
লায় নমঃ ( জলে ) গন্ধপুষ্প দিবে । তৎপবে গন্ধপুষ্প দ্বারা ঐ শঙ্খ পূজা করিবে,—হ্রাং হৃদয়ায় নমঃ ( অগ্নিকোণে ), হ্রীং শিরসে ঋহা ( ঈশানে ), হুং শিপায়ৈ  
বযট্ ( নৈঋতে ), হ্রুং কবচায় হ্রং ( বায়ুকোণে ), হ্রৌং নেত্রত্রয়ায় বৌযট্ ( সম্মুখে ), হ্রঃ অস্ত্রায় ফট্ ( মন্যো ) । ও গন্ধে চ যমুনে চৈব ইত্যাদি পাঠ করিয়া  
কল্পদ্বয়ে শঙ্খা আচ্ছাদনপূর্ব্বক হ্রীং মন্ত্র ১০ বার জপ করিবে । পরে সেই শঙ্খের জল কিঞ্চিৎ কোশায় দিয়া সেই জল নিজ মস্তকে ও পূজার দ্রব্যে প্রক্ষেপ  
করিবে । ( এই অর্ঘ্য পূজাসমাপ্তি পঞ্চাল রাখিবে ) ।

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

পুনর্বার পুন্না লইয়া, ধান করিয়া, ঘাটের উপর সেট পুন্না দিয়া। আবাহন করবে, —ও হ্রৌ চণ্ডিকে দেবি ইহগজ্জ ইগগজ্জ, উঃ তিষ্ঠ ইহ তিষ্ঠ, ইহ সন্ন্যাসি, ইহ সন্নিকম্য, অত্রাধিষ্ঠানং কুক, সম পূজাং গৃহণ। ( কৃতঞ্জলি ) ওঁ দেবেশি ভক্তিস্থলেতে পরিবারসমিত্তে। বাবহ্বাং পূর্জস্যানি তবজ্জঃ স্তুত্বিরা ভব ॥

গণেশাদিদ্রুজ। এষ গন্ধঃ তু গণেশায় নমঃ ; এতৎ পুষ্পং তু গণেশায় নমঃ ; এতৎ নৈমজ্জং চ  
গণেশায় নমঃ । তু বিষ্ণবে নমঃ । তু দ্বিষায় নমঃ । তু জুগায়ৈ নমঃ । তু সর্পদেবতাভিত্য নমঃ---দ্বিপদা পাক্ষাপাচারে পূজ্য কাশ্মিনে ।  
গণেশায় নমঃ । এইরূপ—তু অগ্নায় নমঃ । তু অগ্নিগণেশায় নমঃ । তু অগ্নিগণেশায় নমঃ । তু অগ্নিগণেশায় নমঃ ।

পূনর্কার ধ্যান করিয়া দেবীর স্যোড়েশপচারে, দশোপচারে বা পঞ্চোপচারে মূলমন্ত্রে পূজা করিবে।

মূলমন্ত্র—“ওঁ ঐং হ্রীং স্বাস্থা ( নিবেদনীয় অংবোর নাম ) ওঁ চণ্ডিকায় নমঃ” । তৎপরে ওঁ আনরণদেবত্বভাজা। গয়—বজ্রিয়া পঞ্চোপচারে পূজা করিলে।

ঐ চণ্ডিকায়ৈ বিদ্রোহে, ত্রিপুরারায় ধীমহি । তন্নো গৌরী প্রচোদয়াং হুঁ ।—এই গায়ত্রী ১০ বার জপ করিবে । পরে, 'ও ত্রিং হ্রং স্বাহ' ।  
চণ্ডিকায়ৈ নমঃ—বলিয়া ৩ বার পুষ্পাঞ্জলি দিবে ।

তৎপরে পুস্তক ভোবমুক্ত করিয়া, ডোর খুলিয়া, তাহাদি অধ্যায়ে দ্বিবিঃ পক্ষপুংপি দ্বিবিঃ পুস্তকপূজা (এই পক্ষঃ শুদেবী বাহ্যাত্মাপুস্তকায় নঃ উঃ য়িঃ  
এং ইং নঃ প্রাণায়াম করিয়ঃ পাঠ করিবে । প্রত্যেক অধ্যায়ের শেষে ঘটাবাদন কর্তব্য ।

চণ্ডীপাঠের পূর্বে দেবীমুক্ত, অর্গলস্তোত্র, কীলকস্তব, কবচ, ঋষ্যাদি, এবং নারায়ণঃ নমস্কৃতা ইত্যাদি মন্ত্র যথাক্রমে পাঠ করা আবশ্যক।  
করিলে দেবীমুক্ত, অর্গলস্তোত্র, কীলকস্তব, কবচ ও ঋষ্যাদি প্রথমে একবার পাঠ করিলেই হইবে, প্রত্যেকবারে পাঠ করিতে হইবে না। একাসনে ২।৩ রূপ পাঠ।

শেষ অধ্যায়ের শেষ শ্লোকটি দুইবার পাঠ করিবে। পাঠান্তে একগণ্ডুষ জল লইয়া—ওঁ গুহ্যতিগুহ্যগোপ্ত্রী ত্বং গৃহাণাম্মংকৃতং জপং। অংপ্রসাদাং সুরেশ্বরী ॥—বলিয়। জলগণ্ডুষ দেবীর বামহস্ত-উদ্দেশে অর্পণ করিবে। তৎপরে, হ্রীং মন্ত্রে প্রাণায়াম করিয়া, আরতি করিবে। আরতির নিয়ম।—প্রত্যেক বস্তু দেবতার পায় ৪ বার, নাভিদেহে ২ বার, মুখে ৩ বার, এবং সর্কাজে ৭ বার ঘুরাইবে।

আগায়া । — ৩ মর্দকব্রহ্মাণ্ড । ১ ( ১ )  
 আগায়া । — ৩ মর্দকব্রহ্মাণ্ড । ১ ( ১ )

দক্ষিণা ।—( অর্চনা ) এতে গন্ধপুষ্পে ওঁ এতশ্চৈব কাঞ্চনমূল্যায় নমঃ । এতে গন্ধপুষ্পে এতদধিপত্যে ওঁ বিষণ্ণে নমঃ । এতৎসম্প্রদানায় ওঁ চণ্ডিকায় নমঃ ।  
( পরার্থ )—ওঁ ব্রাহ্মণায় নমঃ ।

दक्षिणावाक्यं यथा ।—कोणा

কুশ ও ফল ধারিয়া তদুপরি বায়হস্ত উপড় করিয়া রাখিয়া—বিযুরোঁ

‘‘তৎসদদোতাদি.. কাগ্ননন।’’

1/11/1919

কুঠিত্তদেবীমাহাত্ম্যাপাঠকର୍ষণঃ শাস্ত্রতীর্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনমল্যং ক্রীবিষ্ণুদেবতমহং যথাসম্ভব-গোত্রজানীয়া ক্রীচণ্ডিকায়ৈ সম্প্রদদে । ( পরাগে—যথাসম্ভবগোত্র-  
নামৈ ব্রাহ্মণায় দদানি ) ।

অচ্ছিত্রাবধারণ ।—( কুতাপ্তঞ্জলি হইয়া ) ওঁ কুঠিত্তদেবীমাহাত্ম্যাপাঠকর্ম্মাচ্ছিত্রমস্তু । ( ওঁ ভাস্ত্র ) ।

বৈগুণ্যসমাধান ।—বিষ্ণুরেঁ । তৎসদ্যেত্যাদি...ক্রীজমুখদেবশর্ম্মা কুঠেহ্মিন্ কর্ষণি যদৈবগুণ্যং জাতং তদোষ-প্রশমনায় ক্রীবিষ্ণুস্মরণমহং করিষ্যে ।

ওঁ ভাদ্বিক্ষেঃ ইত্যাদি পাঠ করিয়া, ওঁ বিষ্ণুঃ ১০ বার জপ করিবে । একগণ্ডুষ জল লইয়া, ওঁ প্রীয়তাং পুণ্ডরীকাক্ষঃ সর্বমঙ্গেস্থয়ো হরিঃ । ভূবিঃশ্বস্ত্রে জগৎ  
জুষ্টং প্রীণিতে প্রীণিতং জগৎ ॥ এতৎ কর্ম্ম ওঁ ক্রীকৃষ্ণায় অর্পণমস্তু ( জলগণ্ডুষ ত্যাগ করিবে ) ।

বিসর্জন ।—সঞ্চলিত চণ্ডীপাঠ সমাপ্ত হইলে ঘট বিসর্জন করিবে । যথা—ওঁ চণ্ডিকে দেবি ক্ষমস্ব—বলিবা ঘটে জল দিয়া ঘট সঞ্চলন করিবে । পরে  
সংহারমুদ্রা দ্বারা ঘট হইতে একটি নির্মালাপুঞ্জ লইয়া আশ্রণ করত দেবতাকে মনোমধ্যে প্রবিষ্ট মনে করিয়া হস্ত প্রক্ষালন করিবে । তৎপরে ঈশানকোণে  
দ্বিকোণ মণ্ডল করিয়া তদুপরি ওঁ শেখিকায়ৈ নমঃ বলিয়া কিঞ্চিৎ নির্মালা রাখিবে ।

দেবীস্বকৃতভাষ্যম্।—অহমিত্যষ্টর্চং ত্রয়োদশং সূক্তম্। অস্তূর্ণশ্চ মহর্ষেহুহিত। বাঙ্ নামী ব্রহ্মবিদুষী স্বাত্মানম্ অস্তৌং, অতঃ স। ঋষিঃ। সচ্চিৎ সূখাত্মকঃ সর্বগতঃ পরমাত্মা দেবতা। তেন হি এষা তাদাত্ম্যামনুভবন্তী সর্বজগদ্রূপেণ সর্বশ্চ অধিষ্ঠানত্বেন চ অহমেব সর্বং ভবামীতি স্বাত্মানং স্তৌতি। দ্বিতীয়া জগতী, শিষ্টাঃ সপ্ত ত্রিষ্টুভঃ। অহমিতি। ‘অহং’ সূক্তশ্চ দ্বঙ্গী বাক্ আন্তুণী, যৎ ব্রহ্ম জগৎ কারণং তদ্রূপা ভবন্তী ‘রুদ্রেভিঃ’ (‘বহুলাং ছন্দসী’তি ঐসোহিভাবঃ) রুদ্রৈঃ একাদর্শভিঃ (ইথস্তাবে তৃতীয়া) তদাত্মনা চরামি। এবং বহুভিরিত্যাদৌ তত্তদাত্মনা চরামীতি যোগ্যম্। তথা ‘মিত্রাবরুণা’ মিত্রং চ বরুণং চ (‘সুপাং সুনু’গতি দ্বিতীয়ায়া আকারঃ) (অথ দেবীসূক্তম্) ॥ অহমিত্যর্চচশ্চ বাগান্তুণী ঋষিঃ; সচ্চিৎসূখাত্মকঃ সর্বগতঃ পরমাত্মা দেবতা; দ্বিতীয়ায়া জগতী, শিষ্টানাং ত্রিকটপ্ ছন্দঃ; দেবীমাহাত্ম্যপাঠারন্তে পাঠে বিনিয়োগঃ। ‘ও’ অহং রুদ্রেভির্বহুভিঃচরাম্যহমাদিত্যে-রুত বিশ্বদেবৈঃ। অহং মিত্রাবরণোভা বিভর্গ্যহমিদ্রাগ্নী অহমর্ষিনোভা ॥ ১ ॥ অহং সোম-মাহনসং বিভর্গ্যহং স্বর্কার-মুত ‘উভা’ উভৌ অহমেব ব্রহ্মীভূতা ‘বিভর্ষি’ ধারয়ামি। ‘ইদ্রাগ্নী’ অপি ‘অহমেব’ ধারয়ামি। ‘উভা’ উভৌ ‘অশ্বিনা’ অশ্বিনৌ অপি ‘অহ’মেব ধারয়ামি। (ময়ি হি সর্বং জগৎ শুক্লৌ রজতমিব অধ্যস্তং সং দৃশ্যতে, ময়া চ জগদাকারেণ বিবর্ততে। তাদৃশ্চা মায়য়া আধারত্বেন অসঙ্গশ্চাপি ব্রহ্মণঃ সকাশাৎ উক্তশ্চ সর্বশ্চ উৎপত্তিঃ) ॥ ১ ॥ অহং সোমামিতি। ‘আহনসম্’ আহন্তব্যম্ অভিষোতবাং ‘সোমং’, বদ্ধা শক্রণাম্ আহন্তারং দিবি বর্তমানং দেবতাত্মানং সোমম্ ‘অহ’মেব ‘বিভর্ষি’। তথা ‘স্বষ্টারম্’, ‘উত’ অপিচ ‘পৃষণং ভগং’ চ অহমেব বিভর্ষি। তথা ‘হবিষ্মতে’ হবিযুক্তায়, ‘সুপ্রাব্যে’ শোভনং হবিঃ দেবানাং প্রাপয়িত্রে তপ্যিত্রে (অবতেতুতপর্ণগাং

সুপ্রাব্যে

“অবিতৃপ্তহিত্যঃ” ইতি দীকারপ্রত্যয়ঃ, চতুর্থোক্তবচনে যৎ), ‘স্বপ্নে’তৈ সোমভিষবং কুর্বতে, দৈদশায় যজমানায় ‘দ্রবিণং’ যনাং যাগিকগুরুপম্ ‘অত’মেব ‘দধামি’ পারয়ামি । (এতচ্চ ব্রহ্মণঃ ফলদাতৃত্বং—“ফলমত উপপত্তেঃ” ইত্যাবকরণে ভগবতা ভাব্যাকারেন সমর্থিতম) ॥ ২ ॥ অহং যাদ্বিত্তি । ‘অহং বদ্বিত্তি’ (ঈশ্বরনাম এতৎ) সমস্ত্র কৃপ্তভঃ ঈশ্বরী । তথা ‘বহুনাং’ ধনানাং ‘সঙ্গমনী’ সঙ্গময়িত্রী উপাসকানাং প্রাপয়িত্রী । ‘চিকিতুয়া’ বৎ সাক্ষাৎকরণং পরং ব্রহ্ম তৎ জ্ঞাতবতী স্বায়ত্তয়া সাক্ষাৎকবতী । অতএব ‘যজ্ঞয়ানাং’ যজ্ঞাহরণাং ‘প্রথমা’ মুখ্যা । বা এবংগুণবিশিষ্টা অহং, ‘তাং’ মা’ মাং ‘ভূরস্থিত্রাং’ বহুভাবেন প্রপঞ্চাজনা অব্যক্তিমানাং, ‘ভূরি’ ভুবানি বহুনি পূৰ্ণং ভগাং । অহং দধামি দ্রবিণং হাবিত্রতে, স্তপ্রোব্যে যজমানায় যুস্বতে ॥ ২ ॥ অহং যাদ্বিত্তি সংগমনী বদ্বিত্তি, চিকিতুয়ী প্রথমা যজ্ঞয়ানাং । তাং মা দেবা ব্যদধুঃ পূরিত্রা, ভূরিস্থিত্রাঃ ভূর্যাবোশয়ন্তীং ॥ ৩ ॥ যয়া সো অগ্নয়ন্তি যো বিপশ্যতি, যঃ প্রাণিতি য ঈং শৃণোত্যুক্তং । অমন্তুবো মাং ত উপ জিয়ন্তি, ত্রৈগি প্রেত ত্রৈদ্বিৎ তে ভুংজাতানি ‘আবেশয়ন্তাং’ জীবভাবেন আত্মনাং প্রবেশয়ন্তীম্, ঈদৃশীং মাং ‘পুরুত্ৰা’ (“পাচ তুহুবে” ত্যাদিনা দার্য্যঃ) বহুৎ দেশেষু ‘দেবাঃ’ যজমানাঃ ‘বদধুঃ’ পদ্যন্তি কুর্বন্তি ( উক্তরূপেণ বৈশ্বরূপেণ অবস্থানাং তে যদ্যং কুর্বন্তি, তৎ সৰ্বং যামেব কুর্বন্তীত্যর্থঃ ) ॥ ৩ ॥ যদ্বোতৈ যঃ অগ্নম্ অতি, ‘সঃ’ ভোক্তৃশক্তিরূপয়া ‘মদৈ’ য অগ্নম্ ‘অন্তি’ (সো অন্নমভীত্যত্র “প্রকৃত্যাতঃপাদ”মিত্যাदिना प्रकृततावः) । ‘য’শ্চ ‘বিপশ্যতি’ আলোকয়তাত্যর্থঃ, ‘দ’শ্চ ‘প্রাণিতি’ স্বাসোদ্ভূতিদিয়াপাবং কৰোতি, সোদাপ মইয়ৈব । ‘য’শ্চ ‘উক্তং শৃণোতি’ (য ঈং শৃণোত্যুক্তম্—ঈদৃশীং পাদপূরণে, তথ্যচ নিকটম্ “মিতাপরেদনথকাঃ কৰ্ম্মায়মিতি” —কম্ ঈন্ ইং উচিতি) । যে ঈদৃশীন্ যন্ত-

১১



ধর্মিক্রপেণ স্থিতাং 'মাং' ন জানন্তি 'তে' 'অমন্তবঃ' অমন্তবানো অজানন্তঃ জনাঃ 'উপক্ৰিয়ন্তি' উপক্ৰীণাঃ সংসারেণ হীন। ভবন্তি । (অমন্তব ইতি মনোরৌণাদিকন্তু প্রত্যয়ঃ, মাম্ অমন্তবঃ মধিষয়জ্ঞানরহিতা ইত্যর্থঃ) । হে 'শ্রুত' বিকৃত সখে, 'শ্রুতি' ময়া বক্ষ্যমাণং শৃণু (ছান্দসো বিকরণলুক্, "শ্রুণুপৃকৃবৃত্যঃ" ইতি হেধিভাবঃ) । কিং তং শ্রোতবাম্ ? 'শ্রুতিবঃ' (শ্রুতিঃ শ্রুত্বা, তয়া যুক্তং) শ্রদ্ধাব্যবহন লভ্যমিত্যর্থঃ (শ্রদ্ধান্তরোরুপসর্গবদবৃতিরিয়্যতে ইতি শ্চছকন্তু উপসর্গবদবৃর্তমানদ্বাং "উপসর্গে ঘোঃ কি"রিতি কিপ্রত্যয়ঃ; মত্বথীয়ো বঃ) । ঐদৃশং ব্রহ্মাত্মকং বস্তু 'তে' তুভ্যাং 'বদামি' উপদিশামি ॥ ৪ ॥ অহমেবেতি । 'অহং স্বয়মেব' 'ইদং' বস্তু ব্রহ্মাত্মকং

বদামি ॥ ৪ ॥

অহমেব স্বয়মিদং বদামি, জুষ্টিং দেবেভিরুত মানুষেভিঃ । যং কাময়ে তং ত-গুগ্রং কৃণোমি, তং ব্রহ্মাণং তন্মসিং তং স্তমেধাং ॥ ৫ ॥ অহং রুদ্রায় ধনুরা তনোমি, ব্রহ্মদ্বিষে শরবে হন্তবা উ । অহং জনায়

৩

'বদামি' উপদিশামি । 'দেবেভিঃ' দেবৈঃ ইন্দ্রাদিভিরপি 'জুষ্টিং' সেবিতম্ । 'উত' অপিচ 'মানুষেভিঃ' মনুষ্যৈরপি জুষ্টিম্ । ঐদৃশস্ত্রাত্মিকা অহং 'যং কাময়ে' যং যং পুরুষং রক্ষিতুং বাঞ্ছামি, 'তং তং' পুরুষম্ 'উগ্রং কৃণোমি' সর্কেভ্যাঃ অধিকং করোমি । 'ত'মেব 'ব্রহ্মাণং' স্রষ্টারং করোমি । 'ত'মেব 'স্বামিম্' অতীন্দ্রিয়ার্থদর্শিনং করোমি । 'ত'মেব 'স্তমেধাং' (ছান্দসম্) শোভনপ্রজ্ঞং চ করোমি ॥ ৫ ॥ অহং রুদ্রায়েতি । পুরা ত্রিপুরবিজয়সময়ে 'রুদ্রায়' রুদ্রস্ত (ষষ্ঠার্থে চতুর্থী) মহাদেবস্ত 'বন্তঃ' চাপম্ 'অহম্' আতনোমি' জয়া আততং করোমি । কিমর্থম্ ? 'ব্রহ্মদ্বিষে' ব্রাহ্মণানাং দ্বেষ্টারং, 'শরবে' শরং হিংসকং ত্রিপুরনিবাসিনম্ অনুরং 'হন্তবৈ' হন্তুং হিংসিতুম্ ( হন্তেঃ "তুমর্থে সেসে" নিত্যাদিনা তর্ভৈপ্রত্যয়ঃ; শরবে ইতি শূ হিংসায়ামিত্যশ্মাং, "শৃষ্ণু স্নিহী" ত্যাাদিনা উপ্রত্যয়ঃ, "ক্রিয়াগ্রহণং কর্তব্য"মিতি কক্ষণঃ সম্প্রদানদ্বাং চতুর্থী ;

উদ্ভবঃ পুরুষঃ)। ‘অহমেব’ ‘জনায়’ স্তোত্রজন্যার্থঃ ‘সমদং’ (সমানং মাতান্তি) অস্মিন্নিতি সমং সংগ্রামঃ) শত্রুভিঃ সহ সংগ্রামঃ ‘কুণোমি’ করোমি। তথা ‘পৃথিবী’ পৃথিবী দিবক পৃথিবীক অন্তর্ধ্যামিতয়। ‘অহমেব’ ‘আবিবেশ’ প্রবিষ্টবতী ॥ ৬ ॥ অহং স্বব ইতি। (ছোঃ পিতৃতি শ্রুতেঃ পিতা ছোঃ) ‘পিতরঃ’ দিবক্ ‘অহং’ ‘স্ববে’ প্রস্তুবে জনয়ামি (‘আত্মন’ আকাশঃ সমুতঃ’ ইতি শ্রুতেঃ)। কুহ্রতি তদাহ—‘অত্মা’ পরমাত্মনঃ ‘মুদ্বিন্’ (‘সুপাং সুসু’ গিতাদিনা সপ্তম্যাঃ লুক্) মুদ্বিনি উপারিত্র (‘কারণভূতে তস্মিন্ হি বিয়াদি কাঙ্গাজাতং সর্কং বর্ত্ততে—তদ্ব্যপ্তং পট ইব)। ‘মম’ চ ‘যোনিঃ’ কারণং ‘সমুদ্রে’ (সমুদ্রবাস্তু) অপার ভূতজাতানি ইতি সমুদ্রে (‘কারণভূতে তস্মিন্ হি বিয়াদি কাঙ্গাজাতং সর্কং বর্ত্ততে—তদ্ব্যপ্তং পট ইব)।

সমদং কুণোমাহং দ্যাবাপৃথিবী

সমদং কুণোমাহং দ্যাবাপৃথিবী আ বিবেশ ॥ ৬ ॥ অহং স্ববে পিতরমস্তু মুদ্বিন্, যত্র যোনিরপস্তুভঃ সমুদ্রে।

ততো বি তিষ্ঠে ভুবনাত্তু বিশেষাত্মং গাং যশ্মগোপ স্পৃশামি ॥ ৭ ॥ অহমেব বাত ইব প্রাণায়ানভমাণা ভুবনানি

‘প্রমাজ্জা তস্মিন্’ ‘অপ্স’ বাপনশীলাসু দীর্ঘন্তিষ্ ‘অন্তঃ’ মধ্যে যদ্ ব্রহ্ম চৈতন্যং, তৎ মম কারণমত্যাগঃ। যত্র ঈদৃশ ভূতা অহমস্মি, ততো হেতোঃ ‘মিনা’ (‘শেষশ্চন্দাস বহল’ নতি শেলোপঃ) বিশ্বানি সর্কানি ‘ভুবনা’ ভুবনানি ভূতজাতানি ‘অত্ম’ অত্মপ্রবিষ্টা ‘বিত্তিষ্ঠে’ বিবিধঃ ব্যাপ্য তিষ্ঠামি (‘সমবপ্রবিভাঃ যঃ’ ইত্যাত্মনোপদম্)। ‘উত’ অপিচ ‘অমুং জাং’ বিপ্রকষ্টপ্রদেশে অবস্থিতং স্বর্গলোককম্ (উপলক্ষণমেতৎ) এতৎপঞ্জিতং কৃতং বিকারজাতং ‘বগ্নাণা’ কারণভূতেন মায়াজ্জকেন মদীয়েন দেহেন উপস্পৃশামি। যদ্বা অস্যা ভুলোকস্য মুদ্বিন্ মুদ্বিনি উপরি অহং পিতরম্ আকাশং স্ববে; সমুদ্রে জলবো অপ্স, উদকেবু ‘মম’ মরণে যম যোনিঃ কারণভূতঃ ভূতজাতঃ ব্রহ্ম চৈতন্যং বর্ত্ততে, ততোহং

কারণাত্মিকা সতী সৰ্বানি ভুবনানি ব্যাপ্নোমি ; অত্ৰং সমানম্ ॥ ৭ ॥ অহমেবেতি । ‘বিশ্বা’ বিশ্বানি সৰ্বানি ‘ভুবনানি’ ভূতজাতানি কার্য্যানি ‘আরভমাণা’ কারণরূপেণ উৎপাদয়ন্তী ‘অহমেব’ পরেণ অনধিষ্ঠিতা স্বয়মেব প্রবর্তে ; ‘বাত ইব’ যথা বাতঃ পরেণ অপ্ৰেরিতঃ সন্ স্বেচ্ছ্যৈব প্রবর্তি তদ্বৎ । উক্তং সৰ্বং নিগময়তি—‘পরো দিবা’ ( পর ইতি সকারন্তং পরস্তাদিত্যর্থং বর্ততে, যথা অধ ইতি অধস্তাদিত্যর্থং বর্ততে ) দিবঃ আকাশস্ত পরস্তাৎ । এনা পৃথিব্যা ( “দ্বিতীয়াটোঃস্বেনঃ” ইতি ইদম্ এনাদেশঃ ) অস্যাঃ পৃথিব্যাঃ ( জাবাপৃথিব্যাকুপাদানম্ উপলক্ষণম্, এতদুপলক্ষিতাং সৰ্বস্মাৎ

বিশ্বা । পরো দিবা পর এনা পৃথিব্যেত্যাবতী মহিনা সম্ বভূব ॥ ৮ ॥ ৩ ॥ ইতিথ্যেদোক্তং দেবীসূক্তং সমাপ্তম্ ॥ \* ॥ \* ॥

৩০

( অথ অর্গলস্তোত্রম্ ) ॥ ৩ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ ॥ ৩ জয় ত্বং দেবি চামুণ্ডে জয় ভূতাপসারিণি । জয় সৰ্বগতে দেবি ।

বিকারজাতাং পরস্তাৎ বর্তমানা অসঙ্গোদাসীনকুটস্থব্রহ্মচৈতন্যরূপা ) ‘অহম্’ ‘মহিনা’ মহিমা এতাবতী ‘সদভূব’ ( এতচ্ছব্দেন উক্তং সৰ্বং পরামৃগতে ; এতৎ পরিমাণমস্যাঃ “বভূবেদেভাঃ পরিমাণে” ইতি বতুপ্, “আ সৰ্বনাম্নঃ” ইতি আত্ম ) সৰ্বজগদাত্মনা অহং সন্তুতান্মি । ( গাহনেতি মহচ্ছব্দাৎ ইমনিচি, “টে”রিত্তি তিলোপঃ, ছান্দসো মলোপঃ ) ॥ ৮ ॥ ইতি শ্রীসায়ণাচার্য্যকৃতং দেবীসূক্তভাষ্যং সমাপ্তম্ ।

(১)

বিধাতা ব্রহ্মা, তত্ত্ব বরদা; তৎসংসোধনে। (২) দ্বিযঃ শজন, জতি নাশয়। (৩) অচিন্ত্যরূপম্ অতিশয়েন অচিন্ত্যং চারিতং যজ্ঞাং, যদা কালরাত্রি নমোহস্ত তে ॥ জয়ন্তী মঙ্গলা কালী ভদ্রকালী কপালিনী। দুর্গা শিবা ক্ষমা ধাত্রী স্বাহা স্বধা নমোহস্ত তে ॥

মধুকৈটভবিধ্বংসি বিধাতৃত্বরদে (১) নমঃ। রূপং দেহি জয়ং দেহি দ্বিযো জহি (২) ॥ মহিষাসুর-নির্গাশি বিধাত্রি বরদে নমঃ। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ ধূত্নেনেত্রবধে দেবি ধর্ম্মকারণদায়িনি। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ রক্তবীজবধে দেবি চণ্ড-মুণ্ড-বিনাশিনি। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ নিগুন্তগুন্তনির্গাশি ত্রৈলোক্যগুণভেদে নমঃ। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ বিন্দিতাজিগ্ম যুগে দেবি সর্ব্বশৌভাগ্যদায়িনি। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ অচিন্ত্যরূপচরিতে (৩) সর্ব্বশক্রবিনাশিনি। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ সর্ব্বদা ভক্ত্য চাপর্ণে ছুরিতাপাহে। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ স্তবজ্যে (৪) ভক্তিপূর্ব্বং ত্বাং চণ্ডকে ব্যাধিনাশিনি। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥

সচিন্ত্যং রূপং চরিতঞ্চ যজ্ঞাঃ। (৪) নতভ্যঃ গুণতেভ্যঃ জনেভ্যঃ রূপং দেহি ইতি সম্বন্ধঃ। (৫) স্বাং জবন্ত্যঃ জনেভ্যঃ রূপং দেহীতি সম্বন্ধঃ।

এই মন্ত্রের প্রত্যেক পদেই দেবীর নাম আছে।



১১। ইন্দ্রাগীপতিঃ ইন্দ্রঃ, তেন সস্তাবেন (ভক্ত্য) পূজিত। (১২) ভক্তজনেভ্যঃ উদ্ধায়ম্ অনর্গলং যথা স্তাৎ তথা দত্তঃ আনন্দোদয়ঃ যথা সা। (১৩) দুর্গস্য (দুর্গমস্য) সংসারসাগরস্য ভারিণি (হে নিস্তারিণি); হে অচলোদ্ভবে (গিরিস্থভে)। ০। অর্গলং হৃৎকা ইতি খ্যাতম্, তদিব দেবীমাহাভ্যানিরোৎকর্ষমিদং স্তোত্রম্।

যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ ইন্দ্রাগীপতিসম্ভাব-পূজিতে (১১) পরমেশ্বর। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ দেবি ভক্তজনোদ্দায়-দত্তানন্দোদয়েহৃষিকে (১২)। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ ভারিণি দুর্গসংসার-সাগরস্যচলোদ্ভবে দেহি মনোবৃত্ত্যানুসারিণীম্। রূপং দেহি জয়ং দেহি যশো দেহি দ্বিযো জহি ॥ ইদং স্তোত্রং পঠিত্বা তু মহাস্তোত্রং পঠেন্নরঃ। সপ্তশলীং সমারাদ্য বরমাপ্নোতি তুল্ভম্ ॥ ওঁ ॥ ইত্যর্গলস্তোত্রং সমাপ্তম্ ॥ \* ॥

(অথ কীলকস্তবঃ) ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ওঁ বিশুদ্ধজ্ঞানদেহায় ত্রিবেদী-দিব্যচক্ষুষে। জ্যেষ্ঠোজ্জ্বলিত-নিমিত্তায় নমঃ সোমাদ্বিধারিণে (১) ॥ সর্বমেতদ্ বিজানীয়া-নাত্মনাগামপি কীলকম্। সোহপি ক্ষেম-অবাপ্নোতি সততং জপাত্ত- (২) বিশুদ্ধং জ্ঞানমেব দেহঃ (মুক্তিঃ) যস্য তস্মৈ। ত্রিবেদী (বেদত্রয়ম্) এব দিব্য চক্ষুযস্য তস্মৈ। এবমুতায় সোমাদ্বিধারিণে (চন্দ্রশেখরায় মহাদেবাঃ) নমঃ।

(২) জপাতঃপরঃ জপপরায়ণঃ । ( ৩ ) দেবীমাহাত্ম্যপাঠেন লোকে (জগতি) সমগ্রানি কার্য্যানি সেংস্তুস্তি (সিদ্ধানি ভবিষ্যন্তীতি) ইমাং শকাং কৃত্বা হরঃ নিমন্ত্রয়ামাস ( বিচারয়ামাস ) । ততঃ সঃ তৎ সৰ্বমেব ইদং শুভং চাণ্ডকায়াঃ স্তোত্রং গুহ্যম্ ( অনেন কীলকেন গোপনায়ং ) চকার । (৪) কীলকং পঠিত্বা যো দেবীমাহাত্ম্যং পঠেৎ,

পরঃ (২) ॥ সিধ্যন্ত্যচ্যুটিনাদীন কৰ্ম্মানি সকলান্যপি । এতেন স্তবতাং দেবাং স্তোত্রৈরুদ্দেশেন ভক্তিত্তঃ ॥ ন মন্ত্রো নৌষধং তস্য ন কিঞ্চিদপি বিদ্যতে । বিনা জপেন সিধ্যেতু সৰ্ব্ব-মুচ্চাটিনাদিকম্ ॥ সমগ্রাণ্যপি সেংস্যন্তি লোকে শকাংমিমাং হরঃ । কৃত্বা নিমন্ত্রয়ামাস সৰ্ব্বমেবমিদং শুভম্ । স্তোত্রং বৈ চণ্ডিকায়াস্তু তচ্চ গুহ্যং চকার সঃ (৩) ॥ স প্রাপ্নোতি সুপুণ্যেন তাং যথাবল্লিমন্ত্রিণাম্ । সোহপি ক্ষেম-মবাপ্নোতি সৰ্ব্বমেব ন সংশয়ঃ ( ৪ ) ॥ কৃষ্ণায়াং বা চতুর্দশ্যা-মক্ৰম্যাং বা সমাহিতঃ । দদাতি প্রতিগৃহ্নাতি নায়েথৈবা প্রসীদতি ( ৫ ) ॥ ইথংরূপেণ কীলেন মহাদেবেন কীলিতম্ ( ৬ ) ॥ যো নিষ্কীলাং বিধায়ৈনাং চণ্ডীং জপতি নিত্যশঃ । স সিদ্ধঃ স গণঃ সোহথ গন্ধৰ্বো জায়তে ধ্রুবম্ ॥ ন চৈবাপটিবং

সঃ যথাবৎ নিমন্ত্রিণাং ( যথাবিধি ধ্যানপরায়ণানাং ) সুপুণেন ( তাদৃশং পুণ্যং লব্ধ্বা ) ইত্যর্থঃ ) তাং ( দেবাং ) প্রাপ্নোতি । ( ৫ ) কৃষ্ণায়াং বা ইত্যন্য শুক্লায়াং বা ইতি শ্বেষঃ । দদাতি প্রতিগৃহ্নাতি—দেবীমাহাত্ম্যম্ অত্রস্য শ্রবণপুটে দদ্যাৎ ( পঠেৎ ইত্যর্থঃ ), পাঠকাং প্রতিগৃহ্নীয়াৎ ( শৃণুয়াৎ ইত্যর্থঃ ) । ( ৬ ) কীলিতম্—কীলকং দত্তম্

(ভাবে জ্ঞঃ) । (৭) মূর্তে—মরণে মতি (ভাবে জ্ঞঃ) । (৮) এবং জ্ঞান্না, প্রারভা (কৌলকস্তবম আদৌ পঠিহা) চণ্ডোপাঃ কুসীত । তথা অকুদানো বিনষ্টিতি । (৯) ভস্যা দেব্যাঃ প্রসাদেন । তেন হেতুনা ইদং কৌলকস্তোত্রং জপাং (পাঠম্) । (১০) শনৈঃ—অক্রতম্, স্থপ্তষ্টমিতার্থঃ । সমগ্রা (সম্পূর্ণা) উচ্চকৈঃ (মহতী) সম্পাত্তঃ ভবতি । তং

তস্য ভয়ং কাপি ন জায়তে । নাপমুহুতুবর্ণাঃ যাতি যুতে চ মোক্ষমাগ্নুয়াং (৭) ॥ জ্ঞান্না প্রারভ্য কুর্বাতি হুংবীর্ণাণে বিনষ্টিতি । ততো জ্ঞান্নৈব সম্পূর্ণ-মিদং প্রারভ্যতে বৃধৈঃ (৮) ॥ সৌভাগ্যাদি চ বং কিঞ্চিদৃশ্যতে ললনাজনে । তং সৰ্বং তং প্রসাদেন (৯) তেন জপ্যমিদং সদা ॥ শনৈস্ত জপ্যমানেহস্মিন্ স্তোত্রে সম্পাতিরুচ্চকৈঃ । ভবত্যেব সমগ্রাপি ততঃ প্রারভ্যমেব তং (১০) ॥ ঐধর্য্যং তৎপ্রসাদেন সৌভাগ্যারোগ্যমেব চ । শক্রহানিঃ পরো মোক্ষঃ স্তু যতে সা ন কিং জনৈঃ ॥ চাণ্ডকাং হৃদয়েনাপি যঃ স্মরেৎ সততং নরঃ । হৃদ্যাং কাম-মবান্নোতি হৃদি দেবী সদা বসেৎ ॥ অগ্রতোহমুং মহাদেব-কৃতং কৌলক-বার্ণম্ । নিকীলঞ্চ তথা কৃত্বা পঠিতব্যং সমাহিতৈঃ (১১) ॥ ওঁ ॥ ইতি কৌলকস্তবঃ সমাপ্তঃ ॥ \* ॥ \* ॥

প্রারভ্যম্ (আদৌ পাঠম্) । (১১) কৌলকম্ (প্রাবেণদ্বাররোধকস্য পদার্থবিশেষজ্ঞ) বার্ণম্ (উদ্ঘাটকং) মহাদেবকৃতম্ অমুং স্তবম্ অগ্রতঃ কৃত্বা (জানৌ পঠিহা) । তথা (তেন প্রকারেণ) দেবীস্তোত্রং নিকীলঞ্চ কৃত্বা পঠিতব্যম্ । ০ । কৌলকং চাবি ইতি খ্যাতম্, তদবি দেবীমাহাত্ম্যানিবোধকেহয়ং স্তবঃ ।



( ଅଥ କବଚମ୍ ) ॥ ମାର୍କଂ ଶ୍ରେୟ ଉବାଚ ॥ ଯଦ୍ ଶୁଭଂ ପରମଂ ଲୋକେ ସର୍ବରକ୍ଷାକରଂ ନୃଣାମ୍ । ଧନ କଞ୍ଚୁଚିଦାଧ୍ୟାତଂ ତନ୍ମୋ କ୍ରାହି  
 ପିତାମହ ॥ ବ୍ରହ୍ମୋବାଚ ॥ ଅସ୍ତି ଶୁଭତମଂ ବିପ୍ର ସର୍ବବୃତ୍ତୋପକାରକମ୍ । ଦେବ୍ୟାସ୍ତୁ କବଚଂ ପୁଣ୍ୟଂ ତତ୍ତୁ ଶୁଭମହାମୁନେ ॥ ପ୍ରଥମଂ  
 ଶୈଳପୁତ୍ରୀତି ଦ୍ଵିତୀୟଂ ବ୍ରହ୍ମଚାରିଣୀ । ତୃତୀୟଂ ଚତୁର୍ଥାଂ କୁମ୍ଭାଂଶୁତି ଚତୁର୍ଥକମ୍ ॥ ପଞ୍ଚମଂ କ୍ଳନ୍ଦମାତେତି ଷଷ୍ଠଂ କାତ୍ୟାୟନୀ ତଥା ।  
 ସପ୍ତମଂ କାଳରାତ୍ରୀତି ମହାଗୌରୀତି ଚାକ୍ଷସମ୍ ॥ ନବମଂ ସିଂହାଦିତ୍ରୀତି ନବଦୁର୍ଗଂ ପ୍ରକୀର୍ତ୍ତିତାଃ ॥ ଉକ୍ତାନ୍ତେତାନି ନାମାନି ବ୍ରହ୍ମନୈବ  
 ମହାତ୍ମନା ॥ ଅଗ୍ନିନା ଦହମାନାସ୍ତୁ ଶକ୍ତମଧ୍ୟଗତା ରଣେ । ବିଷମେ ଦୁର୍ଗମେ ଚୈବ ଭୟାଭିଃ ଶରଣଂ ଗତାଃ ॥ ନ ତେଷାଂ ଜାୟତେକିଞ୍ଚି-  
 ଦଞ୍ଚୁଭଂ ରଣସଙ୍କଟେ । ଆପଦଂ ନ ଚ ପଞ୍ଚାନ୍ତି ଶ୍ଳୋକଦୁଃଖଭୟଞ୍ଜରାମ୍ ॥ ଯେଷ୍ଠ ଉକ୍ତା ନିତ୍ୟଂ ତେଷାମୁଦ୍ଧିଃ ପ୍ରାଜାୟତେ ॥  
 ପ୍ରେତସଂସ୍ଥା ଚ ଚାୟୁଷ୍ଠା ବାରାହୀ ମହିଷାସନା । ଶ୍ରୀନନ୍ଦୀ ଗଜସମାରାଜା ବୈଷ୍ଣବୀ ଗରୁଡ଼ାସନା । ନାରସିଂହୀ ମହାବୀର୍ଯ୍ୟା  
 ଶିବଦୂତୀ ମହାବଳା । ମାହେଶ୍ଵରୀ ବ୍ରହ୍ମାରାଜା କୋମାରୀ ଶିଖିବାହନା । ବ୍ରାହ୍ମା ହଂସ-ସମାରାଜା ସର୍ବାଭିରଣଭୂଷିତା । ଲକ୍ଷ୍ମୀଃ  
 ପଦ୍ମାସନା ଦେବୀ ପଦ୍ମହସ୍ତା • ହରିପ୍ରିୟା । ସ୍ଵେତରୂପଧରା ଦେବୀ ଈଶ୍ଵରୀ ସ୍ଵଧାହନା ॥ ଇତ୍ୟେତା ମାତରଃ ସର୍ବଃ ସର୍ବଯୋଗ-



মালাধরী ললাটে চ ভ্রুবোর্মধ্যে যশস্বিনী ॥ নেত্রয়োশ্চিহ্ননেত্র। চ যমঘণ্ট। তু পার্শ্বকে । শঙ্কিনী চক্ষুযোর্মধ্যে জ্যোত্ৰয়োদ্বির  
বাসিনী ॥ কপোলৌ কালিকা রক্ষেৎ কর্ণমূলে চ শাক্তরী । নাসিকায়ঃ স্তূপক্কা চ উভরৌষ্ঠে চ চর্চিকা । অধরে চাম্বুতা চৈব  
জিহ্বায়াক্ষঃ সরস্বতী ॥ দন্তান্ রক্ষতু কোমারী কর্ণমধ্যে তু চণ্ডিকা । ঘণ্টিকঃ ( ৬ ) চিত্রঘণ্ট। চ মহামায়া চ তালুকে ( ৭ ) ॥  
কামাখ্যা চিবুকং রক্ষেদু বাচং মে সর্বমঙ্গলা । গ্রীবায়াং ভদ্রকালী চ পৃষ্ঠবংশে ধনুর্ধরী ( ৮ ) ॥ নোলগ্রীবা বাহুক্ষেণে নলিকং  
নলকুবরী । খড়্গধারিণ্যুভৌ ক্ষকৌ বাহু মে বজ্রধারিনী । হস্তয়োদগুণী রক্ষে-দক্ষিক। চাক্সলীস্তথা । নথান্ সুরেশ্বরী রক্ষেৎ  
কক্ষে রক্ষেন্নরেশ্বরী ॥ স্তনৌ রক্ষেন্নহাদেবী মনঃ শোকবিনাশিনী । হৃদয়ে ললিতা দেবী উদরে শূলধারিনী । নাভৌ চ কামিনী  
রক্ষেদু গুহং গুহেশ্বরী তথা । মেট্রং রক্ষতু ছুর্গক। পায়ুং মে গুহবাসিনী ॥ কট্যাং ভগবতী রক্ষে-দূরু মে ঘনবাহন। ।  
জঙ্ঘে মহাবলা রক্ষে-জ্ঞানু মাধব-নায়িক। ॥ গুলফয়োনিরসিংহী চ পাদপৃষ্ঠে চ কোষিকী । পাদাঙ্গুলীঃ ক্রীধরী চ তলং  
পাতাল-বাসিনী । নথান্ দংষ্ট্রীকরালী চ কেশান্মো উদ্ধাকেশিনী ॥ রোমকুপাণি কোমারী হুচং যোগেশ্বরী তথা । রক্তং  
( ৬ ) ঘণ্টিকা আলঙ্জিত্ ইতি খ্যাত। ( ৭ ) তালুকে তালুনি ( স্বার্থে কঃ, অবচ্ছেদে সপ্তমী ), মহামায়া তালুকে মাং রক্ষেৎ উত্থার্থঃ । ( ৮ ) পৃষ্ঠবংশে

মাংসং বসাং মজ্জা-মস্থি মেদশ্চ পার্শ্বতী ॥ অন্ত্রাণি কালরাত্রী চ পিত্তঞ্চ নৃকুটেশ্বরী । পদ্মাবতী পদ্মাকোষে কফে চূড়ামণি-  
 স্তুথা (৯) । জ্বালামুখী নখজ্বালা-মভেদ্যা সর্বসন্ধিযু ॥ শুক্রং ব্রহ্মাণী মে রক্ষে-চ্ছায়াং ছত্রেশ্বরী তথা । অঙ্কুরং মনো বুদ্ধিং  
 রক্ষেন্নে ধর্মধারিণী ॥ প্রাণাপানৌ তথা ব্যান-মুদানঞ্চ সগানকম্ । বজ্রহস্তা তু মে রক্ষেৎ প্রাণান্ কল্যাণগোভনা ( ১০ ) ॥  
 রসে রূপে চ গন্ধে চ শব্দে স্পর্শে চ যোগিনী । সত্ত্বং রজস্তমৈশ্চৈব রক্ষেন্নারায়ণী সদা ॥ আর্য রক্ষতু বারাহী ধর্ম্যং রক্ষতু  
 বৈষ্ণবী । যশঃ কীৰ্ত্তিঞ্চ লক্ষ্মীঞ্চ সদা রক্ষতু বৈষ্ণবা ॥ গোত্রমিত্রাণী মে রক্ষেৎ পশূন্ রক্ষেচ্চ চাণ্ডক । পুত্রানি রক্ষ-  
 ন্নাহালক্ষ্মী-ভার্য্যাং রক্ষতু ভৈরবী ॥ ধনেশ্বরী ধনং রক্ষেৎ কৌমারী কন্যাকাং তথা । মার্গং ক্ষেপকরী রক্ষেদ্ বিজয়।  
 সর্বতঃ স্থিতা ॥ রক্ষাহীনঞ্চ যৎ স্থানং বর্জিতং কবচেন তু । তৎ সর্বং রক্ষ মে দেবী দুর্গে দুর্গাপহারিণি ॥ সর্ব-  
 রক্ষাকরং পুণ্যং কবচং সর্বদা জপেৎ । ইদং রহস্যং বিপ্রায়ে ভক্ত্যা তব মর্যেদিতম্ ॥ দেব্যাস্ত কবচেনৈব-ধরক্ষিততনুঃ  
 স্মৃধীঃ । পাদমেকং ন গচ্ছেতু যদীচ্ছেচ্ছ ভ্রমাত্মনঃ ॥ কবচেনারিতো নিত্যং যত্র যত্রাবতিষ্ঠতে । তত্র তত্রার্থলাভঃ স্যাদ্  
 মেবদগ্ধে । ( ৯ ) বসা-মজ্জা-মেদাংসি যথাক্রমং রক্ত-মাংসাস্থিসারাঃ । অস্থ্যিণি ( অঁতড়ি ) । পদ্মাকোষঃ ( ফুসফুস ) । ( ১০ ) প্রাণান্ জীবনম্ ।

- ( ১১ ) - লীলয়া আনায়সৈন ( ১২ ) অবিকলঃ অবিকৃতঃ। ( ১৩ ) অযতঃ শুচিঃ। ( ১৪ ) সাগ্রঃ সম্পূর্ণঃ ( “শতায়ুর্বে পুরুষঃ” ইতি শ্রুতিঃ )।  
 বিজয়ঃ সার্বকালিকঃ ॥ যং যং চিন্তয়তে কামং তং ত-মাপ্নোতি লীলয়া ( ১১ )। পরমৈশ্বর্য্য-মতুলং প্রাপ্নোত্যবিকলঃ পুমান্  
 ( ১২ ) ॥ নির্ভয়ো জায়তে মর্ত্যঃ সংগ্রামেষু পরাজিতঃ। ত্রৈলোক্যে চ ভবেৎ পূজ্যঃ কবচেনারুতঃ পুমান্ ॥ ইদং তু  
 দেব্যঃ কবচং দেবানামপি দুর্লভম্। যঃ পঠেৎ প্রযতো নিত্যং ত্রিসংখ্যং শ্রদ্ধয়াষিতঃ ( ১৩ )। দেবী বশ্যা ভবেত্তস্য  
 ত্রৈলোক্যে চাপরাজিতঃ। জীবেদ্ বর্ষশতং সাগ্র-মপমৃত্যুবিবর্জিতঃ ( ১৪ ) ॥ নশ্যন্তি ব্যাধয়ঃ সর্বে লুতা-বিস্ফটিকাদয়ঃ  
 ( ১৫ )। শ্বাবরং জঙ্গমং বাপি কৃত্রিমং বাপি বদ্বিষম্ ॥ আভিচারানি সর্বাণি মন্ত্রযন্ত্রানি তুহলে। ভূচরাঃ খেচরৈশ্চ  
 কুলজাশ্চোপদেশজাঃ। সহজাঃ কুলিক। নাগা ডাকিনী শাকিনী তথা ( ১৬ )। অন্তরাঙ্গচরা যোরা ডাকিগুচ্চ গ্রহাঃ।  
 গ্রহভূত-পিশাচাশ্চ যক্ষ-গন্ধর্ব্ব-রাক্ষসাঃ। ব্রহ্মরাক্ষস-বেতলাঃ কুম্ভাণ্ডা ভৈরবাদয়ঃ। নশ্যন্তি দর্শনান্তস্ত কবচেনা-  
 যতো হি যঃ ॥ যানোন্নতির্ভবেদ্রাজ্ঞ-স্তেজোবুদ্ধিঃ পরা ভবেৎ। যশোবুদ্ধির্ভবেৎ পুংসাং কীর্তির্দ্বিগুণে জায়তে ॥  
 ( ১৫ ) লুতাবিস্ফোটকম্ উর্ণনাভাকৃতি বিস্ফোটকম্। ( ১৬ ) ভূচরা ইত্যাদীনি নাগা ইত্যস্ত বিশেষণানি। ভূচরাদয়ঃ সর্পবিশেষাঃ।

(১৭) ভূঃ (পৃথিবী) যাবৎ শৈলবনকাননঃ স্বকীয়ং মণ্ডলং ধত্তে । বনম্ অনিবিড়ম্, কাননং নিবিড়ং বনম্ । (১৮) তত্র—তস্মিন্ পরমে স্থানে :

‘তস্মাজ্জপেৎ সদা ভক্তঃ কবচং কামদং মূনে ॥ জপেৎ সপ্তশতীং চণ্ডীং কৃষ্ণা কবচ-মাদিতঃ । নির্যস্মৈ ন ভবেৎ সিদ্ধি-  
শ্চণ্ডীজপ-সমুদ্ভবা ॥ যাবদ্বৃক্ষমণ্ডলং ধত্তে শৈলবনকাননম্ (১৭) । তাবত্তিষ্ঠতি মেদিয়াং জপকৰ্ত্ত্বিহি সন্ততিঃ ॥ দেহান্তে  
পরমং স্থানং যৎ স্মরৈরপি ছল্লভম্ । সংপ্রাপ্নোতি মনুষ্যোহসৌ মহায়াত্রাসাদতঃ ॥ তত্র (১৮) পচহতি ভক্তোহসৌ  
পুনরাগমনং ন হি (১৯) । লভতে পরমং স্থানং শিবেন সমতাং ব্রজেৎ (২০) ॥ ওঁ ॥ ইতি শ্রীহরিহরব্রহ্ম-বিরচিতং দেবাঃ  
কবচং সমাপ্তম্ ॥ \* ॥

ওঁ নারায়ণায় নমঃ, ওঁ নরোত্তমায় নরায় নমঃ, ওঁ দেবৈ সৰস্বতৈ নমঃ, ওঁ বেদব্যাসায় নমঃ ॥ ওঁ ব্রহ্মাণে নমঃ । ১৯  
ব্রাহ্মণেভ্যো নমঃ । ওঁ তৎসৎ ॥

(১৯) পুনরাগমনং—পুনর্জন্ম ।

(২০) ব্রজেৎ—প্রাপুয়াৎ ।

কবচং বর্ষা, তদিব সর্গাদ্রবক্ষ্যকর্মিদিগি কার্যঃ :

‘নারায়ণং নমস্তুভ্যেতি । নীলকণ্ঠীক ।’—নরঃ অভিভাবচ্ছিন্নং চৈতন্ত্যং জীবঃ, তেন বিষয়ীকৃত্তে অনবচ্ছিন্নৈঃ চৈতন্ত্যরূপে ব্রহ্মণি—ভুক্তৌ রজতবৎ—কল্লিতং চরাচরম্

অপশঙ্গবাচ্যং নারম্, তদেব অয়নং প্রবেশস্থানং যন্ত স নারায়ণঃ, স্বস্মিন্ জীবকল্লিতস্ত প্রপঞ্চস্ত সত্ত্বাফুর্ভিপ্রদেহেন কারণীভূত ইত্যর্থঃ (যথোক্তম্—“আপো নারা ইতি প্রোক্ত আপো বৈ নরস্বনবঃ । অয়নং তস্ত তাঃ পূৰ্ণং তেন নারায়ণঃ স্মৃতঃ” ইতি) । তং ‘নারায়ণং নমস্তুতা’, তথা ‘নবম্’ উক্তরূপং নমস্তুত্য । এনং বিশিষ্ট ‘নরোত্তম’মিতি । জীবো হি চেতনস্বেন জড়বর্গাদুৎকৃষ্টঃ, তত উৎকৃষ্টতরঃ কারণাত্মা নারায়ণঃ, ততোহপুংকৃষ্টতমং নিকৃপাদি চৈতন্ত্যং “গতাং জ্ঞানমনন্তং ব্রহ্ম”—

—

প্রথমচরিতস্ত ব্রহ্ম ঋষি,-মহাকালো দেবতা, গায়ত্রী চহন্দো, নন্দা শক্তী, রক্তদন্তিকা বীজ,-মণিস্তম্বং, মহাকালী-

প্রীত্যর্থং জপে বিনিয়োগঃ । মধ্যমচরিতস্ত বিষ্ণুর্ঋষি,-মহালক্ষ্মীদেবতা, উষঙ্ক ছন্দঃ, শাকন্তরী শক্তি,-দুর্গা বীজং,

“বিজ্ঞানমানন্দং ব্রহ্ম” ইত্যাদিষ্কতিষু প্রসিদ্ধম্, তদেব নরস্ত নিরস্তাবিজস্ত জীবস্ত নিম্প্রপঞ্চং পারমার্থিকং রূপমিতি যুক্তং তদ্রোত্তমম্ববিশেষণম্ ( যথোক্তং—“পিণ্ড-ব্রহ্মাণেনেতৃত্বান্নরৌ জীবেশ্বর্যাবুভৌ । তয়োশ্চ নয়নাচ্ছুকং ব্রহ্মাপি নর উচ্যতে ॥ নরজ্ঞানামপাং কার্ষাং নারং ব্রহ্মাণ্ডমিযাতে । তদ্ যন্ত বসাতস্থানং তেন নারায়ণো বিভূঃ ॥ স্বাবিজ্ঞাস্থষ্টপিণ্ডেন তাদাত্মাং যো গতো নরঃ । স জীবঃ স পরং ব্রহ্ম নরোত্তমপদাভিধম্ ॥ তদে তিকং গিরং নস্তা ততো ব্যাপ্তশ্চৈষেব সন্ । সংসারজয়িনং

ব্রহ্মং জয়নামানমীরয়েৎ” ইতি ) । ‘দেবীং’ নরনারায়ণনরোত্তমতত্ত্বপ্রজ্ঞোতিনৌং ‘সরস্বতীক’ নমস্তুত্য ‘এব’ ‘ততঃ’ ব্যাপ্তঃ তৈবেব সরস্বত্যা পরমকারিণীক্যা জ্ঞনবোধায়

আব্রিঃ সন্ 'জয়' ( "জয়ো নামেভিহাসোহয়"মিতি ভারতোক্তেঃ জয়সংজ্ঞং ভারতাপ্যামিতিহাসং বা, "অবৈদশ পূৰ্ণাণি রাশস্ত চবিভং তথা । কার্যং বেদং পঞ্চ-  
মঞ্চ যন্নাভারতং বিদুঃ । তথৈব বিশ্বব্রহ্মাশ্চ শিবশ্মাশ্চ শাস্বতাঃ । জয়েতি নাম তেষাঞ্চ প্রবদন্তু মনোযিণঃ" ইতি ভবিষ্যচনাম পুরাণাদিকং বা, "চতুর্ণাং  
পুরুষাণামপি হেতৌ জয়োহপিপ্তয়া"মিতি কোষাৎ অণ্ডং বা সৰ্বপুরুষার্থপ্রতিপাদকং গ্রন্থং পুরীককৃৎভাষাদিক্রপম্ ) 'উদীরয়েৎ' উচ্চারয়েৎ ( অত্র লিঙ।  
মঙ্গলাচরণস্ত গ্রন্থপাঠেইপ আবজ্জকত্বং দর্শয়তা রচনারস্তে সুতরাং তৎ দর্শিতম্ ) ॥ \* ॥ কাশিরামবাচস্পতিটীকা ।--ওঁ নাবাস্যায় নম ইত্যেকো নমস্কাৰঃ । নরো-  
বায়ুস্তত্ত্বং, মহালক্ষ্মীপ্ৰীত্যর্থং জপে বিনিয়োগঃ । উত্তরচরিতস্ত রুদ্র ঋষিঃ, সরস্বতী দেবতা, অনুষ্ঠ পু ছুন্দো, ভীমা শক্তি,-

ভ্রামরী বীজং, সূর্য্যস্তত্ত্বং, সরস্বতীপ্ৰীত্যর্থং জপে বিনিয়োগঃ ॥ \* ॥

ভ্রমমিত্যস্ত নরবিশেষণদ্বাং ওঁ নরোত্তমায় নরায় নম ইত্যেকঃ । সরস্বতীনদীব্যাবৃত্তার্থং দেবোক্তি বিশেষণম্, সত্তঃ ওঁ দেবী সরস্বতী নম ইত্যেকঃ । চৈতন্যভা-  
চকারেণ ব্যাসসমুচ্চয়াং ওঁ ব্যাসায় নমঃ ইত্যেকঃ । এবং নমস্কারচতুষ্টয়ং কৃত্বা, "ওঁ তং সদিতি নির্দেশো ব্রহ্মবৈশ্ববঃ স্মৃতঃ" ইত্যাদিশ্রীভগবদ্গীতাস্থানো ওঁ  
তৎ সদিহু্যচ্চাৰ্য্য, পুরাণপ্রণবদ্বেন "ওঁ নারায়ণং নমস্কৃত্য নরকৈব নরোত্তমং । দেবীং সরস্বতীকৈব ততো জয়মুদীরয়ে" দিতি পঠিত্বা ; "ব্রহ্ম নঞ্চ তিবিভক্তং" তাদি-  
বচনাং, "প্রণবঞ্চাদৌ জপ্ত। চে" ত্যাদিবচনাচ্চ নূনতাত্তিরিক্ত্বাদিপরিহারার্থং প্রণবসমুচ্চাৰ্য্য, প্রকৃতং পাঠ্যং । বাসননমস্কারানন্তরং শিষ্টাচারং ওঁ ব্রহ্মণে নমঃ, ওঁ  
ব্রাহ্মণেভ্যো নম ইতি নমস্কারদ্বয়ং কুর্য্যাৎ । ( দেবীং সরস্বতীং ব্যাসমিতি ভাগবতীয়স্মৃত্যেকৌ যঃ পাঠঃ, তস্ত ন পূৰ্ণাণপ্রণবসম্ ) ।



କ୍ରିଶ୍ନୋପାନିଷଦ୍‌ବିବିକ୍ତା ଚଣ୍ଡିକା ।—ଅର୍ଥେତନ୍ମାହାନ୍ୟାନ୍ତ୍ରାନ୍ତ୍ରାବିଧିମାହ ଋଦ୍ରାୟାମେ “ପର୍ଥେଦାରତ୍ୟା ସାବର୍ଣ୍ଣିଃ ସ୍ୱଧାତନୟ ଆଦିତଃ । ସମାପୟେତ୍ ତନ୍ମାତ୍ରେତା ସା ବର୍ଣ୍ଣିର୍ଭବିତା  
 ସନ୍ତଃ” ଇତି । ନୟେବମ୍‌ପକ୍ତେ ମାର୍କଣ୍ଡେୟ ଉବାଚେତ୍ୟନ୍ତ୍ର, ବିରାମେ ଚ ପୁଷ୍ପିକାୟାଃ (କ) ଏତନ୍ମାହାନ୍ୟାନ୍ତ୍ରଗର୍ତ୍ତବ୍ୟଂ ଯା ଭୂଃ ; ତଥାଚ ସତି “ତତଃ ସମ୍ପ୍ରାଣତାଂ ପର୍ଥେ” ଇତି  
 ବିଧିର୍ନିର୍ଦ୍ଦେଶନାଃ ସମ୍ପ୍ରାଣତାଂ ଏବ ପାଠୋ ଯୁଜ୍ୟାତେ, ନ ତୁ ଆଦାବନ୍ତେ ଚାନୟୋଃ । ଅବ୍ରୋଚାତେ । ସହସ୍ରନାମାଦୋ ଉପକ୍ରମ-କଳକ୍ଷତିବ୍ୟଂ ଅଙ୍ଗାଞ୍ଜିତରା ପାଠୋ ଗ୍ରାୟାଃ, ସାବର୍ଣ୍ଣି-

( ଅଥ ଶ୍ୱାୟାଦିନ୍ୟାସଃ ) ॥ (ଶିରସି) ଓ ବ୍ରହ୍ମାଣେ ଶ୍ୱାୟେ ନମଃ, ( ଯୁଧେ ) ଓ ପାରିତ୍ରୋ ଛନ୍ଦସେ ନମଃ, ( ହାଦି ) ଓ ମହାକାଲିନ୍ୟା ଦେବ-  
 ତାୟେ ନମଃ । ( ପୁନଃ ଶିରସି ) ଓ ବିଷ୍ଣବେ ଶ୍ୱାୟେ ନମଃ, ( ଯୁଧେ ) ଓ ଉଧିଃ ଛନ୍ଦସେ ନମଃ, ( ହାଦି ) ଓ ମହାଲକ୍ଷ୍ମିନ୍ୟା ଦେବତାୟେ  
 ନମଃ । ( ପୁନଃ ଶିରସି ) ଓ ଋଦ୍ରାୟ ଶ୍ୱାୟେ ନମଃ, ( ଯୁଧେ ) ଓ ଅନୁକ୍ତେ ଛନ୍ଦସେ ନମଃ, ( ହାଦି ) ଓ ସରସ୍ୱତୀୟେ ଦେବତାୟେ ନମଃ ॥ \* ॥

ଓ ନମଃ ଶିରସି ॥ \* ॥ ମାର୍କଣ୍ଡେୟ ଉବାଚ ॥ ଓ ॥ \* ॥ ସାବର୍ଣ୍ଣିଃ ସୂର୍ଯ୍ୟତନୟୋ ଯୋ ଯନ୍ତୁଃ କଥ୍ୟାତେହର୍ଘ୍ୟଃ । ନିଶାମୟ

ସିତ୍ୟାଦିନ୍ତୁ ମୁଖ୍ୟାଚାରଃ । ଅତଏବ ପଦ୍ମାତିକ୍ଳିପି “ସାବର୍ଣ୍ଣିଃ ସୂର୍ଯ୍ୟତନୟ ଇତ୍ୟାଦି ସାବର୍ଣ୍ଣିର୍ଭବିତା ଯନ୍ତୁର୍ଭିତାଃ ଦେବୀୟାହାନ୍ତ୍ରାୟ” ଇତି ଶିଳାପେ (ଖ) ଲିପ୍ୟତେ, ଦ୍ୱିତୀୟେ ଚ  
 “ଅସ୍ତରୀୟ ଶୁକ୍ରୋକ୍ରୋତଃ ନିତ୍ୟାଂ ଭାଗବତଂ ଧୃଗୁ” ଇତି ପଦ୍ମପୁରାଣୀନେନ ଶୁକ୍ରୋକ୍ରୋତ୍ୟାତ୍ରାସ୍ତବ ଭାଗବତହେତୁପି ଚନ୍ଦ୍ରଦେବେନ ପ୍ରଥମସ୍ତବ୍ଧେନେୟୋରାପି (ଗ) ଭାଗବତସ୍ତବିତି ।  
 ମାର୍କଣ୍ଡେୟ ଉବାଚ, କ୍ରୋଷ୍ଟୁ

ଶ୍ରେୟଃ ( ଭାଗୁରୀତି କ୍ରୋଷ୍ଟୁକେର୍ନାୟାନ୍ତରମ୍ ) ॥ ସାବର୍ଣ୍ଣିରୀତି । ଯୟା ଯଃ ଅଷ୍ଟମୋ ଯନ୍ତୁଃ କଥ୍ୟାତେ କଥ୍ୟାୟାତେ (ବର୍ତ୍ତମାନମାୟାପ୍ୟେ ନହି),

স সাবর্ণিঃ (সূর্যপত্ন্যাঃ সংজ্ঞায়াঃ সমানো বর্ণঃ অস্তা ইতি সর্বণ, তস্তা অপত্যং সাবর্ণিঃ (বাহুদিদ্বাং ইণ্)। অষ্টমো মন্তুঃ কিম্বদন্তঃ? সূর্য্যভাগঃ সবে: পুত্রঃ (এতেন সমুদ্রকন্যায়াঃ সর্বণায়াঃ অপত্যব্যাবৃতিঃ; সাবর্ণিরিতিপদেন সূর্য্যপত্ন্যাঃ সংজ্ঞায়াঃ অপত্যব্যাবৃতিঃ; অথবা বৈবস্বতঃসংবাদোঃ সর্বণেইয়মিতি সাবর্ণিঃ)। তত্বংপত্তিং তস্তা জন্ম (উৎপত্তে: ক্রিয়াত্বেন জীবণসম্ভবাং লক্ষণয়া তৎপ্রকাশকমাখ্যানং) মম মৎসকশাং নিশাময় সূণু (সংভাবায়ম্, অত্র পক্ষ্যাণে; যদ্বা শেষে যজী)। মম কিম্ব তস্তা? বিস্তরাং বিস্তরমুপগম্য (যবর্থে পক্ষগী) গদতঃ কথয়তঃ (অত্র নিশনয়েতি বক্তব্যে ছান্দোগ্যে। হুয়াভাবঃ; বিভাবিবানোদয় নিশাময় জানীহি জ্ঞানেন চক্ষুষা পশ্যেত্যাহ; শম লক্ষ আলোচনে ইত্যস্য রূপমিতি কেচিৎ; বস্তুতস্ত্ব এতৎ সর্বং ভাবাবিষয় এব যুক্তং, ন স্বর্ধপ্রয়োগে; তথাচ

তত্বংপত্তিং বিস্তরাদাদতো মম ॥ ১ ॥ মহামায়ানুভাবেন যথা মনন্তরাধিপঃ। ম বভুব মহাভাগঃ সাবর্ণিস্তময়ে

ভাবরতাচার্য্যাদ্যুতবচনানি “পদজ্ঞেন প্ৰতিনির্ধকঃ কৰ্ত্তবো। মূনিভাষিতে। অল্পস্বরগতঃপৰ্ণান্নাদ্রিয়ন্তেহত্র লক্ষণম্ ॥ যাতুজ্জহার মাহেশাচ্চাগো ব্যাক্ষণার্থাৎ তানি কিং পদরত্নানি সন্তি পার্ণনীগোপ্পদে ॥ ন দৃষ্টমিতি বৈয়াসে শব্দে মা সংশয়ঃ কুথাঃ। অজ্ঞেরজ্ঞাতিনিভ্যেং বক্তুঃ ন হি ন বিজ্ঞতে” (ঘ) ইতি, তস্মাদজ্ঞাতিনির্ধকো নিখলস্বাদশ্চাভিকপেক্ষিতঃ, এবমগ্রজ্ঞাপি)। গদনং গদঃ, মম গদতঃ মম বচনাদিতি বা ॥ ১ ॥ মদেহি। স সাবর্ণিঃ মহামায়ানুভাবেন মহামায়া প্রসাদেন সবেস্তুনয়ঃ সন্ যথা মনন্তরাধিপো বভুব, তথা নিশাময়েতি পূৰ্বেণ সম্বন্ধঃ (বভূবেতি ভাবিনি (ঙ) ভূতদ্বানোগঃ; বদা কারণে কৰ্ম্মস্বায়োগঃ, কারণং

মহামায়ায়াঃ প্রসাদঃ, স তু জাত এব। মনন্তরস্তু কিঞ্চিদধিক-দিব্যেকসপ্ততিয়ুগজুকঃ কালঃ। দুর্ঘটিটনাপটীয়সী মায়া, বিষয়বিন্দুদৃশপ্রতীতিসাধনং বা, সা চ পরমেশ্বরশক্তিঃ ভগবদ্রূপবিশেষঃ, যজুত্বং তৃতীয়স্কন্ধে “সাবা এতস্য সংদৃষ্টুঃ শক্তিঃ সদসদদ্বিত্বিকা। মায়া নাম যন্ত্রভাগ যয়েদং নিশ্চমে বিভূঃ” (চ) ইতি, শৈবগমে চ “অনন্দচিদম্বনঃ স্বামী প্রভুঃ প্রকৃতিরূপধ্বক্” ইতি; মহতী সর্বব্যাপিকা চার্সৌ মায়া চেতি মহামায়া; মাতি ঈশ্বরমপি বঙ্গীকরোক্তোতি মায়া। যদ্বা মীয়তে জায়তে পরমেশ্বরোহনয়তি মায়া।। স কৌদৃক্? মহাভাগঃ ভগানাম্ ঐশ্বর্যাদীনাং বৃন্দং ভাগং, মহৎ অসাধারণং ভাগং যন্ত্ৰ সঃ (“ঐশ্বর্যাস্ত্ৰ সমগ্রস্ত বীর্ঘ্যস্ত যশসঃ শ্রিয়ঃ। জ্ঞানৈবরাগ্যায়েচৈব যশ্নাং ভগ ইতীদৃনা” ইতি বিষ্ণুপুরাণম্ (ঈদৃনা আখ্যা); পূর্বস্মোকৈ অষ্টমো মনন্তরাধিপঃ সার্বর্গিনামা রবেঃ ॥ ২ ॥ স্মারোচিষেহন্তরে পূর্বং চৈত্রবংশ-সমুদ্ভবঃ। সুরথো নাম রাজাভূৎ সমস্তে ক্ষিত্তিমগুণে ॥ ৩ ॥ তন্ত্ৰ পালয়তঃ সূর্য্যতনয়ঃ ইত্যুক্তম্, ইহ তু তস্য রবিতনয়স্ব মনন্তরাধিপদে চ মহামায়াপ্রসাদ এব কারণমিতি ন পৌনরুক্তাম্) ॥ ২ ॥ ইতিহাসমবতারযতি স্মারোচিষ ইতি। স্মারোচিষো নাম দ্বিতীয়মনুঃ, তদধিকারাবচ্ছিন্নঃ কালঃ স্মারোচিষঃ (শেষে টণ্)। পূর্বং পূর্বস্মিন্ কালে স্মারোচিষে অন্তরে মনন্তরে সুরথো নাম রাজা অভূৎ। কুত্রেত্যাহ—সমস্তে সপ্তদ্বীপাবচ্ছিন্নে ক্ষিত্তিমগুণে (এতেন তস্য সার্কভৌমত্মমুক্তম্)। নতু কোহসৌ সুরথ ইত্যাহ চৈত্রবংশ-সমুদ্ভব ইতি। চৈত্রো নাম স্মারোচিষমোজর্জিষ্টপুত্রঃ তস্য বংশে সমুদ্ভবো যস্য ॥ ৩ ॥ তন্ত্ৰ মহামায়াপ্রসাদহেতুং রাজাচ্যুতিমাহ তস্মোতি। তন্ত্ৰ সুরথস্তা তুথা। তাদৃশা তুপাঃ শত্রুবো বভূবুঃ, যথা কোলাবিধংসিনঃ কোলা নাম তদীয়রাজধানী, তৎপ্রমথনশীলাঃ; যদ্বা কোলান্ শূকরান্ অবিধংসদিতুং ন পার্দিতুং ক্ষীকঃ

•যেহাং তে, যবনা ইত্যৰ্থ। নহু কিং তস্ত প্রজাদ্রোহাধর্মৈবং জাতম্ ? নেত্যাহ—সংযাক্ নীতিশাস্ত্রানুসারেণ প্রজাঃ পালয়তঃ। কাপিণ ৭ উবসান্ ধমপম্ভাঃ অসীনা-  
জাতিন্ পুত্রানিব ( ফেব্রজাদিব্যাবৃত্তার্থ-মৌরসপদম্ ) ॥ ৪ ॥ তস্মেতি । তস্য রাজঃ তৈঃ সহ যুদ্ধমভবৎ । কৌদৃশস্য ? অতিপ্রবলদণ্ডনঃ দণ্ডে। হস্ত্যশ্বাদিঃ  
অতিপ্রবলদণ্ডেহ স্যাস্ত্যতি ( ভূমি ইন্ ), অতএব কৰ্মধারয়াদপি ভবতি ( ছ ) ; যদা দণ্ডে। দমঃ, সৌম্যাস্ত্যতি দণ্ডে, অতিপ্রবলচামৌ দণ্ডৌ চোতি ; যদা  
অতিপ্রবলানপি দণ্ডযিছুঃ শীলঃ, যস্য স তস্য ॥ ৫ ॥ দৈবস্যা প্রতিহেতচ্ছদ্যাহ ন্যনৈরিতি । সং সুরণঃ ন্যনৈঃ আল্লাসাদিনুবপি তৈঃ কোলাহলবৎসি। তিঃ যদচ্ছ

সম্যক্ প্রজাঃ পুত্রানিবোরসান্ । বভুবুঃ শত্রবো ভূপাঃ কোলো-বিধংসিনস্তথা ॥৪॥ তস্মা তৈরভবদ্ যুদ্ধ-গতিপ্রাবল-দণ্ডিভিঃ

॥৫॥ ন্যূনৈরপি স তৈর্যুন্ধে কোলাবিধংসিভিজ্জিতঃ ॥ ৬ ॥ ততঃ স্বপুর-নারাতে নিজনেশাধিপোহভবৎ । আক্রান্তঃ মহাভাগ-শুস্তদা প্রবলারিভিঃ ॥ ৭ ॥ অমাত্যৈব গিতি-দু-ইষ্টে-দু-বলম্য দুরাভ্যভিঃ । কোষো ধলঞ্চাপহতঃ তত্রাপি

জিতঃ পরাভূতঃ ॥ ৬ ॥ তত ইতি । ততঃ পরাভবানন্তরং স সুরথঃ স্বপুরুষং নিজরাজধানীম্ অযাতঃ সন্ নিজদেশাধিপঃ মূলরাষ্ট্রাধিপঃ অভবৎ । তত্র নিন্দ-  
রাজোহপি স তৈঃ তদা প্রবসারিভিঃ তদানীং প্রবৈসর্কসবন্ধিঃ শক্রভিঃ আক্রান্তঃ অভিতুতপ্রায়ঃ কৃতঃ । স কীদৃক্ ? মহাভাগঃ ভক্তন্তে ইতি ভাগাঃ সামন্তদয়ঃ, নহাস্তঃ  
প্রচুরতরা ভাগা যস্য, যদ্বা পূর্বেবং (৪৮ পৃঃ ৩ পং) ॥ ৭ ॥ অমাত্যৈরिति । ততঃ তদাক্রমণানন্তরং, তস্মৈতি বা (সাক্ষিবৈভক্তিকবৃন্দসিঃ) তত্র অপুংসেহপি বলিভিঃ অমাত্যৈঃ

মঙ্গ্যাদিভিঃ কোষে ধনাপারঃ বলং হস্ত্যশ্বাদি, চকারাং রশ্চাদিকমপি অপহৃতম্ । কীদৃশস্ত ? দুর্কলস্ত বলরহিতস্ত । কীদৃশৈঃ ? দুষ্টৈঃ অশর্লবন্তিভিঃ, দুরাঅভিঃ লোভাপহৃতবুদ্ধিভিঃ ॥ ৮ ॥ ততঃ সর্কষাপহরণানন্তরং স ভূপতিঃ হত্যস্বাম্যঃ হত্যধিপত্যঃ সন্ হযম্ (অশ্বম্) আকুহু একাকী সজাতীয়সহায়রহিতঃ যুগয়াব্যাজেন যুগয়াচ্ছলেন গহনম্ অতিহুর্গমং বনং জগাম ( অলক্ষিতদ্বার্থং যুগয়াব্যাজঃ, তত্রাপি শক্রভয়াং গহনবনগমনমিতি ) ॥ ৯ ॥ স তত্রোতি । স সুরথঃ তত্র বনে মেধসঃ মেধোনাম্নো দিজবর্যস্য দ্বিজশ্রেষ্ঠস্য আশ্রমং তপোবনম্ অদ্রাক্ষ্যং দৃষ্টবান্ ( স্মেধস ইত্যৈস্ককদেশরহিতং নামেদম্, অগ্রথা অস্প্রাপ্যসম্ভবাদিত বিজা-  
শ্বপূরে ততঃ ॥ ৮ ॥ ততো যুগয়াব্যাজেন হত্যস্বাম্যঃ স ভূপতিঃ । একাকী হযমাকুহু জগাম গহনং বনম্ ॥ ৯ ॥ স তত্রোতি-  
মদ্রাক্ষী-দ্বিজবর্যস্য মেধসঃ । প্রশান্ত-শ্বাপদাকীর্ণং মুনিশিষ্যোপশোভিতম্ ॥ ১০ ॥ তস্মৈ কক্ষিৎ স কলিঞ্চ মুনিম্

—  
—  
—  
—

বিনোদঃ ; বস্তুতস্ত্ব এতদপ্রমাণং, ভর্কুরিত্যাদিবং (জ) অব্যুৎপন্নসংজ্ঞাশব্দোহয়ং, মেধুধাতোঃ স্রোদেরসিতি, অস্প্রপ্রত্যযান্তো বা) । কীদৃশমাজ্ঞানম্ ? প্রণালিস্থাপদাকীর্ণং প্রশান্তৈঃ পরস্পরহিংসারহিতৈঃ স্বাপদৈঃ ব্যাঘ্রাদিভিঃ আকীর্ণং ব্যাপ্তম্ (সিদ্ধান্তব্রহ্ম শব্দসমুদয়দ্বাং তত্রস্থানানাপি ব্রহ্মসুখসৌভাবেন হিংসাদাভাবঃ ; যদা প্রণাতাঃ প্রাপ্ত-  
জীবমুক্তাবস্থাঃ স্বাপদাঃ ব্যাঘ্রাদয়ঃ তৈঃ ( এতেন ভয়হিংসারহিতদ্বাং নিবাসসাদৃশ্যং দর্শিতম্ । পুনঃ কীদৃশম্ ? মুনিশিষ্যোপশোভিতং মুনেঃ মেধসঃ শিষ্যাঃ মুনিশিষ্যাঃ  
তৈঃ, যদা মুনয়ো মননশীলাঃ বিজাত্যাসানিরতাঃ শিষ্যাঃ তৈঃ উপশোভিতম্ ॥ ১০ ॥ তস্মৈ কক্ষিৎ । স সুরথঃ তেন মুনিম্ সৎকৃতঃ সম্মানিতঃ পাজাদিভিঃ কৃত্যতিথো। বা। সন্

তস্মিন্ আশ্রমে কক্ষিৎ কালং ব্যাপ্য তসৌ স্থিতবান্ । হে যুনিবর ভাগুরে , যদ্বা যুনিবরস্য নেবসঃ আশ্রমে । কিং কুর্কণ ? ইতপ্তেতপ্তশ্চ নানাস্থানেষু বিচরন্ ( সত্যং চিন্তাবাদুলচিত্তস্য ) একত্র নিবাসাসম্ভবাৎ ॥ ১১ ॥ সোচিস্তয়দ্রিতি । স স্বরথঃ তদা তস্মিন্ খ্যালে তত্রাশ্রমে অচিস্তয়ং চিত্তাৎ কঃবান্ । তত্র হেতুঃ যতো মমাহুস যমেত্ৰ্যভিগানেন আকৃষ্টা বনিকৃতা চেতনা বিবেকবতী বুদ্ধিৰ্যস্য ( অশকীয়ে স্বকীয়ভিমানো নন্দম্ ) ॥ ১২ ॥ চিন্তামেবাহ মৎপট্টকায়ান্তে সাক্ষিতুভিঃ । ইতি বিখ্যাত ( অব্যয়ানাং নানার্থবাৎ ), বদ্বা হি নিশ্চিতং ( পুনঃ প্রাপ্ত্যসম্ভাবনয়া ) তৎ পূৰং, যৎ নয়্য ইনাং পরিত্যক্তম্, মৎপট্টকৈঃ বদ্বায়পাটিনপকৃষৈঃ চৈত্রাদিভিঃ পাবিঙঃ

তেনে সংকুতঃ । ইত্যন্তেষ্টচ বিচরং-স্তম্ভম্ভু মুনিবরাশ্রমে ॥ ১১ ॥ মোহিচ্চিত্তব্রতদা তত্র নবদ্বারকাক্ষেত্রেভ্যঃ ॥ ১২ ॥ মহাপুৰীষৈঃ

পানিতং পূৰ্ণং ময়া হীনং পুরং হি তং । মদু তৈত্তৈস্তু-বসদু তৈ-ধৰ্ম্মতঃ পাল্যতে ন বা ॥ ১৩ ॥ ৰু কানে স প্রাধানো যে

রক্ষিত, তৈঃ যদ্বৃত্তৈঃ যম সেবকৈঃ ধর্মভঃ ত্রায়েন পাল্যতে ন বেতি বিতর্কঃ । নল্প কচ্ছু প্রাপ্তং তন্ কিমিতি ধর্মেণ ন পালয়িতব্যমিত্যাকাংক্ষায়াঃ  
—অসদ্বৃত্তৈঃ অসচ্চারিণৈঃ (অধর্ষনিষ্ঠানাং কুলে ত্রায়পরতন্ত্রীতি ভাবঃ) ॥ ১৩ ॥ ন জানে ইতি । স প্রসিদ্ধঃ প্রধানো মুখাঃ যে ময় শ্রবন্তী যুদ্ধদ্রুপদে । গজঃ  
শ্রবনায় হস্তীতি বা যম বৈবিরবংশ যাতঃ ময় বৈবিরবংশী সন্ কান্ ভোগান্ ভোগ্যান্ (কর্মণি ঘণ্) তধুলাদীন্ উদলপ্যতে লাপ্যতি ইত্যন দানে  
(বসয়া দত্তং, নশ্রুতি তদ্বর্ততে. এব, অনন্তরং কান্ লপ্যতে ইতি লুড়যঃ; উক্তনিসঙ্গ কচিদ্ধাভিচার্যঃ প্রবানশক্সা পুংস্ত্বং; যদ্য প্রধনং মহামাত্রঃ, তেন

ସହ ବର୍ତ୍ତମାନଃ) । ସ କୌଦୃକ୍ ? ସଦାମିଦଃ ସଦା । ସର୍ବଦା ମଦୋ ଦାନଃ । ସନ୍ତ୍ର ସଂ ( “ଯଦୋ ରେତସି କନ୍ତୃର୍ଯ୍ୟାଂ ଗର୍ବଂ ହର୍ଷଭଦାନୟଃ” ଇତି ସେଦିନୀ ) ॥ ୧୫ ॥ ସେ ଇତି । ସେ ନିତାଂ ମମ ଅରୁଗତାଃ ସେବକାଃ, ତେ କ୍ଳବଂ ( ବିତର୍କେ ) ଅଞ୍ଜ ଅଗ୍ରମହୀତୃତାମ୍ ଅଗ୍ରଭୃମ୍ନାମ୍ ଅନୁସୃତିଂ ମେମାଂ କୁର୍ବନ୍ତି । କୈଃ ? ପ୍ରସାଦଧନଭୋଜନୈଃ (ହେତୁଭିଃ କରଣୈର୍ବ) ପ୍ରସାଦସ୍ତୃଷ୍ଟ୍ୟା ଦାନଂ, ଧନଂ ବେତନଂ ମାମି ମାମି ଦେୟଂ, ଭୋଜନଂ ପ୍ରତିଦିନଂ ଦେୟଂ ଭଗ୍ୟଦ୍ରେବ୍ୟମ୍ । ଯଦ୍ଧା ଏତେମମ୍ ନିତ୍ୟମନ୍ତ-

ଶୂରହନ୍ତା ସଦାମିଦଃ ॥ ମମ ବୈରିବଂଶଂ ଯାତଃ କାନ୍ ଭୋଗାନୁପଲମ୍ପ୍ୟାତେ ॥ ୧୫ ॥ ସେ ଯମାନୁଗତା ନିତ୍ୟଂ ପ୍ରସାଦ-ଧନ-ଭୋଜନୈଃ । ଅନୁସୃତିଂ କ୍ଳବଂ ତେହଞ୍ଜ କୁର୍ବନ୍ତ୍ୟଗ୍ରମହୀତୃତାମ୍ ॥ ୧୬ ॥ ଅସମ୍ୟଗ୍ବ୍ୟୟଶ୍ଚୈତ୍ତେଃ କୁର୍ବନ୍ତିଃ ସତତଂ ବ୍ୟୟମ୍ । ସମ୍ପିତଃ ସୋହିତି-

ଦୁଃଖେନ କ୍ଷୟଂ କୋଷୋ ଗମିଷ୍ୟତି ॥ ୧୬ ॥ ଏତଚ୍ଛାନ୍ତ୍ୟାଚ୍ଛ ସତତଂ ଚିନ୍ତୟାମାସ ପାର୍ଥିବଃ । ତତ୍ର ବିପ୍ରାଶ୍ରମାଭ୍ୟାମେ ବୈଶ୍ୟମେକଂ ଗତାଃ ଇତି ସନ୍ଦନ୍ଧଃ ॥ ୧୭ ॥ ଅସମ୍ୟାଗିତି । ସ କୋଷଃ ଧନସଙ୍କ୍ଳୟଃ । ତେଃ ଅମାତ୍ୟାଦିଭିର୍ହେତୁଭିଃ କ୍ଷୟଂ ଗମିଷ୍ୟତି । କୌଦୃକ୍ ? ଅତିହୁମେନ ଅର୍ଥଂ ଯମ୍ନା ସମ୍ପିତଃ

ପୁଞ୍ଜୀକୃତଃ । ନନ୍ନ ପ୍ରାଣେଭ୍ୟୋହିମି ମମତାମ୍ପଦଂ ଧନଂ ତେ କଥଂ କ୍ଷୟିଷ୍ୟତ୍ୱୀତ୍ୟାହ—ଅସମ୍ୟାଗ୍ୟେଶ୍ଚୈତ୍ତେଃ ଧର୍ମ୍ୟାଦୋ ବିନିଯୋଗଃ ସମ୍ୟାଗ୍ୟେଃ, ତୁଦ୍ଧାତିରିକ୍ତୋଽସମ୍ୟାଗ୍ୟେଃ ଦୃତ୍ୟମନ୍ତ୍ୟାଦିବିଷୟଃ, ତତ୍ତ୍ୱସ୍ୱଭାବୈଃ । ଅତଏବ ସତତଂ ବ୍ୟୟଂ କୁର୍ବନ୍ତିଃ ॥ ୧୭ ॥ ଏତାଦିତି । ହେ ବିପ୍ର ଭାଣ୍ଡବେ, ମ ପାର୍ଥିବଃ ତୁମ୍ଭ ଆଶ୍ରମାଭ୍ୟାମେ ଆଶ୍ରମିନିକଟୈ

କୃତ  
କ୍ରି  
କ୍ରି

এতৎ উক্তম, অগ্নাৎ অনুক্তঞ্চ সততং চিন্তয়ামাস । তত্র একং বৈশ্বাং দদর্শ দৃষ্টবান্ ॥ ১৭ ॥ স পৃষ্ঠ ইতি । তেন রাজা স বৈশ্বাঃ পৃষ্ঠাঃ । প্রহ্মাহ—ভোঃ ত্বং কঃ ন্যমজাতাদিনা । অত্র আগমেন হেতুশ্চ কঃ । ত্বং মশোক ইব, তুর্নন ইব কশ্যং লক্ষ্যসে দৃশ্যসে (ইষ্টবিয়োগাদিত্যবিবাদঃ শোকঃ, মানসাবয়াদো দৌর্গন্ধনস্তম্ অন্বংসাহ ইতি যাবৎ) ॥ ১৮ ॥ ইত্যাকর্ষণেতি । মার্কণ্ডেয়বচনমিদম্ । স বৈশ্বাঃ তস্মা তুপতেঃ প্রণয়োরিদিং প্রণয়েন প্রেমণা উদিতং কর্ণিতবান্ ইতি বচঃ আকর্ণ্য শ্রদ্ধা, প্রোক্ষয়ানতঃ প্রোক্ষয়েণ বিনয়েন অবনতঃ সন্ তং নৃপং প্রতুঙ্কবান্ ॥ ১৯ ॥ বৈশ্বা উবাচ ॥ ২০ ॥ সমাধিরিতি । (নাম প্রসিদ্ধৌ )

দদর্শ সঃ ॥ ১৭ ॥ স পৃষ্ঠন্তেন কস্তং ভো হেতুশ্চাগমেনেত্ৰ কঃ । মশোক ইব কশ্যত্বং তুর্নন ইব লক্ষ্যসে ॥ ১৮ ॥

ইত্যাকর্ণ্য বচস্তস্য তুপতেঃ প্রণয়োরিতম্ । প্রতুবাচ স তং বৈশ্বাঃ প্রোক্ষয়ানতো নৃপম্ ॥ ১৯ ॥ বৈশ্বা উবাচ ॥ ২০ ॥

সমাধিনাম বৈশ্বোহহ-মুৎপন্নো ধনিনাং কুলে । পুত্রদারৈর্নিরন্তরশ্চ ধনলোভা-দসাধাভঃ ॥ ২১ ॥ বিহীনশ্চ ধনৈর্দারৈঃ

অহঃ সমাধিনাম সমাধিনাম ইত্যর্থঃ, বৈশ্বাঃ জাতা । ইত্যর্থঃ । আত্মনো মহত্বমাহ—ধনিনাং কুলে বংশে উৎপন্নঃ জাতঃ । শোকহেতুমাহ—ধনলোভাৎ অস্যাভিঃ অধাশ্মিকৈঃ পুত্রদারৈঃ নিরন্তরঃ নিরাকৃতঃ নিঃসম্বন্ধীকৃতপ্রায়ঃ, চকারাৎ স্বধদাদিভিঃ (লোভঃ অগ্নধনপ্রাপ্তীচ্ছা) ॥ ২১ ॥ বিহীন উক্তি । (ন কেবলং নিবৃত্তং, বিস্কৃতং ) দারৈঃ পত্নীভিঃ, পুত্রৈঃ তনয়ৈশ্চ মে যম ধনম্ আদায় গৃহীত্বা বিহীনঃ পারিত্যক্তশ্চ দুরীকৃত ইতি যাবৎ । অতো ধনৈঃ ধনার্থং (হেতো ভূতীয়) জংখী সন্



বনম্ অভ্যাগতঃ শ্রাপ্ত ইতি বাবহিতেনাশ্রয়ঃ ( অতথা ধনৈর্ধনমাদায় ইত্যাভ্যেকপাদানম্ অনশ্রিতং সাং ), যদা তৈঃ কীদৃশৈঃ? মে মম ধনম্ আদায় ধনৈঃ ধনযুক্তৈঃ ( অর্শ্বাভ্যাতয়। অং ) । নহু শূদ্রাদিভিঃ কিং তে ন নিবারিতা ইতি চেৎ, তত্রাহ—আপুবদ্ধিভিঃ নিরস্তঃ উপেক্ষিতঃ ( আশ্রু। মিত্রাণি, বন্ধবো মাতুলানাং; পুত্রৈর্ভবতি বহুত্বেন, সর্কেষামে কয়ততমুক্তম্ ) ॥ ২২ ॥ দৌর্দ্যনস্যাহেতুমাহ সোহহমিতি । সাং এবং নিরস্তঃ অহম্ অত্র বনে সংস্থিতঃ সন্ তেষাং দারাদীনাং কুশলা-কুশলাশ্রিকাঃ শুভাশুভযয়ীঃ প্রবৃতিং বার্তাং ন বেদ্বি ন জানামি ( কুশলাকুশলে আত্মানৌ স্বরূপে ধম্মাঃ তাম্ ) ॥ ২৩ ॥ কিমু ইতি । ( কিমিতি সন্দেহে; নু ইতি

—  
কৃত  
কৃত  
কৃত

পুত্রৈরাদায় মে ধনম্ । বনমভ্যাগতো দুঃখী নিরস্তশ্চাপ্তবদ্ধিভিঃ ॥ ২২ ॥ সোহহং ন বেদ্বি পুত্রাণাং কুশলাকুশলা-  
শ্রিকাম্ । প্রবৃতিং স্বজনানাঞ্চ দারানাঞ্চাত্র সংস্থিতঃ ॥ ২৩ ॥ কিমু তেষাং গৃহে ক্ষেম-মক্ষেমং কিমু সম্প্রতম্ ।  
কথন্তে কিমু সদবৃতা দুর্বতাঃ কিমু মে সূতাঃ ॥ ২৪ ॥ রাজোবাচ ॥ ২৫ ॥ যৈনিরস্তো ভবাঙ্ল্লুকৈঃ পুত্রাদারাদিভির্ধনৈঃ ।

স্বগতশ্রমে, বিকলে ইতি বিজাবিনোদঃ ) তেষাং পুত্রাদীনাং সম্প্রতম্ ইদানীং গৃহে ক্ষেমং শুভম্ অক্ষেমম্ অশুভং কিং নু । তে মম শূভগাঃ ( লক্ষণা। স্বভাজাঃ )  
কথং কীদৃশিধাঃ সদৃতাঃ সচরিতাঃ কিং নু, দুর্দৃতাঃ কিং নু ॥ ২৪ ॥ রাজোবাচ, বৈজ্ঞানিতি শেষঃ ॥ ২৫ ॥ যৈরিতি । ভবান্ ধনৈর্হেতুভূতৈঃ যৈঃ পুত্রাদারাদিভিঃ  
নিরস্তঃ, তেষু পুত্রাদারাদিষু ভবতো মানসং কিং কিমর্থং মেহম্ অনুব্রূতি প্রেম করোতি । কীদৃশৈঃ? লুকৈঃ (অত্র ভবাঙ্ল্লুকৈরিতি “লে লশ্চ” (যা) ইতি লকারে

কৃত্তে সাহুনাসিকত্বম্) ॥ ২৬ ॥ বৈশ্য উবাচ ॥ ২৭ ॥ এবমিতি । ভবান্ অশ্রদ্ধাং মনস্করং হং বচঃ যথা যথাবৎ প্রাহ বদতি, এতৎ এবম্ ঐদৃগেব ; কিন্তু মম মনঃ  
নিষ্ঠুরতাং কার্কশ্যং ন বদ্ব্যতি ন ভজতে, কিং করোমি ( মনসোহনধীনত্বাৎ, তথাচোক্তং ) প্রিজাগবতে “মনোবশেহস্ত্রে হস্তবন্ য দেব! মনস্ত নাগ্ৰাস্য বপং সংমতি”  
ইতি ; দেবা ইন্দ্রিয়ানি) ॥ ২৮ ॥ তদেব বিষণোতি যৈষিতি । যৈঃ ধনলুন্ধৈঃ পুত্রাদারাদিভিঃ পিতৃশ্নেহং পতিশ্রদ্ধনহাদিক্ স্যামিবন্ধুগং প্রোমাণং পরিত্যজ্য অহং নিরাকৃতঃ  
নিংসারিতঃ, তেষেব মে মম মনঃ হাদি ( হাদিঃ প্রেম, তদস্রাস্ত্রাতি ) সপ্রেম ইত্যর্থঃ ॥ ২৯ ॥ কিমিতি । হে মহামতে সকলার্থবিচারচাক্ষুণ্য,

তেষু কিং ভবতঃ শ্নেহ-মনুবদ্ব্যতি মানসম্ ॥ ২৬ ॥ বৈশ্য উবাচ ॥ ২৭ ॥ এবমেতদ্ যথা প্রাহ ভবান্মদগতং বচঃ ।

কিং করোমি ন বদ্ব্যতি মম নিষ্ঠুরতাং মনঃ ॥ ২৮ ॥ যৈঃ সন্ত্যজ্য পিতৃশ্নেহং ধনলুন্ধৈর্কনিরাকৃতঃ । পতিশ্রদ্ধনহাদিক্

হাদি তেষেব মে মনঃ ॥ ২৯ ॥ কিমেতন্নাভিজানামি জানন্নপি মহামতে । যৎ প্রেমপ্রবণঃ চিত্তং বিগুণেশ্বপি বন্ধুয় ॥ ৩০ ॥

যৎ বিগুণেযু গুণরহিতেষপি বন্ধুয পুত্রাদিষু চিত্তং প্রেমপ্রবণং শ্নেহৈকবশং, এতৎ কিম্ ইত্যহং জানন্ জানবানপিন অতিজানামি তদ্বতো নানদাহর্যামি  
( অর্থাৎ স্নেহবৈতং বিচারয় ) ॥ ৩০ ॥ প্রেমপ্রবণতাং বিষুণোতি তেষামিতি । তেষাং পুত্রাদানাং কৃত্তে নিমিত্তে মে মম নিশ্বাসঃ, দৌশমনস্যঃ মনঃসাতনবাক্য-  
তত্বঞ্চ জামতে ( “কচিল্লিঙ্গবিভক্ত্যাঃ” (এ) ইত্যত্র বচনসাপ্যপলক্ষণত্বাৎ একত্বং, ক্রিয়াদ্বিত্যা অর্থো ব ; কৃত্তেণকোহিব্যয়ং নিমিত্তপরিমাণঃ, নিমিত্তনিমিত্তিঃ পদবন্ধ

যজ্ঞী)। নহু অলমতিবিপ্লবেষু পুত্রাদিষু বহুতরশ্নেহাহু বন্ধেনেতি চেৎ, তত্রাহ—যৎ তেযু আশ্রীতিযু শ্রীতিরহিতেষপি পুত্রাদিষু মনঃ নিষ্ঠুরং নির্দয়ং ন ভবতি, কিং করোমি; নৈতন্ময়া জ্ঞাতমিত্যর্থঃ। (মুহমুর্ছনশ্বসিযুঃ কবোফমিতি ভক্তিদর্শনাৎ, নিশ্বাসেসতি বিরাদপর্কদর্শনাচ্চ নিশ্বাসার্গো নিশ্বাসশব্দঃ) ॥ ৩১ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ৩২ ॥ তত ইতি। হে বিপ্র ভাগুরে, ততঃ বৈশ্ববচনানন্তরং ভৌ রাজর্ষৈশ্চৌ সহিতৌ মিলিতৌ সন্তৌ তং মুনিং নেদসং সমুপস্থিতৌ। তৌ কো? অসৌ সমাধিবৈশ্বঃ, স চ পার্থিবদত্তমঃ নৃপেযু সাদৃশ্যঃ স্বরথঃ; নাম প্রসিদ্ধৌ ॥ ৩৩ ॥ কুত্বেতি। তৌ বৈশ্বপার্বিবৌ তু যথাত্মায়ং যথাবিধি, যথার্হং তেষাং কুতে মে নিশ্বাসা দৌর্গমনস্যঞ্চ জায়তে। করেমি কিং যন্ন মন-স্তেষু শ্রীতিযু নিষ্ঠুরম্ ॥ ৩১ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ৩২ ॥ ততস্তৌ সহিতৌ বিপ্র তং মুনিং সমুপস্থিতৌ। সমাধির্নাম বৈশ্বোহসৌ স চ পার্থিবসত্তমঃ ॥ ৩৩ ॥ কুত্বা তু ভৌ যথাত্মায়ং যথার্হং তেন সংবিদম্। উপবিষ্টৌ কথাঃ কান্ধিচ-চক্রকুতুর্বৈশ্ব্য-পার্বিবৌ ॥ ৩৪ ॥ রাজোবাচ ॥ ৩৫ ॥ ভগবৎস্বাগমহং যথায়োগ্যং তেন মুনিস্য সহ সংবিদং সম্ভাষণং কৈত্বা উপবিষ্টৌ সন্তৌ কথং কথং চক্রকুতুঃ প্রস্তাবয়ামাসতুঃ। যদা সংবিদং যস্যনিজ্ঞাপনাম্; যথার্হং যথায়োগ্যং তুগত্বমাদিষু উপবিষ্টৌ ইতি ব্যবহিভেন সম্বন্ধঃ (সংবিদনিত্যন্তুস্মারবদেব, বকারস্য দস্ত্যাহং) ॥ ৩৪ ॥ রাজোবাচ। উভযোর্বপি প্রষ্টেবো দুপাঙ্গাং রাজ্ঞ উপাদানম্ ॥ ৩৫ ॥ ভগবন্নিতি। হে ভগবন্ সর্বজ্ঞ (‘উৎপত্তিং প্রলয়ক্কেব ভূতানামগতিং গতিম্। নেতি বিজ্ঞামবিজ্ঞাঞ্চ স বাচো। ভগবান্দি’ ইতি বিয়ংপূণ্যম্),

—  
কুতু  
কুতু  
কুতু

ଅହଃ ସ୍ବାମ୍ ଏକମ୍ ଅର୍ଥଃ ବିଷୟଃ ପ୍ରାପ୍ତୁମିଚ୍ଛାମି, ତତ୍ତ୍ୱଃ ପ୍ରାପ୍ତବ୍ୟର୍ଥଃ ବଦନ୍ତଃ ସମ୍ରାଜ୍ୟଂ ବଦଃ ( “ପ୍ରକାଶନାଦୌ ବଦଃ” ଇତ୍ୟାଦୁନେପଦମ୍ ) । ପ୍ରାପ୍ତବ୍ୟମାହ ଦୁଃଖାସ୍ତେତି ମର୍ଦ୍ଦି-  
ଚତୁର୍ତ୍ତିଃ । ମେ ମମ ସ୍ୱଚିନ୍ତସ୍ୟ ଆୟତ୍ତତାଂ ବଶୀଭୂତତାଂ ବିନା ଗନସୋ ଦୁଃଖାୟ ଯଦୁର୍ବାତି, ଏତତ୍ କିମିତି ଉତ୍ତରେଣାୟଃ ( ମଦନ୍ତବିକଳାନ୍ତ୍ରକମନ୍ତଃକରଣଂ ମନଃ,  
ବିଶେଷଗ୍ରହଣାନ୍ତ୍ରକମନ୍ତଃକରଣବିଶେଷକ୍ତିମିତି ଶେଦଃ । ତଦୁକ୍ତଂ ତୃତୀୟକ୍ଷେ “ମନୋ ବୁଦ୍ଧିରହଙ୍କାରାନ୍ତ୍ରକ୍ତିମିତି ଶେଦଃ । ତଦୁକ୍ତଂ ଲକ୍ଷ୍ୟାତେ ଶେଦଃ । ବୁଦ୍ଧ୍ୟା ଲକ୍ଷ୍ୟରୂପସ୍ୟା” ଇତି ॥  
୩୬ ॥ ଯସେତି । ଯମ ରାଜ୍ୟସ୍ତ ରାଜ୍ୟେ ରାଜକର୍ମ୍ମାଣି (ମମ୍ପ୍ରାପ୍ତ୍ୟେଷ୍ଠୀ), ଅଧିକାର୍ଯ୍ୟ ରାଜ୍ୟାନ୍ତେଷ୍ଠୀ ( “ସାମ୍ୟାତାୟନ୍ତେଷ୍ଠୀ” ଇତି ) । ରାଜାନ୍ତାମି”

ପ୍ରାୟଶ୍ଚିତ୍ତ-ଗିଚ୍ଛାନ୍ତେଷ୍ଠୀ ବଦନ୍ତଃ ତତ୍ତ୍ୱଃ । ଦୁଃଖାୟ ଯନ୍ତେ ମନସଃ ସ୍ୱଚିନ୍ତାୟତ୍ତତାଂ ବିନା ॥ ୩୬ ॥ ମମନ୍ତଃ ଯମ ରାଜ୍ୟସ୍ୟ ରାଜ୍ୟାନ୍ତେଷ୍ଠୀସ୍ଥିତେଷ୍ଠୀପି ।

ଜାନତୋହିପି ଯଥାନ୍ତସ୍ୟ କିମେତନ୍ମୁନିସନ୍ତମ ॥ ୩୭ ॥ ଅରକ୍ତଃ ନିକୃତଃ ପୂର୍ବେ-ନିକୃତଃ ତୈକ୍ତେଶ୍ଠୀସ୍ଥିତଃ । ସ୍ୱଜନେନ ଚ ସନ୍ତୁକ୍ତେ-

ସ୍ତେଷ୍ଠୀ ହାନ୍ତୀ ତଥାପ୍ୟତି ॥ ୩୮ ॥ ଏବମେତ୍ତାଦୃଶଃ ଦ୍ୱାବପ୍ୟତ୍ୟନ୍ତଦୁଃଖିତୋ । ଦୃଷ୍ଟଦୋଷେହିପି ବିମାୟେ ମମନ୍ତାକୃତ୍ତି-

ଇତ୍ୟାୟଃ ) ମମନ୍ତଃ ସ୍ୱକୃତ୍ୟାଭିଧାନଃ ଯଦୁର୍ବାତି ଏତଦପି କିମ୍ । ନନ୍ତୁ ଅବିବେକିନାଃ ମମନ୍ତଃ ଭବନ୍ତେ, କିମେତନ୍ତ୍ରାନ୍ତ୍ରାମିତି ଚେତ୍, ତତ୍ରାହି—ଜାନତୋ ଜାନିତୋହିପି ମମ୍, ୧୩।  
ଅନ୍ତସ୍ୟ ସ୍ୱର୍ଥସ୍ୟ ତଥେତାର୍ଥଃ ॥ ୩୭ ॥ ଅରମିତି । ( ନ କେବଳଂ ନୈବ ଏବଂ, କିନ୍ତୁ ) ଅରଂ ବୈଶ୍ଵାତ୍ମିନି ପୂର୍ବେନିରାକୃତଃ, ନୈବିତ୍ୟା, ତୈତାଃ ମେକାଦିତିର୍ଭବନ୍ତୀତି ଉକ୍ତିଃ  
ତ୍ୟକ୍ତଃ ; ସ୍ୱଜନେନ ଚ ସନ୍ତୁକ୍ତଃ ; ତଥାପି ତେଷ୍ଠୀ ପୁରାନ୍ତସ୍ୟ ଅତି ହାନ୍ତୀ ଅତି ସ୍ନେହବାନ୍ ॥ ୩୮ ॥ ଏବମ୍ ଉକ୍ତଶ୍ଚାକ୍ଷରେଣ ଏବ ବୈଶ୍ଵାତ୍ମ, ତଥା ତତ୍ତ୍ୱଃ ( ତଥାପ୍ୟତ୍ୟନ୍ତଦୁଃଖିତୋ )

মানসো ॥ ৩৯ ॥ তৎ কৈনৈতন্মাহাভাগ যন্মোহো জ্ঞানিনোরপি । মমাস্য চ ভবত্যেযা-হ বিবেকান্স্য মুচুতা ॥ ৪০ ॥  
 ঋষিরুবাচ ॥ ৪১ ॥ জ্ঞানমাস্তি সমস্তস্য জন্তুবিম্বয়গোচরে । বিয়য়ন্ত নহন্তি নৈব ত্যজন্তি ॥ ৪২ ॥

আবয়োজ্ঞানিনোরিত্যুক্তঃ সামাগ্জ্ঞানবত্ত। সৰ্বেষামন্তোব, জ্ঞানস্য আত্মনিষ্ঠগুণবিশেষত্বাৎ ; তথাহি মোহাভাবে সংসারস্য নিক্ৰিয়ত। স্যাৎ ; তস্মাৎ বিশেষজ্ঞান-  
সত্ত্বাব এব মোহাভাব ইত্যভিপ্ৰেত্য সৰ্বেষাং সামাগ্জ্ঞানভাবমাহ জ্ঞানমিতি । সমস্তস্য জন্তোজ্জগ্মিনঃ বিষয়গোচরে স্বস্ববিষয়বিষয়ে স্বাধিকারনাত্তে  
জ্ঞানম্ অন্তঃকরণবৃত্তিঃ অস্তি ( স্বাবরাণামপি যোক্ষধৰ্মাদৌ স্পর্শবেদিত্বস্য উক্তত্বাৎ ; প্রাণিমাাত্রম্যোক্তি বিজ্ঞাবিনোদঃ ) । সৰ্বেষাং জ্ঞানৈক্যাং বারয়তি বিসরণশ্চেতি ।  
হে মহাভাগ, বিষয়ঃ অধিকারঃ এবং বক্ষ্যমাণপ্রাকারেণ পৃথক্পৃথকু যাতি পার্থক্যং লভতে ( ধর্মপ্রধানোহিত্র পৃথক্গুণকঃ মৎসরণক্ণবৎ ) ; যদ্বা পৃথকপৃথক

ভিন্নভিন্নং ষাতি উপতিষ্ঠতে ॥ ৪২ ॥ পার্থক্যং দর্শয়তি দিবোতি । কেচিৎ প্রাণনঃ পেচকাদয়ঃ দিবা দিবসে অন্ধাঃ চাক্ষুষজ্ঞানরহিতাঃ । তথা অপরে কাকাদয়ঃ রাত্রৌ অন্ধাঃ । কেচিৎ প্রাণিনঃ শিঙ্খলুকাদয়ঃ দিবা রাত্রৌ চ তথা অন্ধাঃ । কেচিৎ প্রাণিনঃ মাক্ষারাদয়ঃ দিবা রাত্রৌ চ তুল্যদৃষ্টিয়ঃ তুল্যদর্শিনঃ ॥ ৪৩ ॥ জ্ঞানিন ইতি । মনুজা মানুষা জ্ঞানিন ইতি সত্যমেব, কিন্তু কেবলং তে মানুষা এব জ্ঞানিন ইতি ন, হি নিশ্চয়ে । যতঃ সৰ্ব্ব পশুপাক্ষমৃগাদয়োহপি

প্রাণিনঃ কেচি-দ্রাত্রাবক্ষ্যাস্থথাপরে । কেচিদ্দিবা তথা রাত্রৌ প্রাণিনস্তুল্যদৃষ্টিয়ঃ ॥ ৪৩ ॥ জ্ঞানিনে মনুজাঃ সত্যং কিন্তু তে ন হি কেবলম্ । যতো হি জ্ঞানিনঃ সৰ্ব্ব পশুপক্ষিমৃগাদয়ঃ ॥ ৪৪ ॥ জ্ঞানঞ্চ তন্মানুষ্যাণাং যন্তেষাং যুগপক্ষিণাম্ । মনুষ্যাণাঞ্চ

যন্তেষাং তুল্যমন্ত্য তথোভয়োঃ ॥ ৪৫ ॥ জ্ঞানেহপি সতি পশ্চ্যতান্ পতগাঙ্খ্যাবচধুযু । কণমোক্ষাদৃতান্ মোহাৎ পীড়্যানানপি জ্ঞানিনঃ ( পশবো গ্রাম্যাঃ, মৃগা আরণ্যাঃ, আদিপদেন মৎস্যাদয়ঃ ) ॥ ৪৬ ॥ নন্তু তথাপি মনুজ্যাণাং বিশেষোহস্তীতি চেৎ, তত্রাহ জ্ঞানক্ষেতি । তেষাং যুগপক্ষিণাং

যৎ যাদৃক্ জ্ঞানং, তৎ তাদৃক্ জ্ঞানং মনুজ্যাণাঞ্চ মানুষাণামপি । মনুজ্যাণাঞ্চ যৎ জ্ঞানং, তৎ তেষাং যুগপক্ষিণামপি ইত্যাবশেষঃ সূচিতঃ । নন্তু তথাপি মনুজ্যাণাং বিষয়মুখ্য-বিশেষজ্ঞানস্যাধিক্যমস্তীতি চেৎ, তত্রাহ তুল্যমিতি । অন্তঃ আদারৈর্মৈথুনাৎকমপি উভয়োঃ তিৰ্যাক্তমন্ত্যয়োঃ তুল্যং সমানভিনিবেশাৎ ( তথাচ নৃসিংহপুরাণে “আহারনিদ্রাভয়ৈর্মৈথুনাং সামান্যমেতৎ পশুভিন্নরূপাম্” ইতি ) ॥ ৪৫ ॥ এতৎ প্রমাণয়তি জ্ঞানেহপৌতি । এতান্ পতগান্ পক্ষিণাং পশু ।

— ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

কীদৃশান্? সতি বিজ্ঞানেনহপি জ্ঞানে মোহাৎ বিশেষজ্ঞানাভাবাৎ ক্ষুধা ক্ষুধয়া। পীড়ামানানপি পাবচক্ষুযু অপত্যত্রোচিযু কণমোক্ষাদিতান্ আহিরদানে  
সাদরান্ (পশ্চাৎ প্রত্যুপকারাভাবেহপি তৎস্মেহেন ক্ষুৎপীড়াসহনমপ্যনর্থকমিতি ভাবঃ; কণশব্দঃ শূক্ষ্মধাতুবিষয়বাচ্যপি অত্র লক্ষণয়া আহাবমাত্র) ॥ ৪৬ ॥  
মানুষ্যাণাং মোহমাহ মানুষ্যা ইতি। ননু মনুজব্যাত্র হে মনুষ্য্যশ্রোষ্ঠ, এতে মানুষ্যাঃ প্রত্যুপকারা চরমাবস্থয়াং নিজপালনার্থং লোভাদ্ভেতোঃ শূতান্ প্রতি  
সাভিলাষাঃ সস্নেহাঃ স্বতোৎপাদনে সঙ্গ্ৰহা বা, (ইতি ইত্যথ্যাত্ম্যম্) ইতি কিং ন পশ্যসি? অপি তু পশ্যসোব ॥ ৪৭ ॥ ননু প্রত্যুপকারাভাবেহপি অপত্যস্নেহে

ক্ষুধা ॥ ৪৬ ॥ মানুষ্যা মনুজব্যাত্র সাভিলাষাঃ শূতান্ প্রতি। লোভাৎ প্রত্যুপকারায় নস্নেহে কিং ন পশ্যসি ॥ ৪৭ ॥ তথাপি  
পক্ষ্যাদীনামাত্মহিতাত্মসন্ধানং নাস্ত্যবেতু্যচি তমেব, মানুষ্যাণস্তু প্রত্যুপকারপরামর্শাৎ আত্মহিতাত্মসন্ধানসম্ভাবেহপি কিমনর্থহেতুভূতে মোহে নিপতনং ভবতীতি চেৎ,  
তত্রাহ তথাপীতি। তথাপি আত্মহিতাত্মসন্ধানেনহপি সতি, সংসারস্থিতিকারিণে জগৎপালকস্তা বিষেণাঃ যা মহামায়া, তস্যাঃ প্রভাবেণ ছন্দেন মোহগর্ভে মোহে।  
দেহাদাবহংবুদ্ধিঃ, স এব গর্ভ ইব পাতহেতুত্বাৎ, তস্মিন্ নিপাতিতাঃ নিক্ষিপ্তা ভবন্তি। কীদৃশে? হায়তাবর্তে মমতা উক্তলক্ষণা (৫১ পৃঃ ৩পং) সৈব আবর্তে।  
জলভ্রমির্য স্মিন্ (মমতৈব পুনঃপুনঃ আবর্তয়তি জনমরর্ণাদিকং কারয়তীত্যর্থঃ)। যদ্বা মোহগর্ভে নিপাতিতাঃ নন্তুঃ সংসারস্থিতিকারিণে ভবন্তীতি যোগ্যম্; অপূর্ণ-  
দেহেহিঙ্গ্রিয়স্বক্কঃ সংসারঃ, যদ্বা সম্যক্ সরন্তি গতাগতং কুর্বন্ত্যনেনতি সংসারঃ কর্মমার্গঃ, তস্য স্থিতিম্ অনুষ্ঠানং কুর্বন্তি যে তে। (গর্ভে জগদ্রমস্যাভাবাৎ গর্ভলক্ষেনাহ

তে  
দে  
বৌ  
দে

পারিভাষিকগণ্ড উচ্যতে, তথাচ স্থিতিঃ “ধনুঃসহস্রাধাণৌ চ গতিৰ্যাসাং ন বিদ্যতে। ন ত। নদীশসবহা গন্তাস্তাঃ পরিকাক্তিতাঃ” ইতি ; যদ্বা অতলক্ষ্পর্শে দেবখাজাদৌ কচিৎ গন্তেহপি তথা দৃগতে)। তস্মান্নহায়া প্রভাববিজ্জ্বলিত্যেয়ং যমতা ॥ ৪৮ ॥ অহে। দেহয়মপূর্বে। মহিমা মহামায়া। যদা যদ্বিত্ত্বানুসন্ধায়িনামপ্যেবং মোহং করেতীতি বিশ্বয়মানং নৃপং কৈমূর্তিকল্পায়েনাহ তর্দিত। তং তস্মাৎ এতৎ জগৎ তদ্বা মহামায়া সংমোহতে ইতি অত্র বিষয়ে বিষয়ে ন কার্যঃ। যতঃ জগৎ-

নমতাবর্তে মোহগর্তে নিপাতিতঃ। মহামায়াপ্রভাবেন সংসারিস্থিতিকরিণঃ ॥ ৪৮ ॥ তন্নাত্র বিষয়ঃ কার্যো যোগনিদ্রা  
জগৎপতেঃ মহামায়া হরৈশ্চৈত-ভয়া সংমোহাতে জগৎ ॥ ৪৯ ॥ জ্ঞানিনামপি চেতাংসি দেবী ভগবতী হি সা।  
বলাদাক্রম্য মোহায় মহামায়া প্রযচ্ছতি ॥ ৫০ ॥ তয়া বিশ্বজ্যেতে বিশ্বং জগদেতচ্চরাচরম্। সৈষা প্রসঙ্গা বরদা

পতেঃ সংসারপালকস্যা, হরৈশ্চ জগৎসংহারকস্যাপি যোগনিদ্রা ; অগ্রেয়াং কা কথ্যেতি ভাবঃ ( হেতুগর্ভমিদং ; যোগরূপা নিদ্রা, পরমানন্দকরী পাক্তিরিত্যর্থঃ ) ॥ ৪৯ ॥  
ননু অজ্ঞানজন্তুসংসারস্য জ্ঞানে নিবৃত্ত্যা মহামায়া কিং কার্যমিতি চেৎ, তত্রাহ জ্ঞানিনামিতি। সা মহামায়া জ্ঞানিনাং বিবেকবতামপি চেতাংসি অজ্ঞানকরণানি  
বলাদাক্রম্য স্ববীকৃত্য মোহায় মোহনিমিত্তং ( সপ্তমার্থে বা চতুর্থী---মোহে ) প্রযচ্ছতি নিশ্চিপতি (মৌভরি-বিশ্বামিত্রাদেয়পি কচিৎ তথাদর্শনাৎ)। সাম্প্রদ্যমাহ  
---দেবী সর্বেশ্বরীদ্যোতনীগীলা, ভগবতী অচিষ্টান্ত্রাখ্যানানিনী ॥ ৫০ ॥ ন কেবলং জগন্মোহিকা সা, কিন্তু জগৎকর্তৃপীতাহ তয়েতি। ভয়া মহামায়া এতৎ বিশ্বং



সমগ্র চরাচরং হাববরজঙ্গমাগ্রকং জগৎ বিশ্বজ্ঞাতে বিবিধম্ উচ্চনীচক্রমেণ সৃজ্যতে ( উপাদানকারণদ্বাং, তথাচোক্তং “প্রকৃতির্থস্যোপাদানম্” ইতি ) । ন কেবলং জগজ্জনিকা, কিন্তু জগন্মোচিকাপি সৈবেত্যাহ সৈবেতি । সা উক্তলক্ষণা এষা জগদ্রূপেণাপরোক্ষীভূতা মহামায়া প্রসন্ন। সতী নৃণাং মুক্তয়ে মোক্ষায় তদর্থং বরদ। বরদাত্রী ভবতি (সমাধ্যাদেদস্তথাদর্শনাং) ॥ ৫১ ॥ তস্যা বিদ্যারূপত্বং দর্শয়ন্ তদুপপাদয়তি সেন্তি । সা মহামায়া পরমা তত্ত্বজ্ঞানলক্ষণা বিদ্যা। (পর দীপ্তরে। মীয়াতে জ্ঞায়তে অনয়েতি পরমা) । অতএব মুক্ত্যেহেতুভূতা কারণম্ (স্বরূপে ভূতশব্দঃ), সনাতনৌ নিজা। (ইত্যেনে তস্যাঃ কাযাত্বং বারয়তি) । (নলু ভবত্বেবং, কিন্তু “তমেব বিদিত্বাতি মৃত্যুমেতি নাত্তঃ পন্থা বিদ্যাতেহয়নায” ইতি শ্রুতে: টি) — “বরং বৃণুধ রাজর্ষে ঋতে কৈবল্যমদ্যা নঃ । এক এবেশ্বরশস্য ভগবান্ বিষ্ণুরবায়ঃ” ইতি দশমোক্তে

নৃণাং ভবতি মুক্তয়ে ॥ ৫১ ॥ সা বিদ্যা পরমা মুক্ত্যে-হেতুভূতা সনাতনৌ । সংসারবন্ধহেতুশ্চ সৈব সর্বেশ্বরেণরী ॥ ৫২ ॥

দীপ্তরশ্চৈব মুক্ত্যেহেতুত্বং গম্যতে, কথং মহামায়ায়া মুক্ত্যেহেতুত্বম্ ? তত্রোচ্যতে “বিজ্ঞাবিজ্ঞেয়ম তন্ বিদ্যুদ্যব শরীরিণাম্ । বন্ধমোক্ষকরী আশ্চে মায়া মে বিনিশ্চিত্তে” ইত্যাদি-ভাগবতশ্রুতিশ্রুত্যাগমসমন্বয়াং অস্তি মহামায়ায়া অপি তত্ত্বজ্ঞানদ্বারা মুক্তিহেতুত্বম্, অত্রাপি সমাধেস্তথাদর্শনাচ্চ । “অত্র পরায়র্শেহিপি—অবিদ্যোপাতিতচৈতন্যং জীবঃ, তস্ত যাবৎ অবিদ্যোপাতিতত্বং তাবদেব বন্ধঃ, তস্তা বাধেন স্বরূপশ্রুতিরিব মুক্তিঃ ; তয়োরেব বিজ্ঞানিজয়োঃ কারণং মাষৈব, “মায়া মে বিনিশ্চিত্তে” ইতি বচনাং ; অতএব স্বকর্ষ্যবিদ্যাবিদ্যাযোঃ প্রবৃত্তিনিবৃত্ত্যন্তং প্রসাদ এব কারণম্ ইতি তস্তা মুক্তিহেতুত্বম্ । বিজ্ঞানপতয়া মুক্তিহেতুত্বমুক্ত। অবিজ্ঞানপতয়া সংসারহেতুত্বং দর্শয়তি সংসারেতি । সংসার এব বন্ধো বন্ধনং, যদা সংসরত্যশ্মাং সংসারোহিহকারঃ স এব বন্ধঃ (মায্যৈব অহংবুদ্ধা বন্ধো ভবতীত্যর্থঃ) তস্ত হেতুঃ কারণং সৈব যাহান্নৈব

— তত্ত্বজ্ঞান

(এবং কারণে অত্র ব্যাবৃত্ত্যে, তস্মা এব অবিজ্ঞাপণোবিভাবাং) । অতএব সর্কেশ্বরেখবী, সর্কেশ্বরাণাং ব্রহ্মদীনামপি ঈশ্বরী নিয়তী ॥ ৫২ ॥ রাজোবাচ । অতঃ  
 স্তুতমহিমানং মহামায়াঃ শ্রদ্ধা সবিম্বয়ো বিশেষণং বহুং পৃচ্ছতি দ্বাভ্যাম্ ॥ ৫৩ ॥ ভগবন্তি দ্বাভ্যাম্ । হে ভগবন্ সর্কজ, হে দ্বিজ হে মূনে ! তি সিন্ধবে, হা দেবী ক। (ই-  
 বস্তপ্রশ্নঃ), যাং ভবান্ স্বং মহাদায়েতি ব্রবীতি । সা কথং কেন প্রকারণে উৎপন্ন। (ইতি উৎপত্তিপ্রকারপ্রশ্নঃ) । অস্মাঃ কল্প কামাধিঃ (ইতি ত্রিগুণপ্রশ্নঃ) ॥ ৫৪ ॥  
 যদিতি । হে ব্রহ্মবিদাং জ্ঞানিনাং বর শ্রেষ্ঠ ( ব্রহ্ম ঈশ্বরে! বেদশ্চ, তথাচ শ্রুতিঃ “দে ব্রহ্মণী বেদিতব্যে প্ররুপারক” ইতি ; পরং ব্রহ্ম ঈশ্বরঃ, অপবং ধর্মোদয়ঃ ইতি

রাজোবাচ ॥ ৫৩ ॥ ভগবন্ ক। হি সা দেবী মহাদায়েতি যাং ভবান্ । ব্রবীতি কথমুৎপন্ন। সা কল্পাস্যাস্ত কিং দ্বিজ ॥ ৫৪ ॥

যংস্বভাবা চ সা দেবী যংস্বরূপা যজুস্তবা । তং সর্বং জ্যোতুর্মিচ্ছামি যত্তো ব্রহ্মবিদাং বর ॥ ৫৫ ॥ ঋষিরুবাচ নিউভ্যে

ইতার্থঃ ; এতেন সর্কবিশ্বমুক্ত। সিদ্ধান্তসামর্থ্যং সূচিতম্) সা দেবী যঃ স্বভাবো যস্মাঃ সা যংস্বভাবা ( ইতি নিত্যানিত্যাহাদিপ্রশ্নঃ ), যং যাদৃক্ সর্বান্ আকর্ষিত্বেন  
 সা যংস্বরূপা ( ইতি মূর্ত্তিপ্রশ্নঃ ); উক্তবত্যাশাং ইতুস্তবো জন্মনিমিত্তং, য উক্তবো যস্মাঃ সা যজুস্তবা ( ইতি পিত্তাদিপ্রশ্নঃ ); তং সর্বং প্রভবতঃ সর্বং  
 স্তবং তব সর্কশীং জ্যোতুর্মিচ্ছামি ॥ ৫৫ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ৫৬ ॥ তস্মা জন্মৈব নাস্তীতি বক্তুং ক্রমশঃ যংস্বভাবোভ্যোবোক্তবাহু নিত্যোতি । সা নিউভ্যে  
 সর্বদা বিজ্ঞানৈব ( “অজ্ঞানৈকং লোহিতশ্চরুকৃষ্ণাম্” ইতি শ্রুত্যাং, “প্রকৃতিং পুরুষঐক্যেব বিদ্বানাদী উভাবপি” ইতি গীতায়াক্ তস্মা উৎপত্তিনিবোধঃ ) ।

যংস্বরূপেত্যশ্রোতরমাহ জগন্মুক্তিরিতি । জগন্তোব মূর্ত্তিৰ্ভদ্যাঃ সা ( উপাদানকারণাৎ, ঘটয় মূর্ত্তিকাদিবৎ ) । নন্থেবং চেৎ জগতাং নাশে তস্যা অপি নাশঃ  
 প্রশংস্ক্যেত ইতি চেৎ, তত্রাহ ত্রয়েত্যাদি । তস্মা মহামায়য়া ইদং সৰ্বং জগৎ ততং বিস্তারিতম্ উৎপাদিতমিতি যাবৎ ( ন হি ঘটনাশে মূৰ্ধিনাশঃ স্যাৎ,  
 কিন্তু তদবস্থানিবৃত্তিরেব ) । (নন্থ “যতো বা ইমানি ভূতানি জায়ন্তে, যেন জাতানি জীবন্তি” (১) ইত্যাদিশ্রুতিভিঃ, “যতঃ সৰ্গাণি ভূতানি ভবন্ত্যাদিমুগ্ধাগমে ।  
 যস্মিংশ্চ প্রলয়ং যাস্তি পুনরেব যুগক্ষয়ে” ইতি শ্রুত্যা, “জন্মাদাস্য যতঃ” ইতি শূদ্রেণ চ ঈশ্বরস্যৈব চৈতন্যস্য কারণত্বং বোদ্যতে, কুতো জড়। প্রকৃতিঃ কারণম্ ?  
 প্রত্যুত “ঈক্ষতে ন শিদ্ধম্” (২) ইতি বেদান্তশ্রুত্যা প্রকৃতেঃ কারণত্বং নিষিধ্যতে । অত্রোচ্যতে । প্রকৃতিরূপাদানং (সম বায়িকারণং), পুরুষস্ত নিমিত্তমাত্রম্ ঈক্ষিত্বাহং ;

সা জগন্মুক্তিস্তয়া সৰ্ববিদং ততম্ । তথাপি তৎসমুৎপত্তি-বিস্তৃধা শ্রুত্যাং মম ॥ ৫৭ ॥ দেবানাং কার্য্যসিদ্ধার্থ-মাবিবৰ্ভবতি  
 এবঞ্চ স্বাবয়বিকারেণ কার্য্যরূপতাপত্তা সমবায়িকারণং বলবৎ, কার্য্যরূপতাপত্তাষোগাৎ নিমিত্তকারণং গোণমিতি ত্র্যম্পর্য্যার্থঃ । চৈতন্যারোপং বিনা জড়স্য  
 পরিণামাসম্ভবাৎ ঈক্ষিত্বাহাদৌশ্বর এব কারণং, ন প্রকৃতিরিতি শ্রাণ্ডকৃষ্ণ্যাদীনামভিপ্রায়ঃ । যথা আকর্ষণাযোগসম্মিধৌ অচেতনমপি লৌহং লভতি, তথা  
 পুরুষসম্মিধৌ জড়মপি প্রকৃতিঃ পরিণত্যা সৰ্বং জনয়তীতি বাপারঃ প্রকৃতেরেব । এতেন জগদ্বিস্তারিতস্যঃ কথ্যেতি প্রত্যুত্তরং ; যদুত্তবেতি তৎকারণগ্রন্থগোত্তরমপি,  
 তৎকারণং নাশ্ত্যেবেত্যর্থঃ । কথং পুনরেন্নাস্যোত্তরমাহ তথাপীতি । যদ্যপি জন্মাদি নাস্তি, তথাপি তস্যা বহুদা সমুৎপত্তিরাবির্ভাবঃ মম মতঃ শ্রুতম্  
 (উৎপত্তিপদেন তৎপ্রকাশকমাখ্যানমেবাখ্যাযতে উপচারাৎ ; এতেন তস্যা আবির্ভাবিতরোভাবমাত্রং, ন স্বিতত্তবজ্জন্মোক্তম্ ॥ ৫৭ ॥ দেবানামিতি । সা যদা দেবানাং

৫৭

৫৭

কার্যসিদ্ধার্থং লোকে আবির্ভবতি, তদা সা নিত্যাপি উপমা জাতা ইত্যভিপীয়তে (এতেন অনভিজ্ঞজনকুমতিবিলসিতমেব তস্মা জ্ঞান তু ভাজিকম্ ; দেবানামিতানেন তদপি পরোপকারার্থং, ন তু স্বার্থযিতাক্রম্) ॥ ৫৮ ॥ প্রতিজ্ঞাতমর্গং বক্তৃমিত্তিহাসং প্রকৌতি যোগেতি । বিযুক্তদা কল্পান্তে প্রলয়ে, অগাং একাৰ্ণবীকৃতে সতি, শেষম্ শেষার্থং নাগম্ আন্তরীয্য শব্দ্যাং কৃদ্ধা যোগ এব নিদ্রা ভাং যোগনিদ্রাং (ন তু বাহ্যেগ্রহানমীলনাখ্যাম্ ইতরসাধারণীং নিদ্রাম্) অভজং তদনুকূল্যং ক্রিয়াং চকার । কৌদরঃ ? ভগবান্ অচিন্তোপমাং, প্রভুরীশ্বরঃ (ইতি স্বাতন্ত্র্যং দ্যোতয়তি) ॥ ৫৯ ॥ তদা মধুকৈটভৌ মধুকৈটভ-

সা যদা । উৎপল্লভতি তদা লোকে সা নিত্যাপ্যভিধীয়তে ॥ ৫৮ ॥ যোগনিদ্রাং যদা বিযুক্তগত্যেকাৰ্ণবীকৃতে । আন্তরীয্য

শেষ-মভজং কল্পান্তে ভগবান্ প্রভুঃ ॥ ৫৯ ॥ তদা দ্বাবশ্যরৌ যোরৌ বিখ্যাতৌ মধুকৈটভৌ । বিযুক্তকৰ্ণমলোদ্ধুতো

হস্তং ব্রহ্মাণমুজাতৌ ॥ ৬০ ॥ স নাভিকমলে বিযেগঃ স্থিতো ব্রহ্মা প্রজাপতিঃ । দৃষ্টা তাবশ্যরৌ চোত্রৌ প্রায়শ্চক্

নামানৌ বিখ্যাতৌ প্রসিদ্ধৌ বৌ অশ্বরৌ ব্রহ্মাণঃ হস্তম্ উজাতৌ বভূবতুরিতি শেষঃ (তয়োৰ্নামনির্কচনং হরিবংশে “বায়ুপ্রাণৌ তু সংগৃহ্য ব্রহ্মা পারমুশঙ্কনৈঃ । একং যুতরং মেনে কঠিনং বেদ চাপরম্ । নামনৌ তু তথোশ্চক্রে স বিভুঃ কমলোদ্ধবঃ । যুতশ্চক্ৰঃ মধুনামি কঠিনঃ কৈটভৌহিভবঃ” ইতি) । কীদৃশৌ ? যোরৌ ভরকরৌ বিযুক্তকৰ্ণমলোদ্ধুতো বিযেগঃ কৰ্ণমলোদ্ধুতপন্নৌ (সনাতনমূর্ত্তিরভৌতিকবেদে মনোযোগাভাবাৎ কাম্যপীচ্ছয়া নারিকোৎসং মলঃ ; যদা কৰ্ণমলানিব দাবেব অকল্মাচ্ছতো ) ॥ ৬০ ॥ স ইতি । স ব্রহ্মা বিষ্ণোর্নাভিকমলে স্থিতঃ সন্ ত্যাং প্রসিদ্ধাং যোগনিদ্রাং তুষ্ণাব স্তভবান্ (ইতি ত্রিভরময়ঃ) । কিং ব্রহ্মা ? ভৌ উত্রৌ অশ্বরৌ দৃষ্টা,

প্রাপ্তপুং নিদ্রাণং জনাৰ্দ্দনঞ্চ দৃষ্ট। ( জনাৰ্দ্দনমিত্যুচিতপদোপাত্তাসঃ জনাস্থরমৰ্দ্দকত্বাৎ ) । কিমর্থম্ ? হরেঃ সংহারকস্ত বিধোঃ বিবোধনং জাগরণং তদেবার্থঃ  
প্রযোজনং তং মনসি কৃত্ব। ( অভিপ্রত্যার্থে চতুর্থী ) । ব্রহ্ম। কীদৃক্ ? একাগ্রাহ্যদয়ঃ তদেকনিষ্ঠান্তঃকরণং, অতএব স্থিতঃ নিশ্চলঃ উদ্ধীভূতো বা ;

যদ্বা স্থিতিমৰ্যাদা যথাবজ্জগৎকরণং, তদযোগাৎ স্থিতঃ ( অৰ্ণবাদিহাদিৎ ) জগন্নির্মাণচেষ্টায়ুক্ত ইত্যর্থঃ ॥৬১॥ ৬২ ॥ কীদৃশীং যোগনিদ্রাম্ ? হরিনেত্রকৃতালয়াং  
বিষ্ণুনগনকৃতানেকতনাম্ ( নেত্রমিতি মুখাস্থাহুক্তং, সৰ্বদাস্রিতামিত্যর্থঃ ; বক্ষ্যতি চ “নেত্রাস্তানাসিকাবাহুদরেভ্যন্তথোবসঃ” ইতি ) । তস্তাঃ সামর্থ্যজ্ঞোতনায়

জনাৰ্দ্দনম্ ॥ ৬১ ॥

তুচ্চীব যোগনিদ্রাং তা-মেকাগ্রাহ্যদয়স্থিতঃ ॥ ৬২ ॥ বিবোধনার্থায় হরে-ইরিনেত্র-কৃতালয়াম্ ।  
বিশ্বেশ্বরীং জগদ্ধাত্রীং স্থিতি-সংহার-কারিণীম্ ॥ ৬৩ ॥ নিদ্রাং ভগবতীং বিষেধা-রতুলাং তেজসঃ প্রভুঃ ॥ ৬৪ ॥

বিশেষণানি—তেজসঃ তেজঃস্বরূপস্ত রূপিষ্টেতত্ত্বঘনশ্চেতি যাবৎ বিষেধজ্জগদন্তুর্বাণিনঃ জগদ্ধাপকশ্চেতি বা ( বিয়ং ব্যাপ্তৌ বিশ প্রবেশনে ইত্যস্তা চ ধাতোঃ পুরাণে  
বিষ্ণুপদব্যাংপত্তেঃ তথাভূতমপি ) নিদ্রাং বহিরিদ্ৰিয়নিবীলনকরীম্, অতোবিশ্বেশ্বরীং সৰ্বনিয়ন্ত্রীং, তত্র হেতুঃ—ভগবতীম্ অচিন্ত্যশ্বৰ্য্যাম, তদাঙ্ক-জগদ্ধাত্রীং জগৎ-  
কর্ত্রীং, স্থিতিসংহারকারিণীং ( স্থিতিঃ পালনং, সংহারঃ প্রলয়ঃ, তৎকারিণীঃ ) জন্মপালননাশকরণকৌলীম্, অতএব অতুলাং নিকৃপয়াম্ । ব্রহ্ম। কীদৃক্ ? প্রজাপতিঃ  
জগজ্জনকঃ, প্রভুঃ স্তুতিসমর্থঃ ॥৬৩॥ ৬৪ ॥ ব্রহ্মোবাচ ॥৬৫॥ স্তুতিমাহ দ্বিমিতি । হং স্বাহা দেবহবির্দানমহঃ ; স্বং স্বহা পিতৃদেয়মহঃ, যদ্বা পিতৃদেয়মহঃ ( “সুধা বৈ

পিতৃণাময়ম্” ইতি শ্রুতেঃ) । (হি অবধারণে) ত্বং হি স্বমেবেতৰ্থঃ, বসট্ ক্রিয়তেহত্রেতি বসট্ কারে। যজ্ঞঃ, যদা যযট্কারোপি দেবহবিদ নিময়ঃ (ভ্রাতৃনিমঃ “স্বাহা দেবহবিদানে শ্রোষট্ বসট্ স্বধা” ইতি, শ্রোষডীনিয়পলক্ষণম্ ; যজ্ঞভেদাৎ পুনরুপাদানম্) ; স্বধা উদভাদয়ঃ, তৌ আত্মানৌ স্বরূপে বাস্যাঃ সা বসট্ কারস্বরাস্ত্রিকা, তৎস্বরূপেতৰ্থঃ (এতেন যজ্ঞ-তৎস্বাধিনয়-হৃদবিকলাদ্ব্যাপ্রতিপাদকস্বরূপক্ষেপেণ তৎস্বরূপেভুক্তং জগদুৎপত্ত্বৎ-দক্ষ প্রতিপাদিতম্ ; তদ্ব্যুৎপত্ত্বং গীতাহ “যজ্ঞাস্তবতি পঙ্কজঃ পঙ্কজাদিননস্তুবঃ। অন্নাদ্ তবস্তি ভূতানি” ইতি, পরাশরশ্চ “অগ্নৌ যজ্ঞোহুতিঃ সব্যগাদিত্যগ্নাভিষ্টেভে”

ব্রহ্মোবাচ ॥ ৬৫ ॥ ত্বং স্বাহা ত্বং স্বধা ত্বং হি বসট্ কারস্বরাস্ত্রিকা। স্বধা স্র-মক্ষরে নিতো ত্রিধা মাত্রাভিক। স্থিতা ॥ ৬৬ ॥

আদিত্যজ্জায়তে যষ্টিবৃষ্টেরমঃ ততঃ প্রজাঃ” ইতি) । মং স্বধা অমৃতং দেবান্নমিতার্থঃ । হে নিত্যে, অক্ষরে অক্ষরসমুদায় (জ্যোতিসামগ্রাদেককৃতম্) ত্বং মাত্রাভিক। গতী ত্রিধা হ্রস্বদীর্ঘপ্লু তরুপেণ স্থিতা। যা চ অর্দ্ধমাত্রা (ব্যঞ্জনবর্ণরূপা), মাপি স্বমেব ইত্যন্তরেণাময়ঃ ; সা কীদৃশী ? যা বিশেষতঃ অষ্টম্ অল্পত্ৰায়া উচ্চারণিতুমশক্যা ( “মাত্রা কর্ণবিভূয়াং বিভক্তে যানে পরিচ্ছদে। অক্ষরাবয়বে যল্লেক্লীবং কাংক্ষোহবধারণে” ইতি যেদিনী) ; যদা তে নিত্যে কার্ণকৃত, হে অক্ষরে প্রণবস্বরূপে ( “ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম” ইতি গীতাস্থক্কেঃ ), মাত্রাভিক। অকারোকারমকারস্বরূপা সঙ্করজন্তুমোময়ী, অর্দ্ধমাত্রা নিগুণা ( তথা নব্বিন্নং (৬) “অকারশ্চ তথোকোয়ো মকারশ্চাক্ষরত্রয়ম্। এতা এব ত্রয়ো মাত্রাঃ সাক্ষরাজসতামসাঃ ॥ নিগুণা যোগিসময়াত্মা চর্দ্ধমাত্রাণি চ বিক্রেয়।

গীকায়ম্বরসংশ্রয়া । পিপীলিকাগতিস্পর্শা প্রযুক্ত। নুগ্নি লক্ষ্যতে”) । যদা মাত্রা অর্দ্ধমাত্রা চ ব্যাক্রা ব্যাক্তিচ্ছিত্তিপরমপদস্বরূপা ; তত্র ব্যক্তং মহাদাদি, অবাক্তং প্রধানং, চিচ্ছিত্তিঃ চৈতন্যশক্তির্জীবঃ, পরমপদং ব্রহ্ম—এতচ্চতুষ্টয়াত্মিকা ; তথাচাত্ত্বৈব “ব্যাক্তা তু প্রথমা মাত্রা দ্বিতীয়া ব্যাক্তসংজিতা । মাত্রা তৃতীয়া চিচ্ছিত্তিরর্দ্ধমাত্রা পরং পদম্” ইতি) । যদা মাত্রাস্ত্রয়ো বেদা ঋগ্ যজুঃসামানি ; যদা মাত্রাস্ত্রয়ো লোকা ভূরু বঃশ্বঃ ; যদা মাত্রা গাহ পতাহবনীয়র্দক্ষণায়জ্ঞয়ঃ ; যদা মাত্রা অংশা ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাঃ ; তথাচাত্ত্বৈব “ওগিত্যেত্যতন্ত্রয়ো বেদাস্ত্রয়ো লোকাস্ত্রয়োহয়য়ঃ । বিষ্ণুক্রমাস্ত্রয়শ্চৈব” ইতি । ( অত্র প্রকৃতেব্রহ্মহং শক্তিশক্তিমতোরভেদবিবক্ষয়া ) । হং সা প্রসিদ্ধা সাবিনী

অর্দ্ধমাত্রা স্থিতা নিত্যা যানুচ্চার্য্যা বিশেষতঃ । হমেব সা হং সাবিনী হং দেবি জননী পরা ॥ ৬৭ ॥ হ্রৈয়েব ধার্য্যতে সর্বং হ্রৈয়েতৎ সৃজ্যতে জগৎ ॥ ৬৮ ॥ হ্রৈয়েতৎ পাল্যতে দেবি হ্রমংস্যাতে চ সর্বদা ॥ ৬৯ ॥ বিসৃষ্টৌ সৃষ্টিরূপা হ্রং স্থিতিরূপা চ

গায়ত্রী । হে দেবি, হমেব জননী মাতা । তস্যাঃ কার্য্যহং নিবারয়তি—পরা সর্বেবাংকুষ্ঠা আদিকারণত্বাৎ ॥ ৬৬।৬৭ ॥ হ্রয়েতি । হ্রয়া এব সর্কং জগৎ ধার্য্যতে (এবকারেণ তস্মা আধারনিরপেক্ষত্বং দ্যোত্যতে) । ব্রহ্মাদিরূপতামাহ—সর্বদা হ্রয়া এতৎ জগৎ সৃজ্যতে উৎপাদ্যতে, হ্রয়া এতৎ জগৎ পাল্যতে রক্ষ্যতে, অস্তে প্রলয়ে হ্রম্ এতৎ জগৎ অৎসি ভক্ষয়সি (সর্বদেতি কাদাচিৎকতাং বাবর্তয়তি । সৃষ্টাদীন্যং গুণত্রয়কার্য্যত্বেহপি গুণত্রয়স্ত্রয়ত্বং হ্রমেব কারোযীতি তাৎপর্য্যম্) । এতৎসকলকর্তৃত্বেহপি আসক্তিং ব্যাবর্তয়তি—হে দেবি প্রকাশরূপে অবিনশুষ্টিচক্রেণ (চিৎপ্রকৃতাভিপ্রায়ৈগৈতৎ সম্বোধনম্) ॥ ৬৮।৬৯ ॥ সৃষ্টীস্থাদিরূপমুক্তা সৃজ্যস্থাদিরূপতাং তৎক্রিয়াক্রপতাক্ষ গ্লেষণাহ বিসৃষ্টাবিতি । অস্ত্র জগতঃ বিসৃষ্টৌ বিবিধসৃষ্ট্যবনরে হ্রং সৃষ্টিরূপা, সৃজ্যতে ভ্রমৌ

সৃষ্টিঃ কার্যং ( কর্মণি ক্রিঃ ), পক্ষে সৃষ্টি নিম্মাণং ( ভাবে ক্রিঃ ) তৎ সুরূপা ( এবমুত্তরবাক্যদ্বয়েহপি )। স্বীয়তে (মহত্তাবিগর্পভয়া) অবস্থাপাতে অসৌ স্থিতিঃ, পক্ষে স্থিতিঃ পালনং ; পালনে পালনবসরে স্বং স্থিতিরূপা পালনরূপা। চেত্যর্থঃ । সংহ্রিয়তে অসৌ সংহ্রতিঃ, পক্ষে সংহরণম্ ; অস্তে প্রলয়ে স্বং সংহতিরূপা সংহার্যরূপা। চেত্যর্থঃ ( এতেন কর্তৃকস্মাধিকরণরূপা প্রতিপাদিতা ) ; নিরপেক্ষকত্বহাং করণকাজ্ঞা নাশ্তোব, যদ্বা করণজ্ঞাপি সংগ্রহোহত্র কার্যঃ (ণ) । সম্ভ্রদানাপাদানসম্বন্ধতামাহ—হে জগন্ময়ে জগৎস্বরূপে ( আৰ্যঃ আং, যদ্বা জগন্তি ময়তে ব্যাপ্নোতীতি ময় গতো পচাদিহাং উঃ ) জগৎ যৈশ্চ

পালনে ॥৭০॥ তথা সংহতিরূপান্তে জগতোহস্য জগন্ময়ে ॥৭১॥ মহাবিজ্ঞা মহামেধা মহাস্থিতিঃ । মহানোহা চ ভবতী

(যদর্থঃ) যতঃ সকলশাং যজ্ঞ সম্বন্ধে বা ভবতি তৎ সৰ্বং ভবেব ; তথাং সৰ্বকারকক্রিয়াযযী স্বমিত্যর্থঃ ॥ ৭০।৭১ ॥ মহেতি । স্বং মহাবিজ্ঞা তত্ত্বমসীতিমহাবাক্য-  
লক্ষণা তথাচ “বিজ্ঞাত্বানি ভিদাবাধঃ” (ত) ইতি, যদ্বা বিজ্ঞা উক্তলক্ষণা ( ৩২পৃঃ ৬পং ) । ক্ষণিকপক্ষং ব্যবত্তয়াত—মহতী মুক্তিপর্যন্তাবসনা চাসৌ মায়া চেতি মহামায়া  
সর্বিমোহিনী । মহামেধা সকলার্থাবধারণলক্ষণা বুদ্ধির্মেধা । স্থিতিপর্যশাস্ত্রং, মহাস্থিতিবেদবিজ্ঞা ; যদ্বা স্থিতিঃ সংস্কারজজ্ঞানবিশেষঃ তস্মা মহত্ত্বম্ স্যাদবুত্ত  
বদ । যদ্বা মহান্ মেধো গবাত্মালন্তনঃ যজ্ঞাং সা মহামেধা যজ্ঞবিজ্ঞা “দীক্ষিতোহগ্নিষ্টৌমীম্যং পশুমালাভেত” ইত্যাদিক্ষতিরূপা ইত্যর্থঃ ; যদ্বা মহাস্থিতিকপনিষৎ “জাত্বা বা  
অরে দ্রষ্টব্যঃ জ্ঞোতব্যো নিদিধ্যাসিতব্যঃ” ইত্যাদিরূপা (খ) এতেন প্রবৃত্তিনিবৃত্তিমার্গবোধক-বিদ্যাক্রুপেতি ভাবঃ ) । মহামোহা মহান্ গোহে। বস্যাঃ মকাল্পাৎ

সংহতিরূপা



তদ্বৈতরিত্যর্থঃ ; যদ্বা মহামোহো ভোগেচ্ছা ( তথাচ বৈধৰে “মহামোহস্ত বিজ্ঞেয়ো গ্রামভোগমুখেধুনা” ইতি, স্ত্রীঃ বিশেষণনিদ্রাশ্রয়ণাং ) । ভবতী স্বং, পুঞ্জোতি বা : মহাদেবী মহাদেবশক্তিঃ, যদ্বা মহতঃ দেবানাম্ ইচ্ছাদীনাং শক্তিঃ সাত্বিকী শক্তিঃ বিভাগঃ । মহাসূরী মহতী অমরশক্তিঃ রাজসী শক্তি-  
 রিত্যর্থঃ ॥ ৭২ ॥ প্রকৃতিরিত্তি । দুঃ সৰ্বজ্ঞ প্রকৃতিঃ কারণম্ । তং কুত ইত্যাহ—গুণত্রয়বিভাবিনী গুণত্রয়ং সত্ত্বরজতমাসি বিলাবয়িতুং লীনঃ ইচ্ছাঃ (তথাচ  
 শ্রীভাগবতে “সত্ত্বঃ রজস্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসমুৎপাদাঃ” ইতি ) । স্বং কালরাত্রিঃ, কালো নরঃ স এব রাত্রিঃ, যবনকণা দ্বাহিরিত্তি বা ; যদ্বা কালজ্ঞ  
 রাত্রিঃ বিলাস ইতি দাবৎ ( তদুক্তং ভগবতা একাদশে “কালো মাধাগয়ে জীবে জীব আত্মন মধাজে” ইতি ) ; যদ্বা কালরাত্রিঃ বন্ধণে মদনলক্ষণা রাত্রিঃ

মহাদেবী মহাসূরী ॥ ৭২ ॥ প্রকৃতিস্বপ্ন সৰ্বব্যা গুণত্রয়বিভাবিনী । কালরাত্রিঃ হারাত্রি-গৌরাত্রি-দ্বাহিরিত্তি ॥ ৭৩ ॥ কুঃ  
 ( তথাচাত্তৈব “উৎপত্তেরক্ষণে যাবদায়ুষো দ্বিপরাঙ্ককম্ । তাবাদনং পরেশজ তংমনঃ সমনো নিশা” ইতি ) । মহারাত্রিঃ ব্রহ্মণে রাত্রিঃ । গৌর-  
 রাত্রিঃ মোহ উত্তলক্ষণঃ (৫৮পৃঃ ৩পং) স এব রাত্রিঃ বুদ্ধেমোহকত্বাৎ, মাহুযী রাত্রিনিজাকপা বা । কৌদূৰী ? দাকুণা অনতিতম্যবীয়া ॥ ৭৩ ॥ স্বমিতি ।

স্বং ক্রীঃ সম্পদং, বিম্ববলভা বা । ক্রীঃ অকল্পজগুপ্সা, তদবিষ্ঠায়া দা । স্বং বুদ্ধিঃ অন্তঃকরণবিশেষঃ । কৌদূৰী ? বোধলক্ষণা,  
 বোধো ব্যবসায়সুদাভিকা নিশ্চয়াগ্নিকৈতি যালৎ ( তদুক্তং কপিপেন “সংশয়োহথ সিপবাসো নিশ্চরঃ স্থতিরেব চ । যাপ উন্মাদ্যতে বুদ্ধেরক্ষণং দাকুণঃ

পৃথক্” ইতি । “অনন্তুনাসিক ইতি বক্তব্যম্” ইতি যানুনাসিকদে এতানি বীজানি লভ্যসি, বুদ্ধিবর্গভবম্ (৫) । জং লজ্জা। জুগুপ্সিতকরণে পরন্তুনিগন্ধয়।  
 দুঃখমিতি ভেদঃ (৬) । পৃষ্টি উপচয়ঃ । তথা তুষ্টিঃ বাদৃচ্ছিকনাভে সংশয়ঃ । ১২ ॥ শাক্তং শিববর্ণনাঙ্গ্যামরাহিতাম্ । ১৩ ॥ ক্ষান্তিঃ এব চ অপকামিন্যনপ-  
 কায়েচ্ছ। ক্ষান্তিঃ (এতা যাত্তোতা অপি) ॥ ৭৪ । ৭৫ ॥ পজ্জানীতি । (অমিত্রাক্ষরধঃ) নং পজ্জানী পজ্জপজ্জা, তচ্ছক্রিকারঃ ন। এবং শূলিনী, গদিনী,  
 চক্রিনী, তথা শঙ্খিনী, চাপিনী, বাণহুশুভ্রীপরিঘাসনা (বাণঃ শরঃ ; হুশুভ্রী লৌহলগ্নদ্রবিশেষঃ, যত্র “পহরী চ চক্রঃ”। লৌহকটকসংক্রিয়ঃ । তুষ্টিঃ)

১৫

— ১১ —

ক্ৰীত্বমীশ্বরী স্বং হ্রী-স্বং বুদ্ধিবর্ধন-লক্ষণা ॥ ৭৪ ॥ লজ্জা পৃষ্টিতুথ। তুষ্টি-স্বং শান্তিঃ ক্ষান্তিরেন চ ॥ ৭৫ ॥ পজ্জ-গিনী শূলিনী মোর।  
 গদিনী চক্রিনী তথা । শঙ্খিনী চাপিনী বাণ-হুশুভ্রী-পরিঘাসনা ॥ ৭৬ ॥ সৌম্যা সৌম্যতর। বৈ-সৌম্যোভ্যস্ত্যস্তম্বরী । পন্নাপন্নঃ

সর্বতে। লৌহকটকভুক্তমোরতা” ৷ ৩৩ ॥ ত্রীধরধারিণীতম্, হ্রীষ শব্দে পাতঙ্গবীতি তুষ্টি—শক্তিঃ সঙ্গ্যং তানদ্যাদিঃ, পচাদিভ্যঃ হ্রঃ, নদাদিভ্যঃ জে, “সৌম্যো বৃক্ষা”। তত  
 (ন) ধাতোরকারস্ত উকারঃ পূর্বগদে হ্রস্বশ্চ ; পরিঘো লৌহলগ্নঃ) এতে আয়ুর্বাণি যজ্ঞাঃ না, তচ্ছক্রিকারীত না । অতএব যোয়া ভবক্ৰবা ॥ ৭৬ ॥ সৌম্য।  
 স্বং সৌম্যা (সার্ব সাং) আত্মাদিক। নতুয়াদিগোভা । সৌম্যতরা অত্যাহ্ল্যাদিগোভা । চতুপন্ন্যাদিগোভা । অশেষ্যসৌম্যোভ্যস্ত্যস্তমবলক্ষিতানক-  
 বস্তব্যশ্চ অতিম্বরী অত্যাহ্ল্যাদিক। পরমানন্দময়ীভ্যঃ । সৌম্য। ঐহিকরূপদয়ঃ, সৌম্যভয়া স্বর্গাদিহৃদহুভ্যঃ, অশেষ্যসৌম্যোভ্যঃ অতিম্বরী

নির্বাণহেতুত্বাদি বিজ্ঞাবিনোদঃ)। পরাপরাণাং (পরে ব্রহ্মাদয়ঃ, অপারে ইন্দ্রাদয়ঃ তেবাং) পরমেশ্বরী পরমনিয়ন্ত্রী স্বমেব। তত্র হেতুঃ পরমেতি, পরম্ ঈশ্বরং মাতি জীবভাবেন বদ্ধাভীতি পরমা; পরাপরাণাং কার্যাকারণানাং পরমা আদিকারণস্বরূপেতি বা ॥ ৭৭ ॥ আরোপি তত্ত্বগুণকীর্তনং স্তুতিঃ, সা তব নাস্তীত্যাহ যচ্ছেতি। যচ্চ যাদৃক্, কিঞ্চিৎ ক্ষিমপি, কিঞ্চিৎ কুত্রচিৎ দেশে কালে চ, সৎ কারণম্, অসৎ কার্যম্—যদ্বা সৎ স্থূলম্, অসৎ সূক্ষ্মম্—যদ্বা সৎ

প্রশস্তম্, অসৎ নিন্দ্যং—যদ্বা সৎ বিজ্ঞমানম্, অসৎ অবিজ্ঞমানম্ অতীতং ভাবি চ বস্তু অস্তি, তস্মৈ সর্বস্বা বস্তুনো যা স্বং শক্তিঃ শক্তিরূপা যদা, তদা সা স্বং স্তূয়সে কিম্?

পরমা স্বনৈব পরমেশ্বরী ॥ ৭৭ ॥ যচ্চ কিঞ্চিৎ কচিদ্ বস্তু সদসদ্ বাখিলাত্মিকে। তস্য সর্বস্য বা শক্তিঃ সা স্বং কিং স্তূয়সে

তদা ॥ ৭৮ ॥ যয়া হয়। জগৎপ্রযচ্চ। জগৎপাতাভি যো জগৎ। সোহপি নিদ্রাবশং নীতঃ কস্থাং স্তোতুমিহৈশ্বরঃ ॥ ৭৯ ॥

অপি তু তব স্তুতিরেব ন ভবতি, কিন্তু স্বরূপোংকীর্তনমাত্রমেতদিত্যর্থঃ। এতদেবোপপাদয়তি—হে অখিলাত্মিকে সর্বব্যস্বরূপে ॥ ৭৮ ॥ নতু “বিষ্ণোর্ময়া ভগবতী” ইতি—“মগাদ্ ময়া গুণময্যনেকধা” ইতি—“দৈবী হোষা গুণমযী মম মায়া তুরত্যা” ইত্যাদিবচনেভ্যঃ সম্বন্ধিত্বপ্রতিপাদনেন বিষুৎস্বংপরিচ্ছেদং জানাতু? নেত্যাহ যয়েতি। যো বিষুঃ জগৎপ্রযচ্চ। জগজ্জনকঃ, যচ্চ জগৎপাত। জগদ্রক্ষকঃ, যচ্চ জগৎ অতি ভগ্নয়তি, সোহপি চেৎ নিদ্রাবশং নিদ্রায়তভাঃ নীতঃ প্রাপিতঃ, অতস্ত্যাং স্তোতুম্ ইহ জগতি কঃ ঈশ্বরঃ সমর্থঃ? অপি তু ন কোহপীত্যর্থঃ। যদ্বা এবং সর্বব্যাপারেশ্বরোহপি ভগবাংশেচৎ স্বয়। নিদ্রাবশং নীতঃ, তদা কঃ ব্রহ্ম। কেবল-

স্তুতিঃ

ଅଷ୍ଟିବ୍ୟାପାରେଷ୍ଠରଃ ଶ୍ଵୋତୁନୀଧରଃ ? ନୈବେତି କାକୃତ୍ୟା ନିଧେଃ ॥୧୩॥ ନ କେବଳମେତାବଂ, କିନ୍ତୁ ଧରୀରଗ୍ରହଣମପି ସରଂ କରାତା ଇତ୍ୟାହ ବିଷ୍ଣୁରୀତି । ବିଷ୍ଣୁର୍ଜଗତ୍ପାଳକୋହିପି, ଅହଂ ଜଗତ୍ସୃଷ୍ଟୀପି, କିମାନୋ ଜଗତ୍ସଂହାରକୋହିପି ଏବ ଚ ଯତଃ ତେ ତ୍ରୟା (ପ) ଧରୀରଗ୍ରହଣଂ କରାତାଃ, ଅତଃ କାରଣଂ, ଶ୍ଵୋତୁଂ କଃ ଶକ୍ତିଗାନ୍ ଭବେଂ ? ଅପି ତୁ କୋହିପି ନେତ୍ରାଗ୍ରଭାବତଃ (ତତ୍ରଂ କାର୍ଯ୍ୟାୟ ଗୁଣଗ୍ରହଣମେବାତ୍ର ଧରୀରଗ୍ରହଣଂ, ନ ଶ୍ଚିତ୍ରବଂ ; ତଥାଚ ଅଥମେ “ସଦ୍ଵଂ ବଜ୍ରମ୍ଭୂତମିତି ପ୍ରକୃତେଷୁ ଶ୍ଵୋତୁଂ କ୍ତଃ ପରଃ ପୁରୁଷ ଏକ ଇହାସ୍ତ ଧତ୍ତେ । ସ୍ଥିତ୍ୟାଦୟେ ହରିବିରିକ୍ଷିହସ୍ୟେତି ସଂଜ୍ଞାମ୍” ଇତି ) ॥୮୦॥ ଶ୍ଵତ୍ୟାଭିମୁଖୀକୃତ୍ୟ ପ୍ରସ୍ତୁତଂ ପ୍ରାର୍ଥୟତେ ମେତି ଧାତ୍ୟାମ୍ । ହେ ଦେବି, ମା ଅନିଷ୍ଟଚରୀପ୍ରାଭାବା ସ୍ଵମ୍ ଇଥମ୍ ଉକ୍ତପ୍ରକାଶେନ

ବିଷ୍ଣୁଃ ଧରୀରଗ୍ରହଣ-ଗହ-ଶିଶାନ ଏବ ଚ । କାରାତାନ୍ତେ ଯତୋହତଦ୍ଵାଂ କଃ ଶ୍ଵୋତୁଂ ଶକ୍ତିଗାନ୍ ଭବେଂ ॥ ୮୦ ॥ ମା ହ୍ରାନ୍ନିତ୍ଵଂ

ପ୍ରଭାବେଃ ସୈ-ରୁଦାରୈର୍ଦେବି ସଂସ୍ତତା । ମୋହୟେତୋ ଦୁରାଧର୍ଯ୍ୟା-ବସ୍ତରୋ ମଧୁ-କୈଟଭେ ॥ ୮୧ ॥ ପ୍ରାବୋଧଂ ଜଗତ୍ସ୍ଵାମୀ ନୀୟତା-

ମଧୁଯେତୋ ଲୟ । ବୋଧେଚ କ୍ରିୟତାମସା ହସ୍ତମେତୋ ମହାସ୍ତରୋ ॥ ୮୨ ॥ ଧାବିରୁବାଚ ॥ ୮୩ ॥ ଏବଂ ସ୍ତୁତା ତଦା ଦେବୀ ତାମସୀ ତଦ୍ରା

ସୈଃ ଆତ୍ମାୟିଃ ଅସାଧାରଣେରିତି ଯାବଂ ପ୍ରଭାବେଃ ଯାତ୍ରାୟିଃ ସ୍ତୁତା ଯଥାଶକ୍ତି ବର୍ଣ୍ଣିତା ମତୀ ଏତୋ ଦୁରାଧର୍ଯ୍ୟୋ ଅନଭିଭବନୀୟୋ ମଧୁକୈଟଭୋ ତଦାପ୍ୟେଽସ୍ତରୋ ଗୋପା ! ବରମୁକ୍ତୟମାହ—ଜଗତ୍ସ୍ଵାମୀ ଜଗଦୀଶ୍ଵରଃ ଆତ୍ମାୟତଃ ଅପ୍ରୀତିହତବଳଃ ବିଷ୍ଣୁଃ ଲୟୁ ଶାସ୍ତ୍ରଂ ପ୍ରାବୋଧଂ ନୀୟତାଂ ଅର୍ଥଂ ସ୍ଵା । ନ କେବଳଂ ପ୍ରାବୋଧୋ ନେତବା, କିନ୍ତୁ ଅସ୍ତ୍ର ବିକ୍ଷୋଃ ଏତୋ ଯହାସ୍ତରୋ ହସ୍ତଂ ନାର୍ଯ୍ୟୟତୁଂ ବୋଧଃ ବାସମାୟଶ୍ଚ କ୍ରିୟତାଂ କାର୍ଯ୍ୟାତ୍ମାୟିତାର୍ଥଃ (କରୋତେକଂ ପଞ୍ଚାଙ୍ଗକନ୍ୟୁକ୍ତଂ “ଭବତାର୍ଥସ୍ତ୍ର ଯଃ କର୍ତ୍ତା ଭାବତୁଃ ସ ପ୍ରୟୋଜକଃ” (କ) ଇତି ; ପ୍ରାର୍ଥନାୟାଂ ଲୋଽହି ) ॥୮୧-୮୩॥ ଧାବିରୁବାଚ ॥୮୩॥ ଏବମିତି । ତଦା ତସ୍ମିନ୍ କାଳେ, ତଦ୍ରା ବିଷ୍ଣୁନାଭିକଲେ, ମା ଦେବୀ ଦେବଦେହବିହାରିଣୀ, ତାମସୀ ନିନ୍ଦ୍ରାକ୍ରମା ( ୩୩୮

—  
୧୩୮  
୧୩୯  
୧୪୦  
୧୪୧  
୧୪୨  
୧୪୩  
୧୪୪  
୧୪୫  
୧୪୬  
୧୪୭  
୧୪୮  
୧୪୯  
୧୫୦  
୧୫୧  
୧୫୨  
୧୫୩  
୧୫୪  
୧୫୫  
୧୫୬  
୧୫୭  
୧୫୮  
୧୫୯  
୧୬୦  
୧୬୧  
୧୬୨  
୧୬୩  
୧୬୪  
୧୬୫  
୧୬୬  
୧୬୭  
୧୬୮  
୧୬୯  
୧୭୦  
୧୭୧  
୧୭୨  
୧୭୩  
୧୭୪  
୧୭୫  
୧୭୬  
୧୭୭  
୧୭୮  
୧୭୯  
୧୮୦  
୧୮୧  
୧୮୨  
୧୮୩  
୧୮୪  
୧୮୫  
୧୮୬  
୧୮୭  
୧୮୮  
୧୮୯  
୧୯୦  
୧୯୧  
୧୯୨  
୧୯୩  
୧୯୪  
୧୯୫  
୧୯୬  
୧୯୭  
୧୯୮  
୧୯୯  
୨୦୦

“অতীতঃ তামসী শক্তিরদৃশ্য। পশুত্বো হরেঃ। যমচ্ছাদিতেনেত্রোহয়ং পশুন্নপি ন পশুতি” ইতি, যদ্বা তামসী তমোগময়ী (“মধুকৈটভয়োবুকে ধোয়া। না। তামসী শিবা” ইতি। দামলে) বেধসা। ব্রহ্মাণা। এবম্ উক্তরূপেণ স্তুত। সতী বিযোঃ নেত্রাশ্রনাদিকাবাত্তজদযেভ্যাঃ (আস্যাং নুপং, হৃদযং যনঃ; “অন্তসহিতঞ্চ” ইত্যেনে অপ্রাণ্যঙ্গ-সহিতস্ত্যাপি প্রাণ্যঙ্গ একমে প্রাপ্তে, “গ্রানিবাকুলনাটে”খিতিবং বাহুসকাং নৈকহয়) তথা উরুসঃ বক্ষসঞ্চ নিঃসৃত্য ব্রহ্মণো দর্শনে দর্শনবিষয়ে তেষৌ স্থিতবতা, প্রত্যঙ্গা। স্থিতেতি যাবৎ (ইতি দয়োরন্বয়ঃ)। কিমর্থম্? মধুকৈটভৌ নিহন্তং নিযোঃ প্রবেদনাথায় জাগরণায় ( উক্তাণাং চতুর্থী, যদ্বা প্রবেদনরূপমথং প্রয়োজনং বেধসা ॥ ৮-৪ ॥ বিযোঃ প্রবেদনার্থ্যয় নিহন্তং মধু-কৈটভৌ। নেত্রাসা-নামিক।-বাত্ত-হৃদয়েভ্যস্ত্রুণোবাসঃ ॥ ৮-৫ ॥ নির্গম্য দর্শনে তেষৌ ব্রহ্মণোহব্যক্তজন্মনঃ ॥ ৮-৬ ॥ উত্তেষৌ চ জগন্নাথ-স্তুয়া। নুত্তে। জনাদ্দিনঃ। একার্ণবেহহিংশয়না-ভুতঃ স দদৃশে চ মনসি কৃৎস্না বেধসা স্তুতেতি)। ব্রহ্মণঃ কৌদৃশস্ত? অব্যক্তজন্মনঃ কেনাপি ন ব্যক্তং (জাতং) জন্ম। নস্ত্য তস্ত্য স্বরূপাং সমাজস্বাক্ষ, যদ্বা অব্যক্তাঘিষেজ্জন্ম। যস্য ॥ ৮-৪। ৮-৫। ৮-৬ ॥ উত্তস্যবিতি। জনাদ্দিনঃ তয়া। নিদ্রারূপায়। দেব্যা। নৃত্তঃ সন্ একার্ণবে একীভূতগহাসমুদ্রে অহিংশয়নাং শেফলয্যায়্যাঃ উক্তেষৌ। তদ-নন্তরং তৌ মধুকৈটভৌ দদৃশে চ ( ইতি দয়োরন্বয়ঃ)। চকারাং তানপি তং দদৃশাতে (“কর্মব্যভীচাঃ” ইত্যাহ্বানেপদম্)। তৌ কৌদৃশৌ? দুর্ভাগ্যানো দুঃস্থভাবৌ, অতিবীৰ্য্যপরাক্রমৌ (বীৰ্য্যং শক্তিঃ, পরাক্রমঃ উৎসাহঃ, অতিশয়িতৌ ভৌ যমোক্তৌ), ক্রোধেধন রক্তে লুকণে চক্ষুর্ময়ী যমোক্তৌ) ক্রোধেধন রক্তে লুকণে চক্ষুর্ময়ী যমোক্তৌ, ব্রহ্মাণম্

উ  
চ  
প্রা  
শ্রি



কালিকত্ববোধায় ) । ননু অত্র কিমপি কিমিতি ন প্রার্থাতে ইতি চেৎ, তত্রাহ—অত্র যুদ্ধে অগ্নেন বরেণ কিম্ ? ন কিমপি প্রয়োজনমিত্যর্থঃ (যুদ্ধে জয়ৈশ্চবেষ্টদ্বাং ) । ( হি অবধারণে ) এতাবন্ধি এতাবদেব মম বৃত্তং বরঃ ( ভাবে ক্তঃ ) ॥২৩৯৪॥ ঋষিরুবাচ ॥২৫॥ বন্ধিতাভ্যামিতি । ইতি অনেন প্রকারেণ বন্ধিতাভ্যাং মহানায়ক। ছলিতাভ্যাং তাভ্যাং তদা প্রলয়ে সৰ্বং জগৎ আপোময়ং জলময়ং বিলোক্য ভগবান্ কমলেক্ষণঃ বিষ্ণুঃ গদিতঃ উক্তঃ (“আপঃ সান্তং পয়োবাচি” ইতি কোষঃ, “আপোভিক্ষার্জ্জনং কুখ্যাং” ইতি স্থতিঃ ) ; যদ্বা সৰ্বং জগৎ আ সম্যক্ প্রকারেণ আপো জলানি বিলোক্য, অময়ম্ অহিঃসনং যথা ভবতি তথা গদিতঃ । মীড়-

॥ ২৩॥ কিমন্তেন বরেণাত্র এতাবন্ধি বৃত্তং মম ॥২৪॥ ঋষিরুবাচ ॥ ২৫ ॥ বন্ধিতাভ্যামিতি তদ। সৰ্বব্রহ্মাপোময়ং জগৎ ॥ ২৬ ॥  
বিলোক্য তাভ্যাং গদিতো ভগবান্ কমলেক্ষণঃ ॥২৭॥ আবং জহি ন যত্রোবর্ষী সলিলেন পরিপ্লুত ॥২৮॥ ঋষিরুবাচ ॥২৯॥

হিংসায়াং ক্তঃ ॥২৬৯৭ ॥ কিং গদিতম্ ইত্যাহ আবামিতি । ( অত্র “প্রীতো যন্তব যুদ্ধেন শ্লাঘ্যন্তম্ তুরাবয়োঃ” ইতি হরিষংলীযপদাঙ্কং কেচিং পঠন্তি, তদুপেক্ষণীয়ং,

মূলসংহিতায়ামদৃষ্টদ্বাং দী কাকুভিরব্যাখ্যাতদ্বাচ ) । যত্র স্থানে উবর্ষী পৃথী সলিলেন ন পরিপ্লুত ন ব্যাপ্তা, তত্র আবং জহি মারয় (এতেন পৃথিব্যা জলপ্লুতেষ্টেন স্থান-  
ভাবাদেব মরণং ন ভবতীত্যভিপ্রায়ঃ) . ॥ ২৮ ॥ ঋষিরুবাচ ॥২৯ ॥ তথেনি । ভগবত। অচিন্ত্যৈশ্বৰ্য্যেণ শঙ্খচক্রগদাভূতা তথা এবং কৰ্ত্তব্যম্ ইত্যুক্ত। ভয়োঃ শিরসী  
জঘনে কৃত্বা চক্রেণ ছিন্নে (ননু উবর্ষ্যানিব ছেদনমঙ্গীকৃত্য কথং জঘনে চিচ্ছেদ ? সত্যম্ ; লোকাত্মকশ্চ ভগবতো জঘনে পৃথিব্যাঃ স্থিতদ্বাং, তথ্যচ দ্বিতীয়ে “মহীতলঃ

তজ্জঘনং মহীপতে, নভস্তনং নাভিসরো গুণস্তি” ইতি ) ॥ ১০০। ১০১ ॥ উপসংহরতি এবমিতি । এষা অপরোক্ষদীভূতা মহাশায়া এবম্ অনেন প্রকারেণ ব্রহ্মণা সংস্কৃতা সতী স্বয়ং সমুৎপন্না ॥ ১০২ ॥ প্রস্তাবান্তরং প্রতিজনীতে প্রভাবমিতি । অস্যা দেব্যাঃ ভূয়স্ত পুনরপি প্রভাবঃ শূনু, তে ভূত্বং বদাম ॥ ১০৩ ॥

তথেষ্তুক্তা ভগবতা শঙ্খচক্রগদাভূতা ॥ ১০০ ॥ কৃষ্ণা চক্রেন বৈ চ্ছিনে জঘনে শিরসী তয়োঃ ॥ ১০১ ॥ এবমেষা সমুৎপন্না ব্রহ্মণা সংস্কৃতা স্বয়ম্ ॥ ১০২ ॥ প্রভাবমস্যা দেব্যাস্ত ভূয়ঃ শূনু বদামি তে ॥ ১০৩ ॥ \* ॥ ইতি শাক্বেয়পুরাণে সাবর্ণিক মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে মধু-কৈটভবধঃ ॥ \* ॥ ১ অঃ ॥ \* ॥

ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ দেবাস্থরমভূদ্ যুদ্ধাং পূর্ণদিকশতং পুরা । মহিষেহস্থরাণামধিপে দেবানাঞ্চ পূরন্দরে ॥ ২ ॥ তত্রাস্মৈ-

ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ ভূয়ঃ শূনু বদামি তে ইতি স্বং প্রতিজ্ঞাতং, তৎ প্রস্তোতি দেবেতি । পুরা পূর্বাশ্মিন্ কালে পূর্ণম্ অন্যান্যতিরিক্তম্ অদ্বৈতং বহুদিকশতং ব্যাপ্য দেবাস্থরং দেবাস্থরনামকং যুদ্ধমভূৎ ( দেবাস্থ অস্থরাশ্চ যোদ্ধারো যত্র “যুদ্ধে প্রগোজনযোদ্ধাভ্যাম্” ইতি টি, বাহুল্যাদ্ভ্যাস্যঃ, গুরুত্বাদিভ্যাম্ উত্তরপদে বা যুদ্ধিঃ ; তথাচ ‘তত্র দেবাস্থরো’ নাম রণঃ পরমদাকৃণঃ” ইতি ) । কদা ? মহিষে মহিষাস্থরে অধিপাণাম্ অধিপে সতি, দেবানাঞ্চ পূরন্দরে অধিপে সতি



( অত্র পুরন্দরনামি ইন্দ্রে দ্বিতীয়মদ্বতরে ইতি বিজ্ঞাবিনোদঃ ; এতদযুক্তম্, দ্বিতীয়মদ্বতরে অতীতেনৈতদাখ্যানস্য কথনং ; ন বা বৈবস্বতমদ্বতরে পুরন্দরনাম। ইন্দ্রঃ  
 বারাহকল্পে, “গজদ্বী নাম তত্রোদ্রে। মহাত্মা যজ্ঞভাগ্ ভূবঃ” ইতি মার্কণ্ডেয়েন উক্তম্ ; অত্র ইন্দ্রমাত্রস্যৈব পুরন্দরত্বং জ্ঞেয়ং, তথ্যচত্রৈব “সর্কে ত্রে ত্রিদশেজ্রাশ্চ  
 বিজ্ঞেয়াস্তলক্ষণাঃ । সহস্রাক্ষাঃ কুলির্গণঃ সর্ব এব পুরন্দরাঃ” ইতি । তন্মাংসং সারোচিবনহস্তর এবৈতদাখ্যানং, তত্রৈব মহিষাদীনাং পুংস্তে, তথ্যচ বিষ্ণুপুবাণং  
 “এষ মদ্বতরে অক্ষন্ সর্গঃ সারোচিষেহস্তরে” ইতি । ন চ “পুরন্দরস্তথাবাত্র মৈত্রেয় । ত্রদশেশ্বরঃ” ইতি বৈষ্ণবোক্তে, “জাম্বিন্যভবো বাজমিত্রশেষাং পুরন্দরঃ” ইতি  
 ভাগবতোক্তে। বিজ্ঞাবিনোদোক্তং যুক্তিসিদ্ধি বক্তব্যম্, “বারাহ ইতি কল্পোহয়ং প্রথমঃ পার্বকীতিতঃ” ইতি মার্কণ্ডেয়েন কথিতম্ । তৎক্রমেণৈব কথিতম্ । বাবাহকল্পীয়-

মর্হাবার্ষ্যে-দেবসৈন্ত্যং পরাজিতম্ । জিহ্বা চ সকলান্ দেবা-নিম্ভ্রোহি ভূমাহি বাসুরঃ ॥ ৩ ॥ ততঃ পরাজিতা দেবাঃ পদ্মা-  
 যোনিং প্রজাপতিম্ । পুরস্কৃত্য গতাস্তত্র যত্রোশ-পরুড়ধ্বজৌ ॥ ৪ ॥ যথা বৃত্তং তরোস্তদ্ব-ম্বাহিমাসুর-চেষ্টিতম্ । ত্রিদশাঃ  
 মাথানমেতং ; “তস্ত নাভেঃ সমভবৎ পদ্মকোষো হিরণ্ময়ঃ” ইত্যাদিসমুদংগাখ্যানোপক্রমে পদ্মে মষ্টমৃষ্টানুসরণাং বিষ্ণুপুবাণ-ভাগবতোক্তং পাদকল্পীয়মবগন্ত-  
 বান্, অনুক্রমানুসরণোদ্যোগঃ সম্ভবাত্ ; অতএব সর্কনিবদ্ধৃতিঃ এবং বিরোধে কল্পভেদ এব সিদ্ধান্তোদ্যোনোক্তঃ, যুক্তং কোদ্রে “দিরোধো বাণাযাযিত্র না প্রাণাণাং তদি-  
 যাত্তে । যথা বিরোধো ন ভবেতথৈবার্থঃ প্রবল্ল্যতে” ইতি ) ॥ ২ ॥ তত্রোদ্রে । তত্র যুদ্ধে মহাদীর্ঘ্যঃ অস্ত্রৈঃ দেবসৈন্ত্যং পরাজিতম্ । ( ন কেননামেতাবৎ,  
 কিন্তু ) সকলান্ দেবান্ জিহ্বা মহিমাসুর ইন্দ্রশ্চাত্তম্ ॥ ৩ ॥ তত ইতি । ততস্তদনন্তরং দেবাঃ পরাজিতাঃ সন্তঃ পদ্মযোনিং প্রজাপতিং লক্ষ্যণং পুরস্কৃত্য তত্র গতঃ, যত্র

— ত্রিদশী

কথ্যমাস্তু-দেবাভিব-বিস্তরম্ ॥ ৫ ॥ সুর্বোদ্ভাগ্যানিগন্ধনাং যমজ্ঞ বক্রবসঃ চ । জনেন্দ্রাপাদিকারান্ ॥ স্বয়মেবাদিতীশান  
 ॥ ৬ ॥ স্বর্গাঙ্গিরাকৃতঃ সৰ্বৈ তেন জেমণা ভূষি । বিচরন্তি দধা নর্দন্য যাহ্মেণ ছুরাতুজা ॥ ৭ ॥ এহম্ বঃ কথিতঃ অলিন-  
 মনরাবি-বিচেষ্টিতম । শরণঞ্চ প্রপন্নঃ সৌ বশস্তস্য বিচিত্রতাম্ ॥ ৮ ॥ ইথে পিণ্ডায় দেবানাং বাচংশিঅধুনানঃ । চকার কোপা

ছুরাঙ্গনা দুষ্টপতাদিন ॥ ৭ ॥ এতদ্বিদ্ধি । এতৎ অনরাপ্রিবিচাষ্টিতম্ অহরচরিতং সমং দাবস্তং সো যুমান প্রসি ( শব্দ ) সমবক্ষ্যতে যস্মৈ । এতচ্ছব্দোদগম্য দুষ্টপা  
 বা ) কথিতম্ । ( ন কেবলমন্তোবৎ, কিন্তু ) শূদ্র ( অর্থাৎ ) বয়ঃ পরাক্র প্রাপ্যঃ । তস্য বক্ষঃ বদ্যোদগঃ চিহ্নতঃ গম্ ( নীতি প্রাপ্তি ) ॥ চণ্ড উপাধি । ( অর্থাৎ )  
 মনুষ্যদানঃ ক্রীড়কঃ কোপং চকর । মনুষ্যদানঃ ক্রীড়কঃ কোপং চকর । মনুষ্যদানঃ ক্রীড়কঃ কোপং চকর । ( অর্থাৎ ) মনুষ্যদানঃ ক্রীড়কঃ কোপং চকর ।

শত্বরিতি চ উচিতপদোপাদানং, দৈত্যনাশকত্বাং কল্যাণকরত্বাচ্চ ; মধুনাযানমশ্বরং স্মৃতিতবানিতি মধুসূদনঃ, শং কল্যাণায় ভবতীতি শত্বঃ ) । ভৌ কীদৃশো ? ভূকুটীকুটিলাননো ; ভূকুটী ললাটিসঙ্কোচনং, তয়া কুটিলং ভীষণম্ আননং যয়োঃ ভৌ ( অত্র “ক্রকুংসাদীনাং হৃদ্যতো” ইতি হৃদ্যতোবিষয়ে ছান্দস ঋকারাদেশঃ, যথা “নাহং বিভ্রম্যজিত তেহতিভয়ানকস্য জিহ্বাকর্নেত্রভূকুটীরভসোগ্রদংষ্ট্রাং” ইতি সপ্তমে ; অকুটীত্বাকারবৎপাঠং কেচিৎ পঠন্তি ভাষারসিকাঃ ) ॥৯॥ তত ইতি । ততস্তদনন্তরং চক্রিণো বিষেধাবদনাং মহৎ প্রচুরং তেজঃ নিঃসৃতম্ । ততো বিসেধাস্তেজোনিষ্করণনন্তরং ব্রহ্মণঃ শরশ্চ চ তেজে নিশ্চক্রাম ।

শত্বশ্চ ভূকুটী-কুটিলাননো ॥ ৯ ॥ ততোহিতিকোপপূর্ণস্য চক্রিণো বদনাত্ততঃ । নিশ্চক্রাম মহভেজো ব্রহ্মণঃ শরশ্চ চ

॥ ১০ ॥ অন্তেষাঐশ্বেদেব দেবানাং শক্রাদীনাং শরীরতঃ । নির্গতং স্মগহভেজ-স্তুচৈক্যং সমগচ্ছত ॥ ১১ ॥ অতীব তেজসঃ কুটং

কীদৃশস্য ? অতিকোপপূর্ণস্য অতিকোপেন পূর্ণস্য ( পদাবৃত্তা৷ ত্রাণামেব বিশেষণম্ । কোপপূর্ণেষ্টেন তেজসঃ স্থানাভাবাৎ নিষ্করণম্, অগ্নিশ্রিণি ঘটাদৌ পূর্ণে সতি তদন্তঃস্থং দ্রবদ্রব্যং বহিনিঃসৃত্য পততীতি লোকপ্রসিদ্ধমপি ) ॥ ১০ ॥ অন্তেষাঃ শক্রাদীনাং ইন্দ্রাদীনামপি দেবানাং শরীরতঃ স্মগহভেজ-স্তুচৈক্যং তেজঃ নির্গতম্ । তচ্চ তেজ ঐক্যং মেলনং সমগচ্ছত প্রাপ্তম্ ( “আত্মনোপদমিচ্ছন্তি পরৈশ্বপদিনাং কচিৎ” ইতি সম্পূর্কীং সাক্ষ্যকাদপি গমেরান্মনো-পদম্ ; যদ্বা একমেব ঐক্যং স্বার্থে যৎ, একমভূদিতি । অকমভ্বাদাত্মানোপদম্ ) ॥ ১১ ॥ অতীবৈতি । তে স্মরা দেবাঃ তত্র কাতাযনাম্রমে ( ইতি পরম্পরায় জ্ঞেয়ম্ ) তৎ তেজসঃ কুটং তেজোরশিৎ দদুঃ । কীদৃশম্ ? জলন্তং দেদৌপায়ানং, জ্বালাব্যাপ্তদিগন্তরং জ্বালাভিঃ শিখাভিঃ ব্যাপ্তানি

— তে এষি ঐ

• দিগন্তরাগি যেন ; পৰ্বতগিবেতি অতুচ্ছিত্ত্বং তদ্বৎ, যদ্বা বনদাহাদিনি। অলন্তঃ পৰ্বতগিবে ॥১২॥ অতুগামিতি । তং তদনন্তরং তত্র স্থানে তং তেজ-  
একস্থং মিলিতং সৎ নারীরূপম্ অভূৎ। কীদৃক্? স্ত্রীমা কান্ত্যা ব্যাপ্তলোকত্রয়ং ব্যাপ্তং লোকত্রয়ং তুরাদি যেন ; অভব অতুলং নিকৃপয়ং ; সৰ্বদেবগণীগণং  
সৰ্বদেবানাং শরীরেভ্যো জাতং প্রাহুত্বম্ ॥১৩॥ যস্য তেজসা যদঙ্গমতুং তদদর্শয়তি বহুভূতিতি । শান্তবং শস্ত্রসম্পাদি যং তেজঃ অভূৎ, তেন তেজসা তেমা।

জনন্তগিব পৰ্বতম্ । দদৃশুস্তে সুরাস্তত্র স্থালাব্যাপ্তদিগন্তরম্ ॥ ১২ ॥ অতুলং তত্র ততেজঃ সৰ্বদেব-শরীরজন্ম । একস্থং

তদভূন্নারী ব্যাপ্তলোকত্রয়ং যিষা ॥ ১৩ ॥ যদতুচ্ছান্তবং তেজ-স্তেনাজায়ত তন্মুখম্ । যাগ্যেন চাভবন্ কেশা বাহবো বিবু-

তেজসা ॥ ১৪ ॥ সৌম্যেন স্তনরোয়ুগ্মং গধ্যৈক্ষেদ্রেণ চাভবৎ । বারুণেন চ জজ্ঞৌরু নিতম্বস্তেজসা ভূদঃ ॥ ১৫ ॥ ব্রহ্মণ-

মুখম্ অজাযত । যাম্যেন যমাসম্বন্ধিনা তেজসা চ তস্যঃ কেশাঃ অভবন্ । বিষ্মতেজসা তমা। বাহবঃ অভবন্ ॥ ১৪ ॥ সৌম্যেন সৌম্যসম্বন্ধিনা।  
তেজসা তস্যঃ স্তনরোয়ুগ্মম্ অভবৎ ( নহু স্তনরোয়ুগ্মমিত্যুক্তেঃ দ্বয়োদ্বিষাপত্র্যা চতুষ্টয়ং ম্যাং? মৈবম্ ; সন্নিহিতত্বেন প্রাকৃত্যর্থস্যৈব দিব্যক্ষিত্বাৎ, বিশিষ্টত্ব-  
পদস্যধুব্যুদ্বৈক্যেব ; ব্যাপ্যাত্মৈক্যেবঃ স্তুতিকৃষ্টিঃ “যাংশ্চ স্বমহু তস্মৈ তে স্বধা” ইত্যত্র যে-ইতি বহুবচনান্তসা ঐশ্ব-ইত্যেকবচনান্তমেনোপাদানে, এবৈবানুপোহগি  
“এতদ্বঃ পিতরো বাসঃ” ইত্যত্র চ । “দত্যদিত্যযাদিত্যাগ্নাঃ” ইত্যত্র সোমশব্দস্যাপ্যপলক্ষণীয়ত্বং গাঃ, যদ্বা সৌমাধিষ্ঠাতৃত্বাৎ সৌম্যো দৈবতম্যসৌতি “সৌম্যজান্”

— স্ত্রীমা কান্ত্যা ব্যাপ্তলোকত্রয়ং ব্যাপ্তং লোকত্রয়ং তুরাদি যেন ; অভব অতুলং নিকৃপয়ং ; সৰ্বদেবগণীগণং

ইতি ট্যগ্ )। ঐত্রেদগ ইন্দ্রসম্বন্ধিনা তেজসা চ মধ্যং মধ্যভাগোহভবৎ । বারুণেন বরুণসম্বন্ধিনা তেজসা চ জজ্ঞেয়াকু অভবতাম্ ( জজ্ঞাসহিতাবুরু ; যদ্বা দ্বন্দ্বৈহপি পূৰ্ব্ববৎ ( ৭৪ পৃঃ ৩ পং ) বাহুলকাৎ গবাশ্বাদিষাভাবঃ, তদা জতিবৃত্ত্যা একবচনান্ত্রয়োঃ সমাসঃ ) ভুবঃ পৃথিব্যাশ্চুজসা নিতম্বোহভবৎ ॥১৫॥ ব্রহ্মগণ্ডেজসা পাদৌ অভবতাম্ । অৰ্কতেজসা তদঙ্গুল্যঃ তয়োঃ পাদয়োঃরঙ্গুল্যঃ অভবন্ (যদ্বা তদিত্যব্যয়ং, তস্মা ইত্যর্থঃ, উত্তরত্র করগহণাৎ ইহ পাদয়োঃরিত্তি জ্ঞেয়ম্) । বহুনাং

স্তেজসা পাদৌ তদঙ্গুল্যোহৰ্কতেজসা । বসূনাঞ্চ করঙ্গুল্যঃ কোবেরেণ চ নাসিকা ॥ ১৬ ॥ তস্যাস্তু দন্তাঃ সন্তুতাঃ প্রাজা-  
পত্যেন তেজসা । নয়ন-ত্রিতয়ং জজ্ঞে তথা পাবকতেজসা ॥ ১৭ ॥ ক্রবৌ চ সন্ধ্যরোহস্তেজঃ শ্রবণাবনিলস্য চ । অন্ত্রোবাক্ষৈব  
দেবানাং সম্ভবস্তেজসাং শিবা ॥ ১৮ ॥ ততঃ সমস্তদেবানাং তেজোরিণি-সমুদ্ভবাম্ । তাং বিলোক্য মুদং প্রাপু-রায়রা নহিষা-

ভবাদীনাম্ অষ্টানাং চ (ব) তেজসা করয়োরঙ্গুল্যঃ অভবন্ । কোবেরেণ কুবেরসম্বন্ধিনা তেজসা চ নাসিকা অভবৎ ॥ ১৬ ॥ তস্মা ইতি । তস্যা দন্তাস্ত প্রাজা-  
পত্যেন প্রজাপতীনাং দক্ষাদীনাং সম্বন্ধিনা তেজসা সন্তুতাঃ । তথাক্ষশব্দশ্চার্থে, পাবকস্য বহুেগুজসা নয়নত্রিতয়ং জজ্ঞে ॥ ১৭ ॥ ক্রবাদিতি । সন্ধ্যায়োঃ  
পূৰ্ব্বাপরয়োস্তেজঃ ক্রবৌ চ জজ্ঞাতে । আনিলস্য তেজঃ শ্রবণৌ জজ্ঞাতে ( উক্লিলঙ্গস্য কচিদ্ধাভিচার্য পুংস্বম্ ) । অন্ত্রোবাং বিশ্বদেবাদীনাং চৈব তেজসাং  
সম্ভবঃ উৎপত্তিঃ শিবা জজ্ঞে ( ইত্যভেদোদ্যায়ঃ, বৃক্ষা নৌরিতিবৎ ; এতেন তস্যা দেহস্য অভৌতিকত্বমুক্তম্ ) ॥ ১৮ ॥ ততঃ ইতি । ততস্তদনন্তরং সমস্ত

দেবানাং তেজোরূপিসমুদ্ভবাং তাং বিলোক্য দৃষ্ট্বা, মহিষাদিতাঃ মহিষাসুরপীড়িতাঃ অমরা দেবা মুদং হর্যঃ প্রাপুঃ ॥ ১৯ ॥ প্রমিত্তি । পিনাকধ্বক্ মহোপঃ  
শূলাং শূলং শূলান্তরং বিনিক্ষিপ্য নিঃসার্য্য উৎপাদ্যেতি যাবৎ তসৌ দেবো দদৌ ( এতেন তস্যা অস্ত্রশস্ত্রাদীনাম্ আলৌকিকত্বঃ দর্শিতম্ ) । কৃষ্ণকঃ স্বচক্রঃ  
স্বচক্রাং স্তূদর্শনাং চক্রং সমুৎপাদ্য তসৌ দত্তবান ॥ ২০ ॥ শঙ্খমিতি । বরুণঃ সমুদ্ভঃ ( বরুণেহিত্র সমুদ্ভঃ অভৈদবিবক্ষমা ) শঙ্খক ( চকরাং শঙ্খানিহো,

— ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০

দিতাঃ ॥ ১৯ ॥ শূলং শূলাদ্ বিনিক্ষিপ্য দদৌ তসৌ পিনাকধ্বক্ । চক্রকঃ দত্তবান্ কৃষ্ণকঃ সমুৎপাদ্য যাক্ততঃ ॥ ২০ ॥ শঙ্খপঃ  
বরুণঃ শক্তিং দদৌ তসৌ হতাশনঃ । মারুতে দত্তবাংশচাপং বাণপূর্ণে তথেষুধী ॥ ২১ ॥ বজ্রমিহঃ সমুৎপাদ্য কুলিমা-  
দনরাধিপঃ । দদৌ তসৌ সহস্রাক্ষে। ঘণ্টা-মৈরাবতাদিজাৎ ॥ ২২ ॥ কালদগুদ্য যমো দগুং পাশকালুপতির্দদৌ । প্রজা-

এবমুত্তরত্রাপি জ্ঞেয়ম্ ) দদৌ । হতাশনো বহ্নিঃ শক্তিং শল্যাপ্যমস্ত্রাবশেষঃ দদৌ । মরুদেব মারুতঃ ( স্বার্থে টন্ ) পবনঃ চাপং ধহুঃ, তথা বাণপূর্ণ ( এতেনালৌকিক-  
শরস্ত্রং প্রতিপাদিতম্ ) ইষুধী ( ইষবো বাণা দীপ্তস্তে অর্হেতি ) তুণৌ দত্তবান্ ॥ ২১ ॥ বজ্রমিতি । ইহঃ কুলিমাং বজ্রং সমুৎপাদ্য, কুলিমা-  
পজ্জাং ঘণ্টাপঃ অর্থাৎ ঘণ্টায়াঃ সকাশাৎ ঘণ্টাং সমুৎপাদ্য ( ইতি জ্ঞেয়ং তথৈবোপকমাৎ ) তসৌ দদৌ । স কীদৃক্ ? অমরাবিপঃ দেবাদ্যকঃ ( যতে) দেবাদ্যাধি-  
নাশরূপিশয়ঃ ), সহস্রাক্ষঃ সহস্রনক্ষত্রিণি যস্য ( ভাবিকার্য্যান্তমানহর্যেং যুজ্জলোচনহাৎ তদানীমেবাক্ষীনি সহস্রতয়া জাতানীব তদক্ষনার্ণমিত্যুৎপ্রেক্ষাগভকং দিবেৎপদম্ )

॥ ২২ ॥ কালৈতি । যমঃ কালদগ্ধাৎ কালাত্মকদগ্ধাৎ (কালরূপো দগ্ধস্তাৎ) দগ্ধঃ সমুৎপাদ্য দদৌ । অমুপতিব্রজা অক্ষমালাং জপমালাং (ভ) কমণ্ডলুং বারিপাত্রক দদৌ ( “ব্রহ্মাক্ষমালাক কমণ্ডলুক” ইতি বামনপুরাণাৎ ) ॥ ২৩ ॥ সমস্তৈতি । দিবাকরঃ সূর্য্যঃ তস্যা দেব্যাঃ সমস্তরোমকূপেষু নিজরশ্মীন স্বকিরণান্ দদৌ । কালো মূর্ত্যুশ্চ খড়্গঃ, নির্মলম্ অভিচক্ৰং চৰ্ম্ম কলকখণ্ড দত্তবান্ (তসৌ ইতি পূৰ্ব্ব-

তু  
তি  
স্তি

পতিশ্চাক্ষমালাং দদৌ ব্রজা কমণ্ডলুয় ॥ ২৩ ॥ সমস্তরোমকূপেষু নিজরশ্মীন দিবাকরঃ । কালক্চ দত্তবান্ খড়্গং তস্যাপ্চন্ম চ নির্মলম্ ॥ ২৪ ॥ ক্ষীরোদাক্ষমালং হার-মজরে চ তথাস্বরে । চূড়ামণিং তথা দিব্যং কুণ্ডলে কটকানি চ ॥ ২৫ ॥ অর্দ্ধচন্দ্রং তথা শুভ্রং কেয়ুরান্ সর্ববাহুয় । নূপুরৌ বিমলৌ তদ্বদ্ গ্ৰৈবেয়ক-মনুভ্রমম্ ॥ ২৬ ॥ অঙ্গুরীয়ক-রত্নানি সমস্তাষঙ্গুলীষু চ

স্বাৎ অম্বেতব্যম্, যদ্বা তস্যা ইতি শৈষিকম্ভী ) ॥ ২৪ ॥ ক্ষীরোদৈতি । ( সার্কদ্বয়েনাময়ঃ ) ক্ষীরোদঃ ক্ষীরসমুদ্রঃ অমলং ক্ষুটকিরণং হারম্, ভাজরে অবিনশ্বরে অম্বরে বস্ত্রে চ, তথা দিব্যং চূড়ামণিং শিরোরত্নং, কুণ্ডলে কর্ণভরণে, কটকানি বলয়ানি চ, তথা শুভ্রং নিকলঙ্গম্ অর্দ্ধচন্দ্রং, সর্ববাহুয় (কেয়ুরান্ অঙ্গদানি, বিমলৌ ক্ষুটকিরণৌ নূপুরৌ, তদ্বৎ বিমলম্ অনুভ্রমম্ অত্যাংকুষ্ঠং গ্ৰৈবেয়কং গ্রীবাভরণং, সমস্তাঙ্গ অঙ্গুলীষু অঙ্গুরীয়করত্নানি মূদ্রকাজ্ঞেয়ানি চ দদৌ ( “কেয়ুরং বা নপুংসকম্” ইতি কোষঃ ) ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ বিম্বেতি । বিশ্বকস্মা চ অতিনিম্নলং পরিশুং কুঠারম্, অনেকক্লপানি অস্ত্রাণি, ভোক্তব্যং

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

শিরস্ত্রয়সি চাপরাম্ । অদঙ্গজনাধিস্তাস্য পঙ্কজধতিশোভনম্ ॥ ২৯ ॥ হিমবান্ বাহনং সংস্থং রত্নাণাং বাবধান চ ।  
দঙ্গনাং সুরযা পানপাতঃ ধনাবিপঃ ॥ ৩০ ॥ শেষশ্চ সৰ্বনাগেশে । মহানগি-বিত্তুমিতম্ । নাগহারং দদৌ তদ্যৈ ধন্তে যঃ পুণিণী-

বসন্তঃ সুরয়া পানপত্রিঃ ধনাদিপঃ ॥ ৩০ ॥ শেবন্তঃ সৰ্বনাগোঃ সৰ্বদা সুরয়া পানপত্রিঃ চক্ষকং দদৌ ॥ ৩১ ॥ শেষ ইতি । শেষঃ অমৃতজট নগরঃ ॥ ৩২ ॥

দদৌ । ধনাদিপঃ কুবেরঃ সুরয়া অমৃত্যঃ সৰ্বদা সুরাপূৰ্ণং পানপাত্রং চক্ষকং দদৌ ॥ ৩০ ॥ শেষঃ ইমাং পৃথবীং বতে ( ইতি মহাব্ৰহ্মস্মৃতিমানসং, যদা নগরঃ নাগলোকভবঃ হারঃ, যদা নাগিকারং হারঃ, যদা নাগাগামীশঃ । হারঃ কীদৃশ্যং ? মহাগণিগ্ৰসিতং মহামণিবর্জমূল্যমৰ্ণিঃ ) স কীদৃকং ? সৰ্বনাগেশঃ সৰ্বনাগানামীশঃ ॥ ৩১ ॥ পরাকীৰ্ত্তন্যুহরনিবারণায় ) । স কীদৃকং ? মহাগণিগ্ৰসিতং মহামণিবর্জমূল্যমৰ্ণিঃ ) স কীদৃকং ? মহাগণিগ্ৰসিতং মহামণিবর্জমূল্যমৰ্ণিঃ ॥ ৩২ ॥

অমৃতজট নগরঃ ॥ ৩২ ॥



তথা মুহূৰ্ত্তঃ উচ্চৈৰ্নাদ শব্দং চকার ( তস্তাঃ সৰ্বত্র সমবুদ্ধিত্বাং নিরপরাধানাং হননোদযোগাং অপরাধোদ্ভবাং তথা চকারেতি ভাবঃ, ন তু তত্ত্ব  
 দৃষ্টলাভেন হর্ষাৎ ) ॥ ৩২ ॥ তস্তা ইতি । তস্যা ঘোরেণ ভয়ানকেন নাদেন কুৎস্নং সমগ্রং নভঃ আপ্রবৃত্তং, মহান্ প্রতিশব্দশ্চ অভূৎ ( যদিপি  
 অমূর্ত্তেন শব্দেন শূন্যস্তা নভসঃ পূরণং ন সম্ভবতি, নভসঃ অনন্তস্য সামগ্র্যমপি ন সম্ভবতি, তথাপি শব্দস্রাতিমহত্বেন জগদ্ব্যাপ্তিরেব ভাংপর্যম্; প্রধানধ্বনিকারী  
 শব্দঃ প্রতিশব্দঃ ) । অতএব অতিমহতা নাদেন, তত্রাপি হেতুঃ--অমায়তা মানিং মাঃ ( কিং ) ভাং যন্ ( ইণঃ শত ) প্রাপ্পুবন্ যায়ন্ ততে। নঞ-

মিমাম্ ॥ ৩১ ॥ অনৈৱপি স্তুরেদেবী ভূবর্গে-রায়ুর্ধেস্তথা । সন্মানিতা ননাদৌচ্চৈঃ সটিহাসং মুহূৰ্ত্তঃ ॥ ৩২ ॥ তস্য। নাদেন  
 ঘোরেণ কুৎস্নমাপূরিতং নভঃ । অমায়তাতিমহতা প্রতিশব্দে। মহানভূৎ ॥ ৩৩ ॥ চুক্ষুভূঃ সকলা লোকাঃ সমদ্রাক্ষিচ চক-

সমাসঃ তেন, অপরিমিতেনেত্যর্থঃ ; যদ্বা অগা রবিরশ্মিবিশেষঃ, ভাং যন্ গচ্ছন্, ন তথা তেন ( তদুক্তম্ “অগা নাম রবে রশ্মিচক্রগোকে প্রতিপ্তিতঃ”  
 ইতি ) তৎপর্যাস্তস্কারেণেত্যর্থঃ ॥ ৩৩ ॥ চুক্ষুভুরিতি । সকলাঃ লোকাঃ সমন্তভুবানি চুক্ষুভূঃ চলিতাঃ । সমদ্রাঃ সপ্ত জলধয়শ্চ চক ম্পরে কন্পিতাঃ ।  
 বসুধা পৃথিবী চচাল চলিতবতী ( লোকস্বাভিবেশাৎ বসুধায়াঃ প্রাপ্তেঃ সামাগ্র্যবিশেষজ্ঞায়েনৈদমুক্তং “গামানয় বলীবর্দক” ইতিবৎ, অগ্নিকচলনাং বা ) । সকলাঃ

মহীধরাঃ পরিত্যক্ত চেনুঃ চলিতবস্তুঃ ( পরিত্যক্তান্যমপি পৃথিবীষে  
ইন্দ্রাদয়শ্চ মূদা হর্ষেণ তাং সিংহবাহিনাং দেবীং জয় উৎকর্ষমাবিপুরু ইতি উচুঃ ( খেদা জয়া ইতি নামনির্দিশনমাপ চক্রঃ--জয়তি অস্তুরানিতি জয়া ; সিংহঃ  
বাহয়িতু শীলমস্যা ইতি গিন্, আয়হাজ্জাত্যুপপদেওপি গিন্, মাপর্ষে বা ; যদা বহতীতি বাহঃ, সিংহ এব বাতঃ সিংহবাঃ, "তৎ" প্রশংসায়াম্ মত্বীয় ইন্, বহ-  
ব্রীহেরর্থপ্রতিপত্তিকরত্বাবাৎ ) । মনশ্চ ভক্তিনত্নাত্মমূর্তয়ঃ ভক্ত্যা ভাবেন নত্না আত্মা মনঃ মূর্তয়ো দেহাশ্চ যেবাং তাদৃশাঃ মন্তুঃ

স্পিরে । চচাল বস্তুধা চেনুঃ সকলান্শচ মহীধরাঃ ॥ ৩৪ ॥ জয়েতি দেবশ্চ মূদা তামুচুঃ সিংহবাহিনীম্ । তুযু বুমুনয়শ্চেনাঃ  
ভক্তিনত্নাত্মমূর্তয়ঃ ॥ ৩৫ ॥ দৃফ্ । সগস্তং সংক্ষুৰ্দ্ধং ত্রৈলোক্য-মগরারয়ঃ । সন্নদ্ধাখিলসৈন্যাস্তে সনুতক্ষুৰ্দ্ধদায়ুধাঃ ॥ ৩৬ ॥ অঃ

( এতেন কায়িক-বাহিক-মানসিক-প্রবণত্মকম্ ) এনাং তুষ্টবুঃ স্বতবস্তুঃ ॥ ৩৫ ॥ দৃষ্টেতি । তে অসরারয়ঃ মহিষাদয়ঃ অস্তুরাঃ সগস্তং ত্রৈলোক্যং  
সংক্ষুৰ্দ্ধং ব্যাকুলীকৃতং দৃষ্ট । উদায়ুধাঃ উদ্যতস্ত্রাঃ সন্তুঃ সনুতক্ষুঃ উদ্যোগাঃ কৃতবস্তুঃ ( দেবোদ্ধামাশঙ্কয়োতি ভাবঃ ) ।  
সন্নদ্ধাখিলসৈন্যাঃ সন্নদ্ধানি কৃতসন্যাহানি অখিলান সমগ্রানি সৈন্যানি যেবাং তে ॥ ৩৬ ॥ অা ইতি । মহিষাস্তুরঃ দ্যাঃ এতৎ পদম্ ইতি  
ক্রোধাৎ সাত্যায় স্বরথা সমাগবুজ্জ । অশেষবস্তুরৈবুতঃ যেষ্টিতঃ সন্ তৎ শব্দম্ অতি আভিযুগ্মেন দক্ষীকৃতোতি বা অথবত ( "শাস্ত্র স্তাং কোপোক্তোতি" )

— ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

ইত্যমরঃ) ॥ ৩৭ ॥ স ইতি । ততঃ শব্দাভিমুখগমনানন্তরং স মহিষাসুরঃ তাং দেবীম্ অতিপ্রকাশমানাং দদর্শ ( ইতি শ্লোকদ্বয়েনাস্বয়ঃ ) । কীদৃশীম্ ? শ্রিবা কান্ত্য। ব্যাপ্তলোকত্রয়াং ব্যাপ্তং লোকত্রয়ং হুরাদি যয়। তাম্ ; পাদাক্রান্ত্য। পাদরোরাক্রমণেন নতভুবং নতা নত্রীকৃত। ভূরয়া তাম্ ; কিরীটোল্লিখিতাশ্বরাং কিরীটেন মূকুটেন উল্লিখিতম্ ( সংঘূৰ্ণম্ ) অশ্বরম্ আকাশং যয়া তাম্ ( আকাশস্য অমূর্তস্বেন উল্লেখনাসম্ভবাৎ সৰ্বব্যাপিত্বাচ্চ অতুচ্চতায়ান্নেব তাৎপর্যম্, যদ্ব। অশ্বরং মহলোকঃ সম্ভবপৰত্বাৎ ) ; ধনুর্জ্যানিষনেন চাপাক্রাটমৌৰ্বীশকেন ক্ষেতিভিতাশেষ-পাতালাং ক্ষেতিভিতানি

কিমেতদিতি ক্রোধা-দাভায্য মহিষাসুরঃ । অভ্যাবত তং শব্দ-মশেষে-রসুরৈব তং ॥ ৩৭ ॥ স দদর্শ ততো দেবীং ব্যাপ্তলোক-  
ত্রয়াং শ্রিবা । পাদাক্রান্ত্য। নতভুবং কিরীটোল্লিখিতাশ্বরাম্ ॥ ৩৮ ॥ ক্ষেতিভিতাশেষ-পাতালাং ধনুর্জ্যা-নিষনেন তাম্ । দিশো

চঞ্চলীকৃতানি অশেষাণি সমগ্রাণি পাতালানি যয়। তাম্ ( নিবিসর্গো নিষ্মঃ শব্দঃ “নেগদনদপঠম্বনঃ” ইতি লক্ষণস্বরগাং ; যদ্যপি জ্যাগদৈনৈব মৌৰ্বী উচ্যতে, তথাপি ধনুঃশব্দোপাদানম্ আক্ৰাটত্ববোধায় ; তথাচ সাহিত্যাদপর্ণঃ “ধনুর্জ্যাতিষু শব্দেযু শব্দাস্ত ধনুরাদয়ঃ ! আক্ৰাটত্বাদিবোধায়” ইতি, এবমল-  
ত্রাপি ) ; ভুজসহস্রেন সমন্তাৎ সৰ্বতো দিশঃ ব্যাপ্য সংস্থিতাং সম্যক স্থিতাম্ ( “অষ্টাদশভূগা রণে” ইতি যামলম্ ) ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ তত উতি । ততঃ  
ভদনন্তরং তয়া দেব্যা সহ সুরদ্বিষাম্ অশ্বরাণাং যুদ্ধ প্রববতে প্রবৃত্তম্ । কৈঃ ? শজ্ঞৈঃ ( শজ্ঞং হিংসাসাধনং খড়্গাদি, অশ্বং ক্ষেপণীয়ং হিংসাসাধনং শব্দাদি

ইতি ধাত্বর্ণানুসারাদ্ভেদঃ ; যদ্বা শব্দং লোহং, তন্ময়ৈরপ্পৈঃ “শব্দমাযুসলৌহয়োঃ” ইতি কোষঃ । কীদৃশং যুদ্ধম্ ?  
 আদীপিতদিগন্তরম্ আ সম্যক্ দীপিতানি প্রকাশিতানি দিগন্তরানি যত্র তৎ ( ক্ষেপণক্রিয়াবিশেষণং বা ) ॥ ৪০ ॥ সৈন্তসংখ্যাং দর্শয়তি মহাভিঃ ।  
 মহিষাসুরসেনানীঃ মতিষাসুরশ্চ সৰ্বসৈন্তাদিপপঃ চিন্মুরাখ্যঃ চিন্মুরনাগা মহাসুরঃ অসুরশ্ৰেষ্ঠঃ, চামরশ্চ চামরাখ্যঃ সৰ্বসেনাবিপঃ ( ইতি ঢকারার্থঃ ) চতুর্ভুজঃ

ভুজসহশ্রেণ সমান্তাদ্ ব্যাপ্য সংস্থিতাম্ ॥ ৩৯ ॥ ততঃ প্রাবরতে যুদ্ধং তয়া দেব্যা সুরদ্বিযাম্ । শস্ত্রািস্ত্রৈর্বহুদা দুৈক্কেরাদীপিত-

দিগন্তরম্ ॥ ৪০ ॥ মহিষাসুর-সেনানী-শ্চতুর্ভুজবল্যাবিতঃ ॥ ৪১ ॥ রথানা-মামুৈতঃ

ষড়্ভি-রুদগ্রাখ্যো মহাসুরঃ । অবুধ্যতামুতানাক্ষ সহশ্রেণ মহাহনুঃ ॥ ৪২ ॥ পক্ষাশ্চিদ্বিচ্চ নিযুতৈ-রসিলোমা বলাহনুঃ ।

বলাবিতঃ চত্বারি হস্ত্যশ্বরথপাদিতরুপানি অঙ্গানি যস্য তাদৃশেন বলেন সৈন্তেন অবিতঃ অল্পপাতঃ সন্, অগ্নৌরপি প্রধানভূতৈরহনুৈবঃ সহ যুদ্ধে  
 ( সৰ্বসেনাদ্বিপতিহাং সর্কে সেনাপত্যয়োহপি তয়োরেব পশাদ্ যমুরিতার্থঃ ) ॥ ৪১ ॥ রথানামিতি উদগ্রাখ্যঃ উদগ্রানামা মহাসুরঃ রথানাং যদৃভিঃ অমুৈতঃ পট্ট-  
 সহশ্রেণঃ সহ ( অদ্বিত ইতি পূর্বকোক্তমল্লযজ্ঞনীয়ং বা, এবমুত্তরত্রাপি ) অযুধ্যত । মহাহনুঃ মহাহনুনামা অসুরশ্চ (বথানানি মিতাল্লযজ্ঞনীয়ং প্রকৃত্বাং ২) অমুতানাঃ সহশ্রেণ  
 স্বথকেট্যা সহ অযুধ্যত ॥ ৪২ ॥ পক্ষেতি । অসিলোমা অসিলোমাখ্যঃ মহাসুরশ্চ পক্ষাশ্চিদ্বিচ্চ নিযুতৈঃ সহ যুদ্ধে । বাক্সঃ বাধননামা মহাসুরঃ রথানানি অমু-

তান্নাং ষড়্ভিঃ শতৈঃ ষষ্টিলক্ষৈঃ সহ রণে যুযুবে ॥ ৪৩ ॥ গজ্জতি । পরিবারিতঃ পরিবারিতানাম্ অসুরঃ অনৈকৈঃ অসংখ্যৈঃ গজবাজ্রিসহস্রোঘৈঃ হস্তাশ্বসহস্রাণাং বৃন্দৈঃ, রথানাং কোট্যা চ বৃত্তঃ সন্ তস্মিন যুদ্ধে অযুধ্যত ॥ ৪৪ ॥ বিড়তি । ( বিড়ালস্য অক্ষী ইব অক্ষী যস্ত্রিতি বাৎপত্তিঃ “ভুক্ত্বেরো দুশ্ম যশ্চিব বিড়ালনয়নোহপরঃ” ইতি বামনপুরাণদর্শনাং, সযকারকবর্গাদ্বৈরযুক্তঃ পাঠো ) হেয়ঃ অমূলকত্বাং ( অশক্ষচাৰ্য্যঃ, বিড়ালাক্ষোহিসুরশ্চ রথানাম্ অযুতানাং পঞ্চাশচ্ছিন্ধির্নিমৃতৈঃ পঞ্চবৃন্দৈশ্চ

অযুতানাং শতৈঃ ষড়্ভি-বাক্ললো যুযুধে রণে ॥ ৪৩ ॥ গজবাজ্রি-সহস্রোঘৈ-রনৈকৈঃ পরিবারিতঃ । রতো রথানাং কোট্যা চ

যুদ্ধে তস্মিন্মযুধ্যত ॥ ৪৪ ॥ বিড়ালাক্ষোহিসুরানাঞ্চ পঞ্চাশচ্ছিন্ধি-রথায়ুতৈঃ । যুযুধে সংযুগে তত্র রথানাং পরিবারিতঃ ॥ ৪৫ ॥

অথো চ তত্রায়ুতেশো রথ-নাগ-হইয়ৈর্বৃত্তাঃ । যুযুধুঃ সংযুগে দেব্যা সহ তত্র মহাসুরাঃ ॥ ৪৬ ॥ কোটি-কোটি-সহস্রৈস্তদু

পরিবারিতঃ বেষ্টিতঃ সন্ তত্র সংযুগে যুদ্ধে যুযুধে ॥ ৪৫ ॥ অথ ইতি । তত্র যুদ্ধে অথো চ যে মহাসুরাঃ অসুরশ্রেষ্ঠা রক্তবীজাদয়ঃ, তে অসুভ্রংশা রথনাগতয়ৈঃ অনেকায়ুতরথহস্তিতুরৈর্গৈর্বৃত্তাঃ সহঃ দেব্যা সহ তত্র সংযুগে যুদ্ধে যুযুধুঃ প্রতোকম্ অযুতান্নবঃ শম্প্রত্যয়করণাং ॥ ৪৬ ॥ ইতি সেনাপত্ন্যাকুযায়িনাং সংখ্যাং প্রদর্শ্য, যদ্বিষাসুরানুযায়িনাস্তু সংখ্যা বক্তৃশর্শকোব ইত্যাহ কেটীতি । তত্র যুদ্ধে যদ্বিষাসুরস্ব বথানাং কোটিকোটিসহস্রৈঃ, (তথাশক্ষচাৰ্য্যঃ) লক্ষিত্বাং গজা-নাঞ্চ কোটিকোটিসহস্রৈঃ, তথানান্ অশ্বানাঞ্চ কোটিকোটিসহস্রৈঃ বৃত্তাঃ বেষ্টিতঃ অত্ভুং । সহস্রকোটিা পুরায়িত্বা পুনঃ কোটিা পূরণে পরাক্ষিসংখ্যা ভবতি, ভেদেবং রথা-

দীনঃ প্রত্যেকং পরাক্ষসংখ্যাতয়। সৈন্তানামপরিমিতজগতি ॥ ৪৭ ॥ যুদ্ধং বর্ণয়তি তোমরৈরিতি। (কেচিদিদৃশ্যন্তেবর্ণনায়ঃ) কেচিদজ্ঞরাঃ সংযুগে যুদ্ধে তোমরৈঃ সৰ্বলৌদিভিঃ দেব্য। সহ যুগুঃ যুধিধে। কেচিৎ ভিন্দিপালৈঃ হস্তক্ষেপবীর্যশরৈঃ, কেচিৎ শক্তিভিঃ শলৈঃ, তথা কেচিৎ মুসলৈঃ, কেচিৎ পট্টৈঃ, (পরশুপট্টসৈঃ) কেচিৎ পরশুভিঃ যুগ্মরৈঃ, কোচং পট্টসৈঃ অস্ত্রবিশেষৈঃ (তত্র মুসলপট্টসৈঃ দস্তাসকারযুক্তৌ তালবায়ুক্তৌ চ, নৃসিংহস্ত মুবলাং মুর্দ্ধস্ত্যুকং নৃগাহ)।

রথানাং দস্তিনাং তথা। হযানাকং যতে। যুদ্ধে তত্রাত্মনাহিষাস্ত্রঃ ॥ ৪৭ ॥ তোমরৈর্ভিন্দিপালৈশ্চ শক্তিভিমুসলৈস্তথা।

মুযুধুঃ সংযুগে দেব্য। পট্টৈঃ পরশু-পট্টসৈঃ ॥ ৪৮ ॥ কেচিচ্চ চিকিৎসুঃ শক্তিঃ কেচিৎ পাপাংস্তথাপরে। দেবা।

পড়্গপ্রহারৈস্ত তে তাং হস্তং প্রচক্রুঃ ॥ ৪৯ ॥ সপি দেবৌ ততস্তানি শস্ত্রাণ্যস্ত্রাণি চপ্তিক। লীলৈয়ৈব প্রচিচ্ছেদু নিউ-

॥ ৪৮ ॥ কেচিদিদৃশ্যন্তঃ অস্ত্রাশ্চ শক্তিঃ চিকিৎসুঃ। কেচিৎ পাশান্ চিকিৎসুঃ। তথা অপরে যে অস্ত্রবাঃ, তে তু খড়্গাশ্চাভিঃ দেবীঃ চক্ষুঃ প্রচিচ্ছেদুঃ প্রচক্রুনিরে আরকবন্তুঃ ॥ ৪৯ ॥ সপীতি। (জগন্মাতৃহাং সপত্র স্যামান প্রথমহননযুক্তমতি) ততঃ ত্রেয়াং প্রহাণমন্তবং স্যাপ চাপক্কা ক্রোদবক্তা, দেবাঃ পাদনং পর। তান শস্ত্রাণি অস্ত্রাণি চ লীলৈয়ৈব প্রচিচ্ছেদু ছিন্নবতী (সৰ্বপ্রাণৈঃ প্রহারাভাবান্ লীলৈয়ৈতাকুং তত এবশস্ত্রোপাদানক)। কাঁদুগীঃ। মজ্জনদ্বায়বর্জিতাঃ। মধ্যমঃ অসাধারণান শস্ত্রাশ্চাণি বধিতুঃ শৌনঃ যসাঃ সা ॥ ৫০ ॥ ন কেবলমেতাবৎ, তান্ জঘান অপীত্যাহ অন্যযজ্ঞেতি। সা দেবৌ অনায়স্তান। তবিকৃত্তৃপ্তী সত্তা। ৫০

৫০

অন্যাসং দোত্তর্যতি ) অস্বরদেহেষু শস্ত্রাণি অস্ত্রাণি চ যুমেচ ( অস্বরদেহেষু ইতানেন অব্যর্থগ্রহরিম্মুক্তম্ ) । কীদৃশী ? ঈশ্বরী সর্বশক্তিযুক্তা, সুরযিভিঃ সুরাশ্চ  
 ঋষয়শ্চ তৈঃ স্তুয়মানা ( “আয়স্তং বিকৃত্তে ক্ষিপ্তে ক্লিষ্টতে ফুপিতে হতে” ইতি কোষঃ ) ॥ ৫১ ॥ সোহপীতি দেব্যা বাহনকেশরী বাহনরূপঃ সিংহঃ ক্রুদ্ধঃ  
 সন্ অস্বরসৈন্তেষু চচার । কুত্র ক ইব ? বনেষু হতশনো বহ্নিরিব ( দৃষ্টান্তদ্বারা স্পর্শমাত্রেন অস্বরহননমুক্তম্ ; কেশরীতি দন্ত্যবান্ তালব্যাব্যশ্চ ) । স কীদৃক্ ?

শস্ত্রাস্ত্রবযিণী ॥ ৫০ ॥ অনায়স্তাননা দেবী স্তুয়মানা সুরযিভিঃ । যুমেচাস্বরদেহেষু শস্ত্রাণ্যস্ত্রাণি চেশ্বরী ॥ ৫১ ॥

সোহপি ক্রুদ্ধো ধূতসটো দেব্যা বাহনকেশরী । চচারাস্বরসৈন্তেষু বনেষিব হতশনঃ ॥ ৫২ ॥ নিশ্বাসান্মুগ্ধে যাংশ্চ  
 যুধ্যমানা রণেহম্বিকা । ত এব মদ্যঃ সমুতা গণাঃ শতসহস্রশঃ ॥ ৫৩ ॥ যুযুধুন্তে পরশ্চুভি-ভিন্দিপালাসি-পট্টিসৈঃ । নাশয়ন্তে।-

ধূতসটঃ ধূতাঃ কম্পিতাঃ সটাঃ ক্ষুব্ধশুলোমানি যেন মঃ ( সটা দন্ত্যাদিরিতি মেদিনী, ভাগবাবর্তীতি নরসিংহঃ ) ॥ ৫২ ॥ নিশ্বাসানি । বণে যুধ্যমানা  
 অম্বিকা চ যান্ নিশ্বাসান্ যুগ্মে চ্যক্তবতী, তে এব নিশ্বাসাঃ সত্ত্বন্তং ক্ষণমেব শতসহস্রাণো গণাঃ প্রমথ্যঃ সমুতাঃ ( অনেন অপ্রতিহতেচ্ছবঃ সৃচিভম্ ; সম্ভাসাংগী-  
 সহিতা এব তে জাতা ইতি জ্যেয়ম্ উত্তরত্ব যুদ্ধবাদাক্রিয়াকথন্যং ) ॥ ৫৩ ॥ যুযুধুরিতি । তে গণাঃ দেবীশক্ত্যুপবৃংহিতাঃ দেব্যাঃ সামর্থ্যেন উপাচিত-

সামর্থ্যঃ সন্তঃ পরশ্চভিঃ ভিন্দিপালাসিপট্টিদৈঃ ভিন্দিপালৈঃ খট্টৈঃ পট্টিসৈশ্চ অশ্বদগ্গণান্ নাপদন্তঃ যুধুঃ যুধিধে ॥ ৫১ ॥ অবাদয়ন্তেতি । তুশ্বিন্ যুদ্ধমহোৎসবে  
( যুদ্ধমেব মহোৎসবঃ বীরাণাং হব্যবদ্ধনত্বাং ) কেচিং গণাঃ পটহান্ অবাদয়ন্ত ( লঙ্ অস্ত ) । তথা অপরে শজ্জান্, তপেব অগ্রে যুদ্ধান্ অবাদয়ন্ত ॥ ৫২ ॥ ততঃ  
ইতি । ততো গণজনানন্তরং দেবী ত্রিশূলেণ গদয়া শক্তিবৃষ্টিভিঃ শল্যাবয়ণৈঃ খড়্গাদিভিষ্চ দহতেশো মহাশুরান্ নিজঘান ॥ ৫৩ ॥ পাতয়েতি । ( দেবীভিঃ যোযাতি )

হস্তরগগান্ দেবীশাক্ত্যুপবৃংহিতাঃ ॥ ৫৪ ॥ অবাদয়ন্ত পটহান্ গণাঃ শজ্জাংস্তথাপরে । যুদ্ধগ্গাংস্ত তথৈবান্তে ভস্মিন্  
যুদ্ধমহোৎসবে ॥ ৫৫ ॥ ততো দেবী ত্রিশূলেণ গদয়া শক্তিবৃষ্টিভিঃ । খড়্গাদিভিষ্চ শতশো নিজঘান মহাশুরান্ ॥ ৫৬ ॥  
পাতয়ামাস চৈবাত্মান্ ঘর্টায়ন-বিমোহিতান্ । অশুরান্ ভুবি পাতশেন বদ্ধা চাত্মানকৰ্ত্ত ॥ ৫৭ ॥ কেচিদ্ধিবা কৃতাশ্চিহ্নৈঃ

চকারাং ) অত্মান্ কাংশ্চ অশুরান্ ঘর্টায়নবিমোহিতান্ ঘর্টায়নিনা বিচেতসঃ কৃদ্বা পাতয়ামাস । অগ্গাংস্ত অশুরান্ গাশেন বদ্ধা ভুবি জাকৰ্যত আশ্রিতান্  
আকুটবতী ( অকুটবতী পাঠে “অগ্রেইপি ধাতবঃ কচিং” (য) ইতি চুরাদিত্বাং শিঙ্ ) ॥ ৫৭ ॥ কেচির্দিত । কেচিং অশুরাঃ তাঃ ক্লঃ খড়্গপাটৈঃ খড়্গপানারিত্তিঃ  
( পাতয়ন্ত্যনেনেতি পাতঃ ) যদ্বা তীক্ষ্ণঃ অহুগ্রৈঃ ) খড়্গগ্রহণৈরৈঃ দ্বিধা কৃতাঃ ছিন্নাঃ ( অর্থাৎ দেবা ) । তথা, অপরে গদয়া বিপোথিতাঃ হিংসিতাঃ শতঃ  
নিপাতেন নিপতনেন ভুবি শেরতে ( শ্বেত্ৰাহ্ম ) ; যদ্বা গদয়া যো নিপাতঃ হননং, তেন বিপোগিতাঃ ( স্ত্রীপাং স্ত্রিবিতি স্ত্রীপাং বা তলীয়া—গদয়া নিপাতঃ

ভুবি শেরতে



নেতৃত্বঃ) ॥ ৫৮ ॥ বেমুরিহি। কেচিং অসুরাঃ মুসলেন ভৃশম্ অতীর্থঃ হতাঃ তাড়িতাঃ সন্তঃ ক্রধিরং রক্তং বেমুঃ বমন্তি স্ম (ববমুরিতি বক্তব্যে ছান্দসো দ্বিলুক্ এতৎক, বকারস্ব দন্ত্যেধেন শসাদিত্যং; কেচিং গুণ্যত্বমপীচ্ছন্তি, তৎ অবহসমতম্)। কেচিং বক্ষসি শূলেন ভিন্নাঃ বিদীর্ণাঃ সন্তঃ ভূমৌ নিপাতিতাঃ (অর্থাৎ দেব্যা) ॥ ৫৯ ॥ নিরেতি। কেচিং সেনানুক্যারিণঃ (সেনাম্ অনু পশ্চাৎ কৰ্ত্তুং শীলং যেমাং তে) সেনাগ্রো বর্তমানা ইভ্যর্থঃ ত্রিদ

খড়গপাঠৈস্তথাপরে।

বিপোধিতা নিপাতেন গদয়া ভুবি শেরতে ॥ ৫৮ ॥ বেমুচ কেচিদ্রধিরং মুসলেন ভৃশং হতাঃ।

কেচিনিপাতিতা ভূমৌ ভিন্নাঃ শূলেন বক্ষসি ॥ ৫৯ ॥ নিরন্তরাঃ শরৌষেণ কৃতাঃ কেচিদ্রণাজিরে। সেনানুক্যারিণঃ প্রাণান্

মুমুচুস্ত্রিদশাদিনাঃ ॥ ৬০ ॥ কেযাঞ্চিং বাহবশ্চিন্না-শ্চিন্নগ্রীবাস্তথাপরে। শিরাসি পেতুরন্তোষা-মন্ত্রে মধ্যে বিদারিতাঃ

শাদিনাঃ (অসুরাঃ) রণাজিরে রণঙ্গনে শরৌষেণ বাণসমূহেন (দেব্যা ইতৃহ্যম্) নিরন্তরাঃ নিরবকাশাঃ কৃতাঃ জর্জরীকৃতাঃ সন্তঃ

প্রাণান্ মুমুচুঃ তাক্তবন্তঃ ॥ ৬০ ॥ কেযাণিহি। (দেব্যা ইতৃহ্যম্) কেযাঞ্চিং বাহবঃ ছিন্নাঃ দ্বিধা কৃতাঃ। তথা অপরে দৈত্যাঃ ছিন্নগ্রীবাঃ ছিন্নাঃ গ্রীবাঃ যেমাং

তে তথাবিধা বভূবুঃ। তথা অন্ত্রায়াম্ অসুরাণাং শিরাসি পেতুঃ ছিন্নানি সন্তি ভূমৌ পতিতানি। তথা অন্ত্রে অসুরাঃ মন্ত্রে মপ্যদেদেণে বিদারিতাঃ

বভূবুঃ ॥ ৬১ ॥ বিচ্ছিন্নেতি। অন্ত্রো মহাসুরাঃ বিচ্ছিন্নদৃগ্ভ্যাঃ বিচ্ছিন্নে যেমাং তে তথা সন্তঃ উৰ্দ্ধাং পেতুঃ। কেচিং অন্ত্রে অসুরাঃ দেব্যাঃ দ্বিধাকৃতাঃ

দ্বিদলীকৃতঃ সন্তঃ একবাহ্বক্ষিচরণাঃ একং বাহ্বক্ষিচরণং যেমাং তে তথাভূতাঃ শিরঃপ্রভৃতি পশুপয়াজং দ্বিদলীকৃত্য ইত্যথাঃ ॥ ৬২ ॥ ছিন্নেহপীতি (অঙ্গ-প্রোকেহয়ম্) । অগ্রে অশ্বরাশ্চ শিরসি ছিন্নে সতি পতিতাঃ অপি পুনঃ উথিতাঃ (কবন্ধোথানপরিমাণং প্রাচীনপদ্যং পঠ্যত) —“নাগানাময়জ্ঞং তুরঙ্গনিযতং দার্কিঃ রথানাম্ শতম্, পতীনাং দশকেটিয়ো নিপাতত। একঃ কবন্ধো রণে। তেষাং কোটিনিপাতনভনিবোধৌ পেগচ্চনং থে শিরঃ, তেষাং কোটিনিপাতনে রথানাং, সন্তঃ কোদণ্ডঘটায়বঃ” ইত্যত, মহানাটকশ্রুতমিতি কেচিৎ ॥ ৬৩ ॥ তেষাং কক্ষম্ আহ কবন্ধাঃ ভূতি । (কেচিদিতি উহ্ম) । কেচিৎ কবন্ধাঃ গৃহীতপৰবারাধাঃ সন্তঃ

॥ ৬১ ॥ বিচ্ছিন্নজঙ্ঘাস্থপরে পেতুরকৰ্ণাঃ মহাশ্বরাঃ । এক-বাহ্বক্ষি-চরণাঃ কেচিৎকব্যা। দ্বিদলীকৃত্য ॥ ৬২ ॥ ছিন্নেহপীতি  
চাত্রে শিরসি পতিতাঃ পুনরুত্থিতাঃ ॥ ৬৩ ॥ কবন্ধা যুযুধুদেব্যা গৃহীতপৰবারাধাঃ । নৰ্ভজ্জগতাপরে তত্র যুদ্ধে ভূর্যলয়াজিতাঃ

দেব্যা মহ যুযুধুঃ । তত্র যুদ্ধে অপরে কবন্ধাঃ তুর্যলয়াজিতাঃ বাদ্যলয়ানুসারিণঃ সন্তঃ নবহুশ্চ (দীপ্যমানতানাম্ ক্রিরাকালরোঃ দায়াং লভে) । ৬১  
কবন্ধা ইতি । অগ্রে কবন্ধাঃ কবন্ধদেবোক্তবাঃ কবন্ধাথ্যজাতিবিশেষা বা মহাশ্বরাঃ দেবীঃ তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভাষন্তঃ ভাসিমাণাঃ গ্রন্থ শির-  
শিরসৌ বভূবুঃ । কৌদুশাঃ ? খজ্ঞাশক্তৃপাণয়ঃ খজ্ঞশক্তৃপাণয়ঃ পানিয়ু যেমাং তে (স্থষ্টিঃ খজ্ঞাবিশেষাঃ) । যদা অপরে কবন্ধাঃ ইতি পুনঃপাঠঃ ।  
অগ্রে মহাশ্বরাঃ খজ্ঞাশক্তৃপাণয়ঃ সন্তঃ দেবীঃ তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভাষন্তঃ এব ছিন্নশিরসো বভূবুঃ (এভেন দেব্যা অতিলম্বহস্তঃ সৃচিভম্) । যদা কবন্ধাঃ কৌদুশাঃ ?

ହିମ୍ନିଶିରସଃ ହିମ୍ନାନି ଅଗ୍ନେଷାଂ ଶିରାଂସି ସୈ ତେ । ଯଦ୍ଧା ଅନ୍ୟୋ ମହାସୁରାଃ ହିମ୍ନିଶିରସଃ ସନ୍ତୁଃ କବନ୍ଧା । ଏବ ଧଞ୍ଜାଶକ୍ତ୍ୟାଞ୍ଜିପାଂୟଃ ଦେବୀଃ ତିଷ୍ଠି ତିଷ୍ଠିତି ଭାଷନ୍ତେ । ( ନମ୍ର ଯୁଧରହିତାନାଂ ଭାଷଣଂ କଥଂ ସମ୍ଭବତି ? ) ମତ୍ୟମ୍ ; ତୁପତିତସ୍ତସ୍ମିନିରୋନୟନବଦନେନ ତେଷାଂ ଦର୍ଶନଭାସନସମ୍ଭବଃ, ତଦ୍ଭକ୍ତମ୍ ଅଷ୍ଟମସ୍କନ୍ଧେ ଦେବାସୁରଯୁଦ୍ଧେ—  
“କବନ୍ଧାସ୍ତତ୍ର ଚୋଂପେତୁଃ ପଞ୍ଚାନ୍ତଃ ସ୍ଵାଶିରୋହାଂକିତିଃ । ଉଚ୍ଚତାୟୁଧଦୋଦ୍ଦିଂଘରାଧାବନ୍ତୋ ଭଟ୍ଟାନୁ ଯୁଧେ” ଇତି ॥ ୬୫ ॥ ପାତିତେରିତି । ଯଦ୍ଧା ଧନ୍ତ୍ରାଂ ସ ମହାରଣଃ ଅଭୂଃ, ମା

॥ ୬୫ ॥ କବନ୍ଧାଂଶ୍ଚିଛୁରୁଶିରସଃ ଧଡ଼ମ୍ପାଶକ୍ତ୍ୟାଞ୍ଜିପାଂୟଃ । ତିଷ୍ଠି ତିଷ୍ଠିତି ଭାଷନ୍ତେ । ଦେବାମନ୍ତେ ମହାସୁରାଃ ॥ ୬୫ ॥ ପାତିତେ ରଥନାମାଶ୍ଚି-  
ରସୁରୈରୈଷ୍ଟ ବସୁନ୍ଧର । ଭାଗମା ମାତ୍ରବତ୍ର ଯଦ୍ରାଭୂଂ ସ ମହାରଣଃ ॥ ୬୬ ॥ ଶୌଗିତୌଷା ମହାନନ୍ଦଃ ସଦ୍ୟସ୍ତତ୍ର ବିସ୍ଫୁଟସୁବୁଃ । ମଧ୍ୟେ  
ଚାସୁରୈସନ୍ତ୍ରାସୁ ବାରଣାସୁର-ବାଞ୍ଜିନାମ୍ ॥ ୬୭ ॥ କ୍ଷଣେନ ତନ୍ମହାସୈନ୍ତ୍ରା-ମହାରାଣଂ ତଥାସ୍ମିକା । ନିନ୍ତ୍ରା କ୍ଷୟଂ ଯଦା ବାହୁ-ସ୍ତ୍ରଗଦାବି-  
ବସୁନ୍ଧର । ପାତିତେଃ ରଥନାମାଶ୍ଚିଃ ଅସୁରୈଷ୍ଟ ଅଗମ୍ୟା ଅତବଂ ( ଗବାଂଶ୍ଚାଦିବିଦ୍ୟାନାନନ୍ତରମ୍ ଏକଶେଷାଂ ବହସ୍ତମ୍ ) ॥ ୬୬ ॥  
ତତ୍ର ଅସୁରୈଶ୍ଚ ମଧ୍ୟେ ଯ ବାରଣାସୁରବାଞ୍ଜିନାଂ ହସ୍ତିଦୈତ୍ୟାଞ୍ଜିନାଂ ଶୌଗିତୌଷାଃ ସଦ୍ୟସ୍ତତ୍ର ମହାନନ୍ଦା ଇବ ( ଲୁପ୍ତୋପମା )  
ବିସ୍ଫୁଟସୁବୁଃ ପ୍ରବହନ୍ତି ସ୍ୟା ॥ ୬୭ ॥ କ୍ଷଣେନେତି । ଅସ୍ମିକା ଅସୁରାଣାଂ ତଂ ମହାସୈନ୍ତ୍ରାମ୍ ଆତପ୍ରାଚୁରଂ ବଳଂ କ୍ଷଣେନ ତଥା କ୍ଷୟଂ ନିନ୍ତ୍ରା, ଯଦା ବାହିଃ ତୁର୍ଗଦାବିହାରାଞ୍ଚୟଂ  
ତୁର୍ଗକାର୍ଥୀନାଂ ମହାରାଞ୍ଜିଂ କ୍ଷୟଂ ନୟତି ( ଇତି ଅନାୟାସେନ ନାଶେ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତଃ ) ॥ ୬୮ ॥ ସ ଚେତି । ସ ପ୍ରାସିଦ୍ଧଃ ସିଂହଶ୍ଚ ସ୍ମୃତକେସରଃ ଚାଳିତସଟିଃ ସବ୍ ମହାନାମମ୍



যযৌ ॥ ২ ॥ স দেবীমিতি । স চিন্মুরোহস্বরঃ সমরে যুদ্ধে শরবর্ষণে দেবীং তথা ববর্ষ, যথা ভোয়দো মেঘস্তোয়বর্ষণে জলবর্ষণে মেরুগিরেঃ স্কমেরুপর্বতস্তা শৃঙ্গং শিখরং বর্ষতি ( মেরুনামা গিরিঃ মেরুগিরিঃ ; অনয়োপময়া অশ্বরস্ত লঘুগ্রহাণিরত্বং দেব্যা। অচলত্বমুক্তং : নেরোরুপরি মেঘসকাণাযোগ্যবাদভুতোপমেয়ম্ । যদ্বা শৃঙ্গপদেন একদেশে উচ্যতে ; যদ্বা ভোয়দঃ সূর্য্যঃ, সূর্য্যাদেব বৃষ্টিসম্ভবাং, তথাচ “অগ্নৌ প্রোক্তাহুতিঃ সন্যগাদিত্যমুপতিষ্ঠতে । আদিত্যাজ্জায়তে বৃষ্টির্গৃষ্টৈরন্নং ততঃ প্রজাঃ”

স দেবীং শরবর্ষণে ববর্ষ সমরেহস্বরঃ । যথা মেরুগিরেঃ শৃঙ্গং তোয়বর্ষণে ভোয়দঃ ॥ ৩ ॥ তস্য চিহ্না ততো দেবী লীলৈবেব শরোংকরান । জঘান তুরগান্ বাণৈর্-যন্তারৈধেব বাজিনান্ ॥ ৪ ॥ চিচ্ছেদ চ ধনুঃ সদ্যো ধবজঞ্চাতিসমুচ্চিহ্ন তম্ । বিব্যাধ চৈব গাত্রেযু ছিন্নধন্বান-নাশুগৈঃ ॥ ৫ ॥ স ছিন্নধন্বা বিরথো হতান্বো হতসারথিঃ । অভ্যধাবত ভাং দেবীং খড়্গচর্শ্বধরোহস্বরঃ ইতি ॥ ৩ ॥ তস্মেতি । ততস্তদনন্তরং দেবী তস্তা শরোংকরান্ শরানিকরান্ বাণৈঃ লীলয়া কোতুকেনৈব ছিহ্না তুরগান্ অশ্বান, বাজিনান্ যন্তারিং সারথিঞ্চ জঘান ॥ ৪ ॥ চিচ্ছেদেতি । ( দেবীভান্নযজ্ঞনীয়ম্ ) আশুগৈর্বৈণৈঃ মজ্জন্তংক্ষণং ধনুঃ, অতিসমুচ্চিহ্ন তম্ অভ্যুচ্চিহ্ন তং ধবজক চিচ্ছেদ । ছিন্নধন্বানং ছিন্নং ধনুর্ধস্তা স তথাভূতং তম্ অশ্বরং গাত্রেযু সকলশরীরেযু বিব্যাধ চ ॥ ৫ ॥ স ইতি । সোহস্বরঃ চিহ্নরঃ খড়্গচর্শ্বধরঃ সন্ ভাং দেবীম্ অভ্যধাবত , আভিমুখেনাধাবৎ । স কীদৃক্ ? ছিন্নং ধনুর্ধস্তা ( “ধনুঃ সলোপশ্চে”তি অন্ সমাসান্তঃ, সলোপশ্চ ) স ছিন্নধন্বা ( অত্র যাদৌ লুপ্তে স্বরসংক্ষেপেব নিমেষাং ছকাদস্ত

দ্বিত্বম্ (য)। বিগতো রপো যস্ত স বিরথঃ, হতা অস্তা যস্ত স হতাশঃ, হতঃ সারপিষস্ত স হতসারপিঃ ॥ ৬ ॥ সিংহমিতি। (সং ইত্যাক্ষমঞ্জরীময়) সোহস্রঃ  
তীক্ষ্ণধারেণ খঞ্জনমুপ্তি যস্যকে সিংহম্ আহত্য, দেবীমপি সবে্য বামে ভুজে আজয়ান, যতেহতিবেগবান্ দ্বিপ্ৰকাৰী ॥ ৭ ॥ তস্মা ইতি। খজ্ঞাস্তাঃ বৃজ্ঞঃ  
প্রাপ্য পফালং ভগবান্ (প্রিফলা বিশরণে ধাতুঃ)। হে নৃপনন্দন শূরথঃ; যদা নৃপানন্দনতীতি নৃপনন্দঃ (বিশেষণাদীতি ব্যবস্থা) পচাদিক্যং ৬ঃ, গটু বা রে )

॥ ৬ ॥ সিংহমাহত্য পড়্গেন তীক্ষ্ণধারেণ নৃদ্ধিনি। আজয়ান ভুজে সবে্য দেবীমপ্যতিবেগবান্ ॥ ৭ ॥ তস্মাঃ খড়্গে গো ভুজঃ

প্রাপ্য পফালং নৃপনন্দন। ততো জগ্রাহ শূলং স কোপাদিরুণলোচিনঃ ॥ ৮ ॥ চিৎফপ চ ততস্তত্ত্ব তদ্রকালিঃ মহাশূরঃ।

জাজ্বল্যমানং তেজোভী রবিবিশ্ব-নিবাস্বরাং ॥ ৯ ॥ দৃষ্ট। তদাপিতচ্ছূৰ্ণং দেবী শূল-মগৃপ্তত। তচ্ছূৰ্ণং শতধা তেন নীতং স

হে নৃপনন্দ, ন পফালং ক্রিয়ানিষ্পত্তৌ সমর্থো নাভূং (ফল নিষ্পত্তৌ)। ততস্তদনন্তরং স চিৎসুরঃ কোপাৎ অকুণ্ঠলোচিনঃ রক্তাংগঃ সন্  
কৃতবান্ ॥ ৮ ॥ চিৎফপেতি। ততো গ্রহণানন্তরং মহাসুরঃ তচ্ছূৰ্ণং তদ্রকাল্যং তদ্বিশয়ে চিৎফপ দ্বিপ্তবান্ চ। স্বীদৃক্? অস্বরাং? অস্বরাং? প্রাপি (নন্দনামে)  
পঞ্চমী বা—অথরে) তেজোভিজাজ্বল্যমানং; যদা অপরমাকাশম্ অতীতি অস্বরাং, তেজোভিরম্বরং গ্রসমানিমিবৈভুয়ং প্রেগা (পিস্মানং মতঃসুনাযিতবঃ; যঃ ভা  
জাজ্বল্যমানম্ অতিশয়েন জলদিত্তি হেতুগর্ভবিশেষণম্)। কিমিব? রবিবিশ্বমিব সূর্য্যমণ্ডলমিব ॥ ৯ ॥ দৃষ্টেতি। দেবী চন্ডিকা আপ্যতং আপ্যতং তদ্যদ্যং

ଦୃଷ୍ଟଃ ଶୂଳଂ ସ୍ବଶୂଳଂ ଅୟୁକ୍ତଂ ଅୟୁକ୍ତଂ । ତେନ ଦେବୀଶୂଳେନ ତଚ୍ଛୂଳଂ ଆୟୁରଂ ଶୂଳଂ ଶତଧା ନୀତଂ ( ଶତଶନ୍ଦୋହସଂଖ୍ୟାପରଃ ) ବହୁଧା ଧଞ୍ଜିତମିତି ଯାବଦଂ ।  
 ସୋହିପି ଅୟୁରଂ ଶତଧା ନୀତଂ ଧଞ୍ଜିତମିତି ॥ ୧୦ ॥ ହତେ ଇତି ॥ ତସ୍ମିନ୍ ମହାବୀର୍ଯ୍ୟୋ ଚିନ୍ତୁରେ ମହିଷସ୍ତ ସେନାପତୌ ହତେ ସତି ଚାୟରଂ ଚାୟରନାୟା  
 ତ୍ରିଦଶାଦିନୋହସ୍ବରଂ ଗଞ୍ଜାରୁତଃ ସନ୍ ଆଜଗାମ ॥ ୧୧ ॥ ସୋହିପୀତି ॥ ଅପ ଆଗମନାନନ୍ତରଂ ସୋହିପି ଚାୟରୋହିପି ଦେବ୍ୟାଃ ସମନ୍ଦେ ଶକ୍ତିଂ ମୁଦୋଚ । ଅସ୍ବିକା କ୍ରତଂ ତାଂ

ଚ ମହାୟୁରଂ ॥ ୧୦ ॥ ହତେ ତସ୍ମିନ୍ ମହାବୀର୍ଯ୍ୟୋ ମହିଷସ୍ତ ଚୟୁପତୌ । ଆଜଗାମ ଗଞ୍ଜାରୁତଃ ଶଚାୟରସ୍ତ୍ରିଦଶାଦିନଃ ॥ ୧୧ ॥ ସୋହିପି

ଶକ୍ତିଂ ମୁଦୋଚାଥ ଦେବ୍ୟାସ୍ତାମସ୍ବିକା କ୍ରତଂ । ହସ୍କାରାଭିହତାଂ ଭୂନୌ ପାତୟାମାସ ନିସ୍ପ୍ରଭାମ୍ ॥ ୧୨ ॥ ଭଗ୍ନାଂ ଶକ୍ତିଂ ନିପତିତାଂ

ଦୃଢ଼ଂ । କ୍ରୋଧସମସ୍ଥିତଃ । ଚିନ୍ତେପ ଚାୟରଂ ଶୂଳଂ ବାଣେନ୍ଦ୍ରପି ଶାଞ୍ଚିହନଂ ॥ ୧୩ ॥ ତତଃ ସିଂହଃ ସମୁତ୍ପତ୍ୟ ଗଞ୍ଜକୁଞ୍ଜାନ୍ତରସ୍ଥିତଃ ।

ଶକ୍ତିଂ ହସ୍କାରେଣ କ୍ରୋଧାବିକୃତଶକ୍ତିବିଶେଷେଣ ମନ୍ତ୍ରାତ୍ମକେନ ଅଭିହତାଂ କୃତ୍ବା ଭୂମୌ ପାତୟାମାସ । ପୁନଃ କିଂ କୃତ୍ବା ? ନିସ୍ପ୍ରଭାଂ ନିଷ୍ତେଜସମ୍ ( “କ୍ରୋଧାଘୋ ଚଂ ତତ୍ତ୍ବତ୍ରୟଃ  
 ଶକ୍ତୀଞ୍ଜୁରିପୁସଂସ୍ତବଃ” ଇତି ବର୍ଣ୍ଣାଭିଧାନଦର୍ଶନଂ, “ହଂ ବିତର୍କେ ପରିସ୍ରମେ ହଂ କ୍ବୟୋକ୍ତାନ୍ତୁନୌତିୟଂ” ଇତି ବିଶ୍ବସ୍ରକାଶନର୍ଶନାଚ ହସ୍କାରେଣେତ୍ୟତ୍ର ହସ୍ତିମିତି ହସ୍ତପାଠଃ । ଯୁକ୍ତଃ,  
 ପୁଣ୍ଡିକେୟୁ ତୁ ଦୀର୍ଘୋ ଦୃଶାତେ ) ॥ ୧୨ ॥ ଭଗ୍ନାମିତି । ଚାୟରୋ ଭଗ୍ନାଂ ନିପତିତାଂ ଶକ୍ତିଂ ଦୃଷ୍ଟଂ । କ୍ରୋଧସମସ୍ଥିତଃ ସନ୍ ଶୂଳଂ ଚିନ୍ତେପ । ସା ଦେବୀ ତଦପି ଶୂଳଂ ବାଣେନ୍ଦ୍ରଚ୍ଛିନ୍ନଂ  
 ॥ ୧୩ ॥ ତତ ଇତି । ତତସ୍ତଦନନ୍ତରଂ ସିଂହଃ ସମୁତ୍ପତ୍ୟ ଉଂମ୍ନଂ ତ୍ୟ ଗଞ୍ଜସ୍ୟ କୁଞ୍ଜୟୋରନ୍ତରେ ଋଣ୍ୟେ ସ୍ଥିତଃ ସନ୍ ତେନ ତ୍ରିଦଶାରିଣା ସହ ବାହ୍ୟୁକ୍ତେନ ଉଂକ୍ଷବିତି-

— ଚିନ୍ତା ଚିନ୍ତା

মহদ যথা স্যাত্থা যুযুধে (উচ্চৈর্বাশ্রাৎ তথা উৎপতোতি বা সম্বন্ধঃ) ॥ ১৪ ॥ যুধোতি ॥ ততোহনন্তরং যুধামানৌ ভৌ সিংহাসুরৌ তস্মাৎ নাপাৎ পজাৎ  
মহীং গতোঁ গতোঁ সন্তৌ অতিদারুণৈঃ প্রহরৈর্যুযুধাতে (সাক্ষিবার্হঃ) । যতোহতিসংরকৌ ভাতিব্রুকৌ ॥ ১৫ ॥ তত ইতি । ততোহনন্তরং যুপারিণা সিংহৈর্  
বেগাৎ খন্ অকিশম্ উৎপত্য নিপত্য চ করপ্রহারেণ চপটাদ্ব্যাতেন চামরস্ত শিরঃ পৃথক্ কৃতং ভিন্নীকৃতং ছিন্নমিতি দাবৎ ॥ ১৬ ॥ উদগ্রশ্চেতি । দেবো

বাহুযুদ্ধেন যুযুধে তেনোচ্চৈস্ত্রিদশারিণা ॥ ১৪ ॥ যুধামানৌ ততোস্তৌ তু তস্মান্নাপাশ্বাহীং গতোঁ । যুযুধাতেহতিসংরকৌ  
প্রহরৈর-রতিদারুণৈঃ ॥ ১৫ ॥ ততো বেগাৎ খন্পত্য নিপত্য চ যুপারিণা । করপ্রহাৰেণ শিরঃ-প্রচামরস্ত পৃথক্ কৃতম্  
॥ ১৬ ॥ উদগ্রশ্চ রণে দেব্য শিলাবৃক্ষাদিভি-হৃতং । দন্তমুষ্টিতলৈশ্চৈব করালশ্চ নিপাতিতং ॥ ১৭ ॥ দেবৌ ব্রূহ্মা গদা-

উদগ্রঃ উদগ্রানামাস্তুরশ্চ রণে শিলাবৃক্ষাদিভিহৃতঃ যারিতঃ । করালঃ করালানামাস্তুরশ্চ দন্তমুষ্টিতলৈশ্চৈব নিপাতিতঃ দন্তৌ বৎসদন্তৌ পৈথ্যহিহ্মিণ্যং ১৮  
তথাচ হরিবংশীয়-বলিবাসবযুদ্ধে “সুবৈক্যবিশিষ্টে বৈশ্বক্সেঃ শিখীমুগৈঃ” ইতি, দন্তনিপাতিত-সক্ভিবিতি বিদ্যাবিনোদঃ ; তলং চপেটাদ্ব্যাতং ( “ভ্রুং-হর-  
হনুদেহ-প্রী-ক্লী-বং-জ্যঘাতবারণে । কাননে কাষাবৌদ্ধে চ পুংসি ভালামহীকুহে । চপেটে চৎসরৌ তস্মী-যাতে সন্যোন পানিমা” ইতি মেদিনী ) ॥ ১৭ ॥ দেবো ব্রূহ্মা  
দেবৌ চণ্ডিকা উদ্ধতম্ উদ্ধতনামানগস্তুরং গদাপাতেশ্চ পুণ্যমাস । বাস্কলং বাস্কলানামানগস্তুরং ভিন্দিপালেন চূর্ণয়ামাস । তাস্মাৎ ভাতিমানিনিং, তথা ব্রূহ্মকম্



অঙ্কনামানঞ্চ বার্ণশচূর্ণয়ামসি ॥ ১৮ ॥ উগ্রেতি । ত্রিনেত্রা দেবী উগ্রাস্ত্রম্ উগ্রাস্ত্রনামানম্, উগ্রবীৰ্য্যম্ উগ্রবীৰ্য্যনামানঞ্চ তথৈব তেন প্রকারেণৈব মহাহুত্বঞ্চ ত্রিশূলেন জযান চ । পরমেশ্বরী পরমৈশ্বর্য্যশীলা, পরমাণং ব্রহ্মাদীনাম্ ঈশ্বরী নিয়ন্ত্রীতি বা ॥ ১৯ ॥ বিড়ালমোতি । বিড়ালজ্ঞ ( ভীমো ভীমসেন ইতিবৎ সংজ্ঞেকদেশঃ ) বিড়ালাক্ষত্বে শিরঃ কায়ান্ অসিনা পাতয়ামাস বৈ । তুর্দ্ধরং তুগুখঞ্চ উভৌ শরৈর্যক্ষয়ং নিন্ত্রে নিনায় প্রাপিতবন্তৌ ( সম্মুখ

পাতৈ-শচ-র্গ্যামাস চোদ্ধিতম্ । বাস্কলং ভিন্দিপালেন বাণৈঃসুত্রং তথাক্ককম্ ॥ ১৮ ॥ উগ্রাস্ত্র-মুগ্রবীর্যধঃ তথৈব চ মহা-  
হতুম্ । ত্রিনেত্রা চ ত্রিশূলেন জঘান পরমেধ্বরী ॥ ১৯ ॥ বিড়ালস্রাসিনা কয়াৎ পাতয়ামাস বৈ শিরঃ । দুর্ধরং দুর্নৃৎপোভো  
শরৈর্নিহ্নে যমজয়ম্ ॥ ২০ ॥ এবং সংক্ষীয়মাণে তু স্বসৈন্তে নহিষাসুরঃ । মাহিষেণ স্বরূপেণ ত্রাসয়ামাস তান্ গগন্ ॥ ২১ ॥

রণহতস্য স্বৰ্গগামিভ্বেন যমগৃহগমনায়োগ্যত্বাৎ যমক্ষয়নিত্যেনেन मृत्युरेववाभिहितः ; “ক্ষয়ে। रोगान्तरे वेशकल्लान्तापचयेयुः” इति मेदिनी ) ॥ २० ॥ एवमिति । महिषाक्षुरः एवमनेन प्रकारेण अस्मैन्ने सङ्कीर्णमात्रे सति माहिषेण शरूपेण तान् गणान् त्रासयामास ॥ २१ ॥ तददर्शयति द्वाभ्याम् । काञ्चिदिति । प्रोथायातेन काञ्चि० गणान् भूतले पातयामास ( इत्युत्तरैर्गणैः ) । अपरान् शूरकैःपेः पुराघातैः । ( तथान्तराङ्गः ) अत्रांश्च अत्रांश्च शृङ्गाभ्यां विदारितान् दिधार्कितान्, काञ्चिद्वेगेन गतितावतमेव, अपरान् मृगान् काञ्चि० प्रपतयत् ।

নিধাসপবনেন ভূতলে পাতয়ামাস ইতি সৰ্বব্রাহ্মণঃ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ নিপাত্য মহিষঃ প্রমথানীকং প্রমথসৈন্ত্যং নিপাত্য মহাদেব্যাঃ সিংহং হস্তম্  
অভ্যধাবত আভিমুখেন অধাবৎ । ততো হেতোরদ্বিক কোপং চক্রে ॥ ২৪ ॥ সোহপি মহাবীৰ্য্যঃ কোপাৎ শূদাভ্যাম্ উচ্চান্ পক্ষভান্ চিহ্নেপ  
চ ননাদ চ (চকারদ্বয়ং নৈরন্তর্যাদ্যোতনায়) । স কৌদৃক ? খুরক্ষুগমহীতলঃ খুরৈঃ ক্ষুগুং সংপিচ্ছং মহীতলং যেন মঃ ॥ ২৫ ॥ বেগেতি । যদী তস্য

কাংশ্চিভূগু-প্রহারেন খুরক্ষৈপেস্তথাপরান্ । লাস্পুলতাজিতাংশ্চাত্যান্ শূদাভ্যাক্ষং বিদারিতান্ ॥ ২২ ॥ বেগেন

কাংশ্চিদপরা-মাদেন ভ্রমণেন চ । নিধাস-পবনেনাত্যান্ পাতয়ামাস ভূতলে ॥ ২৩ ॥ নিপাত্য প্রমথানীক-মভ্যধাবত

সোহস্থরঃ । সিংহং হস্তং মহাদেব্যাঃ কোপঞ্চক্রে ততোহস্থিক ॥ ২৪ ॥ সোহপি কোপগাহাবীৰ্য্যঃ খুরক্ষুগমহীতলঃ ।

শূদাভ্যাং পৰ্বতানুচ্চাংশ্চক্রেপ চ ননাদ চ ॥ ২৫ ॥ বেগভ্রমণ-বিক্ষুপ্তা মহী তস্য ব্যলীৰ্য্যত । লাস্পুলেনাহতশ্চাক্ষিঃ প্রবেয়া-

বেগেন নৈম্ব্রোণ যদভ্রমণং মণ্ডলাকারগতিঃ তেন ক্ষুগুং সংপিচ্ছ । সতী ব্যলীৰ্য্যতে শীর্ণা অভূৎ (কর্মকন্ডার প্রয়োগঃ) । অক্ষিঃ সমুদ্রশ্চ হোমোজ্ঞেপেণ

নাহতঃ তাজিতঃ সন্ সৰ্বতঃ প্লাবয়ামাস জলপ্লাবিতমকরোৎ ॥ ২৬ ॥ ধুতেতি ॥ যদা মেঘাশ্চ তস্য ধুতে কম্পিতে মে ধুগ্গে বিমগ্নে প্রত্যয়ঃ

ভিন্নাঃ বিদীর্ণীকৃতাঃ সন্তুঃ খণ্ডখণ্ডঃ যযুঃ খণ্ডীকৃতকং প্রাপুঃ । শতশোহচয়াঃ পৰ্বতাঃ দ্বাসানিলাস্তাঃ নিধাসপবনোৎক্ষিপ্তাঃ সন্তুঃ নভসঃ পৌতঃ

আকাশমুখায় ততঃ পতিতবন্ত ইত্যর্থঃ ॥ ২৭ ॥ ইতীতি । সা চণ্ডিকা ইতি উক্তপ্রকারেণ আপতন্তম্ আগচ্ছন্তং ত্রোদধসমাখ্যাতং ত্রোদধোদীপ্তং মহাস্বরং মহিবং দৃষ্ট্বা তদা তদ্বধায় তদ্বধং কৰ্ত্ত্বং কোপমকরোং ॥ ২৮ ॥ সেতি । সা চণ্ডিকা (বৈ নিচয়ে পাদপুরণে বা) তস্তা সম্বন্ধে পাশং ক্ষিপ্ত্বা তং মহাস্বরং ববন্ধ । সোহপি মহাস্বরঃ মহাম্রবে মহায়ুদ্ধে বন্ধঃ সন্ মাহিষং রূপং তত্যাঙ্গ ॥ ২৯ ॥ তত ইতি । ততস্তদনন্তরং সদ্যস্তংক্ষণমেব সিংহোহভবৎ । অধিক তস্তা সিংহস্য

নাস সৰ্ব্বতঃ ॥ ২৬ ॥ ধূতশৃঙ্গ-বিভিন্নান্ধ খণ্ডখণ্ডং যযূর্ঘনাঃ । শ্বাসানিনাস্তাঃ শতশো নিপেতুন ভসোহিচনাঃ ॥ ২৭ ॥ ইতি ত্রোদধসমাখ্যাত-নাপতন্তঃ মহাস্বরম্ । দৃষ্ট্বা সা চণ্ডিকা কোপং তদ্বধায় তদাকরোং ॥ ২৮ ॥ সা ক্ষিপ্ত্বা তস্তা বৈ পাশং তং ববন্ধ মহাস্বরম্ । তত্যাঙ্গ মাহিষং রূপং সোহপি বন্ধো মহাম্রবে ॥ ২৯ ॥ ততঃ সিংহোহভবৎ সত্তো যাবন্তস্তাধিক শিরঃ । ছিনতি তাবৎ পুরুষঃ খড়্গাপাণি-রদৃশ্যত ॥ ৩০ ॥ তত এবাশ্ত পুরুষং দেবী চিচ্ছেদ সায়কৈঃ । তং খড়্গাচর্জনা

শিরে যাবচ্ছিনতি (স্মেতুহং), তাবদেব খড়্গাপাণিঃ পুরুষোহদৃশ্যত অর্থাত্তয়া (যদা যাবত্তাবংশকাভ্যাং গমকালদ্যোতনেন শিরশ্ছেদপ্রক্রম এব পুরুষোহভূৎ, তাতো ন খড়্গাপাতো গম্যতে) ॥ ৩০ ॥ তত ইতি । ততোহনন্তরমেব দেবী খড়্গাচর্জনা সাক্ষং তং পুরুষং সায়কৈর্বর্বাণৈরাশ্ত শীঘ্রং চিচ্ছেদ (এবকারেণ পুরুষত্বনগদ-কালমেব ছেদো গম্যতে; “সায়কৈরবসায়কৈ”রিত্যি যমকদর্শনাং সায়কো দন্ত্যাঙ্গি, সো অন্তকর্শনীতাস্য রূপম্) । ততোহনন্তরং সোহম্বদঃ মহাগেজেহিভূৎ ॥ ৩১ ॥

করেগতি । তং প্রসিদ্ধং মহাসিংহং করেণ শুশ্রূষাদেগুন চকৰ্ণ আকৃষ্টবান্ চ, জগজ্জ শব্দং কৃতবাংশ (চকায়দ্বয়ং সমকালদ্যোতনায় : সিংহাকৰ্ণশাটোপশব্দভ্যাং গজস্য প্রাপ্তজ্ঞং মহত্বং দ্যোতিতম্ । দেবী কর্তৃতত্ত্বায়াস্তরগ্য করং শুণ্ডং খাঞ্জন নিরকুন্ত্ত ছিন্নবতী (কৃতী ছেদনে তুদাদিঃ, আয়ুর্নৈপদম্ আধঃ ; কর্তৃত ইতি শব্দজ্ঞাৎ যদী) ॥ ৩২ ॥ তত ইতি । ততঃ অনন্তরং মহাহুরো মহিয়ো ভূয়ঃ পুনরপি মাহিষঃ মহিষসম্বন্ধি বপুঃ শরীরম্ আহিতঃ সন্ তৈধৈব পূৰ্ণোক্তপ্রকারেণ সচরচিত্রং

সাদর্শং ততঃ সোহভূমহাগজঃ ॥ ৩১ ॥ করেণ চ মহাসিংহং তঞ্চকৰ্ণ জগজ্জ চ । কর্তৃতত্ত্ব করং দেবী গড়্গেন নিরকুন্ত্ত  
 ॥ ৩২ ॥ ততো মহাসুরো ভূয়ো মাহিষং বপুঃস্থিতঃ । তথৈব ক্ষোভয়ামাস ত্রৈলোক্যং সচরচিত্রম্ ॥ ৩৩ ॥ ততঃ ক্রুদ্ধা

জগন্মাতা চণ্ডিকা পানমূত্রমম্ । পপৌ পুনঃপুনঃশ্চৈব জহাসারুণলোচনা ॥ ৩৪ ॥ নন্দ চাস্তরঃ সৌহিপি বনবাণ্য-

স্থাবরজঙ্গমসহিতং ত্রৈলোক্যং ক্ষোভয়ামাস বাকুলীচকার (ত্রয়ো লোকা এব ত্রৈলোক্যং চতুর্বর্গদ্বিহাদগ্ণ) ॥ ৩৩ ॥ তত ইতি । ততঃ পুনস্তরং হংসঃ ।  
 অতিকোপশালিনী, জগন্মাতা জগজ্জননী জগদবচ্ছেদকরণীলা বা (অতঃ স্মর্যাদাতিক্রমপরাধাং নাশ উচিত এব, সামথ্যাতিশয়প্রোত্তমায় চ বিবেশদেঃ) ।  
 ক্রুদ্ধা সতী উত্তমম্ অলৌকিকং পান-মাসবং পুনঃপুনঃ পপৌ পিবতি অ (পীয়তে যৎ তৎ পানং কর্শনি অনট্) : অকপুলোচনা (পানো-  
 দ্বাদকৃতলোহিতলোচনা সতী জহাস চৈব (কোপজনিতেহয়ং হাসঃ, যদ্বা আঃ কিমিদমপূর্কমাশু মরিয়াতঃ শৌৰ্যবীৰ্যাদাতানাহুদা হাসঃ) ॥ ৩৪ ॥

ননর্দেতি ॥ সোহপাস্বরশ্চ বলং দেহশক্তিঃ বীৰ্য্যমিদ্রিয়শক্তিঃ মদ উৎসাহঃ তৈরুদ্বাতঃ, যদ্বা বলং সামর্থ্যং বীৰ্য্যমুৎসাহঃ তাভ্যাং যদো গৰ্ভঃ তেনো-  
 দ্বতঃ উচ্ছৃঙ্খলঃ সন্ ননর্দ নদতি স্ম চ। চণ্ডিকাং প্রতি বিষাগত্যাং শূদ্রাভ্যাং ভূধরান্ চিগ্গেপ চ ( পূৰ্ণবচকারদ্বয়ার্থঃ ) ॥ ৩৫ ॥ সেতি । সা চণ্ডিক। ৮  
 তেনাস্বরেণ প্রহিতান্ ক্ষিপ্তান্ ভূধরান্ শরোৎকরৈঃ শরনিকরৈঃ চূর্ণযন্তী সতী আকুলান্গরম্ অব্যক্তান্গরং যথা স্যাত্তথা তং মহিমম্ উবাচ ।

মদোদ্বিতঃ । বিষাগভ্যাক্ চিগ্গেপ চণ্ডিকাং প্রতি ভূধরান্ ॥ ৩৫ ॥ সা চ তান্ প্রহিতাংস্তেন চূর্ণযন্তী শরোৎকরৈঃ ।

উবাচ তং মদোদ্বিত-মুখারাগাকুলান্গরম্ ॥ ৩৬ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩৭ ॥ গর্জ্জ গর্জ্জ গ্গং মূঢ় মধু যাবৎ পিবাম্যহম্ । ময়া

স্বয়ি হতেহত্রেব গর্জ্জয্যন্ত্যাপ্ত দেবতাঃ ॥ ৩৮ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ৩৯ ॥ এবমুক্তা সমুৎপত্য সারুঢ়া তং মহাস্বরম্ ।

কীদৃশী ? মদেনোদ্বিতো দূরীকৃতো মুখরোগেহধররোগো যন্তাঃ ( মুখশব্দ একদেশবৃত্তিঃ, তেনৌষ্ঠাধররোগঃ ইতি গম্যতে ), যদ্বা মদেনোদ্বিতোহতিশায়িতো  
 মুখরোগো মুখস্যারুণিমা যন্তাঃ ॥ ৩৯ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩৭ ॥ গর্জ্জতি । হে মূঢ় হিতাহিতবিচারপরাদ্ধম্, অহং যাবৎ যাবন্তং কালমভিবাণ্য মধু পিবাণি, তাবৎ  
 তাবন্তং কালং গর্জ্জ গর্জ্জ ( স্বরাধাম্ আভীক্ষ্য বা দ্বিরুক্তিঃ ) । ততঃ কিমিতাহ—স্বয়ি ময়া হতে ব্যাপাদিতে সতি দেবতাঃ ইন্দ্রাদয়ঃ গর্জ্জযান্তি । তদপি অত্রেব  
 অগ্নিরেব স্থানে, ন তু স্থানান্তরে । তদপি আশু শীঘ্রমেব, ন তু কালান্তরে ॥ ৩৮ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ৩৯ ॥ এবমিতি । সা দেবী এতদ্বক্তা সমুৎপত্য উদ্ভী-

মুৎপুত্ৰ্য তং মহাস্থরম্ আক্ৰিতা অক্ৰিতবতী । পাদেন কৰ্ণে আক্ৰম্য নিপীড়্য শূলেন এনং মহাস্থরম্ অত্যাড়িত বক্ষসীতি শেষঃ ( ঋষেব'চনামিদম্ ) ॥ ৪০ ॥  
তত ইতি । ততঃ অনন্তরং সোহপ্যস্থরঃ তয়া পদাক্ৰান্তঃ সন্ ততো মহিষরূপাং নিজমুখাং অর্দ্ধনিক্রান্তঃ বিনির্গতান্নিকায় এব দেব্যা অতি বীৰ্য্যেণ উগতেজস।

পাদেনাক্রম্য কৰ্ণে চ শূলেনৈন-মত্যাড়য়ৎ ॥ ৪০ ॥ ততঃ সৌহৃপি পদাক্ৰান্তস্তয়া নিজমুখাভিতঃ । অর্দ্ধনিক্রান্ত  
এবাতি দেব্যা বীৰ্য্যেণ সংবৃতঃ ॥ ৪১ ॥ অর্দ্ধনিক্রান্ত এবাসৌ যুধ্যমানো মহাপ্ররঃ । তয়া মহাসিনা দেব্যা শিরশ্চিহ্ন  
নিপাতিতঃ ॥ ৪২ ॥ ততো হাহাকৃতং সৰ্বং দৈত্যসৈন্যং ননাশ তৎ । গ্রাহ্যং পরং জগ্মঃ সকলা দেবতাগণাঃ ॥ ৪৩ ॥  
তুচ্ছবুস্তাং সুরা দেবীং সহ দিব্যমহিষিভিঃ । জগুর্গন্ধর্ববপত্যে । ননুতুচ্ছচাপ্যরোগণাঃ ॥ ৪৪ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে  
সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে মহিষাস্থরবধঃ ॥ ৩ অঃ ॥

সংবৃতঃ স্তব্কো বভূবেত্যর্থঃ ॥ ৪১ ॥ আর্দ্ধেতি । অসৌ মহাস্থরো মহিষঃ অর্দ্ধনিক্রান্ত এব যুধ্যমানঃ ( বর্জমানসাগীপ্যে শানঃ ) তথা দেব্যা মহাসিনা মার্কণ্ডেয়  
শিরশ্চিহ্না নিপাতিতঃ ॥ ৪২ ॥ তত ইতি । ততঃ শিরশ্ছেদনান্তরং তৎ সৰ্বং দৈত্যসৈন্যং হাহাকৃতং সৎ ননাশ পতাবিতঞ্চ ( হান ) ইতি অপরং কৃৎজা বোল

তৎ হাহাকৃতং রাজদত্তাদিঃ) । সকলাঃ সমগ্ৰা দেবতাগণাশ্চ পরমত্যন্তং প্রশংসন্তঃ ॥ ৪৩ ॥ তুষ্টুব্রিতি । সুরা দেবাঃ দিব্যৈঃ স্বর্গ্যৈঃ মহামিভিন্দীরদাদিভিঃ সহ তাঃ দেবীং তুষ্টবুঃ ( দিব্যৈরিত্যুপলক্ষণম্, অগ্নৈরপি মহামিভিঃ সহৈতি জ্ঞেয়ম্ । যদ্বা দিব্যৈঃ দিবি স্থিতৈঃ ( ভবতর্বিদ্যমানতা সত্তা চার্ণাঃ ) যুদ্ধদর্শনার্থমাকামিহৈতরিতি ভাবঃ । গন্ধর্ব্বপত্যো বিপ্ৰাবস্ত্ৰপ্রভৃতয়ে । অপরোগণাঃ উর্কশ্রাতাশ্চ নমুতুঃ নৃত্তবত্যাঃ ॥ ৪৪ ॥

অথ পূর্বাধ্যায়ান্তে “তুষ্টবুস্তাং সুরা দেবীং সহ দিব্যৈর্মহামিভিঃ”রিতি যদুক্তং, তদেব বর্ণয়িতুং প্রথমং তাবদশেষ-সুরনিকর-নিরাকরণাতিতৃদ্বর্ক-মহিষাসুরবধ-কন্দলিতা ॥

ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ শক্রাদয়ঃ সুরগণা নিহতেহতিবীৰ্য্যে, তস্মিন্ ছুরাত্মনি সুরারবলে চ দেব্যা । তাং তুষ্টবুঃ প্রণতিনত্র-

নন্দসন্দোহ-বিবশচেতসাং দিবৌকসাং ভক্ত্যতিশয়মাহ । ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ শক্র ইন্দ্রঃ আদির্যেবাং তে শক্রাদয়ঃ সুরগণাঃ ইন্দ্রমুখ্যা দেবসমূহাঃ তাং দেবীং বাগ্ভিঃ তুষ্টবুঃ ( নমু প্রাক্ “সহ দিব্যৈর্মহামিভিঃ”রিত্যুক্তম্, অত্র সুরগণা ইত্যেবোচ্যতে, তদত্র কা সঙ্গতিঃ ? উচ্যতে—ইন্দ্রাদীনামতিতৃঃপদাসুরনামেশন স্বস্বাধিকারপরপ্রাপ্ত্যতিশয়হর্ষপরত্নাং প্রাধান্যেনোক্তং, প্রক্রমবশাৎ ঋষীগমপি জ্ঞেয়ম্ ; অতএব “সহ দিব্যৈর্মহামিভিঃ”রিতি গোণভাবেনোক্তং, বঙ্গ্যভি চ “যুগাভিঃ স্তুতয়ো যাস্চ যাস্চ ব্রহ্মমিভিঃ কৃতাঃ” ইতি ) । কদা ইত্যাহ—তস্মিন্ ছুরাত্মনি দুষ্টিস্বভাবে মহিষে, সুরারিবলে অমুরসৈন্ত্য চ দেবাঃ নিহতে সতি । কীদৃশে ?

অতিবীৰ্য্য অতিবলবতি (উভয়োরেব বিশেষণদ্বয়ম্) । কীদৃশাঃ ? প্রাণতিনত্রিশিরোধরাংসাঃ প্রাণত্যা প্রাকৃষ্যবননেন নত্ৰাং শিরোধরাংসাং যেযাং ত্রে (শিরোধরাঃ কক্ষরাঃ, অংসা বাহিমূলানি) । পুনঃ কিঙ্কতাঃ ? অহর্ষণে প্রকৃষ্টচিত্তান্নাদেন যঃ পুলকেদানাং হযোদানাং তেন চারবো রমণীয়ঃ দেহা যোদাং ত্রে (অত্র বাগ্ ভিরিত্যেনে প্রাণতীত্যাদিবিশেষণদ্বয়েন চ বাচিক-কায়িক-মানসিক-প্রাণাঃ সৃচিঃ, তেন চ ভক্ত্যাদেকঃ সৃচিঃ ॥ ২ ॥ স্কুলিয়াহ্ দেবোতি । তাং প্রসিদ্ধাস্ অদ্বিকাং জগন্মাতরং স্মাঃ ব্যাং ভক্ত্যা নভাঃ আয়ে বিসর্গলুক্, ব্যয়িতার্থঃ, পাদপূরণে বা স্মৃতি) । নলু দেবানাং তেজোজজ্ঞানেন কণং জগন্মাতৃস্মৃতিং চেত্তম্ভাঃ স্মৃতি । যদা দেব্যা ইদং জগৎ প্রপঞ্চরূপম্ আততম্ উৎপাদিতং ততমিতি বা । নলু কাযোংগভৌ মানাবযযমাপেক্ষঃ কণ্ডা দৃষ্টতে ? তৎ কিং দাদনাং

শিরোধরাংসা, বাগ্ ভিঃ প্রহর্ব-পুলকেদানাং-চারুদেহাঃ ॥ ২ ॥ দেব্যা যদাততনিদং জগদাত্মাশক্ত্য, নিঃশেষদেবগণ-শক্তিমান্

যপেক্ষণীয়মস্তি ? ন ইত্যাহঃ—আত্মাশক্ত্য। স্বকীয়ানির্ব্বচনীয়াসামর্থ্যেন । নলু শ্রুতে জগদুৎপত্তৌ মহাদাদীনাং বহুনাং দাযবৎ, ন, তেমানাং হংসানাম-রূপত্বনাভেদাৎ ইত্যাহঃ—নিঃশেষদেবগণশক্তিসমুহমূর্ত্যা নিঃশেষদেবগণাঃ মহাদাদয়ঃ ত এব শক্তিসমূহরূপা মূর্ত্তিয়ম্যাঃ (তদুক্তম্ “এতচ্চতুর্দিক্শক্তিং গবং পাদানং যদা বিদুঃ” ইতি), যদা নিঃশেষদেবগণানাং মহাদাদীনাং যঃ শক্তিসমূহঃ কার্যোৎপাদনসামর্থ্যাং স এব মূর্ত্তিঃ রূপং যম্যাঃ, যদা নিঃশেষদেবগণশক্তিসমূর্ত্তো মূর্ত্তিদাদাঃ, যদা নিঃশেষদেবগণানাং শক্তিঃ সমূহতি প্রেরয়তি যা এবম্ভূতা মূর্ত্তিয়ম্যাঃ ( অয়ঃ পুংবস্তাবঃ, মুচ্ছধাতোতিস্মিঙ বা ঋপম্ (সে); এতেন তেহপি তদাশাস্ত্রংপ্রেরিতা ন, দাদাঃ



জনয়ন্তি, ন পৃথগিত্যর্থঃ) । অতএব সৰ্বকারণতয়া সৰ্ব্বাধ্যাত্ম্যাহঃ—অখিলদেবমহর্ষিপূজ্যাম্ অখিলাঃ সমগ্রাঃ দেবশ্চ মহর্ষশ্চ তৈরারাম্যাম্ । উত্তরোত্তরকল্যাণঃ-  
সমানা আহঃ—স নোহম্যাকং শুভানি মঙ্গলানি বিদধাতু করোতু (ইদানীং শুভং কৃতবত্যেব, কালান্তবেহপি করিষ্যতীত্যংশঃ) । যত্র যয়। দেব্যা ইদং জগৎ আততঃ-  
ব্যাপ্তম্ । (নহু ইদং কারাম্পদরূপেণ দৃষ্টম্ পৰিচ্ছিন্নাধাঃ কথং জগদ্ব্যাপকত্বং সম্ভবতু ? তত্রাহঃ নিঃশেষেতি । সকলদেবগণানাং শক্তিমমূহায় পুনঃপুনঃ স্বধিকারপ্রাপ্তা।  
নিজনিজমৰ্যাদাপালনায় মূৰ্ত্তির্দেহো যস্যাঃ তয়া (এতেন পরোপকায় ইচ্ছাবিলসিতমেব শরীরং, ন তু পারমার্থিকম্, অতএবোক্তং “দেবানাং কার্যাসিদ্ধার্থমাবিৰ্ভবতি”  
ইত্যাদি ; অতঃ সমানম্) ॥ ৩ ॥ জগৎ কারণমুক্তা অপরিচ্ছেদ্যতঃ ক্রবন্তঃ প্রাণয়ন্তে যন্যা ইতি । সা চাণ্ডিক। অখিলদ্রব্যং পরিপালনায় সমগ্রজগতঃ রক্ষণায় মতিঃ

মূৰ্ত্ত্যা । তামম্বিকা-মখিল-দেবমহর্ষি-পূজ্যাং, তক্ত্যা নতাঃ স্মা বিদধাতু শুভানি সা নঃ ॥ ৩ ॥ যশ্চাঃ প্রভাব-নতুনঃ ভগবা-

করোতু । নম্বেবং সমস্তজগদ্রক্ষণেহুহুৱাণমপি রক্ষা আদয়োততি চেত্তহাহঃ—অশুভভয়ম্ অশুভাঃ দৈত্যোত্তেভ্য। যদুয়ং তস্য নাশায় শালং কৰ্ত্ত্বং ;  
যদ্বা অশুভং পাপং, ভয়হেতুত্বাৎ ভয়ম্ অশুৱাঃ (সমাসাইবক্যম্) তস্য নাশায় মতিং বুদ্ধিং করোতু (অতোহুহুৱনাশঃ স্মতএব প্রাপ্তঃ, কদাচিৎ ভগবান্ধ্য প্রার্থনা) । সা কা  
ইত্যপেক্ষায়ামাহঃ—যস্যা। অতুলম্ অনন্তসাধারণং প্রভাবঃ মাতাত্ম্যং বলং সামর্থ্যঞ্চ বক্তৃন্ এতাবদ্বিতী নৈকপরিভূঃ ভগবান্ সৰ্ববিৎ অনন্তে। বিশ্বরূপি, ব্রহ্মা অগংযদেপি,  
হরো জগৎসংহারকোহপি ন অলং ন সমর্থঃ (নন্ত বর্দি সৰ্বক্রেঃ ভগবান্, তচ্চি কথং ন জানাতু ? “স বোভি বেদ্যং নহি ভস্য বেদ্য” ইতি শ্রীভেঃ, “বঃ সৰ্বকৃতঃ

• সর্কাবিৎ” ইত্যাদিশ্রুতেশ্চ তদজ্ঞানে কথং সর্কজ্ঞত্বম্ ? উচ্যতে—নহ্যনেন ভগবতোহসর্কজ্ঞতা প্রতিপাদ্যতে, কিন্তু তৎপ্রত্যাব-বলয়োরনন্ততৈব প্রতিপাদ্যতে ; সতি পরিচ্ছেদে তদজ্ঞানে এব দোষঃ, পরিচ্ছেদাতাব্যেতু কুতো দোষাবসরঃ ? ॥৪॥ সম্পদ্বিপদ্রপতর। যথজুঃধেহেতুং বদন্তঃ প্রার্থয়ন্তে যেতি । স্কন্ধতিনাং পুণ্যশালিনাং ভদ্রনৈঃ গৃহেযু বা স্ত্রীঃ সম্পাং স্বয়মাত্মনা স্বরূপেণ সম্পদ্রপেতি যাবৎ ; যদ্বা স্বয়ং তেমাং তৎপ্রাণনামন্তরেণাপি তদর্গহেযু নম্পদ্রবতি । তথা স্বয়মপি ইভার্থঃ পাপাত্মনাং কদদ্য শালিনাং ভবনেনবু অলক্ষ্যমীঃ বিপাৎ (তেষামনুদিনমাত্মসম্পদমিচ্ছতামপি বিপদ্রবতীতি স্বয়মিত্যসার্থঃ) । তথা কৃতধিযাং নিঃসর্গলব্ধীনাং হৃদয়েষু অস্ত্য করণায়

ননন্তো, ব্রহ্মা হরশ্চ ন হি বক্তৃ মনং বলঞ্চ । সা চণ্ডিকখিলজগৎপরিপালনায়, নাশায় চান্তুভবস্য গতিং করোতু ॥৪॥

যা বুদ্ধিব বৈসাম্যজিকা (নহ বুদ্ধেরপ্যন্তঃকরণাভিন্নত্বাদনন্তগতয়েতৎ, তথাচ “মনোবুদ্ধিরহংকারশ্চিক্রগিত্যন্তরাশ্রয়ম্” ইতি । সত্যম্ । নির্দায়ণে সপ্তমী । তদঙ্গগণঃ— কৃতধিযাং হৃদয়েষু অস্তঃকরণচতুষ্টয়মধ্যে যং বুদ্ধিব বৈসাম্যজিকা তস্মা মুক্তিহেতুত্বাৎ, তদ্বক্তং গীতাহ “ব্যবসাম্যজিকা বুদ্ধিরেকেকহ কুরুনন্দন । বহুশাখা হৃদস্তাৎ বুদ্ধয়োহব্যবসাম্যিনাম্” ইতি ) । তথা সত্যং বেদমার্গান্তুসারিণাং জ্ঞানী বেদার্থে দূরপ্রত্যয়ঃ (এতেন বৈদিককর্মফলদাত্রী স্বমেবেতুক্তম্, জ্ঞানৈক কর্মফলসম্পত্তেঃ ; তথাচ শ্রুতিঃ “অশ্রদ্ধয়া হৃতং দত্তং তৎ সর্কং নিফলং ভবেৎ” ইতি ) । তথা বুলজানপ্রভবস্য সংকুলজাতিস্য লজ্জা। অকার্য্যবৈপথ্য- হেতুঃ (অনেন সংকর্মপ্রবৃত্তিদ্বারা স্থিতিনির্বাহিক। স্বমেব ইতুক্তম্ । অত্র শ্রুত্যাঃ সম্পদ্রাঙ্গিষ্ঠাত্রো দেবগাশ “কীর্ত্তিঃ শ্রীর্বা কি চ নারীগাম্” ইত্যাদিনীতাপ্ত

“বুদ্ধিলজ্জা বপুস্তথা” ইত্যাদেগৎস্তপুৰাণে চ দৰ্শনাং । তাম্ উক্তলক্ষণং ত্বাং নতাঃ স্ম । হে দেবি, বিধং জগৎ পরিপালয় ( পুনঃপুনঃ প্রার্থনা মদ্বি-  
 ক্ষুরেণ চিরপরিভূতানাম্ অতিতাপানুভবাং অগ্ৰদা ভাবিভয়স্ত বাচিতি নিবারণায়, যদা যজ্ঞভেদাদা ভেদঃ ॥ ৫ ॥ বচনোগোচরতামাহুঃ কিং বর্ণয়াম্যেতি ।  
 হে দেবি সৰ্ব্বপ্রকাশিকে, তব এতদ্রূপং কিং বর্ণয়াম বর্ণয়িতুং শকুমা ? নৈবেদ্যার্থঃ ( শক্ৰো লোটি ) । নতু যদৃশতে তং কিমিতি বর্ণয়িতুং ন  
 শক্যতে ইতি চেত্তত্রাহঃ—সৰ্বেষু অশ্বরদেবগণাদিকেবু অচিন্ত্যং কৈরপি চিন্তয়িতুং বুদ্ধিবিষয়ীকৰ্ত্তৃগুণক্যম্ ( বুদ্ধিবশেনসোরগোচরদে কথং বর্ণনীয়মিত্যর্থঃ,  
 যা শ্ৰীঃ স্বয়ং স্কৃতিনাং ভবনেনমলক্ষ্মীঃ, পাপাত্মনাং কৃতধিয়াং হৃদয়েষু বুদ্ধিঃ । শ্ৰদ্ধা সত্যং কুলজনপ্রভবস্য লজ্জা, তাং  
 ত্বাং নতাঃ স্ম পরিপালয় দেবি বিশ্বম্ ॥৫॥ কিং বর্ণয়াম তব রূপ-মচিন্ত্যেনেতৎ, কিঞ্চাতি বীৰ্য্য-মশ্বরক্ষয়কারি ভূরি । কিঞ্চা-

কু  
 ত্তি  
 ক্তি  
 ক্তি

১৬

এতেন দৃশ্যমানমপি ন পরিচ্ছেদবিষয়মিতি ভাবঃ ; আদিদা রক্ষৰ্যাদীনাং গ্রহণম্ ) । কিঞ্চ তব অতি অতিশয়িতং বীৰ্য্যং সামর্থ্যং কিং বর্ণয়াম ?  
 ( পূৰ্ব্ববদর্থঃ ) । কীদৃক্ ? যতোহিস্বরক্ষয়কারি অবিজ্ঞান! ঈশদ্বা সুরা দেবা যেভাস্তে অস্তরাঃ ( গ্রহাণে ঈশদর্শে বা নগ্রঃ ) তেভানপি স্বয়ং বর্ণনীয়ং  
 ( নিঃশেষস্বরনিকর-নিরাসপরাশ্বর-ক্ষয়কারিদ্বাদচিত্তামেব ) । অতএব ভূরি অতিপ্রচুরম্ । কিঞ্চ অত্যানি অহংবেষু যুদ্ধেণ তব যান চরিতানি  
 চেষ্টিতানি তানপি কিং বর্ণয়াম ? ( পূৰ্ব্ববৎ ) । কিঞ্চুতানি ? অতি অতিশয়িতানি ; যদা সৰ্ব্বেন অশ্বরদেবগণাদিকেযু সৰ্ব্বানাদৃত্য যান চরিতানি,

সর্কেষু সৰ্বান্ অতি অতিক্রমোতি বা ( দ্বিতীয়ার্থে নগ্নমী “স্বপাং স্তু”বিত্তি ব্যবস্থয়া ) ॥ ৬ ॥ পুনরপি সৰ্বকারণতাহঃ হেতুরিতি । অম্ আত্মা পরমা প্রকৃষ্টিঃ ( আদিবৈব আত্মা, ন তু আদৌ ভবা “অজামেকা”মিত্যাদিব্রত্যা উপত্তিনিষেধাৎ ) । অত্র হেতুঃ—সমজগতাম্ অখিলব্রহ্মাণ্যনাং হেতুঃ কারণং ( সমস্তেভ্যক্তং প্রকৃত্যাবরণশ্চ সৰ্বদ্বৈক্যাৎ ) । নহু গুণপরিণামরূপং জগৎ, কুতস্তত্র প্রকৃতেহেতুৰ্যমিতি চেত্তত্রাহঃ—ত্রিগুণাপি ত্রয়ে গুণা যন্তাঃ সী ( অপি হেতুে ) যতঃ প্রকৃত্যাবরণশ্চ সৰ্বদ্বৈক্যাৎ । ( নহু পুরুষাণামেব ব্রহ্মবিষ্মুণিবানাং জগৎকর্তৃৎ ঈদ্যতে, কুতঃ প্রকৃতেৰিতি চেত্তত্রাহঃ—বিবর্তাদিভিরপ্যপ্যরা ইতি । আদিব্রহ্মা বলবচনেনোক্তোপাঃ ত্রিগুণা । ) ( নহু পুরুষাণামপি গ্রহণম্, যদ্বা ব্রহ্মণোহপারা চেৎ স্ততরাং তজ্জ্ঞানামগ্ৰেয়াম্ আপাৰা তৈরনধিগতম্ৰূপা ) তেষানৈব তদগুণদ্বারৈর্গণেণ সৃষ্টিহেতুত্বাৎ অমেব জগৎকৰ্ম্মাণাং সনকাদীনামপি গ্রহণম্, যদ্বা ব্রহ্মণোহপারা চেৎ স্ততরাং তজ্জ্ঞানামগ্ৰেয়াম্ আপাৰা তৈরনধিগতম্ৰূপা ) তেষানৈব তদগুণদ্বারৈর্গণেণ সৃষ্টিহেতুত্বাৎ অমেব জগৎকৰ্ম্মাণাং

হবেয চরিতানি তবাতি যানি, সর্বেষু দেবাত্মর-দেবগণাদিকেবু ॥ ৬॥ হেতুঃ সমস্তজগতঃ ত্রিগুণাপি দোষৈ, ন ভ্রাত্যসে হরিঃ

ভাৰ্থ); “নিমিত্তমাত্র তত্রানীৎ পুরুষঃ” ইত্যাদিস্বত্যা, “স ঈক্ষত” ইত্যাদিক্ষতা। চ পুরুষে নিমিত্তমাত্র, ব্যাপারস্ত প্রকৃतेरेव समवयिष्वादि ि व्याप्यात्वेन -  
३२ पृ: १ पं)। ननु भवतु कारणहः शुभसम्बन्धे, तद्ध्यग्रापादिसम्यग्ना दूषणिरूप एवेति चेत्त्राहः—अपीति। अपीत्याचर्यो, एवमपि दोषैरेव ज्ञायसे नाभि  
दिभिर्नि विषयीक्रियसे आश्चर्यामेतत् (एतेन चिंप्रकृतिसमुक्तम्)। यद्वा अत्र हेतुराद्येति सर्वकारणत्वम्। तथाहि प्रकृते गुणाञ्जिते रागादयः; कारणगुणा  
एव कार्यो वर्तन्ते, न तु कार्यशृङ्खला कारणे इति भावः। ननु निरापारा सृष्टिः कथं भवतु, सति वा आपाराज्ञेरे सर्वकारणताव्याप्तः आदिदि चेत्त्राहः

সৰ্বাশ্রয়েতি । সৰ্বৈবরাশ্রীযতেহসৌ সৰ্বাশ্রিয়া সৰ্বাধারেত্যর্থঃ । তৎ কৃত ইত্যাহঃ জগদিত্যাदि । ইদমখিলং জগৎ ( তবেতুহম্ )  
 অংশভূতং তবাবয়বস্বরূপং ( ন হংশধারणेहंशী आधारान्तरसापेक्षे भवति ; अखिलशयोपदानां समस्तब्रह्माणानां ब्रह्मंशभूतत्वमेवेति सूचितम् “मम येनि-  
 र्ब्रह्मद्वक्ता तस्मिन् गर्भं दधामाहम्” इति गीताश्रुतेः ; गर्भं चिदंशम् ) । नन्वेवमपि परिणामादिविकारापन्ते जगन्नाशावपि आसज्येतामिति चेत्तद्ब्रह्मः—  
 अव्याकृता अविकारा वचनागोचरा वा ( यो हि विकारी भवति, स वचनविषयो भवति ; तव तु तथाहाभावान्न विकारप्रसङ्गः ) । तत् कृतः ? परमा

५५  
 ५६

हरादिति-रप्यपारा । सৰ্বাশ্রয়াখিলমিদং জগদংশভূত, -মব্যাকৃতা হি পরমা প্রকৃতিভূতমাত্ৰা ॥ ৭ ॥ যস্যঃ সমস্তস্বরূপত। সগুদীরণে,  
 তৃপ্তিং প্রয়াতি সকলেযু মথেষু দেবি । স্বাহাসি বৈ পিতৃগণস্য চ তৃপ্তিহেতু, -ব্রজ্যার্যাসে ব্র-মত এব জনৈঃ স্বেধা চ ॥ ৮ ॥ যা

পরম্ ঈশ্বরং মাতি জীবভাবেন ব্রহ্মাভীতি পরমা । যেতঃ ঈশ্বরমপি বশীকরোষি, অতস্তুমেব সৰ্বজগৎ কারণং সৰ্বৈশ্বরী নিৰ্দ্ধিকার। প্রকৃতির কারণঃ । অত্র ত্রিগুণ-  
 স্বেন সন্ধিনীস্বমুক্তম্, অব্যাকৃতত্বেন সংবিচ্ছিক্তিস্বমুক্তং, পরমত্বেন হ্লাদিনীশক্তিঃস্বমুক্তম্ ; তত্র সন্ধিনী ত্রিয়াশক্তিঃ, সংবিচ্ছিক্তিঃ, হ্লাদিনী আনন্দশক্তিরিতি  
 ত্রাবয়বা প্রকৃতিঃ, তদুক্তং বিষ্ণুপুরাণে “হ্লাদিনী সন্ধিনী সংবিৎ স্বয়ংক। সৰ্বসংস্থিতা” ইতি ; অলং প্রপঞ্জন ) ॥ ৭ ॥ এবং সৰ্বকারণভাযুক্ত। দেবাপি ব্রহ্মজ্ঞসাপন-  
 স্বেন জগদ্ব্যত্ৰানিষ্পাদকতামাহঃ যস্যঃ ইতি । বৈ নিশ্চয়ে, অসি স্বঃ স্বাহা। দেবহবির্দানমন্ত্রঃ । কৌদীনী ? সকলেনবু মথেষু অগ্নিযেটোমাদিন্ বঃ ত্রহ্ন

যস্য্যাঃ স্বাহা ইত্যস্যাঃ সমুদীরণেন সম্যক্ উচ্চারণেন সমস্তস্বরতা দেববৃন্দং তৃপ্তিং প্রয়াতি (স্বপ্নপাশ্রয়ঃ, স্বপ্নপাশ্রয়ঃ বা ভাব ইতি ভাবলক্ষণ-  
মাদায় ভাবে তাপ্রত্যয়ে বা; অত্র স্বাহাদীরণেনোহুতিদানং লক্ষ্যতে তৎকরণকহবিদর্শনেনৈব তৃপ্ত্যুৎপত্তেঃ, তথাচ স্থিতিঃ “স্বাহান্তা হোমকর্মণি” ইতি, “স্বাহাবাণে  
জুহুয়াৎ” ইতি চ। অনেন দেবতৃপ্তিদ্বারা বৃষ্ট্যুৎপত্ত্যা বার্তাপ্রবর্তকং জগজ্জনকং, তজ্জং গীতাহ “সহ যজ্ঞাঃ প্রজাঃ সৃষ্টা পুরোবাচ প্রজাপতিঃ। অনেন  
প্রসবিষ্যধমেব বোহজিষ্টকামধুক্” ইতি, “দেবান্ ভাবয়তানেন তে দেবা ভাবয়ন্ত বঃ” ইতি চ।। স্বং স্বধা চ পিতৃহবির্দানিমন্ত্রঃ। কীদৃশী? পিতৃগণ্য

— চিত্রা—

মুক্তিহেতু-রবিচিন্ত্য-মহাব্রতা চ, অভ্যাস্যসে স্মরিত্যেতেন্দ্রিয়-তত্ত্বসারৈঃ। মোক্ষার্থিভির্মুনিভি-রস্তস্যমস্তদোষৈ, -বিদ্যাসি

তৃপ্তিহেতুঃ (অনেন উত্তরোত্তরশৃষ্টিধারাপ্রবর্তকমুক্তম্)। অতঃ কারণং জনৈর্দেবপিতৃযজ্ঞকারিভিঃ ত্বন্ উচ্চার্যসে দেবপিতৃযজ্ঞেষ্টিতি শেখঃ (হে  
কর্মকাণ্ডসাধারণমুক্তং, তেন দ্রিবর্গদাতৃমুক্তম্) ॥ ৮ ॥ ন কেবলং কর্মকাণ্ডসাধনতয়া মুক্তিহেতুরপি স্বমেবেতাঃ বা  
মুক্তীতি। হে-দেবি, স্বং সা প্রসিদ্ধপ্রভাবা বিজাসি। স্বং কীদৃশী? বিজা বা কীদৃশী? ভগবতী নির্যতিশ্রৈশ্বর্যাশালিনী; যদা ভগবৎপ্রাপ্তিদানবন্ততা।  
কীদৃশী? পরমা পরং ব্রহ্ম নীয়েতে সর্বত্র দৃষ্টতেহনয়া পরমা, “সর্বমিদং ব্রহ্মৈব” ইত্যন্তভবরূপা, যদা উপনিষদ্যা।। স্বং কীদৃশী? মুক্ত্যেহেতুভূতা মুক্ত্যেব  
গন্ত কারণং (সা বিদ্যা পরমা মুক্ত্যেহেতুভূতা সনাতনী” তুক্তেঃ)। পুনঃ কীদৃশী? অবিচিন্ত্যেতি অবিচিন্ত্যম্ অনধ্যবসেয়ং দুর্লভ্যেয়ং মণ্ডিতং

বৃহদব্রহ্মচর্যাণ্যনিকেতবাসাদিরূপং যস্যঃ (আস্তাং তদাচরণবার্তা, করিয়ামীত্যধ্যবসামেহপি ভয়দ্বাদশক্য ইতি ভাবঃ)। নম্বেবং নিক্ষিপয়তাস্ত ? নেত্যাহঃ—যুনিভিম'ননশীলৈঃ অভ্যাস্যসে নিদিধ্যাস্যসে সাধ্যসে ইতি বা। কিম্ ঐহিকামুদ্বিকভোগবিশেষায় ? নহি নহীত্যাহঃ—মোক্ষার্থিভিঃ মুক্তা-কাজ্জিভিঃ মুমুক্শুভিরিত্যর্থঃ, যদ্বা মোক্ষ এব অর্থো ধনং স বিজতে যেমাং তৈঃ মুক্তৌ দায়ভাগ্ভিঃ আভিসিদ্ধপ্রায়জ্ঞানৈরিত্যর্থঃ। যোগ্যতাহাহঃ—অস্তুসগন্তদেবৈঃ নিবৃত্তরাগাদিভিঃ। অতএব সুনিয়তানি (সম্যক্ বশীকৃতানি) ইন্দ্రిয়াণি যেমাং, তত্ত্বং ব্রহ্মৈব সারং জ্ঞাব্যং যেমাং, তে চ তে তে

১৫

সা ভগবতী পরমা হি দেবি ॥ ৯ ॥ শব্দাত্মিক। সুবিমলগ্ৰ্যজুযাং নিধান, -মুদগীতরম্য-পদ-পাঠবতাক্ষ সান্নাম্। দেবী চেতি তৈঃ; যদ্বা তত্ত্বং ব্রহ্মৈব সারঃ স্থিরম্ অবিচলং যেমাং তৈঃ সংসিদ্ধাপরোক্ষজ্ঞানৈরিত্যর্থঃ (‘‘সারো বনে স্থিরাংশে চ গ্রাযো ক্লীবং বরে দ্রিযু’’ ইত্যমরঃ) ॥ ৯ ॥ জ্ঞানস্বরূপতামুক্ত। জ্ঞানসাধনশাস্ত্রস্বরূপতাহাঃ শব্দেতি। শব্দাত্মিক। শব্দস্বরূপ। (শব্দোহগ্র স্থপ্তিউত্তষক্ৰপঃ)। অতএব সুবিমলানাং নিম্নল-জ্ঞানহেতুনাম্ ঋচাং বজ্রযাক্ষ নিধানম্ আধারভূতা (ঋগাদীনাং শব্দময়জ্ঞাং)। সান্নাং সাগবেদানাঞ্চ নিপানম্ (আবিষ্টলিঙ্গদ্ব্যাং ক্লীবত্বাং)। কৌদৃশাম্ ? উদগীতরম্যপদপাঠবতাম্ উদগীতমুচ্চৈর্গানম্ উদাত্তস্বরঃ (স্বরিতানুদাত্তয়োঃকৃপালক্ষণমতঃ) তেন রম্যো মনোহরঃ পদানাং বঃ

১৬

পাঠস্তদ্বতাং ( প্রশংসায়ঃ মতঃ ) । ( ঋকসামযজুমাং লক্ষণাত্ৰাহ জৈমিনিঃ “তেমায়ক্ যত্রার্থবশেন পাদব্যবস্থিতি” রিতি ; “গীতিম্ সামাখ্যো” তি—গীতমানেম্ যস্তেষু সামসংক্ষেত্বার্থঃ ; “শেষে যজুঃশব্দঃ” ইতি—শেষে ঋকসামভিন্নে গানপাদাদিব্যবচ্ছেদরহিতে মন্ত্রজাতে ইত্যর্থঃ । অসদ্যাকৃতমেতৎ ) । ত্বং ত্রয়ী চ ঋগ্ যজুঃ সামানি চ । কীদৃশী ? দেবী জ্যোতনশীল সাক্ষ্যার্থপ্রকাশনপরা । পুনঃ কীদৃশী ? ভগবতী অর্থতঃ স্বরূপতন্টানবচ্ছেদ্যা ( তত্কৃতম্ একাদশে “অনন্তপারাবহতীম্” ইতি । ভোগসাধনতামাহঃ—ভবভাবনায় জগৎপালিনায় ত্বং বার্তা কুৰ্য্যাদিচতুস্তয়রূপা ( “কৃষিষাণিজ্যগোবক্ষাঃ কুর্শীদং চোৰ্ত্ত বৃজয়ঃ” ইতি ; যদ্বা ভবভাবনায় জগদুদ্ভবায় ( তত্কৃতং গীতাসু “যজ্ঞাভবতি পর্জন্তঃ পর্জন্তাদনমস্তবঃ । অমৃতবস্তি ভূতানি” ইতি ) । অতএব সৰ্ব্বজগতাং পরমার্জিহন্তী দাবিষ্যাদিভূঃখনির্শিনী

ত্রয়ী ভগবতী ভবভাবনায়, বার্তা চ সৰ্ব্বজগতাং পরমার্জিহন্তী ॥১০॥ মেধাসি দেবি নিদিতিখিলশাস্ত্রসার, দুর্গাসি দুর্গ-

( বার্তয়া ধনাছ্যৎপত্তেঃ ) । যদ্বা শব্দঃ ( বিশেষণদ্বারা বিশেষ্যমবগম্যব্যং ; সৰ্ব্বেষাং বেদানাং প্রণবজন্তুস্বাং ; যদ্বা শব্দো ঘোষাপরসংজ্ঞকঃ তদাতিথ্যক ( যূনাধাৱ্যঃ মণিপূরপর্য্যন্তে পশুস্তী গ্রাহ্য, ততো মণিপূর্য্যং কণ্ঠপর্য্যন্তে স্ত্রবিমলর্ন্যজুস্বাং সাম্যাক নিদানং সৰ্ববেদকারণপ্রণবস্বরূপা মধ্যমাখ্যা, অতএব নিধানশব্দোপাদানম্ ; ততঃ কণ্ঠস্থপরি বক্তৃপর্য্যন্তে ত্রয়ী বেদত্রয়রূপা বৈখরী ; এতেন নাদ-পশ্রুতী-মধ্যমা-বৈখরীখ্যা স্থূল-স্থৃক্ষ-প্রণব-বেদত্রয়রূপা চ স্বমেবেত্যর্থঃ । উদগীথরম্যগাদিপাঠ ইতি তবর্গদ্বিতীয়ং পাঠে উদগীথঃ প্রণবঃ তেন রম্যঃ পদপাঠোহস্তি যেষাম্ ইত্যর্থঃ, বেদানাং প্রণবাদিহ্মেনৈব পাঠাৎ ; তথ্যচ বেদব্যাক্যানমন্ত্রকৌমুজাৎ স্মৃতিঃ



“স্রবতানোঙ্কতো মদ্রশ্বাদাদৌ তু তং পঠেৎ” ইতি ( “উদ্যীথঃ প্রণবো মদ্রঃ” ইতি কোষঃ ) ॥ ১০ ॥ বেদরূপতামুক্ত। বেদধারণশক্তিতামাহঃ মেধেতি । অসি ত্বং মেধা ধারণাবতী বুদ্ধিঃ । কীদৃশী ? বিদিতেনিতি বিদিতমখিলশাস্ত্রসারং সর্বশাস্ত্রশ্রাব্যং বয়। হেতুভূতয়া সা ; যদ্বা বিদিতমখিলশাস্ত্রসারং সকলগ্রন্থ-ফলরূপং ব্রহ্ম যয়া, এবস্তূতা মেধা সৃষ্টিগ্রাহিণী বুদ্ধিঃ । অতএব দুর্গভবসাগরনৌঃ দুর্গো দুষ্পারো সো ভবঃ সংসারঃ, স এবসাগরঃ, তত্র নৌঃ পারসাধনং ( “বিজয়া চ তথৈতরঃ” ইত্যুক্তেঃ ) । নলু নৌঃ কর্ণধারসাপেক্ষা ভবতি, তস্মা বা কথং স্ততঃ পারকর্ষয়িমাতি চেত্তদ্রাহঃ—অসঙ্গ। অবিগম্যমানঃ সংজ্ঞাহিত্য-

ভবসাগরনৌ-রসঙ্গ। । শ্রীঃ কৈটভারি-হৃদয়েক-কৃতোধিবাসা, গৌরী ব্রজেব শশিমৌলিকৃতপ্রতিষ্ঠা ॥ ১১ ॥ ঐযৎসহাস-মমলং

সংসর্গো যস্য্যাঃ অধিতীয়েত্যর্থঃ । যদ্বা নম্বেবং চেৎ নিদর্শনসাম্যাৎ তস্মা অপি সংসারসম্বন্ধঃ প্রতীয়তে ; নহি নহীত্যাহঃ—অসঙ্গ। নিলেপা চিদানন্দময়ীত্বাৎ, অতএব দুর্গা দুর্জেষ্টয়া অগম্যস্বরূপেতি যাবৎ ( তত্র সংসারের বর্তমানত্বেহপি তৎসম্বন্ধাভাবাৎ অগম্যস্বরূপত্বম্ ; উভয়পক্ষেহপি হেতুরয়ম্ ) । বিশুদ্ধাদিবল্লভাপি স্বমেবেত্যাহঃ—ত্বং শ্রীঃ লক্ষ্মীঃ । কীদৃশী ? কৈটভারিহৃদয়েককৃতোধিবাস। কৈটভারৌবিবেকহৃদয়ে কৃতঃ একঃ অদ্বিতীয়ঃ অচঞ্চলো বা অধি-বাসো বসতির্যয়া সা, হৃদয়মেব কৃতঃ একঃ যুগোহধিবাসো যদ্বা ইতি বা । ন কেবলং শ্রীঃ, কিন্তু ত্বং গৌরী উমা চ । কীদৃশী ? শশিমৌলিকৃতপ্রতিষ্ঠা।

শশিনীমৌলো নহংশে কৃত। প্রতিষ্ঠা প্রকর্ষণে স্থিতিঃ অক্ষ স্ফিরূপেণ যয়া সা, যদা শশিমৌলোঃ কৃত। প্রতিষ্ঠা প্রকর্ষণে স্থিতির্যদ। প্রলয়াভাবঃ (যদ। প্রতিষ্ঠা উৎকর্ষঃ) ॥ ১১ ॥ জেতবোৎকর্ষদ্বারা জেতুকংকর্ষপ্রতিপাদনায় মহিষ্য য়া মহিষ্য রণকার্জগ্নমাতঃ ঈষদিতি। (তবেত্বাং) তব এবজ্ঞতঃ বক্তৃং যুথং দিনোক। তথাপি মহিষ্যস্বরেণ সহসা হঠাৎ যং প্রাক্তম এতৎ অতাদ্বুতমিত্যমরঃ। কীদৃক? ঈষৎসহাগম্ অল্পহাসেন সহ বর্তমানম্ (এতেন দেবাঃ সমক্ষে অনিত্তিপ্রায়পন্নতাং) মুচুতি। যজুপি ঈষৎসহাসমিতি সমাসেন ঈষদিতি সহাস-শব্দপ্রতিপাত্ত্য মুগ্ধোক্তব বিশেষণমুপসংক্রায়ন্তঃ স্তিঃ

পরিপূর্ণচন্দ্র-বিমানুকার কনকোত্তরকান্তি কাম্বু । অত্যদ্বুতং প্রশস্তগাপুরয়া তগাপি, বক্তং বিদোক্য মহসা মহিমান্

বিশেষণাবাদে” ইতি বচনং হাস্যোপদ্রষ্টব্য বিশেষণং প্রতীয়াঃ, “একতারং নভো দৃষ্ট। স্বর্গতো নাযদো যুনিঃ” ইতিবৎ । যদ্ধা (ঈষদিতি পৃথক্ পদম্) ; ঈষাদি  
যৎ প্রস্তুতমিতার্থঃ । (জড়ীভাবাভবনমেবাশ্চয়ম্) । পুনঃ কৌদুক ? পরিপূর্ণচিত্তবিষানুকীরি মোড়লকলচন্দ্রসদৃশং ; তথা সতি দাপ্তত্ত্বিকৈ সকলঙ্গনাগঞ্জী  
তদ্বারণায় বিশেষণমাহঃ—অমলঃ মালিন্যরহিতম্ (এতেন পূর্ণচিত্তদ্বাদ্পাত্ননিগত্যর্থঃ) । যদ্ধা (অন্তঃপঞ্চাদর্শে) যতোহমলম্ অতঃ পরিপূর্ণচিত্তবিষয়পাত্নু গচ্ছতাৎ  
কর্ত্ত শীলং যস্য (উৎকৃষ্টাদপকৃষ্টঃ পশ্চাদ্ধবত্যেব) । পুনঃ কৌদুক ? কনকোত্তমকান্তি কনকোত্তমস্ত্র অভ্যুক্তকৃষ্ণবর্ণস্ত কান্তিরিব কাণ্ডিবর্গ তৎ । অত্রৈষ  
কান্তম্ অতিকমনীয়ম্ । মহিষেণ কৌদুশেন ? আপ্তুরযা প্রাপ্তেক্রোধো যস্ত্র (এতেন বীরয়সৈকনিষ্ঠত্বঃ স্মৃতিতম্) ।

যদা মহিষাসুরেণ যৎ অত্যন্তুতং প্রহতং তথাপি তদীয়দিলোক্য মন্ত্রা তব বক্তৃং সহাসং জাতম্, অগ্ৰং সৰ্কং পূৰ্ণবৎ ॥ ১২ ॥ এবং কেবলবীররসান্ভিনিবেশবাত্তে।  
মহিষশ্রুতিনির্ভয়তমাহঃ দৃষ্টেতি। (পূৰ্ব্বশ্লোকাদিক্রুগিত্যলুপ্তশ্রনীয়ম্) হে দেবি, তব কুপিতং জাতক্ৰোধং বক্তৃং দৃষ্ট্য। মহিষো যং প্রাণান্ সন্দো। ন মুমোচ, তং  
অতীব চিত্রম্ অত্যশ্চর্য্যামিত্যর্থঃ। কিমিত্যাকাঙ্ক্ষারামর্থান্তরাসমাহঃ—হি যতঃ কুপিতান্তকৃদনশনেন ক্রুদ্ধবদনশনেন কৈকজ্জীবাত্তে? ন কৈবরপীতার্থঃ। বদা  
(নেতি পথক) যতঃ কুপিতান্তকৃদনশনে মন্ত্রী নৈকসমিধে মন্ত্রীতঃ—হি

রেণ ॥ ১২ ॥ দৃষ্ট। তু দেবি কুপিতং  
 কৈর্জীব্যতে হি কুপিতান্তকদর্শনেন ॥ ১৩ ॥  
 ভুবুটীকরাল, -মুগ্ধচ্ছাঙ্কসদৃশচ্ছবি যন্ন সদ্যঃ । প্রাণান্মোচ  
 মহিষস্তুদতীব চিত্রং,

ভুক্তগীতি পূর্ববৎ স্বাকারঃ (৮০পৃঃ ২পং), স্বচিৎকারযুক্তোহপি পাঠঃ) । পুনঃ কীদৃক্ ? উগ্রচছন্দঃ। কসমদৃশচ্ছবি উদগচ্ছন বঃ ॥ কসমদৃশচ্ছবিত্ত্বং সাদৃশী ছবিভূতিৰ্যস্য (কোমধেনারকৌতুহলতয়াং । শব্দরূপদেন পূর্ণচন্দ্রে ব্যক্তিভঃ) ॥ ১৩ ॥ রোমান্থহিষাস্ত্রবিশাশং, সন্তোষাৎ স্বকীয়বিপত্ত্যারণাচ্চ রোমপ্রাসাদোযোস্তাং কানিকং ফলমীক্ষমাণাঃ পুনরপি প্রসাদং প্রার্থয়ন্তে দেবীভি । তে দেবি দ্যোতনশালে, হং ভবায় উদুবায় তদগং প্রসাদ প্রদত্তা ভব । যদা ভবতীতি ভবঃ প্রাপকঃ তদগং, নিরন্তরনিশ্চতাহ্যস্থিতিরার্থম্ । নহ প্রসন্নামাঃ কিং প্রসাদ প্রার্থনঃ ? ন ; কদাচিদপরাদমদ্রে রোমলেন্ধে। সদাঃ সর্কফয়গ্রমজানি ॥ ১৪ ॥ হং কোপদতী সতী

কুলানি রিপুগোত্রানি ক্রোধেংপাদক-কুজন-কুলানি ইতি ন। সনো। বিনাশয়সি, এতং অধুনৈব বিজ্ঞাতম্ অপারোক্ষাকৃতমগ্নাভিরিত্যৰ্ণঃ। যং যস্মাং মহিষাসুরস্ত এতং স্থবিপুলং আভিমহং বলং সৈন্তম্ অস্তং নীতং বিনাশং প্রাপিতং তত্রাপি সদ্য ইতি অধুনৈতি বা অনুযজ্ঞনীয়ম্।। যদা এতং মহিষঃ অস্য মহিষাসুরস্য স্থবিপুলং বলঞ্চ (ব) অস্তং নীতং (“ক্লাবাক্লীবয়োঃ ক্লীবঃ স চৈকদ”দ্বৈতি একশেষাং ক্লীবৈবকদে)।। দ্বঃ কীদৃশী? পরমা। পর। সর্কোংক্লো। অচঞ্চলেনিতি যাবৎ, সা চাসৌ য। লক্ষ্মী-শ্চেতি অবিচলসম্পদ্রপা। ইত্যর্থঃ। যদা সর্কৈরপতিভূকরং মহিষাসুরদাতনং যদা দ্বয়ং করমিতি সূচয়িতুং হেতুগর্ভবিশেষণমাহঃ---বভঃ স্বং পরমা। পরান্ ব্রহ্মদীর্ঘাণ

বিজ্ঞাতমেত-দধুনৈব যদন্তমেত,-নীতং বলং স্থবিপুলং মহিষাসুরস্য ॥১৪॥ তে সম্মাতা জনপাদেযু ধনানি তেষাং, তেষাং

ম্যতি সন্মিতান্ করোতি ইতি। তথা ভবতী পূজা। (“ভবদ্ যুসংপ্রশস্তয়োঃ” ইতি কোষঃ। যদা ভবতী দোপানানা (ভা দীপ্তাবিত্যস্মাং ভবতুঃ), ভশদেন নক্ষত্রমালো-চ্যতে তদযুক্তা বা (সংসর্গে মতুঃ; “সৈব নক্ষত্রমালা স্যাং সপ্তবিংশতিমৌক্তিকৈঃ” ইত্যম্বঃ)।। যদা সগৌপনগণনা ভশধেন চন্দ্র উচ্যতে তদযুক্ত। (নিচ্যোগে মতুঃ)।। যদা পরমা আভা যস্ত স পরমাত্তম্যঃ তদযুক্ত। ॥১৪॥ প্রদাদকলমাহঃ তে ইতি। জনপদেযু সকলদেদেশেষু তে সম্মাতাঃ সম্যঙ্ ম্যনিতাঃ পুঞ্জিতা ইতি যাবৎ, ভবতীত্বাহং (সন্তায়াঃ সর্কত্র সম্বন্ধাং)।। তেষামেব ধনানি রত্নাদীনি ভবন্তি; তেষাং যশাংসি চ ভবন্তি; তেষাং ধর্মবর্গঃ ধর্মসমূহঃ, যদা ধর্ম প্রদানো বর্গঃ ধর্মার্থকানমোক্ষাখ্য ইত্যর্থঃ, ন সীদতি নাবসন্নো ভবতি ন নশ্বতীত্যর্থঃ (এতেনৈহিকামুদ্বিকতোদাপাবর্গসাধনং স্বংপ্রসাদ ইত্যুক্তম্)।। তে এব দন্তাঃ

শাস্ত্রাঃ (এবংকারঃ সৰ্বত্রানুযজ্ঞনীয়ঃ) । তে এব নিভৃতাত্মজহৃত্যদারঃ নিভৃত। বিনীতঃ আত্মজঃ পূজাঃ ভূত্যাঃ ভরণীয়াঃ সেবকাদয়ঃ দারিঃ  
 স্ত্রিয়শ্চ যেমাং তে (ভবংকুপাপাদ্ভাবলোকনপবিজ্ঞাং সম্বন্ধেনৈব এবং গুণবন্তো ভবন্তীতি ভাবঃ) । তে কে ইত্যাহঃ—যেমাং সম্বন্ধে ভবন্তী অং প্রসন্ন।  
 সানুগ্রহ। কৌদীনী ? সদ। অভ্যুদয়দ। (অভ্যুদয় ইষ্টলাভঃ) সৰ্বদ। বাঞ্ছিতপ্রদাত্রী। যদ। অভি অভিভতঃ সৰ্পতঃ উদবঃ সমৃদ্ধিঃ অভ্যুদয়ঃ ॥ ১৫ ॥ পূৰ্ণোক্ত  
 মেব প্রতিপাদয়ন্তো ভুক্তিমুক্তিপ্রদয়েন স্তবন্ত আহঃ ধৰ্ম্ম্যাণীতি । হে দেবি, ভবন্তীপ্রসাদাৎ তবানুগ্রহাৎ সুকৃতী পুণ্যবান্ জনঃ সদৈব অভ্যাদৃতঃ সন্

যশাংসি ন চ সীদতি ধৰ্ম্মবর্গঃ । ধন্যাস্ত এব নিভৃতাত্মজহৃত্যদার, যেমাং সদাভ্যুদয়দ। ভবন্তী প্রসন্ন। ॥ ১৫ ॥ ধৰ্ম্ম্যাণি

অতিশ্রদ্ধাধিতঃ সন্ সকলানি সাদ্ধানি ধৰ্ম্ম্যাণি ধৰ্ম্মাদনপেতানি কৰ্ম্মাণি প্রতিদিনং কৰোতি (যতঃ সকলানি সাদ্ধানি, অত্রএব ধৰ্ম্ম্যাণীতি হেতুহেতুনুজ্ঞানঃ, “সাদ্ধানি  
 বৈদিককৰ্ম্মণঃ ফলাবশ্রুতাবঃ” ইত্যুক্তেঃ) । ততঃ তেভ্যঃ কৰ্ম্মভাঃ স্বৰ্গং সত্যলোকপথান্তং প্রযাতি চ (চন্দ্রদাম্মুক্তিমপি প্রযাতি । যত্ৰাপি কৰ্ম্মিণাং ব্রহ্মলোকানুপরি  
 গমনং নাস্তি, তথাপি হিরণ্যগৰ্ভদৃষ্টো ভজতাং হিরণ্যগৰ্ভগভাণাং তেন সচ পরব্রহ্মাণি প্রবেশাৎ সঙ্গচ্ছতে; তথাচ শ্রুতিঃ “ব্রহ্মণ। সহ তে সৰ্গে সংক্রান্তে প্রতিসংকরে ।  
 পরশ্রান্তে কৃতাত্মানঃ প্রবিণস্তি পরং পদম্” ইতি । প্রতিসংকরঃ প্রশ্নঃ) । নত্ তথাপি মনুষ্যাণামেব যুক্তাদিকারশ্রবণাৎ কথং দেবদেহে মুক্তিঃ ? নৈবং বাচ্যঃ ;  
 “ততোহপি বাদরাযণঃ সম্ভবন্তী”তি পরামৰ্শমুদ্রে দেবানামপি মুক্তিপ্রতিপাদনাং, শ্রুতৌ চ “ব্রহ্মণ। কৃতসংকরে। বহুকালং নৃপায়জ । ততো বিসংপদঃ গাত্র। পুনঃ

সামুজ্যাপুয়াং” ইত্যুক্তহাং । নহু সান্ননমসগোধনে, তেন হেতুনা হে দেবি, লোকত্রয়েহপি ফলদা স্বং ফলদাত্রী ( কৃতক-কৃতকাকৃতক্কৃতকভেদলোকত্রয়ং, তত্র কৃতকো মর্ত্তাদিস্বর্গপৰ্য্যন্তঃ প্রতিদিনকরণং, কৃতকাকৃতকো মহল্লৌকঃ প্রতিদিনকরণং প্রলয়ে শূন্যস্থিচ্ছ, স্কৃতকো জনলৌকাদিঃ ) । যদ্বা মুক্তিমানসন্থনায় সম্বোধনং হে দেবি, দেবশ্চ বিমোঃ শক্তির্যতঃ ( তদ্ব্যতঃ ভগবতা শরবেণ “প্ৰব্রজ্জমহিযা”তি ) । যদ্বা ভবতীপ্রসাদাৎ সুকৃতী পুণ্যবান্ ভবতি ইতি প্রাচীনলোকে ফলদাত্রী স্বং, সম্প্রতি চ প্রতিদিনং ধর্ম্ম্যানি কর্ম্মানি করোতীতি বর্ত্তমানলোকে ফলদাত্রী স্বং, ততঃ স্বর্গং প্রযাতি

দেবি সকলানি সর্দেব কর্ম্মা,-ণ্যত্যাদৃতঃ প্রতিদিনং সুকৃতী করোতি । স্বর্গং প্রযাতি চ ততো ভবতীপ্রসাদ,-ল্লৌকত্রয়েহপি

চেতি পরলোকে ফলদাত্রী স্বম্ ইতি লোকত্রয়ে ফলদানম্ । যদ্বা লোকে দেহং, যথা “নাভ্যক্ষান্নিমং লোকমাত্মলোকগতা ইব” উতাহ ইবং গো-কঃ দেহমিতি ক্রীধরসামিবাখ্যানাং; তেনোক্তক্ৰমেণ ভূতভবিষ্যদ্বর্ত্তমানদেহরূপত্রয়েহপি ( যুক্তৌ দেহাভাব এব, এতপি লবাং ) । ( ভবতীপ্রসাদাদিত্যর্থঃ পুংবক্তৃত্বাৎ ) । যদ্বা নহু “কর্ম্মণা জায়তে জন্তুঃ কর্ম্মণৈব প্রলীযতে” ইত্যাদিদর্শনাৎ ঈশ্বর্য্যবিস্ত্রিতাৎ প্রাচীনকর্ম্মণ এব স্বর্গং ভবতি, কুতো দ্বিভায়াঃ প্রকৃত্যঃ ফলদাত্রীনাং বদন্তী আক্ষিপন্তস্তত্ত এব সর্গং ভবতীতি স্থবন্ত আহঃ--( তে ইত্যত্র ব্যবহিতগ্রাপ্যম্বঃ, তে ইতি পৃথক্ ) হে দেবি, তে তব প্রসাদাৎ ঈ লক্ষ্যাক্রবতি, ততঃ প্রাচীনং ধর্ম্ম্যানি কর্ম্মানি করোতি, ততঃ সুকৃতী সন্ স্বর্গং প্রযাতি, চকারোমঃ স্বধ্ব কর্ম্মভারতম্য্যং, ( অতঃ ইতি গম্যম্ ) ততঃ কারণং লোকত্রয়ে স্বং ফলদানং ? এপি তু

ভূমেব ফলদ। ইত্যর্থঃ ( “শিবাপদান্তোজযুগার্চকানাং ভোগশ্চ মোক্ষশ্চ করত্ব এব” ইত্যাপমাং ) । যদ্য ত্রিবর্গসম্প্রাপ্ত্যানন্তরং মুক্তিপ্রাপ্তিমাহ ততঃ ভবতীতি । ততঃ স্বর্গভোগানন্তরং ভবতী ভূমেব ভবতীত্যর্থঃ স্বংসায়ুজাং প্রাপ্নোতীতি যাবৎ ॥ ১৬ ॥ অরণেনাপি তাপহন্তৃ ত্বমাহঃ দুর্গে ইতি । হে দারিদ্র্যাত্মভয়হারিণি, স্বদত্ত। কা সর্কোপকারকরণায় সর্কেষামুপকারার্থং সদা আর্দ্রচিত্তা সর্করণচিত্তা ? অপি তু ভূমেব ( দারিদ্র্যং ধনরাহিণ্যং, দুঃখং আধ্যাত্মিকাদি, যদ্য দুঃখং পাতঞ্জ-লোক্তং ক্লেশসংজ্ঞং যথা “অবিচ্ছাদিতা রাগদ্বেষাভিনিবেশাঃ পঞ্চ ক্লেশাঃ” ইতি, ভয়ং সংসারভয়ং, তদপহরণীনে ) । তদদর্শয়ন্তি—স্বং দুর্গে সঙ্কটে স্মৃতা সত্তী

ফলদ। নতু দেবি তেন ॥ ১৬ ॥ দুর্গে স্মৃতা হরসি ভীতি-মশেষজন্তোঃ, স্বশৈঃ স্মৃতা মতি-মতীব শুভাং দদাসি । দারিদ্র্য-

দুঃখভয়হারিণি কা স্বদত্তা, সর্কোপকার-করণায় সদা দ্রুচিভা ॥ ১৭ ॥ এভিহঁতৈর্জগদুপৈতি মূখং তথৈতে, কুর্কবন্তু নাম

অশেষজন্তোঃ প্রাণিমাশ্রয় ( এতেন ভক্ত্যাদরানিবিধিরপি নাপেক্ষিতঃ ) ভীতিং দস্ত্যতক্ষররাজাদিজগদুপীড়াং হরসি নাশয়সি । ( ন কেবলমেতাং, কিন্তু ) স্বশৈঃ স্বচ্ছন্দবৃত্তিভিঃ স্মৃতা চিন্তিতা সতী অতীব শুভাং তত্ত্বজ্ঞানলক্ষণং পুণ্যশালিনীং মতিং বুদ্ধিং দদাসি ( তথাচ দেবীপূরণং “শুব নায়ি স্মৃতে দেবি সর্কযজ্ঞকলং লভেৎ” ইতি । যদ্য স্বস্মিন্ আত্মনি তিষ্ঠন্তীতি স্বস্থাঃ আত্মানুবিচারপরাঃ, তৈঃ স্মৃতা চিন্তিতা সত্তী অতীব শুভাং তত্ত্বজ্ঞানলক্ষণং মতিং দদাসি ( অতএবা ত্রিগুণোপাদানং, সুরথসমাদ্যোপস্থানাদর্শনাং ; অতীবেত্যব্যয়সমুদাযঃ অতিশয়ার্থে ; অতঃ সর্কেষাং সর্কামিনিকামাণামিত্যর্থঃ ) ॥ ১৭ ॥ নতু দেবানাং সহায়ত্বা অসুর্বাণাংশিপরায়াঃ কুতঃ সর্কোপকারসদা দ্রুচিভুত্বমিতি চেৎ, তদপি তেয়ামসুরাণাং পাপনিরান-নিরীতিশয়স্থখাম্পাদদ্বর্গ প্রাপণদ্বাব পরমোপকাব এবেতাঃ এভিহঁতৈঃ

সক্তিঃ জগৎ বিশ্বং স্তথ্যম্ উপৈতি প্রাপ্যতি, (তথাশব্দচৰ্চাঃ) এতে অম্বরশ্চ (আমেত্যভ্যুপগমে) চিরায় নরকায় চিরং কালং ব্যাপ্য নরকভোগায় নরকভোগার্থং পাপং ন কুর্ব্বন্ত নুনং নিশ্চিতম্ ইতি মত্বা অহিতান্ শত্রূন বিনিহংসি মারয়সি । নধেবং চেৎ অবলোক্যত্বাং ইচ্ছানাগ্রৈণৈব কিমিতি ন নাশয়সিতি চেত্ত্বা হ্যহঃ—এতে সংগ্রামযুত্বাং রণযুদ্ধনি মরণম্ অধিগম্য প্রাপ্য দিবং স্বৰ্গং প্রয়াস্ত (অতঃ তেষাং দৈবকৈব ক্রপেতি ভাবঃ) । হে দেবি প্রকাশরূপে, অতুদারচরিতে ঈতি বা ॥ ১৮ ॥ উক্তমর্থং পুঙ্খন্ত আত্মঃ দৃষ্টে বৈতি । ভবতী স্বঃ দৃষ্টে বচক্ষুঃসাৎ কৃত্তেব সৰ্বান্ অম্বরান্ কিং ভয় ন প্রকরোতি কৰ্ত্তুং ন শক্নোতি ? যদা প্রথমং ভাবং কালান্বক

— ১৮ —

নরকায় চিরায় পাপম্ । সংগ্রামযুত্বা-মধিগম্য দিবং প্রয়াস্ত, ময়েতি নুন-মহিতান্ বিনিহংসি দেবি ॥ ১৮ ॥ দৃষ্টে ব কিঙ্গ

ভবতী প্রকরোতি ভয়, সৰ্বান্ অম্বরানির্যু যৎ প্রাহিগোষি শস্ত্রম্ । লোকান্ প্রয়াস্ত রিপবোহপি হি শস্ত্রপূতা, ইথং মতিৰ্ভবতি

দৃষ্ট্য ভয় ভয়প্রায়ান্ ন করোতি ? নধেবং চেৎ কিমিতি প্রয়াসবাহুলা-শস্ত্রপ্রয়োগৈরিতি তাকাক্ষায়ামাত্মঃ অরিস্থিতি । তথাপি অরিয়ু যৎ শস্ত্রং প্রাহিগোষি প্রাঞ্জিপসি (অগিত্যত্মঃ) তৎ এতে রিপবোহপি শস্ত্রপূতাঃ সন্তঃ লোকান্ স্বর্গাদিভুবনানি প্রয়াস্ত গচ্ছন্ত (লোকানিতি বহুবচনং ভোগ্যানাম্ ইচ্ছাদিগোকাভ্যং প্রাঞ্জিপা-সুচনায় ; শস্ত্রপদেনাত্ম যুদ্ধসাধনমাত্মচ্যুতে, ন তু ধজাগ্রোভেব) । ইথমুক্তপ্রাকারেণ তে তব তেষাপি রিপুযপি মতিঃ অতিসাধী অতিদয়াদ্রা (অতো নিগলান্-গ্রহলক্ষণং বৈষম্যং সৰ্বজনাত্মাস্তব নাস্ত্যেব, অম্বরনাশস্ত তব দর্শনেনৈব সিদ্ধং, শস্ত্রাশ্ত্রক্ষেপস্ত তেষাম্পকারণমিতি ভাবঃ) ॥ ১৯ ॥ পুনরম্বরনাশমগম্য নাস্ত্যঃ



খড়্গেশতি । খড়্গানাং যে প্রভানিকরাঃ কান্তিসমূহাঃ তेषাং বিষ্ণুরণানি বানজানিতানি তৈঃ । কীদৃশৈঃ ? উগ্রৈঃ দুর্নিরীকৈঃ । তথা শূলোগ্রাণাং শূলশ্রেষ্ঠানাং বা কান্তিনিবহেন অম্বরাণাং দৃশঃ চক্ষুঃষি যৎ বিলয়ং নাশং ন আগতা ন প্রাপ্তাঃ, তদেতদাশ্চাযমিতি শেবঃ । কিং কুপ্ততাম্ ? তবাননং বিলোকয়তাং পশ্যতাম্ । কীদৃক্ ? অংশুমৎ কিরণশালি বাদিন্দুখণ্ডং তদুনোগো । যস্যাস্তি তাদৃক্ । যদ্বা তন্মুখশ্রুতিসৌহিত্যহেতুতয়া তেষাং দৃশাং নাশাভাবয় হেতুমাহুঃ—তদ ইদম্ অংশুদিন্দুখণ্ডযোগি যদাননং তদ্বিলোকয়তামেব অম্বরাণাং দৃশঃ উগ্রৈরপি খড়্গপ্রভানিকরবিষ্ণুরণাদিভি বিলয়ং নাগতাঃ ইত্যম্বঃ ( এতেন তব বদনদর্শনাদেব

তেষাপি তেহতিসাধৌ ॥ ১৯ ॥ খড়্গপ্রভানিকর-বিষ্ণুরণৈস্তুপ্তোগ্রৈঃ, শূলোগ্রকান্তিনিবহেন দৃশোহম্বরাণাম্ । যন্নাগতা বিলয়-মংশুমাদিন্দুখণ্ড-যোগ্যাননং তব বিলোকয়তাং তদেতৎ ॥ ২০ ॥ দুর্ভূতব্রভশমনং তব দেবি শীলং, রূপং তুৈথত-

চক্ষুষাং সৌহিত্যজননাং স্ফুটনং নাভুদিতি মুখশ্রা যাহাঅ্যাদিক্যাম্ ) ॥ ২০ ॥ শীলাদেবচিন্ত্যতামাহুঃ দুর্ভুভুতি । হে দেবি, তব শীলম্ অবিচিন্ত্যমেব বৃদ্ধিমনসো-  
রগোচরমিত্যর্থঃ । তত্র হেতুঃ—দুর্ভূতব্রভশমনং দুর্ভূতাঃ দুঃস্বভাবা যে অম্বরাদয়ঃ তেষাং ব্রভস্য তথাভুতচরিত্রস্য শমনং নাশকং ( খদাভদুর্ভুজা-  
নপি কুপয়া স্বব্রভান্ কৰোষি ভদ্রি তমহহ্বাদিচিন্ত্যমেব । তথা নায়ং বনক অচিন্ত্যম্ । তথা নায়ং বনক অচিন্ত্যম্, তত্র হেতুঃ—দুর্ভূতব্রভপরাক্র-  
মাণাং হতা অপনীতা দেবানাং পরাক্রমা যৈঃ তে অম্বর ইত্যর্থঃ তেষাং হতু নাশকম্ ( অতএব সর্গাভির্গাযদ্বাং এতাদাদিতি পরচ্ছেদুর্ভুতশক্য-

মিতার্থঃ)। তে তব দয়াপি অচিন্ত্য, কুত ইত্যত আত্মঃ—ইথাং পূর্বোক্ত প্রকারেণ যতে। বৈরিষপি প্রকটিত। প্রকার্ণিত। (নিগ্রাহবিষয়েহুগ্রহংগদা। দয়া। তু অচিষ্ট্যবেত্যর্থঃ ॥ ২১ ॥ পরাক্রমাদীনামনুপমমহ্মাহঃ কেনেতি। হে দেবি, তে তব অস্ত্র পরাক্রমস্ত মহিমাহুরনাশে প্রকটীভূতগ্ৰ উজ্জয়স্তা তেজসো বা কেন মহ উপমা ভবতু? অপি তু ন কেনাপীতর্থঃ; যদ্বা অস্যা ঈদৃগ্ধিক্রান্তুল্যাস্যোতর্থঃ। তব রূপং সৌন্দর্য্যঞ্চ কুত্র? স্বাং বিনা নাগ্নাত্তেত্বার্থঃ (এতেন সৌন্দর্য্যমপাতু-মিত্যর্থঃ)। তত্র হেতুঃ—শক্রভয়কারি শত্রুণাং ভয়জনকস্বাভিমোনোহরয়ঞ্চ (ভয়জনকস্বাভিমোনোহরয়ো-রেকাধিকবর্ণবৃত্তাভাবাদগ্নত্র

—১৫৩—

দবিচিন্ত্য-মতুল্যমগ্নৈঃ। বীর্য্যঞ্চ হন্তু হতদেবপরাক্রমাণাং, বৈরিষপি প্রকটিতৈব দয়া। স্নয়েথম্ ॥ ২১ ॥ কেনোপমা ভবতু তেহস্ত্র পরাক্রমস্য, রূপঞ্চ শক্রভয়কার্য্যতিহারি কুত্র। চিত্তে রূপা সমরনিষ্ঠ রতা চ দৃঢ়া, স্নয়েথ দেবি বরদে ভুবনত্রয়ে-  
স্থপি ॥ ২২ ॥ ত্রৈলোক্যমেতদখিলং রিপূনাশনেন, ত্রাতং স্নয়া সমরযুদ্ধনি তেহপি হস্ত। নীতা দিবং রিপূনাং ভয়মপোপোস্ত,

কুত্রাপি নৈবংবিধং রূপং, কিন্তু স্নয়েথ; সর্লশক্তিযস্বত্ববেতি ভাবঃ)। কিঞ্চ চিত্তে যনসি রূপা পরদুঃখাপহরণেচ্ছা, সমরনিষ্ঠ রতা যুদ্ধে নির্দিষ্টপ্রসারিত্বং স্নয়া-  
ত্রয়েহপি ভুবনত্রয়মধ্যে স্নয়েথ দৃষ্টা, নাগ্নাত্তেত্বার্থঃ (পরদুঃখহারিষ-ক-রুকারিহস্তো-রেকাধিকবর্ণবৃত্তাভাবাৎ)। হে বরদে অভীষ্টপ্রদে ॥ ২২ ॥ একেইদেব-  
শক্রমিত্রোপকারং দর্শয়ন্তুঃ স্তবস্তি ত্রৈলোক্যমিতি। রিপূনাশনেন শক্রমারগেন এতদখিলং সমগ্রং ত্রৈলোক্যং স্নয়া ত্রাতং পালিতং, সমরযুদ্ধনি সংগ্রামলিপে-  
স্ত্র।

তে রিপুগণা অপি দিবং যথোক্তলোকং নীতাঃ প্রাপিতাঃ, অস্মাকমপি উন্নদসুরারিতবং উন্নদা উদ্ধতা যে সুরারয়ো দৈত্য্যো তেভ্যো ভবং জাতং যদুয়ং তৎ আপাত্তং  
খণ্ডিতম্ । ( এবং সর্কোপকারকরণশীলায়াং স্থগি প্রত্যুপকারাসম্ভবাং কেবলং ) তে তুভ্যাং নমঃ নমনং কুশ্ম উভ্যর্গঃ ॥ ২৩ ॥ ( যদ্ব্যং স্তুভৌ প্রস্তুবন্তি স্বরূপং  
সকলং হি তৎ । ইতি স্তুতিং ন পশ্যন্তো যাচন্তে স্বাবনং সুরাঃ ॥ ) প্রার্থনাসমুচ্চয়গাহঃ শূলেনেভ্যাং দিভিঃ চতুভিঃ । হে দেবি, নোহস্মান্ শূলেন পাহি  
রক্ষ । হে অধিকে জননি, খড়্গেন চ পাহি । তথা ঘটাস্বনে ঘটাধ্বনি। নোহস্মান্ পাহি । চাপজ্যানিস্বনে চাপাঙ্কজ্যাটিকারেণ চ পাহি ॥ ২৪ ॥ প্রাচ্যামিতি ।

মস্মাক-মুন্নদ-সুরারিতবং নমন্তে ॥ ২৩ ॥ শূলেন পাহি নো দেবি পাহি খড়্গেন চাধিকে । ঘটাশ্বনে নঃ পাহি চাপজ্যা-

নিস্বনে চ ॥ ২৪ ॥ প্রাচ্যাং রক্ষ প্রাচ্যাক্ষ চণ্ডিকে রক্ষ দক্ষিণে । ভ্রাণেনোত্তমশূলস্য উত্তরম্যং তথেষ্বরী ॥ ২৫ ॥

সৌম্যানি যানি রূপানি ত্রৈলোক্যে বিচরন্তি তে । যানি চাত্যর্থ-যোরানি তৈ রক্ষাস্মাংস্থগা ভুবম্ ॥ ২৬ ॥ গড়গল্ল-

হে চণ্ডিকে, আত্মশূলস্ত ভ্রাণেন ভ্রাণেন প্রাচ্যাং পূর্বম্যং দিগ্ধি, প্রাচীচ্যাং পার্শ্চম্যারা দিগ্ধি, দক্ষিণে দক্ষিণম্যং দিগ্ধি, উত্তরম্যং উত্তীচ্যাং দিগ্ধি  
( প্রাচ্যাং দিগ্ধি ইত্যর্থঃ ) রক্ষ । হে ঈশ্বরী সর্বনিরন্ত্রী ॥ ২৫ ॥ সৌম্যানীতি । ত্রৈলোক্যে ভব যানি সৌম্যানি অভ্যাসাদনানি, যানি চ অত্যর্থযোরানি অতি শুল্ক-  
রানি রূপানি মূর্তয়ঃ বিচরন্তি প্রচরন্তি, তৈঃ কৈপঃ অস্মান্ তথা ভুবং পৃথিবীক ত্রৈলোক্যং পৃথিবীদ্বিতীয় যাত্ৰযাদীন ( ভূপদেন পাতালানাংএপি গ্রহণং ) রক্ষ ॥ ২৬ ॥

থঞ্জেতি । হে অধিকে, খজঙ্গুলগদাদানি তে তব যাত্ৰাপ্রাণি চ, তৈরপ্রঃ অন্মান সর্দতঃ সর্ভেত্যঃ সর্কত্র বা রক্ষ । কীদৃশানি ? কর। এব পল্লবাঃ (অভিমোনোজ্ঞদ্ব্যং) তৈঃ সঙ্গঃ সংসর্গো ঘোষামস্তি তানি ॥ ২৭ ॥ ঋষিকবাচ ॥ ২৮ ॥ উপসংহরতি এবমিতি দ্বাভ্যাম্ । স্বরৈর্দেবৈঃ এবমুক্তপ্রকারেণ স্তুতা সত্য ( অর্থাদেনৌ ভূমিম্ ), তথা দিবৈশ্বনোরৈমঃ নন্দনোদ্ভবৈঃ নন্দনবনজাইতৈঃ কুষ্মৈয়র্যচ্চিতা পূজিতা, তথা গন্ধার্ভুল্পেনৈশচ অক্ৰিতা ( গন্ধঃ শ্রীবাসাদিঃ; অভুল্পেনানি শ্রীখণ্ডদ্বাদানি ; যদ্বা “যুগ্ঠো মলয়জো গন্ধঃ” ইতি বৈদিকমন্ত্রকৌন্টায়াকাণাৎ গন্ধো মলবজগন্ধঃ; যদ্বা “চন্দনা গুরুকপূরচোক্কুমারোচনাঃ । জটমাংদীকপিপযুত । শঙ্কের্গন্ধাষ্টকং বিহুঃ” ইতি আগমোক্তো গন্ধাষ্টকরূপো গন্ধঃ; তত্র চেয়ং কৃষ্ণশট্টী, কপিগাঠালা ইতিখাতঃ; অতুল্পেনঃ কুদ্ধুমাদি), তথা ভক্ত্যা সমন্তেঃ ত্রেদৈশেদৈবৈদৈব্যৈর্বৈ

গদাঙ্গিনি যানি চাঙ্গি তেহ্মিকে । করপল্লবমঙ্গিনি তৈরুমান্ বগ্গ সবতঃ ॥ ২৭ ॥ ঋষিরবাচ ॥ ২৮ ॥ এবং স্তুতঃ ।

কালাগুৰ্জীৰ্দ্ধিপিত। (তৰ্পিতা) সতী সমস্তান্ স্তান্ প্ৰাহ্ (ইতুত্তৰেণবয়ঃ)। কৌদীনী? জগতাং বাদী পোষয়িত্ৰী, আপাবৃত্তা বা। প্ৰসাদময়ং প্ৰসাদেন প্ৰসন্নতয়া স্তম্বী, প্ৰসাদাৰ অভিমুখীতি বা। কিস্ত্তান্? প্ৰণতান্ নহান্ (অহ্ন স্ত্ৰৈররিত্তি জিৰ্দ্দৈশ্চরিত্তি চোভয়েকপদানান্ ত্ৰিদ্ৰৈশ্চরিত্তি বিৰূপাং বাচাং; দশ চ দশ চ দশ চ দশ, ত্ৰিভিৰবিকা দশ এযামিত্তি “কচিদ্ভাৰ্পা” তি ডঃ সমাসান্তঃ, ত্ৰয়ত্ৰিংশংকোটীসংখ্যৈরিত্তার্থঃ; যদ্বা স্ত্ৰৈরিত্তাত্মানং পূৰ্ণমাকার। ত্ৰিভুংঃ--- অন্ত্ৰৈঃ অহ্ন যাহিহাস্ত্ৰপীড়িতত্মানং মৃত্তা ইব আসন, ইদানীং শক্ৰনাশশাবিকাৰপ্ৰাপ্তিত্যাং সপ্ৰাণ। ইবেত্যর্থঃ, ত্ৰৈঃ, যদ্বা

পৃথগ্ধাকাং, যথা—এবং প্রকারেণ সুরৈঃ স্তুতা ইত্যেকং, ত্রিদৈর্গণিরিত্যাজ্যেকঞ্চ ) ॥ ২৯। ৩০ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩১ ॥ কিং প্রাহেত্যাহি ত্রিয়তামিতি । হে সমগ্রাঃ ত্রিদশা দেবাঃ, যৎ অভিব্যঞ্জিতং ভবতানভীষ্টং, তদশ্নন্তে। ত্রিয়তাং প্রার্থিতাম্ ( অর্দ্ধপদ্যেনেতৎ । কেচিদন্তাদর্শপদ্যঃ পঠ্যন্ত, তদনর্থং ; মূলসংহিতায়ামদষ্টম্বাং, কেনাপি টীকাকৃত্য অব্যাখ্যানত্বাচ্চ ) ॥ ৩২ ॥ দেবা উচুঃ ॥ ৩৩ ॥ ভগবত্য। অচিষ্টৈশ্চাশ্বাশলিত্রা। ইয়া। অশ্বানকং মকং কুভঃ নিপ্পাদিতম্, কিঞ্চিদাপ

সুরৈর্দৈবৈঃ কুসুমৈর্নন্দনোদ্রবেৎ । অচিচতা জগতাং ধাত্রী তথা। গন্ধানুগেপনৈঃ ॥ ২৯ ॥ ভক্ত্য। সমস্তৈস্ত্রিদৈর্গণির্দৈবৈর্ঘুর্নৈপাশ্ব

ধূপিতা । প্রাহ প্রসাদসুমুখী সমস্তান্ প্রণতান্ সুরান্ ॥ ৩০ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩১ ॥ ত্রিয়তাং ত্রিদশাঃ সর্বৈ যদশ্নন্তে। ইতি-

বাঞ্ছিতম্ ॥ ৩২ ॥ দেবা উচুঃ ॥ ৩৩ ॥ ভগবত্য। কুতং সর্ববং ন কিঞ্চিদবশিষ্যতে । যদয়ং নিহতঃ ক্রান্ত-রম্যাক° মাহিমাসুরঃ

ন অবশিষ্যতে অবশিষ্টং নাস্তীতি যাবৎ । যৎ যস্মাৎ অশ্বং মহিষাস্তুরো নিহতঃ । কাঁদুক° ? অশ্বাকঃ শত্রুঃ শাতিঃ । নাপক উক্তি যাবৎ ( ইমাণেণ প্রাণ-  
দানাং সম্মেব দত্ত মতি ভাবঃ ) ॥ ৩৪ ॥ অতিপ্রসন্নতয়া তথাপি পট্টবহুন্দরভীমাতঃ ধদতি । ( অসীতি ি. ৯৫, ৯৬, বোতি বাক্যান্তরে ) যদাপি কে মহেশ্বাণ, ইলা অশ্বাকঃ  
সম্বন্ধে বরো দেঃ অসগ্গং দাত্বাং, তদা স্বং সংসৃত্তা সংসৃত্তা সত্যী ( তুরগনমণে দতি তামপযাম্ । অত্র দীপ্যমা পুনঃপুনঃদীপমাণঃ কত্ববা উত্থাং ) পরমাপ্রদো  
মহাবাপভোঃ হিংসেথাঃ নাশায়্যামি । যদ্বা পবযাঃ নিরুতিশত্রাঃ আপনো মেভ্যঃ পরমাণনো বিপদঃ ভান্ ( অশ্বানপদং বিকরণঞ্চায়ম্ ) ॥ ৩৫ ॥ অসক° কালার্যঃ

• বরাস্তরং প্রার্থয়মান। আত্মং সার্জন। যশ্চেতি। হে অমলাননে নিম্নলম্বুখি প্রসাদস্বম্বীতি যাবৎ, যো মন্ত্রো। মন্ত্রায়াঃ প্রতিরশ্ময়ং কুটৈঃ স্তবৈস্তাঃ স্তোযতি, তপ্তা বিভক্তি-  
বিভবৈঃ সহ ধনদারাদিসম্পদাং বুদ্ধয়ে উপচয়ার্থং সৰ্বদা ভবেথাশ্চ (আয়্যনৈপদমার্থঃ, তু প্রাগ্গাৰিতাজ যুজাদৈরনেকাথমাদা; তু প্রাগ্গাৰিতাজনৈপদী গাবণৌ চ গদ্বাঃ  
সম্বধ্যতে ইতি শ্ররণাং। বিভক্তঃ স্তবর্ণাদি জ্ঞানমিতি কেচিৎ, তস্তা ঋদ্ধিঃ প্রাচুর্যং, বিভবঃ শ্রেষ্ঠ্যং, বিভবঃ শ্রেষ্ঠ্যং, যদ্বা বিশেষঃ ভবনং বিভক্তঃ পুত্রাভ্যাংপাতঃ, ধনং

১০০

॥ ৩৪ ॥ যদি বাপি বরো দেয়-স্বয়াম্যাকং মহেশ্বর। সংস্মৃতা সংস্মৃত। তুং নো হিংসেথাঃ পরমাপদঃ ॥ ৩৫ ॥ যশ্চ মর্ত্যঃ  
স্তবৈরেতি- স্তৃং স্তোয্যত্যাগলাননে। তস্য বিভক্তিবিভবৈর্ধনদারাদিসম্পদাম্ ॥ ৩৬ ॥ বুদ্ধয়েহমং প্রসন্ন। ত্বং ভবেথাঃ  
সৰ্বদাশ্বিকে ॥ ৩৭ ॥ ঋষিরবচ ॥ ৩৮ ॥ ইতি প্রসাদিতা দেবৈর্জজ্ঞগতোহর্থ্যে তথাহুনঃ। তথেষু কু। ভদ্রকালী বভুবান্ত-

গোমহিষাদি; দারাঃ স্ত্রিয়ঃ; আদিনা ভূত্যাং; ত এব সম্পদঃ। যদ্বা সম্পদঃ রাষ্ট্রাশ্বহন্ত্যাং, তাসাং বুদ্ধিঃ নিরন্তরপ্রবৃত্তিস্তদর্থম্) ॥ ত্বং কৌদীনী? অশ্বং পশুনা  
যতোহস্মাসু সানুগ্রহ। যদ্বা সৰ্বং দদাতীতি সৰ্বদা, যতঃ সৰ্বং সকলদাত্রী ॥ ৩৬ ॥ ঋষিরবচ ॥ ৩৭ ॥ ঋষিরবচ ॥ ৩৮ ॥ ইতি। জগতোহর্থ্যে যশ্চেত্যাদিনা, তথা স্তোয্যত্যা  
দেববৃন্দম্বরূপজ চার্বে নিমিত্তঃ সংস্মৃতেত্যাদিনা, দেবৈঃ ইতি উক্তপ্রকারেণ প্রসাদিতা। প্রসন্নতাং প্রাপিতা। যদ্বা এবমস্তু উক্তা। নজন্তং কণমের শব্দে।  
তিরোহিতা বভুব। হে নৃপ সুরথ। (ভদ্রং কল্যাণং কলযতি দদাতীতি ভদ্রকালী, যদ্বা কলযতি ধারয়তি বনী করোতি জনযতীতি বা কালী, চান্দনী বৃদ্ধঃ, ভদ্র-



তু স্বৰ্গঃ প্রোজুর্ভাব ইতি অনেন সূচিতম্) । কিমর্থম্ ? দুষ্টদৈত্যানাং ধুম্রলোচিনাদীনাং তথা শুভানিশুভযোগ্যে বধঃ কৰ্ত্ত্বং, লোকানাং জনানাং ভুবনানাং বা বক্ষণায় চ ॥ ৪১ । ৪০ ॥

“তচ্ছূণ্ণময়াখ্যাতং যথাবৎ কথয়ামি তে” ইতি পূৰ্ণাধাযান্তে বৎ প্রতিজ্ঞাতং, তং কথয়িতুং ইতি হাসং প্রস্তুতি । ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ পুরেতি । (অত্র পূৰ্বাশংকো-  
পাদানাং ভূতকালীনপ্রত্যয়োপাদানাক্র তদানীম্ অতীতজেনাখানাং, “বেবদন্তেহন্তরে প্রাপ্তে অষ্টাবংশীতমে যুগে” ইতি ঋত্রেব বংশোপশাস্তি ইদমুপাখ্যানং নৈতদ্যদ

মুপকারিণী । তচ্ছূণ্ণময়াখ্যাতং যথাবৎ কথয়ামি তে ॥ ৪১ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সান্দর্পিণে মন্বন্তরে দেবা-  
নাহাত্যে মহিষাসুরবধঃ সমাপ্তঃ ॥ \* ॥ ৪ অঃ ॥ \*

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ পুরা শুভ-নিশুভাভা-মসুরাভ্যাং শচীপতেঃ । ত্রৈলোক্যং বজ্রভাগশ্চ হতা মদবলজ্রয়াং ॥ ২ ॥

স্তরীযং ; কিঞ্চ স্বায়ত্তুবেহপি দিত্যাদেজ্জ্যোতাবাং ন প্রথমমন্তরীয়মপি ; কিন্তু দ্বিতীয়মন্তরীয়মেবেতি পয়াতে “এম নদন্তরে ব্রহ্মন্ সর্গঃ স্বারোচিষেহন্তরে” ইতি  
পরশরোক্তে । এবং চেৎ, ষষ্ঠমন্তরীয়ায়ুতমস্থনোপাখ্যানে দেবাসুরযুদ্ধে “শুভানিশুভয়োর্দেবী ভদ্রকালী তরুিণী” ইতি দদষ্টঃস্বয়ং দৃগ্মতে, তদন্তৌ শুভানিশুভে-  
কল্পান্তরীযৌ বা ; তদাখ্যানং প্রাপ্তকবচনাদোদ্ধবাম্ । অথ প্রকৃতার্থো বাখ্যায়তে ) । পুরা পূর্বাংশন্ কালে শুভানিশুভাভ্যাম্ অগ্ররাত্রে শচীপতোবজ্রজ



ত্রৈলোক্যং যজ্ঞভাগাশ্চ হুতা অপনীতাঃ শচীপতেরিতি মুখানুরোক্তং, সর্পেষাং দেবানাং যজ্ঞভাগাপহারাৎ ) । মাদবলাজ্রয়াৎ মদো গবর্বঃ বলং শক্তি-  
স্তয়োরাজ্রয়াৎ তদেকাধিকরণস্তাৎ ( আশ্রীযতেহসৌ আশ্রয় ইতি ব্যংপত্তাবাপি লক্ষণয়া ধর্মপ্রধানো বোধব্যঃ আশ্রয়াদিত্যর্থঃ ; যদ্বা ভাবে ভূঃ, তেষৌ পঞ্চমী ;  
তথাচ বামনপুরাণং “কষ্ণপশু দত্তর্নান ভার্য়ানোদ্ধৃতসত্তম । তেষাঃ পুত্রব্রহ্ম জজ্ঞে সহস্রাঙ্গাদলাদি কন্ম ॥ জ্যেষ্ঠঃ শ্রুত্ব ইতি গ্যাতে নিশ্চিন্তচাপোবোহুহুঃ ।  
হুতায়ো নমুর্চিনর্ম যহাবলপরাক্রমঃ” ইত্যত ) ॥ ২ ॥ এতদেবেতি । তৌ শুভ্রনশ্চত্বাশ্চৈব সূর্যাতাং চক্রগতে কৃতবন্তৌ, তদ্বৎ তাদৃগেব ব্রহ্মদেবং তাদিকারঞ্চ

তাবেব সূর্য্যতাং তদ্ব-দধিকারং তথৈবন্দবম্ । কোবেব-মথ যামাঞ্চ চক্রগতে বরুণা চ ॥ ৩ ॥ ভাবেব পবনদ্বিধং চক্রতুর্দিক-

ইন্দুসম্বন্ধি কার্য্যঞ্চ চক্রগতে, তথা কোবেবঃ যুবেবমদ্র দ্রবঃ ( অশ্বশদ্রশ্যর্থঃ )-সাম্যং যামসম্বন্ধিনঞ্চ, বরুণগ্র চ অধিকারং চক্রগতে ॥ ৪ ॥ এতদেবেতি  
( অন্ধপদ্যমিদম্ ) । তৌ শুভ্রানশ্চত্বাশ্চৈব পবনদ্বিধং পবনৈশ্চর্য্যং বহনজনপ্রক্ষেপণাদি চ, বাহুবন্ম জ্ঞানাদি চ চক্রতুঃ ( এতেন সপ্তশক্ত্যাস্রয়ং দদৌ মে ) ॥ ৫ ॥  
তত হতি । ( সাক্ষিহোকেনাশ্রয়ঃ ) ততস্তদনগ্রহং নস্মে দেবা ইন্দ্রাদিঃ ভাভামসুরাভ্যাং নিরাকৃত্যঃ পণ্ডিতাবিকারাদ্ মন্তুঃ তাং যদ্বিযাহুনাগে দদে প্রভাবায়  
অপরাঞ্জিতাং সর্কাজিহবাং দেবাং সংশ্রয়ন্তি ( শ্রেতুহ্ম ) । ঐকহ্মণাঃ ? বিনির্দ্ধিতাঃ ভয়েন কাম্পন্তি স্থানাদ্ পারতা বা । পৃষ্টপাশ্চিঃ বা-গাং বাহুকম্মণে,

অগ্নাঃ ( রাজদগ্ধিঃ, ভ্রূঃ রাজ্যঃ যেযাম্ ইতি বা ) । পরাজিতাঃ যুদ্ধে অভিভূতাঃ ( হেতুগর্ভমদম্, যত উত্পাঃ ) । অতো হুত্বাধিকারঃ হুত্বোহধিকারো নিজ্জনিজ-  
মযাদি যজ্ঞভাগাদিসা যেণাম্ । ত্রিদশাঃ ( বিশেষণবিদঃ ) তিস্রঃ কোমারপৌগুঠৈকশেবরূপাঃ যদ্বা বাগঠৈকশেবযৌ পরূপা দশা। যগোহবস্থা যোগাৎ নিজ্বেবঃ,  
যদ্বা ত্রিগুণা দশ বগোইচ্ছাদক। যযাং ত্রিংশদ্বয়ীয়া উত্থাঃ ( বহুদ্রাহৈঃ ) উঃ স্যাসান্তঃ ; যদ্বা বিশেষায়াদ, ততোহাদেবঃ ইত্যাকারঃ প্রক্লেযঃ ; কাঁদনাঃ?  
অদেবঃ দেবঃ ক্রৌচঃ । ক্রৌচঃ ক্রৌচঃ, যন্তত্বকুণচিত্ত্বানং ক্রৌচীনা চত্বর্থঃ, স্মৃতিবগোদগ্রাত্তয়োপজিগৌবাহিত। ইতি যথঃ

কস্ম্যচ ॥ ৩ ॥ ততো দেবাঃ বিনির্দ্ভূতা প্রকীরজ্যাঃ পরাজিতাঃ । হুত্বাধিকারিক্রীড়া-স্তাভ্যাং সর্কে নিরাকৃতঃ । মজা  
হুরাভ্যাং নং দেবাং সংস্বরন্ত্যপ্যরাজিতাম্ ॥ ৫ ॥ তয়াস্মাকং বরো দত্তে। বগাপৎসু স্মৃতাংশনাঃ । ভবতাং নাশয়িত্যসি  
তৎকরণং পরমাপদঃ ॥ ৬ ॥ ইতি ক্রুদ্রা মতিং দেবাঃ হিগবন্তং নগেশ্বরম্ । জগ্মুস্তত্র ততো দেবাং বিশ্বমায়াং প্রভুত্বং ॥ ৭ ॥

হীনাদিচাবাদিত্বাং নববচনচিন্তয়া স্বাভাবিককাক্তিরহিতা ইতি বা অর্থঃ ; যদ্বা অদেবা মন্তুয়া ইব লুপ্তমর্গ দ্বাদিক্যেভ্যাদিত লুপ্তোপমা ) ॥ ৫ ॥ ততো দেবাঃ ( দ্যুত্যাঃ )  
ভবা দেবা। অশ্মকং নবং বরা দত্তঃ ( মহিমাসু বদধকালে ) । কোহসৌ বর ইত্যভঃ—আপৎসু যথা বগাপৎ স্মৃতা সৌ তৎসগাং স্মরণকগং প্রাপ ( দ্যুত্যাঃ )  
পঞ্চমী বা—স্মরণকং ভবতাং যুগ্মাকম্ অগিনাঃ সমগ্নাঃ পরমাপদো নাপ্রিয়ামি । ইতি মতিঃ বুদ্ধিঃ ক্রুদ্রা দেবাঃ ত্রিমবন্তং ত্রিমবন্তং পক্ষভবাঃ প্রভুত্বং  
( অতিপুণ্যক্ষেত্রহাং, তস্যাঃ প্রাচুর্ভবস্থানহাচ ) । ততো গমনানহরং তত্র ত্রিমবন্তি বিশ্বমায়াং দেবীঃ প্রভুত্বং প্রাকর্ষণে স্তবতত্ত্বঃ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ দেবাঃ ইত্যেতৎ ॥ ৭ ॥

স্মৃতিমাহ নম ইতি । দেবৈব্য প্রকাশরূপায়ৈ ইন্দ্রিয়রূপায়ৈ ইত্যর্থঃ, মহাদেবৈব্য মহতী চার্মসৌ দেবী চেতি ইন্দ্রিয়াদিষ্ঠিত্রৈ শ্রুত্যাশ্রিতরূপায়ৈ ইত্যর্থঃ । এবমপি কুত্ৰাপ্যাসক্তিরাহিত্যমাহঃ—শিবায়ৈ পরমানন্দরূপায়ৈ নিরঞ্জনায়ৈ নিরপেক্ষায়ৈ বা ; যদ্বা যতঃ সর্কেষাম্ ইন্দ্রিয়-তদাধিষ্ঠাত্রুপা, অতঃ শিবা বিষয়ভোগসম্পর্কত্বাৎ স্বথকরী ; যদ্বা দেবী ইন্দ্রাদিশক্তিরূপায়ৈ, মহাদেবী শিবস্ত্রা বিবেকাশ্চ শক্তিঃ তদ্রূপায়ৈ ; প্রকৃত্য যলপ্রাকৃতরূপায়ৈ, ভূদ্রায়ৈ ভদ্রেহেতুত্বাৎ ভদ্রা চিৎপ্রকৃতিঃ তস্মৈ ; যদ্বা ভূদ্রায়ৈ মঙ্গলকারিণ্যৈ ( পূর্কঃ স্বথরূপত্বম্, অত্র স্বথহেতুর্মমিতি ভেদঃ ; যদ্বা প্রকৃত্যৈ সৃষ্টিকর্ত্রায়, ভূদ্রায়ৈ পালন-

—  
কু  
কু  
কু  
কু

দেবা উচুঃ ॥ ৮ ॥ নমো দেবৈব্য মহাদেবৈব্য শিবায়ৈ সততঃ নমঃ । নমঃ প্রকৃত্যৈ ভূদ্রায়ৈ নিয়তঃ প্রণতঃ স্ম তাম্ ॥ ৯ ॥  
রৌদ্রায়ৈ নমো নিত্যায়ৈ গৌরীয়া ধাত্র্যে নমো । জ্যোৎস্নায়ৈ চেন্দ্ররূপিণ্যে স্থথায়ৈ সততঃ নমঃ ॥ ১০ ॥ কল্যাণৈব্য

কর্ত্রায়, উত্তরজ রৌদ্রায়ৈ ইতি সংহারকর্ত্রায় ( এতেন অক্ষবিন্দুশিবরূপায়ৈ ; তদুক্তম্ “উৎপত্তিহিত্তিসংকৃতীঘটয়িতুং যত্তে ত্রিরূপাং তত্ত্ব”মিত্যগমে ) সততম্ অনররতং নমঃ কুর্শ্ব ইত্যর্থঃ । নিয়তঃ তদেকাত্মানঃ সন্তুঃ স্মো বয়ং তাং প্রণতাঃ ( ভক্ত্যতিশয়গোচরানাং পুনঃপুনর্মংলদ্বাদৃক্তিঃ ) ॥ ৯ ॥ বৌদ্রায়ৈ হতি ।  
রৌদ্রায়ৈ ভাষণরূপায়ৈ, নিত্যায়ৈ নাশেত্বপ্যাবশ্যমাণায়ৈ, ধাত্র্যে জগদাশারূপায়ৈ, উপাধিসম্বন্ধং বারয়তি — গৌরীয়া অবদাত্র্যৈ নিগোপায়ৈ উত্তরণঃ যদ্বা গৌরীয়া গৌরীনায়ে্যে তদ্বর্ণন্যৎ ; ইন্দ্ররূপিণ্যে চন্দ্ররূপায়ৈ, ( ন কেবলমেতাবৎ ) জ্যোৎস্নায়ৈ চন্দ্রিকাকূপায়ৈ ( “যুক্তমুখমি যুক্তায়ৌ তদ্বন্ধে। বিদ্বি বায়ক”মিতি পাণ্ডাসংক্ষেপঃ ।

মায়কং তেজঃ ত্রীণী শক্তিঃ ) ; অতএব সুখায়ৈ সুখদামিত্যে ( সুখযতীতি স্থা ) সত্ত্বং নমো নমঃ ॥ ১০ ॥ কল্যাণৈগ্য ইতি । প্রণতা যয়ং তেষু নমো নমঃ ।  
কৌদৃশ্যে ? কল্যাণৈগ্য কল্যাণরূপায়ৈ, বুদ্ধৈগ্য সম্পদ্রূপায়ৈ, বুদ্ধৈগ্য অগ্নিদ্রূপায়ৈ ; নৈখ্যৈগ্য রাক্ষসরূপায়ৈ, যদা অগ্ন্যরূপায়ৈ ; ভূভূতানি  
রাষ্ট্রান লৈক্ষ্য য়েতচ্ছত্রচামরাদিরূপায়ৈ, যদা ভূভূতানং পক্ষতানং লৈক্ষ্য মণিরত্নাদিরূপায়ৈ ; সর্ববৈগ্য গোহৈশ্বর্য্যে তে ভূভাং নমো নমঃ ( মানসপ্রভাসিক্ষানি  
যুগ্মংপ্রয়োগঃ ) ॥ ১১ ॥ দুর্গায়ৈ ইতি । তে ভূভাং নমো নমঃ ( ভক্তাতিপয়জ্ঞোতনায় ষিৎ ) দুর্গায়ৈ দুঃখেন গম্যতে জ্ঞায়তে ইতি দুর্গা । তৎ কৃতঃ ? দুর্গা দুঃখনিহি  
প্রণতা বুদ্ধৈগ্য সিদ্ধৈগ্য কুর্মো নমো নমঃ । নৈখ্যৈগ্য ভূভূতানং লৈক্ষ্য শর্ব্বদৈগ্য তে নমো নমঃ ॥ ১১ ॥ দুর্গায়ৈ দুর্গপারায়ৈ সারায়ৈ

দেশতঃ কালতশ্চ পার ইয়াভা যস্তাঃ । তৎ কৃতঃ ? সর্বক্যারিণ্যে সর্বজনৈগ্য ( আদিকায়ণত্বাং ) । অতএব সারায়ৈ সর্ববৈশ্বৈগ্যৈ, যদা সারাদৈ  
প্রলয়েহুপ্যবশিষ্টমাণায়ৈ ( লোকান্তরস্থানং জীৱং, “সারো বলে স্থিরান্ধে চ গ্রাযো ক্লীবং বরে দ্বিষ”তি কোষঃ ) । খ্যাত্যৈ প্রতিষ্ঠারূপায়ৈ ( খ্যাত্যৈঃ ত্রিগিদ্ভিঃ, যদা  
খ্যাতিবিকল্পাদিপঞ্চকং, তথাচৈকাদশে “বিকল্পঃ খ্যাতিবাদিনা”মিত্র—শ ) । কুর্মায়ৈ তামসৈগ্য ইত্যর্থঃ, যদা কুর্মতি জগদংশীকবোতি ইতি কুর্মা, যদা কল্যানং  
পাপকর্ষণং কুর্মা, যদা “কুর্মিভূবাচকঃ শব্দো গশ্চ নিবুতিবাচকঃ । তয়েিরেক্যং পরং ব্রহ্ম ইত্যভিধীয়তে” ইতি বাংপত্র্য তদাশ্রয়ত্বাং ব্রহ্মবাক্যপদকল্পিত্বাদিত্য  
( বাচ্যভেদাং জীৱম্ ) । ধাত্রায়ৈ তদ্বর্গায়ৈ, যদা ধূমযোগাং ধূম। যজ্ঞবিদ্যা ( যজ্ঞকম্ “আত্মবুধিধেনো বেদ”মিত্যাদি ) , যদা ধূম। পিতৃমানসরূপ। ধূমনিধানং

( ଯୋଗିନି ଓ ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ବିନ୍ୟାସବିନୋଦଃ ) ॥ ୧୨ ॥ ଅତୀତି । ନତା ବୟଃ ତୈଷ୍ଠ ନମୋ ନମଃ କୁର୍ମଃ ଇତ୍ୟାଦି । ଅତିତମୋ । ଅତିତମୋ, ଅତିଭୀଷଣ, ମା ଚାମୋ ମା ଚେତି ତୈଷ୍ଠ ( ବିନ୍ୟାସବିନ୍ୟାସରୂପତ୍ବଂ ତଥାହମ୍ ) । ଜଗତ୍ପ୍ରତିଷ୍ଠାୟେ ଜଗତ୍ସ୍ତୁ ଚେତନାଚେତନପ୍ରାପ୍ତେଷ୍ଠ୍ ପ୍ରକର୍ଷେ ଶ୍ଚିତ୍ତିର୍ଗମ୍ୟାଃ ସର୍ବାନ୍ତୁର୍ଗାମିନିଂ ଇତ୍ୟର୍ପିଃ । ଏବମ୍ପ ଦେବୋ ଜୋତନଶୌଚାୟ ( ନିର୍ଲେପତ୍ବାୟ ), କୃତ୍ୟେ କ୍ରିୟାରୂପାୟି ; ସହା ଜଗତଃ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ପ୍ରତିପାଳନଃ ସନ୍ତଃ ହେତଃ, ତଂ କୁତଃ ? କୃତ୍ୟେ କୃତ୍ତିର୍ବନ୍ଧି । କୃଷାଦି କ୍ରମାରୂପା ତଦ୍ରୂପାଟି, ଦେବୋ ଜଗତ୍ସ୍ତୁ କ୍ରିୟାରୂପା ( କ୍ରିୟାରୂପା ଦେବାର୍ଥନାମ୍ ) ॥ ୧୩ ॥ ତଦ୍ଭାବିତ୍ୟନାଦିଦୃଶ୍ୟତ୍ବଃ ସ୍ଵର୍ବାହୁ ପଦ୍ୟବିଂଶତିପଞ୍ଚାଂ । ଯା ଦେବୀତି । ଯା ସର୍ବକାରିଣ୍ୟା । ଧ୍ୟାତ୍ୟେ ତଥେବ ବୁଦ୍ଧ୍ୟାୟ ଧ୍ୟାତ୍ୟେ ସତତଂ ନମଃ ॥ ୧୨ ॥ ଅତିତମୋମାତିରୋଦାୟେ ନତାନ୍ତମୋ ନମୋ ନମଃ । ନମୋ ଜଗତ୍ପ୍ରତିଷ୍ଠାୟେ ଦେବୋ କୃତ୍ୟେ ନମୋ ନମଃ ॥ ୧୩ ॥ ଯା ଦେବୋ ସର୍ବବୁଦ୍ଧ୍ୟେ ବିଷୟାୟେତି ଶାନ୍ତିତ୍ । ନମଃ ॥ ୧୪ ॥ ନମଃ ॥ ୧୫ ॥ ନମଃ ॥ ୧୬ ॥ ଯା ଦେବୋ ସର୍ବବୁଦ୍ଧ୍ୟେ ଚେତନେତୀଭ୍ୟାୟେ । ନମଃ ॥ ୧୭ ॥ ନମଃ ॥ ୧୮ ॥

### ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ

ଦେବୋ ସର୍ବବୁଦ୍ଧ୍ୟେ ମମଞ୍ଜୋ ଶ୍ରେୟଃ ସଂସାରାୟ ଶାନ୍ତିତ୍ । ଯଦା, ନମ ଇତ୍ୟୁ ମମଞ୍ଜୋରାୟଂ ତୈଷ୍ଠ ନମୋ ନମଃ । ଯଦା, ନମ ଇତ୍ୟୁ ମମଞ୍ଜୋରାୟଂ ତୈଷ୍ଠ ନମୋ ନମଃ । ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ, ଶ୍ରୀରାଧାଂ ବା ; କର୍ମିନଃ ଚକ-ମାନିନିକ୍ଷ୍ମାୟ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ, ଏବମ୍ଭୁବଦ୍ରାପି । ଯାଦା ଉକ୍ତମନ୍ତ୍ରଂ -- ୪୮ ପଃ ୧ ପଃ ॥ ୧୪ ॥ ୧୫ ॥ ୧୬ ॥ ୧୭ ॥ ୧୮ ॥ ୧୯ ॥ ୨୦ ॥ ୨୧ ॥ ୨୨ ॥ ୨୩ ॥ ୨୪ ॥ ୨୫ ॥ ୨୬ ॥ ୨୭ ॥ ୨୮ ॥ ୨୯ ॥ ୩୦ ॥ ୩୧ ॥ ୩୨ ॥ ୩୩ ॥ ୩୪ ॥ ୩୫ ॥ ୩୬ ॥ ୩୭ ॥ ୩୮ ॥ ୩୯ ॥ ୪୦ ॥ ୪୧ ॥ ୪୨ ॥ ୪୩ ॥ ୪୪ ॥ ୪୫ ॥ ୪୬ ॥ ୪୭ ॥ ୪୮ ॥ ୪୯ ॥ ୫୦ ॥ ୫୧ ॥ ୫୨ ॥ ୫୩ ॥ ୫୪ ॥ ୫୫ ॥ ୫୬ ॥ ୫୭ ॥ ୫୮ ॥ ୫୯ ॥ ୬୦ ॥ ୬୧ ॥ ୬୨ ॥ ୬୩ ॥ ୬୪ ॥ ୬୫ ॥ ୬୬ ॥ ୬୭ ॥ ୬୮ ॥ ୬୯ ॥ ୭୦ ॥ ୭୧ ॥ ୭୨ ॥ ୭୩ ॥ ୭୪ ॥ ୭୫ ॥ ୭୬ ॥ ୭୭ ॥ ୭୮ ॥ ୭୯ ॥ ୮୦ ॥ ୮୧ ॥ ୮୨ ॥ ୮୩ ॥ ୮୪ ॥ ୮୫ ॥ ୮୬ ॥ ୮୭ ॥ ୮୮ ॥ ୮୯ ॥ ୯୦ ॥ ୯୧ ॥ ୯୨ ॥ ୯୩ ॥ ୯୪ ॥ ୯୫ ॥ ୯୬ ॥ ୯୭ ॥ ୯୮ ॥ ୯୯ ॥ ୧୦୦ ॥



॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ক্ষান্তি-রূপকারিণ্যনপকাবেচ্ছা ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ জ্ঞাতিঃ সামান্যম্ উৎপত্তির্ব। ( “জাতিঃ সামান্যজন্মনো” ব্রিতি কোষঃ ) ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥  
লজ্জা জুগুপ্সিতকরণেহলজ্জানশঙ্কা ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ শান্তিঃ বিষয়োপভোগানিচ্ছা ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ অজ্ঞা বেদার্থে দৃঢ়প্রভীতিঃ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ কান্তিঃ

নমস্তসৈ ॥ ৩৯ ॥ নমস্তসৈ নমো নমঃ ॥ ৪০ ॥ যা দেবী সর্বভূতেষু জ্ঞাতরূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৪১ ॥ নমস্তসৈ  
॥ ৪২ ॥ নমস্তসৈ নমো নমঃ ॥ ৪৩ ॥ যা দেবী সর্বভূতেষু লজ্জারূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৪৪ ॥ নমস্তসৈ ॥ ৪৫ ॥ নম-  
স্তসৈ নমো নমঃ ॥ ৪৬ ॥ যা দেবী সর্বভূতেষু শান্তিরূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৪৭ ॥ নমস্তসৈ ॥ ৪৮ ॥ নমস্তসৈ  
নমো নমঃ ॥ ৪৯ ॥ যা দেবী সর্বভূতেষু আদ্যারূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৫০ ॥ নমস্তসৈ ॥ ৫১ ॥ নমস্তসৈ নমো নমঃ  
॥ ৫২ ॥ যা দেবী সর্বভূতেষু কান্তিরূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৫৩ ॥ নমস্তসৈ ॥ ৫৪ ॥ নমস্তসৈ নমো নমঃ ॥ ৫৫ ॥  
যা দেবী সর্বভূতেষু লজ্জারূপেণ সংস্থিতা । নমস্তসৈ ॥ ৫৬ ॥ নমস্তসৈ ॥ ৫৭ ॥ নমস্তসৈ নমো নমঃ ॥ ৫৮ ॥ যা দেবী

শোভা ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ লক্ষ্মীঃ সম্পদঃ ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ব্রীতিঃ কন্যা দিচতুর্নয়ী ; পাক ক্রিয়ারূপ উক্তা, অত্র সিদ্ধিরূপেতি ভেদঃ (অন্যদ্ব্যাপ্যগ্ৰেতঃ)

୩୫ ॥ ୬୦ ॥ ୬୧ ॥ ସ୍ଵତିଃ ସଂସ୍କାରଞ୍ଜୋ ବୋଧଃ ( ସ୍ଵତିଃ ସଂସ୍କାରମାଦ୍ରଞ୍ଜେ'ତୁକ୍ତେଃ ), ଯଦା ସ୍ଵତିର୍ବର୍ଣ୍ଣମାସ୍ରମ୍ ॥ ୬୨ ॥ ୬୩ ॥ ୬୪ ॥ ଦୟା ପରଦ୍ଵ୍ୟୁତ୍ପାଦନେଽଛା ॥ ୬୫ ॥ ୬୬ ॥ ୬୭ ॥  
ତୁଷ୍ଟିର୍ବାଦୃଞ୍ଚିକାଧିକାର୍ଥନାଭୈବମୁଖ୍ୟମ୍ ॥ ୬୮ ॥ ୬୯ ॥ ୭୦ ॥ ୭୧ ॥ ୭୨ ॥ ୭୩ ॥ ୭୪ ॥ ୭୫ ॥ ୭୬ ॥ ୭୭ ॥ ୭୮ ॥ ୭୯ ॥ ୮୦ ॥ ୮୧ ॥ ୮୨ ॥ ୮୩ ॥ ୮୪ ॥ ୮୫ ॥ ୮୬ ॥ ୮୭ ॥ ୮୮ ॥ ୮୯ ॥ ୯୦ ॥ ୯୧ ॥ ୯୨ ॥ ୯୩ ॥ ୯୪ ॥ ୯୫ ॥ ୯୬ ॥ ୯୭ ॥ ୯୮ ॥ ୯୯ ॥ ୧୦୦ ॥

ସର୍ବବହୁତେଷୁ ରୁଦ୍ଧିରୁପେଣ ସଂସ୍ଥିତା । ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୫୯ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୦ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୧ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୨ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୩ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୪ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୫ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୬ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୭ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୮ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୬୯ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୦ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୧ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୨ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୩ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୪ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୫ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୬ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୭ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୮ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୭୯ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୦ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୧ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୨ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୩ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୪ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୫ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୬ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୭ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୮ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୮୯ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୦ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୧ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୨ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୩ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୪ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୫ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୬ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୭ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୮ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୯୯ ॥ ନମସ୍ତୁମ୍ଭେ ॥ ୧୦୦ ॥

“ଭ୍ରାନ୍ତିବିପର୍ଯ୍ୟୟଞ୍ଜନଃ ଶ୍ଵିଧା ମାପି ନିଗଦାତେ । ଅତସ୍ତେ ତଦ୍ଵରୂପା ଯା ତସ୍ତେ ଚାତଦ୍ଵରୂପିନୀ” ଇତି ), ଯଦା ଶାନ୍ତିରହୁତାପ୍ରାବୋଧଃ । ଏତାଃ ଶୁଦ୍ଧଧର୍ମାହୁତେବହାଃ  
# ୧୦୧ ॥ ୧୦୨ ॥ ୧୦୩ ॥ ୧୦୪ ॥ ୧୦୫ ॥ ୧୦୬ ॥ ୧୦୭ ॥ ୧୦୮ ॥ ୧୦୯ ॥ ୧୧୦ ॥ ୧୧୧ ॥ ୧୧୨ ॥ ୧୧୩ ॥ ୧୧୪ ॥ ୧୧୫ ॥ ୧୧୬ ॥ ୧୧୭ ॥ ୧୧୮ ॥ ୧୧୯ ॥ ୧୨୦ ॥



চকারাং তদধিষ্ঠাতৃস্থবাদীনাঞ্চ সততম্ অধিষ্ঠাত্রী প্রেরয়িত্রী (এতেন অধিভূতাদ্যাত্মাদিবেদভানাং পরমার্থরূপা বৎপ্রেরিকা বা যমেব (তথ্যচ কৃত্তানলকভায়া)। “মনশ্চক্ষুরাদেদর্শনশ্চক্ষুরাদিশে”তি। পূৰ্ব্বম্ ইন্দ্ৰিয়তদধিষ্ঠাতৃস্থযাদিদেবভারূপস্বয়ুক্তম্, ইহ তু তেযামপি পরমার্থরূপস্বয়ুক্তম্; পৰমাথদ্বন্দ্ব দাবণ-গ্রহণ-প্রেরণশক্তিঃ)। এতৎ প্রতিপাদয়ন্তি ব্যাপ্তিদেবো দাত। ব্যাপ্তিবত্ত্বস্য তত্ত্বং পটে তদ্ববং মাণস্ব শূদ্রবচ্চ, তদ্বপা চাসৌ দেবৌ প্রকাশিকা চোক্ত তথা। যদ্বা অধিলেষু কুত্বেষু ভৌতিকেষু ইন্দ্ৰিয়ানাং ভূতানাং, তদাস্তক-পূৰ্ব্বব্যাদীনাং, চকারাং অহকার-তন্মাত্রাণাঞ্চ আদষ্টাত্রী (অন্তঃ সমানম্) ॥ ৭৭ ॥ চিহ্নীত।

ব্যাপ্তিদেবৈ নমো নমঃ ॥ ৭৭ ॥ চিত্তিরূপেণ যা কুন্ম-মেতদ্ ব্যাপ্য স্থিতা। ক্রগং । নমস্তস্মৈ ॥ ৭৮ ॥ নমস্তস্মৈ ॥ ৭৯ ॥

নমস্তস্মৈ নমো নমঃ ॥ ৮০ ॥ স্তুতা সুরৈঃ পূৰ্ব্বমভীক্সংজয়া, -তথা সুরেন্দ্রেণ দিনেন স্বেবিতা। কবেরৌ সা নঃ স্তুভেহে ৬-

চিতিঃ চৈতন্যং তন্ময়ো জীব ইত্যর্থঃ (তদ্বক্তং বেদান্তগ্রন্থে “অবিদ্যোপপত্তিতং চৈতন্যং জীবঃ” ইতি), যা চিৎকরূপেণ এতৎ ক্রগং সমগ্রং জগৎ ব্যাপ্য। স্তুতা (এতেন চিজ্জদাত্মকং সমষ্টিব্যাপ্তিরূপং জগৎ ক্রমেবেতি প্রাপাদিতম্। প্রাগন্তুকরণবিশেষশক্তিভেদো ক্রম, অত্র জীবভোগ্যক্রমিত ন পৌনরুধ্যম্) ॥ ৮০ ॥ ১৯ ॥ স্তুতেতি (দ্বাভ্যায়নরঃ)। সা নোত্ম্যাকঃ ভদ্রাণি নিবিস্বানি নিরকুরাণীত যাবৎ স্তুভানি মঙ্গলানি কবেরৌ, যতঃ স্তুভেতৎমঙ্গলকাৰণম্। আপদঃ অভিহন্ত চ, যতঃ ঈশ্বরী সৰ্বশক্তিযুক্তা সৰ্বানগ্রহীতি বা। মা কা? বা পূৰ্ব্বং মাহিমাসুরবদকলীনেমু দিনেনম্ যভাষ্টমংজয়াং বাজিতকলনাভাং ইন্দ্রেদেবৈঃ সহ সুরেন্দ্রেণ স্তুতা, সেবিতা। গন্ধপুষ্পাদ্যাপহারৈঃ পূজিতা চ (তপাশকশচিৎ; দিনোম্মিতি একতাপাভিযতয়া তকালিঙ্গেন গোবনাং বত ইম্), মাস্ত্রত্য ইন্দ্রনাথ-

— তু চি হি

উক্ত নৈদেহাতাপিত্তরস্মাদিঃ সূরৈঃ য। নমস্রতে ইত্যমঃ । যা চ ভাক্তবিনমূর্ত্তিভরস্মাদিঃ স্মৃতা। সত্য। তৎক্ষণং অরণসমকসিমেষ নোত্থা কং সর্দাপদে চ স্তিত্ব ।  
কীদৃশী পৃষ্ণা ইগবা ॥ ৮ ॥ ৮২ ॥ ঋষিকবাচ ॥ ৮৩ ॥ এবমিতি । হে নৃপনন্দন সুরব ! তত্র স্থানে এবমুক্ত প্রকপেণ স্তবদিক্রুতানাম্ ( আদিনা পূজা-প্রাণায়াম-  
দ্যান ধারণা-দঃ সংগ্রহঃ ) ওবাদৌ তৎপরানাং দেবানান্ অতি আভিযুখান ( সমস্মাবিবক্ষয়াৎ যদী ) পার্শ্বতী জাহুবা। গদগাক্তোয়ে যাহুন্ম আযযে ॥ ৮৪ ॥ দোভ ।

রীশ্বরী, শুভানি ভদ্রাণ্যভিহস্ত চাপদঃ ॥ ৮১ ॥ যা সাম্প্রতং চোদ্ধতদৈত্যতাপিত্তে, -রস্মাভিযোপা চ সুরৈর্নগসাতে । যা চ  
স্মৃতা তৎক্ষণমেব হস্তি নঃ, সর্দাপদে ভক্তিবিনম্রমূর্ত্তিভিঃ ॥ ৮২ ॥ ধারিরবচ ॥ ৮৩ ॥ এবং স্তবদিক্রুতানি দেবানি  
তত্র পার্শ্বতী । স্মাতুমভাযায়ৌ তোয়ে জাহুবা নৃপনন্দন ॥ ৮৪ ॥ সাম্রবীভান্ সুরান্ সুক্র-উবাহুঃ স্তুরতেহহ ক।  
ধরীরকেষিত্তচাস্যাঃ সমৃদ্ধুতাব্রবাচ্ছিবা ॥ ৮৫ ॥ স্তোত্রঃ মমৈতৎ ক্রিয়তে শুভদৈত্যনিরাকৃতৈঃ । দৈবৈঃ সমৈভঃ সগরৈ

সা স্ক্রুতগুন্ সুরান্ অত্রবীঃ । কিমববাদিত্যাঃ--ভবন্তিরত্র ক। তৃযতে ( স্তবৌ স্তৌলিঙ্গোপাদানং কেতি স্মাৎ প্রমোহপি ।। তদানানিব অজ্ঞাঃ পঃসাকি  
অবদেদৈবতঃ শরারমেব কোষঃ রত্নৌদরুপঃ তয়াৎ সমুদ্ভূত। প্রাহুত। সত্যী শিবা অত্রবীঃ ( কোমপদোপাদানং তচ্ছরবজ্ঞ নোকেকং পাট-দ্যপ্যভ।  
স্মৃচতা ) ॥ ৮৬ ॥ কিমববাদতাহ স্তোত্রমিতি । এইতঃ সমনৈতমিনিতৈর্দৈবৈঃ এতং যম স্তোত্রঃ ক্রিয়তে ! তত্র হেতুগতবিশেষণদ্বারাৎ--যঃ ইদং এতৎ স্মৃক

শুস্তদৈতেন নিরাকৃতৈনিরৈকৈঃ, নিশুস্তেন চ পরাজিতৈ-রাভিভূতৈঃ ( অত্র শুস্তনিশুস্তয়োদ নিবদ্ধেহপি দৈদত্যশ্মগ্রাহিত্বাং দৈদ্যেতি ; যদ্বা “দিতিঃ স্যাৎ পশুনে দনৌ” ইতি বিশ্বপ্রকাশদর্শনাৎ দিতিশব্দেন দত্তরপ্যুচ্যতে ) ॥ ৮-৬ ॥ তস্যা নামনির্দ্বন্দ্বমাহ শরীরেতি । যদ্ যস্যাং তস্যাঃ পারভ্যাঃ শরীরকোষাৎ অধিক। নিঃসৃত। নির্গতা, ততো হেতোঃ সমস্তেষ্ণু লোকেষু ভুবনেষু জনেষু বা কোষকীতি গীয়েতে উচ্যতে মুনিভিরিত্যর্থঃ ( সুপাং সুবিভি ব্যবস্থয়া সমষ্টেজ্জৈনিরিত্যর্থো বা ; কোষে ভবা কোষিকৌ অধ্যাত্মাদিঃ “কোষোত্তমো বজ্রা-পদানেনহর্ষে ষির্দিব্যয়ো” রিত মূর্ত্তিত্যাহে অমরদর্শনাৎ, “কোশাতকী-কোণিকী-দন্দশূকৈ” ইত্যাদিতালব্যশ-

নিশুস্তেন পরাজিতৈঃ ॥ ৮-৬ ॥ শরীরকোষাদ্ বক্তস্যাঃ পার্বত্যাঃ নিঃসৃত।ধিক। । কোষিকীতি সমস্তেযু ততো লোকেষু গীয়েতে

॥ ৮-৭ ॥ তস্যাং বিনির্গতায়ান্ত কৃষণভূৎ সার্প পার্বতী । কালিকৈতি সমাপ্যাত। হিমাচল-কৃত।জ্রায়। ॥ ৮-৮ ॥ ততোহ-

ভেদ-দর্শনাচ্ কোষিকীতি মূর্ত্তিত্যবতী তালব্যবতী চ) ॥ ৮-৭ ॥ তস্যামিতি । তস্যাং কোষিক্যাং বিনির্গতয়াং স-হ্যাং সার্পি হিমাচলকৃত।জ্রায়। চিম্বর্ণাকৈত। পার্বতী কৃষণ কৃষবর্ণ। অভূৎ । ইতি হেহোঃ কালিকা ইতি সমাপ্যাত। প্রসিদ্ধা অভূৎ ( ইতিশব্দোক্তত্বাৎসেতব্যঃ, স্বার্থে দশচ ) ॥ ৮-৮ ॥ তত ইত্যেত। ততঃ প্রাদু-ভাবানন্তরঃ পরম্ অত্যাৎকৃষ্টম্ অতিমনোহরং রূপং বিভ্রাণাৎ প্রারয়ন্তীম্ অধিকাং কোষিকীং চণ্ডো যুগ্মচ দদর্শ ( প্রত্যেকমধ্যাদেকম্ ) । তে। পার্বত্যাঃ—শুস্তনিশুস্তয়োহুতৌ ॥ ৮-৯ ॥ তাভ্যামিতি । / ন কেবলং দদর্শ ) তাভ্যাং শুস্তাৎ আপ্যাত। কথিত। চ । তদাহ—দে মহারাজ, কাপি বচনোগোচরা দ্যা জ্ঞায়েত ।

কীদৃশী? হিমাচলঃ ভাসসরন্তী শোভয়ন্তী ( একদ্রাবহানোহপি স কলচর্যাবভাসনপরতয়া বচনোগোচরকর্তৃণ্যেব ), খণ্ডিতভাব প্রমোহরা ॥ ৯০ ॥ নৈবপতি । তাদৃক-  
রূপং কচিদিপি দেশে কালে চ কেনচিচ্ছেনেন নৈব দৃষ্টম্ । কীদৃক্ ? উত্তমম্ । ততঃ কিমিত্যাহ—অসৌ দেবী ক। ( প্রাতঃ স্বরূপেণ চোতি ) জ্ঞানতাম্ । ( ন কেবল  
মেতাবৎ, কিন্তু ) গৃহহাঃ চ । হে অমৃবেশ্বর ॥ ৯১ ॥ স্মৃতি । সা স্ত্রীরত্নং স্ত্রীশ্রেষ্ঠা, অতিচারবর্জী অতিচারবর্জীনি করচরণাদীনি যজ্ঞাঃ না,

শ্রিকং পরং রূপং বিভাগং স্মমনোহরম্ । দদর্শ চণ্ডো যুগ্মশচ ভূত্যো গুপ্ত-নিগুপ্তয়োঃ ॥ ৮৯ ॥ ভাভ্যং গুপ্তায় চাখ্যাত।

অতীব স্মমনোহরা । কাপ্যাস্তে স্ত্রী মহারাজ ভাসরন্তী হিমাচলম্ ॥ ৯০ ॥ নৈব তাদৃক্ কচিদ্ভূপং দৃষ্টং কেবলি-  
তুভমম্ । জ্ঞানতাং কাপ্যসৌ দেবী গৃহতাপ্যাস্মরেধর ॥ ৯১ ॥ স্ত্রীরত্ন-গতিচারবর্জী গৌতরন্তী দিশাশ্রিয়া । সা তু তিষ্ঠতি  
দৈতেভ্যস্তে তাং ভবান্ দ্রষ্টুমহতি ॥ ৯২ ॥ যানি রত্নানি মণয়ো গজাশ্বাদীনি বৈ শ্রভে । ব্রৈলোক্যে তু মনস্তুনি সাম্প্রভ

দ্রিয়া কাস্ত্য। দিশো দ্যোতয়ন্তী সতী তিষ্ঠতি । হে দৈতেভ্যস্তে, ভবান্ তাং দ্রষ্টুং চক্ষুঃসাংকল্পং জ্ঞাতুং বা অহতি ( “রত্নং স্বজতিশ্রেষ্ঠৈহপি” ই ভাসরঃ ) ॥ ৯০ ॥  
অষ্টভিঃ শ্লোকৈঃ সর্বরত্নাশ্রয়হোক্ত্যা প্রলোভয়তি যানীতি । গজাশ্বাদীনি যানি রত্নানি স্বস্বজাতিপ্রেরণানি, যে মণয়ো মহাপদ্মানরঃ ব্রৈলোক্যে দন্তি, তানি ন্যস্তানি  
( একশেষাং ক্লীবশেষঃ ) সাম্প্রভমিদানীং তে তব গৃহে ভাস্তি শোভন্তে ॥ ৯১ ॥ এতদ্বিরণেতি ক্রীয়াবত ইতি । ক্রীয়াবতঃ গজরত্নং গজশ্রেষ্ঠঃ পুণ্ডরীকঃ

সমানীতঃ। অয়ং পারিজাততরুশ্চ, (তথাকথঞ্চ্যার্থঃ) উচ্চঃশ্রবা হয়শ্চানীতঃ ॥ ৯৪ ॥ বিমানমিতি। হংসসংযুক্তং যদিমানং ক্রৌড়ানাময় অদ্ভুতম্ অভ্যাস্তব্যং রত্নভূত-  
রত্নস্বরূপং বেধমসৌ ব্রহ্মণ আসীৎ, তদেতৎ আনৌতং সং ইহ তে তব অঙ্গনে আজরে তিষ্ঠতি ॥ ৯৫ ॥ নির্ধিরিতি। এষ মহাপদ্মো।  
মহাপদ্মনামা নির্ধিঃ ধনেশ্বরাৎ কুবেরাৎ সমানীতঃ (তল্লক্ষণমাহ মার্কণ্ডেয়পুরাণং “সম্বাদাতো নির্ধিশ্চাতো মহাপদ্ম হতি শ্রুতঃ। সম্বপ্রধানো তদতি তেন

ভাস্তি তে গৃহে ॥ ৯৩ ॥ ঐরাবতঃ সমানীতো গজরত্নং পূরন্দরাৎ। পরিজাত-তরুশ্চাযং তথৈবেবৈচ্চঃশ্রব হুয়ঃ ॥ ৯৪ ॥

বিমানং হংসসংযুক্ত-মেতৎ তিষ্ঠতি তেহঙ্গনে। রত্নভূতমিহানীতং যদাসীদ বেধমসৌহুতম্ ॥ ৯৫ ॥ নির্ধিরেব মহাপদ্মঃ

সমানীতো ধনেশ্বরাৎ। কিঞ্জলিনীং দদৌ চাক্রি-মালী-মল্লানপঞ্চজাম্ ॥ ৯৬ ॥ ছত্রং তে বারুণং গেহে কাঞ্চনশ্রাব

তিষ্ঠতি। তথায়ং স্যেন্দনবরো যঃ পুরাসীং প্রজাপতেঃ ॥ ৯৭ ॥ যুতোরুৎক্রান্তিদ নাম শক্তিরীশ দ্বয়। হুত। পাশঃ সর্পিণ

চাধিষ্ঠিতো নরঃ। কবোতি পদ্মরাগাদিরত্নানাঞ্চ পবিগ্রহম্” ইত্যাদি)। অক্লিঃ সমুদ্রঃ কিঞ্জলিনীং তন্মাল্যম্ অনানপঞ্চজাম্ অন্যানান পঞ্চজান বজ্রাম্  
এবংভূতাং মাল্যং দদৌ (অর্থাৎ তুভ্যম্) ॥ ৯৬ ॥ ছত্রমিতি। তে তব গেহে কাঞ্চনশ্রাব কনকপ্রশ্রবণীণং বারুণং বরুণমম্বন্ধি ছত্রং তিষ্ঠতি। (তথানন্দচাৰ্যঃ)  
প্রজাপতেশ্চ দক্ষস্য যঃ পুরা আসীৎ, সৌহয়ং স্যেন্দনবরো। যুক্তসাধিনপশ্চৈষ্ঠঃ তব গেহে তিষ্ঠতীত্যয়ঃ ॥ ৯৭ ॥ যুতোরুৎক্রান্তি। (মার্কণ্ডেয়পুরাণঃ)

হে ক্রীশ শক্রনিরাকরণসমর্থ, যুতো্যদ্বিক্ষিপূজস্য উৎক্রান্তিদা মরণদাত্রী ( উৎক্রমণমুক্তাক্তিঃ ) শক্তি-রত্নবিশেষঃ দ্বয়। দ্বত। ( যুতো্যধমস্তোতি পদার্থানাদঃ, কিন্তু যমস্ত দণ্ড এব প্রসিদ্ধমস্ত্রং, নিকটং চাত্রৈব “কালদণ্ডাদযমে। দণ্ড”মিতি ) । সলিলরাজস্য বরুণস্য পাশঃ তব ভ্রাতৃনিগুপ্তস্য পরিগ্রহে অধিক। প্রেহিস্তি মূলৈ-বা, যদ্য পরিগৃহ্যতেহেনেনেতি পরিগ্রহো হস্তঃ ( “পরিগ্রহঃ কলভ্রোপি মূলস্বীকারয়োরপি । অপথে পবিবারে চ রাহগ্রহস্তে চ ভাস্করে” ইত্যমরঃ ) । অধিজাতাঃ সমুদ্রভবাঃ সমস্ত। রত্নজাতয়ে। রত্নপ্রকারাঃ পদ্মরাগাদয়শ্চ সম্ভবতূহম্ ॥ ৯৮ ॥ বহ্নিরিতি । ( অন্ধপদ্যম্ ) । বহ্নিরপি পাবকোহপি আগ্নেশৌচে অগ্নিনা শৌচং

রাজস্য ভ্রাতুস্তব পরিগ্রহে । নিগুপ্তস্যাক্রিজাতাশ্চ সমস্ত। রত্নজাতয়ঃ ॥ ৯৮ ॥ বহ্নিরপি দদৌ ভূভা-গ্নিশৌচে চ বাসসী

॥ ৯৯ ॥ এবং দৈত্যেভ্য রত্নানি সমস্ত। আহতানি তে । দ্বীরত্ন-মেঘ। কল্যাণী দ্বয়। কস্মান্ন গৃহ্যতে ॥ ১০০ ॥ পাবিরবচ

॥ ১০১ ॥ নিশম্যোতি বচঃ শুভঃ স তদ। চণ্ডমুণ্ডয়োঃ । প্রেয্যাগাস সূগ্রীবঃ দৃতঃ দেব্যা মহ।ত্বরম্ ॥ ১০২ ॥ উচি

শুদ্বিধ্যয়োঃ এতাদৃশী বাসসী বসনে তুভাঃ দদৌ । অপীতি বিশ্বয়ে ॥ ৯৯ ॥ উপদংহরতি । এবমিতি । হে দৈত্যেভ্য, অবমুক্তপ্রকারেণ সমত্যাগে রত্নানি তে ভ্রম।(প) আহতানি ( ভ্রাতুৱপাভিন্নাচারহাং ভ্রয়েতূহম্ ) । এষ। কল্যাণী জীবন্তঃ স্ত্রীশ্রেষ্ঠ। দ্বয়। কস্মান্ন গৃহ্যতে ? অপি ভু গৃহ্যত এব ( বর্তমানপ্রাণে পটমান-বন্নিদেশঃ, সর্বরত্নভোগিনস্তব তংপরিভ্যাগস্তানহংবাং । বাকাভেদাং তে ইতি দ্বয়েতি চোক্তম্ ) ॥ ১০০ ॥ পাবিরবচ ॥ ১০১ ॥ নিশম্যোতি । নঃ শুভসুদ। চণ্ডমুণ্ডয়োৱিতি প্রলোভনাত্মকং বচো নিশম্য শ্রেত্ব। দেব্যাঃ সপক্ষে সূগ্রীবাত্ম্যং মহামুদং দৃতং প্রেয্যামাস ॥ ১০২ ॥ ইতীতি । দ্বয়। গগ। ন, ইতি চ উক্তম্, ইতি

চ বক্ষ্যমাণং, মম বচনাং বক্তব্য। কিঞ্চ যথা প্রীত্যা। লঘু শীঘ্রম্ অভিযতি, তথা ছয়া কার্যং কর্তব্যং চ ( এতেনাপরমপি প্রলোভনং তয়া বক্তব্যম্গত সৃষ্টিভূত্ ) ॥ ১০৩ ॥ স ইতি। ( মেধসো বচনিদম্ )। সা দেবী কৌষিকী যত্রাতিশোভনে শৈলোদ্দেশে শৈলস্য উদ্ধ প্রাদেশে আস্তে, স দূতঃ তত্র গম্ম। স্নানং কোমলং যথা স্যাৎ তথা মধুরয়া মনোহরয়া প্রণোতনাত্মিকম্নেতি যাবৎ গির। বাচ। ভাং প্রাহ উক্তবান্ ॥ ১০৪ ॥ দূত উবাচ ॥ দেবাত। তে দেসি, দৈত্যেশ্বরঃ দৈত্যাদিধিপতিঃ শুভোহস্থতি শেষঃ। ( ন কেবলংনৈতাবৎ, কিন্তু ) ত্রৈলোক্যে পরমেশ্বরঃ ইন্দ্রঃ ( এতেন তদাদিকারবর্জিনী স্মৃতিভূতম্ )। ৩২২

চেতি চ বক্তব্য। সা গহ্ন। বচনাম। যথা চাভ্যেতি সংপ্রীত্য। তথা কার্যং স্বরা। নায়ু ॥ ১০৩ ॥ স তত্র গহ্ন। যজ্ঞান্তে নৈলো-  
দেদেহেতিশেভনে। সা দেবী তাং ততঃ প্রাহ স্নানং মধুরা। গিরা ॥ ১০৪ ॥ দূত উবাচ ॥ ১০৫ ॥ দেবি। দেভ্যগ্নয়ঃ স্তুতু-  
শ্বেলোক্য পরমেশ্বরঃ। দূতেহিহঃ প্রেযিতন্তেন। স্বংসকাশ-গিহাগতঃ ॥ ১০৬ ॥ অব্যাহতাজ্ঞঃ সৰ্বনাম্। নঃ সাদ। দেব-

[illegible]

॥ ১০৭ ॥ কিমাহেতি কথয়তি ময়েতি । অখিলং সমগ্রং ত্রৈলোক্যং মম মদীয়ম্ । অপিচ দেবান্চ মম বশা অদীন্যচ তে অনুগা অনুবর্তিনশ্চেতি তথা ; যদা মম বশা যে রক্তবীজাদয়ঃ তেষামপ্যন্তুগাঃ পুষ্টাদ্যামনঃ (এতেন যদাজ্জালাজ্বলে তব মহায়ঃ কোহপি ন ভবিষ্যতীতি ব্যঞ্জিতম) । অহং নারীন্ যজ্ঞভাগান্ চকুপুৰেভাশাদীন্ পৃথক্ পৃথক্ ইন্দ্রাদিরূপেণ উপাশ্রমি ভক্ষয়ামি (এতেনাগ্ননঃ সর্পশাক্তিকুহ্মকম্) ॥ ১০৮ ॥ ন কেবলং সর্পগোন্দ্রঃ, সর্পবিভূতাস্পদমপ্যহিসিঙাশ ত্রৈলোক্যে ইতি । ত্রৈলোক্যে যানি বররত্নানি শ্রেষ্ঠরত্নানি সন্তি, তানি অশেষতোহশেষানি অশেষেণ নাকলোন বা মম বজ্রানীতি ত্রিভিঃ পদৈরময়ঃ । উৎপেদ যোনিয়ু । নির্জিতাখিল-দৈত্যারিঃ স বদাহ শৃণুয তৎ ॥ ১০৭ ॥ মম ত্রৈলোক্যমখিলং মম দেবা বশান্তুগাঃ । যজ্ঞভাগানহং সৰ্বা-নুপাশ্রমি পৃথক্ পৃথক্ ॥ ১০৮ ॥ ত্রৈলোক্যে বররত্নানি মম বশান্তুগোদ্রঃ । তপেব গজরত্নানি হ্রস্বা দেবেন্দ্রবাহন্য ॥ ১০৯ ॥ ক্ষীরোদ-মথানোদ্রুত-মধরত্নং মমগিরৈঃ । উচ্চৈঃশ্রবস-সংজ্ঞং তৎ প্রণিপত্য সমর্পিতম্ ॥ ১১০ ॥ যানি চান্যানি গজরত্নানি ঐরাবতাদয়ো গজশ্রেষ্ঠাঃ মম বজ্রানি মম বশান্তুগাঃ । অগ্নিরৈর্দৈবৈঃ ক্ষীরোদমথনে উদ্রুতং জাতং দেবেন্দ্রস্য বাহন্য উচ্চৈঃশ্রবস-সংজ্ঞং তৎ প্রসিক্কম্ অম্বরত্নং হ্রস্বা অনীয় প্রণিপত্য তদাদানপরাস্থগম্য যৎ প্রণিপাতেনানুন্নয় মম সমগ্ৰে সমর্পিতং দত্তম্ (আতু পসর্গম্ ১০৮০ পদ হরতিয়ানয়নে বর্ত্ততে অত্র, অথানঃ কচিং ছোতকনিরপেক্ষমাং ; যদা মোহান্তমজ্ঞানপরাস্থাদপীজাং, কাথ্যগোবদমালক্য, হ্রস্বা বগাদাচ্ছিন্ন সমর্পিতম্ ১০৮০ পদ অতএব শ্বরৈরিত্যুক্তং, ন তু ইন্দ্রেণেতি । উচ্চৈঃশ্রবো যশো যশস উচ্চৈঃশ্রবসঃ, ছান্দসদ্বাং অং সমাসাতঃ, “কচিদজ্ঞানাপী”তি বা ) ॥ ১০৯ ॥ ১১০ ॥ যানি চান্যানি

১০৭  
১০৮  
১০৯  
১১০  
১১১



শোভনে, দেবেষু গন্ধর্বেষু বিখ্যাবসাদিষু, উরগেষু সর্পেষু বাসুকিপ্ৰভৃতিষু, চকারাৎ যক্ষবিজ্ঞাধরাदिषु च यानि रत्नरूपानि भूतानि वस्तूनि सानि (ভূতানি জাতানি ইতি বা) তানি যযোব সন্তি (এবকারেণান্যাত্ৰাব উক্তঃ)। ১১১ ॥ স্ত্রীতি। হে দেবি, লোকে দুবনে বয়ং ত্বাং স্ত্রীরত্নভূতাং নগ্যামহে। ততঃ কিমিত্যাহ—সা স্ত্রীরত্নভূতা ভম্ অশ্বান্ উপাগচ্ছ অশ্বংসমীপমাগচ্ছ ইত্যর্থঃ। এতচ্চিহ্নমেবেত্যাহ—যতো বয়ং রত্নভূজঃ রত্নভোগার্থিণঃ (তন্মাদনং স্থানে ভবাক-

১১১

দেবেষু গন্ধর্বেষুরগেষু চ। রত্নভূতানি ভূতানি তানি যযোব শোভনে ॥ ১১১ ॥ স্ত্রীরত্নভূতাং ত্বাং দেবি লোকে নগ্যামহে বয়ম্। সা ভ্রমশ্বানুপাগচ্ছ যতো রত্নভূজে বয়ম্ ॥ ১১২ ॥ মাং বা সমানুজং বাপি নিশুস্ত-নুরবিব্রজমন্। ভজ ত্বং চঞ্চলাপাঙ্গি

স্থান-মল্লচিত্তমেবেত্যর্থঃ) ॥ ১১২ ॥ মামিতি। হে চঞ্চলাপাঙ্গি চঞ্চলে অপাঙ্গে যস্তাঃ সা (ছান্দস ঐপ্রত্যয়ঃ) মাং বা, মম অন্তঃ নিশুস্তং বা ত্বং ভজ (নির্বিদ্বাভাবং বাশংকো বোধয়তি)। যতঃ ত্বং রত্নভূতা অসি ভবসি (এতেন দ্বয়ো রপ্যাবিশেষাৎ বহুভোগিদ্রমুক্তম্)। কীদৃশম্? উত্তমং হান বিব্রজে। সম্য তম্ উত্তমবিক্রমম্ (উভয়োরেব বিশেষণং; বাশংক দন্ত্যাতাং অন্তঃস্বারবানেন পাঠঃ মাংবোতি) ॥ ১১৩ ॥ প্রলোভনতি পরোতি। মৎপরিগ্রহাৎ মদাক্রিয়াৎ, অতুলং পরমৈশ্বর্যং পরমাং বিভূতিং প্রাপ্যসি। বুদ্ধা। এতৎ ময়োক্তং সমালোচ্য বিচার্য মৎপরিগ্রহতাং মম কলত্রতাং ব্রজ প্রাপ্তি (পরিগ্রহঃ

ପରିଜ୍ଞାନେ ପତ୍ୟାଂ ସ୍ୱୀକାରମୂଳଂ” ଇତି ମେଦିନୀ । ଲୋଚ୍ଚ ଦର୍ଶନେ ଚୂରାଦିଃ ) ॥ ୧୧୪ ॥ ଅଧିକୃତାଃ ॥ ୧୧୫ ॥ ଇତ୍ୟୁକ୍ତିଃ । ତଦା ତାମ୍ବିନ କାଳେ ସା ଦେବୀ ଇତ୍ୟୁକ୍ତା । ସତ୍ତା ଜଗୋ ଉକ୍ତବତୀ । କୌଦୂର୍ଣୀ ? ଗନ୍ତାରା ତୁର୍ବୋଦାଧିପ୍ରାୟା ( ତଥାଽ ତରତଃ “ଗନ୍ତାରାନ୍ତାନ୍ତାସ୍ତୁ ଯା ନାୟାଃ ସମାନା ରୋଗଭୋଯୋ” ରିତି ) । ପୁନଃ କୌଦୂର୍ଣୀ ? ଅନ୍ତ-ରାଭ୍ୟନ୍ତରେ ସ୍ମିତଂ ଯନ୍ତ୍ରାଃ । ଅତଏବ ଦୁର୍ଗା ହୁଞ୍ଜେୟା । ଭଗବତୀ ଅଚିନ୍ତ୍ୟଶର୍ଯା । ଭଦ୍ରା ସମ୍ବଳହେତୁଃ । ଯସ୍ମା ଇଦଂ ଜଗଂ ସାମ୍ୟାତେ ( ଅତଏବ ତସ୍ୟାଃ ଏକାକ୍ତ-ବର୍ଣ୍ଣୋଦ୍ଭୁତକ୍ରୋଧାସରଂ ନ ଚିତ୍ରମିତି ଭାବଃ ) ॥ ୧୧୬ ॥ ଦେବ୍ୟୁବାଚ ॥ ୧୧୭ ॥ ସତୀମିତି । ଦ୍ଵୟା ସତୀଂ ସ୍ଵାଧୀମୁକ୍ତମ୍ । ଅତ୍ର ଅସିନ୍ ସ୍ଵାଧୀମିତି କିମ୍ବିଦମି ମିଥ୍ୟା ନୋକ୍ରମ ।

ରତ୍ନହୃତାସି ବୈ ସତଃ ॥ ୧୧୭ ॥ ପରମୈଶ୍ଵର୍ଯ୍ୟମତୁଳଂ ଶ୍ରୀମ୍ୟାସେ ମଂପରିଗ୍ରହାଂ । ଏତନ୍ମୁକ୍ତା ସମାଲୋଚ୍ୟ ମଂପରିଗ୍ରହତାଂ ବ୍ରଜ ॥ ୧୧୮ ॥  
 ସାଧିକୃତାଃ ॥ ୧୧୯ ॥ ଇତ୍ୟୁକ୍ତା । ସା ତଦା ଦେବୀ ଗନ୍ତାରାନ୍ତାଂସ୍ମିତା ଜଗୋ । ଦୁର୍ଗା ଭଗବତୀ ଭଦ୍ରା ସୟୋଦଂ ସାମ୍ୟାତେ ଜଗଂ ॥ ୧୧୯ ॥  
 ଦେବ୍ୟୁବାଚ ॥ ୧୧୭ ॥ ସତ୍ୟମୁକ୍ତଂ ଦ୍ଵୟା ନାତ୍ର ମିଥ୍ୟା କିମ୍ବିଦମ୍ । ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିଃ ଶୁଭେ । ନିଶ୍ଚିନ୍ତନ୍ତାସି ତାଦୃଶଃ

ଏତନ୍ମୁକ୍ତାସି—ଶୁଭଃ ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିଃ, ନିଶ୍ଚିନ୍ତନ୍ତାସି ତାଦୃଶଃ ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିରିତ୍ୟର୍ଥଃ । ( ପୂର୍ତ୍ତାଧିପ—ଅତ୍ର ନିଶ୍ଚିନ୍ତନ୍ତବିଷୟେ ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିରିତି ମିଥ୍ୟା ଚିନ୍ତାଃ, କିମ୍ବିଦମି ସତ୍ୟଂ ନୋକ୍ରମଃ ; ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିଃ ସାମ୍ୟାତାୟାଂ କଥଂ ଦ୍ଵୈଲୋକ୍ୟାଧିପତିତ୍ଵଂ ତସ୍ମେତାଭିପ୍ରାୟଃ ) ॥ ୧୧୮ ॥ କିମ୍ବିତି । ଅତ୍ର ପରିଗ୍ରହତାବିଷୟେ ( ଅପାମିତା ) ସଂ ପ୍ରୀତିଜ୍ଞାତଂ, ତଂ କଥଂ ମିଥ୍ୟା କ୍ରିୟତେ । ( ସୟୋଦାହାସାନ୍ତୟଃ ) ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତିହାଂ ବାଲାଂ ପୁରା ସା ପ୍ରୀତିଜ୍ଞା କୃତା, ସା ଶ୍ରବଣାୟ । ( ପୂର୍ତ୍ତାଧିପ—ନିଶ୍ଚିନ୍ତୟା ଜନ୍ମରାହାସାନ୍ତଜ୍ଞା )

বালাভাবাৎ প্রতিজ্ঞা ন কৰ্ত্তবেতি, কুতেভ্যস্যা প্রাক্ অকরপ্রপ্নেবঃ; অগ্না বুদ্ধিগ্ৰাঃ, মূলপ্রকৃতেতস্ত্রাঃ কার্যভূতান। বুদ্ধিরগ্নবসুচিতমেব; যদ। এজঃ কার্যাক্রপাঙ্গ।  
বুদ্ধিঃ সত্ত্বজননী সা অগোচরৈব, অতো বুদ্ধিরগ্নবসু) ॥ ১১৯ ॥ প্রতিজ্ঞাযাহ যো যামিতি। যঃ সংগ্রাহে মাং জয়তি জেয্যতি, যশ্চ মে যম দৰ্পং পদং ব্যাপোহতি  
নাশয়িষ্যতি, যশ্চ লোকে মে যম প্রতিবলস্তল্যবলঃ, স মে নন ভর্তা যামী ভবিষ্যতি (পংগ্রাহে জয়াদেব দৰ্পব্যাপোহিসম্ভবে পুনরুপাদানং নিকংসাদ্রাকরণম্) ॥

— তু তু তু

॥ ১১৮ ॥ কিস্তুত্র যৎ প্রতিজ্ঞাতং মিথ্যা তৎ ক্রিয়তে কথম্। জয়তামগ্নবুদ্ধিত্রাৎ প্রতিজ্ঞা যা কৃত্য পূর। ॥ ১১৯ ॥ যো নাং  
জয়তি সংগ্রাহে যো মে দৰ্পং ব্যাপোহতি। যো মে প্রতিবলো লোকে স মে ভর্তা ভবিষ্যতি ॥ ১২০ ॥ তদাগচ্ছতু শুভেহিহত্র  
নিশ্চিন্তো বা মহাস্রবঃ। মাং জিহ্না কিং চিরেণাত্ৰ পাণিং গৃহ্নাতু মে লঘু ॥ ১২১ ॥ দৃত উবাচ ॥ ১২২ ॥ অবলিষ্ঠামি নৈবং

বায়ুঃ প্রতিবল ইত্যনেন বাজজয়ো নিরন্তঃ। যচ্ছকার্যন্তবর্কাকাভেদাৎ) ॥ ১২০ ॥ তদেতি। ততশ্চ অত্র শুভো মহাস্রবঃ নিশ্চিন্তো বা (বাশদঃ বিশেষঃ  
গ্রহাভাবে) আগচ্ছতু। মাং জিহ্না লঘু জীহ্রং পাণিং গৃহ্নাতু। চিরেণ বিলম্বেন কিং কিং প্রয়োজনমিত্যর্থঃ ॥ ১২১ ॥ দৃত উবাচ ॥ ১২২ ॥ অগস্ত্যনি আহ  
অবেতি। হে দেবি, ত্বম্ অবলিষ্ঠা গবিবত। অসি ভবাসি। মমগ্রতঃ এবং মা ক্রুহি (বচনপাসু কৃমিতার্থঃ)। ত্রৈলোক্যে শুভনিশ্চিন্তয়োরণে কং পুনান্  
তিষ্ঠেং (প্রিয়াঃ কা বান্ধা) ॥ ১২৩ ॥ 'অন্তেষামিতি'। (আস্তাং ত্রয়োবর্জিতা) হে দেবি, অভ্যেযাং দৈতানানাপি সম্মুখে, যুধি যুদ্ধে, যুদ্ধে মিলিতা এতান দেবান।

তিষ্ঠন্তি । স্বং স্ত্রী তত্রাপি একিক। অসহায়া ন স্থাসদীতি কিং পুনরুক্তব্যম্ ॥ ১২৪ ॥ তদেব বিবৃণোতি ইচ্ছাক্তাভীত । যেযাং শুভাদীনাং সংবৃণে যুদ্ধে ইচ্ছাক্তাঃ সকলাঃ সমগ্রা দেবাঃ ন তদ্ব্যঃ (এতদহুতগেগেতি ভুতপ্রভায়াঃ), স্বং স্ত্রী তেযাং সম্মুখং কথং প্রয়াসয়ি ॥ ১২৫ ॥ সা স্বমিতি । সা যজ্ঞবৎ প্রসিদ্ধান্ত-বতী স্বং, তথাপি মর্যেবোক্তা (এবকারেণাত্মেযামত্মমতীচ্ছাপি নিরাকৃত) উপদিষ্টা সতী শুভনিশ্চয়যোগে পার্ণং গচ্ছ । বিপদে দেবমাহ—কেলাকর্ষণনির্দ্ধৃত-

স্বং দেবি ক্রহি নমাগ্রতঃ । ত্রৈলোক্যেক্য কঃ পুনাংস্তিষ্ঠে-দগ্রে শুভ-নিশ্চয়যোগে ॥ ১২৬ ॥ অত্রোধ্যামিপি দৈত্যানাং সর্বে দেবা ন বে যুধি । তিষ্ঠন্তি সম্মুখে দেবি কিং পুনঃ স্ত্রী স্বমেকিক। ॥ ১২৪ ॥ ইচ্ছাক্তাঃ সকলা দেবা-সম্মুখ্যেবাং ন সংযুগে । শুভাদীনাং কথং তেবাং স্ত্রী প্রয়াস্যসি সম্মুখম্ ॥ ১২৫ ॥ সা স্বং গচ্ছ মর্যেবোক্তা পার্ণং শুভ-নিশ্চয়যোগে । কেলাকর্ষণ-নির্দ্ধৃত-গৌরবা মা গমিষ্যসি ॥ ১২৬ ॥ দেবুব্যাচ ॥ ১২৭ ॥ এবমেতদৃ বলী শুভে । নিশ্চয়শ্চাতিব্যব্যান্ । কিং করোগি প্রতিজ্ঞা মে

গৌরবা কেলানামাকর্ষণেন নির্দ্ধৃতং খণ্ডিতং গৌরবং যস্যঃ তথাভূতা সতী মা গমিষ্যসি ন যাস্যসি ? অপি তু গমিষ্যসোব (অথচ কঃ প্রকারোহিহ অঃ বিষয়ঃ, ইশঃ শিবঃ, তেষামাকর্ষণেন শরীরাদিগ্রাহণেন নির্দ্ধৃতঃ গৌরবং যয়া সা স্বং মা গমিষ্যসি ইত্যর্থঃ) ॥ ১২৬ ॥ দেবুব্যাচ ॥ ১২৭ ॥ এবমিতি । (৩ বিধা) এতদ্ব্যক্তং এবমেব উক্তরূপমেব (সোল্লগ্ননয়িদম্) । যতঃ শুভে বলী, নিশ্চয়শ্চাতিব্যব্যান্ অতিশক্তিনান্ । কিন্তু কিং করোগি, যদ্ যস্মাং গে ময়। (৪) প্রতিজ্ঞা;

পূরা অনালোচিত। যোগ্যযোগ্য বেতি ন বিচারিত। ( অথচ কিমিতানাদরে ঈদর্থে বা, ঈষৎ করোগি মারিয়ামৌতার্থঃ ; ময় প্রতিজ্ঞেরং যৎ যাত্যং পত্রা পুত্রং মহিষাসুরবধকালে নালোচিত। ন জ্ঞাত। কিমু ইতূহম্ ইতার্থঃ ) ॥ ১২৮ ॥ স ইতি । স তেন প্রেরিত্বং গচ্ছ, ময়া যৎ তে তুভ্যম্ উক্তং, তৎ এতৎ সন্দম্ আদৃতঃ সাদরঃ সন অম্বরেদ্রায় শুভায় আচক্ষু ক্রাহি ("যদভিপ্রেত্যা বাস্বর্থঃ" ইতি সম্প্রদানত্মাচ্চতুর্থী) । স চ শুভঃ যৎ যুক্তং, তৎ করোতু (গ্রায়যুক্তং বলাৎকারঃ বা করোষিত্যর্থঃ) । ঈষৎসাম্যস্ত্রীজয়েন স্ত্রীরত্নলাভেন<sup>৪</sup> কথনে আদরঃ ॥ ১২৯ ॥ অত্রাপি দেবীমাছাত্ম্যে ইতিপথ্যন্তয়েব পুষ্পিক। সংহিতায়াং দৃষ্টান্তে ) ।

যদনালোচিত। পূরা ॥ ১২৮ ॥ স ইং গচ্ছ নয়োক্তং তে বদেতৎ সর্ববাদৃতঃ । তদাচক্ষু<sup>৪</sup>ম্বরেদ্রায় স চ যুক্তং করোতু যৎ ॥ ১২৯ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বর্গিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে দেব্যা দূতসংবাদঃ ॥ \* ॥ ৫ ভঃ ॥ \* ॥

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ ইত্যাকর্ণ্য বচো দেব্যাঃ স দূতোহমর্মপূরিতঃ । সমাচয়ৎ সমাগম্য দৈত্যরাজায় বিম্ভরাৎ ॥ ২ ॥ তস্মা দূতস্মা তদ্বাক্য-মাকর্ণ্যাস্তররাট্ ততঃ । মক্রেধিঃ প্রাহ দৈত্যানা-মধিপং ধুম্রলোচনম্ ॥ ৩ ॥ হে ধুম্র-

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ পূর্বাধ্যায়ান্তে তদ্বাচক্ষেপ্তি বহুক্রং, তদ্ দূতপ্রত্যাগমনপৃক্ষককথনং সংক্ষেপেণাহ ইতি । স দূতো দেবা। ইতি বচঃ আকর্ণ্য ঋহা, অম্বরেদ্রঃ কোপঃ তেন পূরিতঃ সন সমাগম্য প্রতিনিবৃত্তে, বিম্ভরাৎ বিস্তরমপশুৎ দৈত্যরাজায় সমাচয়ৎ কথয়ামাস (পৃক্ষবচ্চতুর্থী) ॥ ২ ॥ তস্মেতি । 'হে হিহিনস্তম্

অম্বররাট শুল্লঃ তস্ত দূতস্ত স্বগ্রীবস্ত তদাক্যং দেবোক্তরূপম্ আকর্গ্য শ্রদ্ধাসক্রোধঃ ক্রোধসহিতঃ সন্ দৈত্যানামধিপং সেদাপত্তিং ধূম্রলোচনং তৎসংজ্ঞং শ্লাঘ্যং  
 ॥ ৩ ॥ কিং প্রাহেত্যাহ হে ধূম্রৈতি ।\* হে ধূম্রলোচন, ত্বং স্বসৈন্তপরিবারিতঃ নিদ্রসেনাবেষ্টিতঃ সন্ অস্তি শাস্ত্রং ত্বাং তুষ্টাং ত্বরতিপ্রায়াং কেশানানিকর্ষণেন  
 গ্রহণেন বিহ্বলাং ব্যাকুলাং কুত্বেতু্যহং, বলাং ভ্রময় (সামর্থ্যাস্থায় আনয়েতর্থঃ; যদ্বা অগ্নস্ত কস্তাপি বলাং তুষ্টাং নির্ভয়াম্, অতএব যসৈন্তপরিবারি-  
 তত্বস্তাদেশঃ) ॥ ৪ ॥ ন হে কাকিষ্ঠাঃ স্ত্রিয়াঃ এবংবিধসাহসমপ্তি, তস্মাৎ পাক্ষিগ্রাহঃ কোঃপ্যতিবলবান্ ভবিষ্যতীত্যাক্ষহ্যাহ ভীদমিতি । যদি বেতি সম্ভাবনায়াং,

— স্ত্রীচরিত্রঃ

লোচনাশ্চ ত্বং স্বসৈন্ত-পরিবারিতঃ । ভ্রমানয় বলাদুচ্চৈঃ কেশাকর্ষণ-বিহ্বলাম্ ॥ ৪ ॥ তৎপরিভ্রাণদঃ কচ্চিদ্ যদি  
 বোত্তিষ্ঠতেহপরঃ । স হন্তুবোহমরো বার্পি যক্ষো গন্ধর্ব্ব এব বা ॥ ৫ ॥ ঋষিরবাচ ॥ ৬ ॥ তেনাঙগুপ্ততঃ শীঘ্রাঃ ন  
 দৈত্যো ধূম্রলোচনঃ । বৃতঃ যক্য। সম্ভ্রাণা-নস্ভ্রাণাং দ্রুতং যযৌ ॥ ৭ ॥ স দৃক্ । ত্বাং ততো দেবাং তুহিনাচল-সংস্থিতাঃ ।

কচ্চিদপরোহমরো দেবোহপি যাক্ষো গন্ধর্ব্বো বা তৎপরিভ্রাণদঃ সন্ উত্তিষ্ঠতে উত্তমঃ করোতি, তদা ন হত্বা এবোত্তমঃ ॥ ৫ ॥ ঋষি-  
 ততস্তদনন্তরং ন ধূম্রলোচনো দৈত্যঃ তেন গুপ্তেন আঞ্জপুঃ প্রেরিতঃ, শীঘ্রং তৎক্ষণমিব অস্ত্রাণাম্ অগ্নবসদ্বিনাং সহস্রাণাং যষ্টা। যড্ভিরগুণং ১০০০ দান  
 দ্রুতং যযৌ ( আঞ্জপু ইতি কেবলস্ত গিঙো লোপান্নাত্র পুণ্ড্রনিবৃত্তিঃ, গিঙিজোঃ সমুদিতয়ো লোপে এব তদ্বিনানাং ) ॥ ৭ ॥ স ইতি । অমন্তরং স ১০০০ গাং

দেবীম্ অতিপ্রকাশমাং, ভুহিনাচলো হিমবান্ তত্র সংস্থিতাং দৃষ্টা, উচ্চৈরিত্তি প্রাহ। কিং ততঃ? শুভ্রনিশুভ্রমোগূলং সগীপাং প্রসাদি ( “মূলং  
বিত্তেহন্তিকে” ইতি যেদিনী ) ॥ ৮ ॥ বিপক্ষে দোষমাহ ন চেদিত্তি। চেৎ যদি ভবতী ত্রম্ অদা প্রীত্যা মদুভারং ন উপৈযতি, ততস্তদা এতদিত্তং ত্রাং পলাৎ  
কেশাকর্ষণবিহ্বলাং কচগ্রহণাকুলিতাং রুদ্রা নয়ামি নেম্যানীতার্থঃ ॥ ৯ ॥ দেবুব্যাচ ॥ ১০ ॥ দৈতোতি। দৈতোশ্বরেণ শুভ্রেন প্রহিতঃ প্রেরিতঃ ( ইতি

ইতি  
ইতি  
ইতি

জগাদৌচ্চৈঃ প্রয়াহীতি মূলঃ শুভ্র-নিশুভ্রয়োঃ ॥ ৮ ॥ ন চেৎ প্রীতাদ্য ভবতী মদুভার-মুপৈযতি। ততো বলায়মা-  
ন্যেয কেশাকর্ষণবিহ্বলাং ॥ ৯ ॥ দেবুব্যাচ ॥ ১০ ॥ দৈতোশ্বরেণ প্রহিতে বলবান্ বলসংবৃতঃ। বলায়মসি মামেবং -ব্যতঃ  
কিং তে কেরোম্যহম্ ॥ ১১ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১২ ॥ ইতুক্তঃ সোহিভ্যাবৎ তানমসুরো ধুহ্নলোচনঃ। ত্বক্ষারৈর্গৌরব ইঃ  
ভস্ম সা চকারাশ্বিক। ততঃ ॥ ১৩ ॥ অগ ক্রুদ্ধঃ মহাসৈন্য-মসুরাণাং তথাশ্বিকান্। ববর্ষ সায়ৈকস্তৌম্বে-স্তগা জ্বলি-  
শ্বামিবলং, বলসংবৃতঃ সৈন্যবোষ্টিতঃ ( ইতি সভায়বলং ), অস্মপি ত্রং বলবান্ সামর্গ্যযুক্তং, এবমনেন প্রকারেণ মাং বলায়মসি নেযাসি, ততস্তদা অতঃ হে হব  
কিং কেরোমি কিং করিম্যামি? ন কিমপীতার্থঃ ( তব মর্কসামর্গ্যান্তিশয়িত্বাৎ )। ( গুণ্ডিতশ্ব -এবমপি সমর্থস্ত ত্বং কিং কুংসিতং মরণমেব কেরোমি করিম্যামি ত্রাপঃ )  
॥ ১১ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১২ ॥ ইতুক্ত ইতি। স ধুহ্নলোচনোহস্তুরঃ ( অর্পিত ত্রা দেব্যা ) ইতুক্তঃ সন্ ত্রাঃ দেবান্ অভ্যাপনঃ ( গ্রহীতুমিতি শেষঃ )। ৯. ১৩. ১৪. ১৫.

অস্বিকা হুঁকারেণ কোমোদীপকশব্দেন তং ভৃশ্ব চকার ॥ ১৩ ॥ অপেতি । অথ ধুম্রলোচননাশানন্তরম্ অহুস্যাণং তদ্যাহসিত্যং বৃহদ্বনাং ক্রুদ্ধং সং ভীষ্টৈঃ সায়ৈকৈঃ  
বাঠৈঃ, তথা শক্তি-পরম্পরৈঃ শীলৈঃ কুঠারৈশ্চ তথা ববর্ষ ( যথা বাঠৈশ্চ ) শক্তিপরম্পরৈশ্চতর্গৈঃ, দ্বিতীয়াঃ স্থপাংকশ্চতর্গৈঃ, পরম্পরস্থানবানঃ ) ॥ ১৩ ॥ ততঃ  
ইতি । ততঃ অনন্তরং দেব্যাঃ স্ববাহনঃ অসাধারণবাহনঃ সিংহঃ কোপাৎ হুভৈরবম্ অভিভয়ানকং নাদং ধ্বনিঃ কৃদ্ধা ধূতসটিঃ কক্ষিপাতকৈঃ সর্বং মন অস্বদগেননাঃ  
পপাত উৎফালাং কৃদ্ধা পতিতবাহ ॥ ১৫ ॥ তস্ত কন্মাহ কাংশিদিতি । কাংশিচং দৈত্যান্ করপ্রহারেণ চপেটাদিতেন আজঘানেতি সর্বভ্রাতৃগণঃ । অপদান্ কাংশিঃ

পরম্পরৈঃ ॥ ১৪ ॥ ততো ধূতসটিঃ কোপাৎ কৃদ্ধা নাদং হুভৈরবম্ । পপাতাস্বরসেনায়াং সিংহে। দেব্যাঃ স্ববাহনঃ ॥ ১৫ ॥

কাংশিচং করপ্রহারেণ দৈত্যানাস্যেন চাপরান্ । আক্রান্ত্য চাধিরেণাত্মান্ জঘান মহাহাস্তরান্ ॥ ১৬ ॥ কেমাক্ষিঃ পাতিয়া-

মাস নৈখঃ কোষ্ঠানি কেমরী । তথা তলপ্রহারেণ শিরাংসি কৃতবান্ পৃথক্ ॥ ১৭ ॥ বিচ্ছিন্ন-বাহুদ্বিরসঃ কৃতান্তেন তপা-

আসেন তুণ্ডাঘাতেন, অগ্নান্ মহাস্থরান্ আক্রান্ত্য আক্রমণেন, অগ্নান্ অধরেণ যুগপেভাগেন ॥ ১৬ ॥ কেমাক্ষিঃ কেমাক্ষিঃ

কোষ্ঠানি উদরাগি নৈখঃ পাটিয়ামাস বিদীর্ণীচকার । তথা কেমাক্ষিঃ শিরাংসি তলপ্রহারেণ বিকৃতাকুলিপার্ণিঘাতেন পৃথক্ দ্বিধা কৃতবান্

( তলমিত্যুপক্রম্য “চপেটে চ ২সরা”বিত্তি মেদিনী ) ॥ ১৭ ॥ বিচ্ছিন্নেতি । তথা অপরেতস্থরাস্তেন সিংহেন বিচ্ছিন্নবাহুদ্বিরসঃ কৃতান্তং, সিচ্ছিন্নানি বাহুনঃ নিগাহ্যসি চ



যেষাম্ তে তথা । অস্ত্রোষাং কোষ্ঠাং কোষ্ঠমুদরং বিদার্য্য রুধিরং পপৌ । কীদৃক্ ? ধৃতকেসরঃ চলিতকেসরঃ ॥ ১৮ ॥ ক্ষণেনোত্তি । অতিক্রোধযুক্তেন মহাত্মন । মহাপরাক্রমেণ দেব্য্য বাহনেন তেন প্রসিদ্ধেন সিংহেন সৰ্বং ভল্লং সৈগ্যং ক্ষণেন ক্ষয়ং বিনাশং নীতং প্রাপিতং ( দুহাদিন দাঁতিঃ ) ॥ ১৯ ॥ শ্রেষ্ঠেতি । ( দ্বাভ্যামম্বয়ঃ ) । অনন্তরং দৈত্যাদিপতিঃ শুভ্রঃ তন্ম অস্তুরং ধূলোলোচনং দেব্য্য নিহতং ক্ষয়্য, কুংসং সমগ্রং বলং দেবীকেসরিণা দেব্য্য সিংহেন

পরে । পপৌ চ রুধিরং কোষ্ঠা-দন্ত্রোষাং ধৃতকেসরঃ ॥ ১৮ ॥ ক্ষণেন তদ্ বলং সৰ্বং ক্ষয়ং নীতং মহাত্মন । তেন কেস-  
রিণা দেব্য্য বাহনেনাতিকেপিনা ॥ ১৯ ॥ শ্রেষ্ঠা তমস্তুরং দেব্য্য নিহতং ধূলোলোচনন্ । বলঞ্চ ক্ষয়িতং কুংসং দেবীকেসরিণা  
ততঃ ॥ ২০ ॥ চুকেপ দৈত্যাদিপতিঃ শুভ্রঃ প্রস্থুরিতাধরঃ । আত্মাপয়ামাস চ তো চণ্ডমুগ্ধৌ মহাস্তুরৌ ॥ ২১ ॥ হে চণ্ড

ক্ষয়িতং মারিতঞ্চ শ্রদ্ধা চুকেপ কোপং কৃতবান্ । প্রস্থুরিতাধরঃ সন্ তো পুংস্কীকৌ চণ্ডমুগ্ধাথৌ মহাস্তুরৌ আত্মাপয়ামাস চ ( ক্ষয়িতযিতি নামনিঙ্গাং ৯০ )  
॥ ২০ ॥ ২১ ॥ আত্মামেবাহ হে চণ্ড, হে মণ্ড, যুবাং বলভিগ্ধলৈঃ সৈন্তৈঃ পরিবারিতৌ সন্তৌ তদ্র পতত গচ্ছতম্ ( ছান্দসো বিভক্তিবাং ৬৫ ) ।  
গৌরবাং, সৈন্তাভিপ্রায়াধা বলহৃমিতি বিদ্যাবিনোদঃ ) । তত্র গদ্বা চ লঘু কীট্রাং সা কেশেণ আকুমা গৃহীয়া বন্ধা বা আনীয়তাম্ ( ইতু্যন্তরপদচরণাংশঃ )  
॥ ২২ ॥ কেশেষ্টিতি । ( পাদো বাখ্যাতঃ ) । যদি বো যুগ্মাকং আনয়নে গংলযঃ সন্দেহঃ আনেতুং লক্ষ্যাক্ষেপ্যতি বা, তদা প্রপন্ম যুদি গংগ্রামে আশেষাণ্যায়িন্দি

যেমাং তথাভূতৈঃ সৰ্বৈৰ'রস্বৈৰিবিহিত্যতাং সামর্থ্যক্ষিয়ায় প্রক্ষিয়তামিত্যর্থঃ ॥ ২৩ ॥ ততঃ কিমিত্যাহ তস্মাৎমিতি । তস্মাৎ দুষ্টায়াম্ অতিবলদৃশ্যমাং  
হতয়াং হতপ্রায়ায়াং সত্যং (সামর্থ্যনিরাকরণং), সিংহে চ বিনিপাতিতে যারিতে সিংহ, অথ অনন্তরং ঐযদ্বিকারং বদ্ধা গৃহীত্বা নীত্ৰসাপগম্যতাম্ ॥ ২৪ ॥

হে মুগ্ধ বলৈ-বল্লৈঃ পরিবারিতৌ । তত্র গচ্ছত গত্বা চ সা সমানীয়তাং লযু ॥ ২২ ॥ কেশেষাংস্বম্য বদ্ধা বা যদি বঃ  
সংশয়ো যুধি । তদান্যেশেষায়ুধৈঃ সৰ্বৈৰ-রস্বৈৰিবিহিত্যতাম্ ॥ ২৩ ॥ তস্মাৎ হতয়াং দুৰ্ঘটয়াং সিংহে চ বিনিপাতিতে । নীত্ৰ-  
মাগম্যতাং বদ্ধা গৃহীত্বা তা-মথাস্বিকাম্ ॥ ২৪ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বার্ণিকে মনুস্মরে দেবীমাহাত্ম্যো শুভনিশুভ-  
সেনানী-ধূত্ৰলোচনবধঃ ॥ \* ॥ ৬ অঃ \* ॥

ধাষিরবাচ ॥ ১ ॥ আজ্ঞপ্তাস্তু ততো দৈত্য-শচমুগুপ্তরোগমাঃ । চতুরঙ্গবলোপেত যযু-রভ্যাদ্যতামুধাঃ ॥ ২ ॥

ধাষিরবাচ ॥ ১ ॥ আজ্ঞপ্তাস্থিতি । তত আজ্ঞাপ্রাপ্যনন্তরং, চণ্ডমুগুপ্তৌ পুরোগমৌ মুখাভ্যেন অগ্রাগামিনৌ যেমাং তে দৈত্যাস্ত পুরৌক্তপ্রকারেণাক্রান্তি-  
সন্তঃ, চত্বরি হস্তাশ্বরথপাদাতরুপাণি অঙ্গানি যেমাং তৈর্দলৈঃ সৈন্তৈরুপেতা যুক্তাঃ, অভ্যুজ্ঞাতানি উদ্ধীকৃতানি আয়ুধানি যৈশ্চুখাত্তাঃ সন্তো যযুঃ ( “বলং গম্যমসে



ব্যাচক্রতুঃ। বস্তুতস্তু ক্রোধে আমিকেৎপত্তিরপ্রসিদ্ধিব কেনাপি বর্ণিতব্রতাব্যং, কিঞ্চানকারশাজ্ঞে বক্তৃত্তব রোদ্ভরসত্ত্ব প্রতিপাদিতা, যথা “রৌদ্ৰে ক্রোধঃ স্থায়ী-  
ভাবো ব্রজেন ক্রুদ্ধাধিদৈবতঃ। আলম্বনময়িস্তত্র তচেষ্টৌদ্ধীপনং বত”মিতি। চামুণ্ডায়াঃ শ্রীমতাকারণস্ত ক্রোধস্ত্র তমঃকার্যাব্যং, তমসস্ত্র শ্রীমতয়া সা। তামসী  
কৃষ্ণবর্ণিব জাতোতি যন্তব্যম্; যথা ত্ৰিভিদ্ধিহিরোচিয়ে। জটায়। জাতো বীরভদ্রঃ শ্রীমবর্ণে বভূব, তথাচ চতুর্থে “ক্রুদ্ধঃ সূদঠৌষ্টপুটঃ স ধৃজ্জিট্জ্জটাং ত্ৰিভিদ্ধি-  
সটৌগ্রোরোচিমম্” ইতু্যপক্রম্য “ততোহতিকায়ন্তুমুবা স্পৃশানিবং সহস্রবার্জ্পনকক ত্রিসূর্যাদক” ইতি বর্ণিতঃ; ন হি তত্র সমবায়িকারণজটায়। গুণঃ শ্রীমতা, কিন্তু

প্রতি। কোপেন চাস্যা বদনং মসীবর্ণ-যতুভদা ॥ ৫ ॥ ভুকুটী-কুটিলান্তস্যা। ললাট-কলকাদ্ দ্রুতম্। কালী করাল-  
বদনা। বিনিক্ষান্তাসিপাশিনী ॥ ৬ ॥ বিচিত্র-খটাঙ্গপরা। নরমালাবিভূষণ। দ্বীপিচর্শ্ব-পরীধান। গুহ্মাংসাত্তিভৈরবা ॥ ৭ ॥

পিঙ্গতা, তথাপি ততো ঘনশ্রমো জাতঃ, তস্মাহুক্তমেব কারণং সম্বচ্ছতে ইত্যঙ্গং প্রপঞ্চে ন ॥ ৫ ॥ ভুকুটীতি। তজ্জাঃ কোষিক্যাঃ ভুকুট্যা কুটিনাং সঙ্কুচিতাং  
ভীষণাদিতি বা ললাটকলকাং ললাটপট্টাং ক্রুতং কালী কৃষ্ণবর্ণা দেবী বিনিক্ষান্তা নিঃসৃত। কৌদূনী? করালবদনা ভীষণাননা (“করালং দন্তের তুদে চাংগে  
চাভিধেবং” ইতি মেদিনী)। অসিপাশিনী অসিঃ পাশশ্চ তদুৎকল ॥ ৬ ॥ তাং বর্ণয়তি দ্বাভ্যাম্। বিচিত্রং পট্টাঙ্গং লোহময়্যস্তি। বিনোদঃ  
কোভক ইতি প্রসিদ্ধং ত্রিশং বা ধরতি (পচাদিঃ)। নরশব্দেনাত্র সামান্যভিধানেহপি সম্ভবপরস্বাং নরশির উচ্যতে (“নরেন্দ্রযূর্ধ্বপ্রজমুদন্তী” ইতি বামন-

পূরণাৎ, স্ততো চ “নিরোমালাবিভূষণে”তি বক্ষ্যমাণাৎ ) তন্নয়ী যান্না বিভূষণং যন্তাঃ । দীপিনো ব্যাস্রস্য চম্প পরীধানং বস্ত্রং যমাঃ । শুষ্কং নাংসং যমাঃ  
( কৃশস্বাৎ ) । অতএবাত্তৈতরবা অতিভয়ানকা ॥ ৭ ॥ অতীতি । অতিবিস্তারম্ অতিপ্রকটিতং বদনং যন্তাঃ । জিহ্বায়া ললনং চলনং ত্রেন ভীষণা ।  
নিমগ্নে অত্যন্তগস্তীরে আরক্তে নয়নে যস্য্যাঃ । নাদেন শব্দেন আ সর্ববতঃ পুরিতানি দিগ্ভুখানি বয়া ( অমূর্ত্তেনামৃতিয়া পূরণামলবান্ অমৃ  
মহত্বমেব শব্দস্যোতি তাৎপর্যম্ ) ॥ ৮ ॥ সা বেগেনেতি । মহাস্থরান্ ঘটয়ন্তী স্তী বেগেনাভিপতিত্বা আভিমুখ্যেন গচ্ছন্তী সা তত্র গৈগে সুব্রাহ্মণ্যঃ বৃহদান্

অতিবিস্তার-বদনা জিহ্বাললন-ভীষণা । নিমগ্নারক্তনয়না নাদাপূরিতদিগ্ভুখা ॥ ৮ ॥ সা বেগেনাভিপতিত্বা ঘটয়ন্তী মহাস্থরান্ ।  
সৈন্যে তত্র স্থরারীণা-মভক্ষয়ত তদ্ বলম্ ॥ ৯ ॥ পার্শ্বিগ্রাহী-বোধবর্জা-সনম্বিতান্ । সনাদায়ৈকহস্তেন মুখে চিক্ষেপ  
বারণান্ ॥ ১০ ॥ তথৈব বোধং তুরগৈ রথং সারথিনা সহ । নিক্ষিপ্য বক্ত্রে দশনৈ-ক্ষচর্বয়তাত্তিভৈরবম্ ॥ ১১ ॥

অভক্ষয়ত ( ঘটয়ন্তীতি “হিংসার্থাশ্চ”তি হস্তেণ্ডুরাদিহ্বাৎ নিঙ্ ) ॥ ৯ ॥ এতদ্বিরূপেতি চতুর্ভিঃ । পার্শ্বতি । বারণান গজান্ একহস্তেন সনাদায় পৃষ্ঠে দ্য যুর  
চিক্ষেপ ক্ষিপুবতী । কীদৃশান্ ? পার্শ্বিগ্রাহো বোধস্য পশ্চাদ্রক্ষকঃ, অক্ষুশগ্রাহী বোধস্য পূরঃ স্থিহা গজনিয়ামকঃ, বোধিঃ প্রহৃত্তী, ঘণ্টা আভরণং,  
তাভিঃ সম্বিতান্ যুক্তান্ ( শব্দকাক্ষুশ-শব্দ-শরেত্যাদি-শভেদদর্শনাৎ অক্ষুশস্তালবাণঃ ) ॥ ১০ ॥ তথৈব বোধং তুরগৈরথং সহ বোধম্ অশ্ববারং

(জাত্যপেক্ষা একবচনং), সারথিনা সহ রথং (এখিনাপীতি জেয়ং) বক্তে সুপ্তে নিক্ষিপ্য অতিভৈরবম্ অতিভয়ানকং যথা স্যাৎ তগা চক্ষয়তি (শ্বেতূহম্) ॥ ১১ ॥ একমিতি । একং দৈত্যং কেশেষু জগ্রাহ গৃহীতবতী । অথ চ অপরাং গ্রীবায়াং জগ্রাহ । অগ্নং পাদেনাক্রমা জগ্রাহ (অপোথয়দ্বিত্বপ্তর-ক্রিয়া সম্বন্ধে বা) । অত্মম্ উরসা বক্ষসা অপোথয়ৎ মদিতবতী ॥ ১২ ॥ তৈরিতি । তৈর্মহাশরৈর্মুক্তানি শস্ত্রাণি মহাশ্রাণি চ মুখেন জগ্রাহ । অনন্তরঃ একং জগ্রাহ কেশেষু গ্রীবায়ামথ চাপরম্ । পাদেনাক্রম্য চৈবানু-সূরসান্যমপোথয়ৎ ॥ ১২ ॥ তৈর্মুক্তানি চ শস্ত্রাণি মহাশ্রাণি তথাস্থরৈঃ । মুখেন জগ্রাহ রুবা সর্ব-মসুরাণাং মহাস্থনাম্ । সমদ্যভক্ষয়চ্চাত্মা-নন্যাস্তচাতাডয়ৎ তথা ॥ ১৪ ॥ অসিনা নিহতঃ কেচিং খট্টাঙ্গতাদিতাঃ । জগ্যু বিনাশ-মসুরা দস্তাগ্রাভিত্তাস্তথা ॥ ১৫ ॥ ক্ষণেন তদ্ বলং সর্ব-মসুরাণাং নিপাতিতম্ । দূর্য্য চণ্ডোহভিহুদ্রাব হাঃ কালী-মতিভীষণম্ ॥ ১৬ ॥

রুবা ক্রোধেন দশনৈঃ মথিতানি চূর্ণিতানি চ (তয়েত্বাহং ; চকারেতি ক্রিয়াপদং বা উহং, করোতে: ক্রিয়াসামান্যভিধায়িকং) ॥ ১৩ ॥ বলিনামিতি । বিনাশ-বলবতাং মহাস্থনাং মহাকায়ানাম্ অসুরাণাং তং সর্বং সৈন্তং সমদ্য মদিতবতী, অভক্ষয়চ্চ । অগ্ন্যাংশাস্তুরান তথা অত্যাডয়ৎ তাদিতবতী ॥ ১৪ ॥ অসিনোঃ । কেচিং অসুরা অসিনা নিহতঃ সন্তঃ বিনাশং জগ্যুঃ । কেচিং খট্টাঙ্গেন তাদিতাঃ, তথা কেচিং অসুরাঃ দস্তাগ্রাভিত্তাস্তদস্তাগ্রাস্তাডিতা দষ্টাঃ সন্তো বিনাশং অগ্নি-বিত্যস্বঃ ॥ ১৫ ॥ ক্ষণেনেতি । চণ্ডোহসুরঃ অসুরাণাং তং সর্বং বলং সৈন্তং ক্ষণেন নিপাতিতং দৃষ্ট্য অতিভীষণং তং কালীম্ অতিভুদ্রাব আভিঃপথে

ଅଧୀବଂ ॥ ୧୬ ॥ ଶରେତି । ମହାସ୍ବରଚ୍ଚଃ ଶ୍ରୀମୈରତିଭୟାନୈକଃ ଶରବର୍ବିତାଂ ଶ୍ରୀମାଂଶ୍ରୀଃ ଭୀଷଣନୟନାଂ କାଳୀଃ ଛାଦୟାମାସ ଆଞ୍ଜାଦିଦ୍ରବ୍ୟାନ୍ । ଯୁଗେଷ୍ଠସ୍ମରନ୍ତ ଶ୍ରିଃ ପ୍ରେସିତଃ ।  
 ସହସ୍ରଶୋ ବହୁସହସ୍ରଶ୍ଚକ୍ରାନ୍ତେଛାଦୟାମାସ ॥ ୧୭ ॥ ତାନୀତି । ତାନି ଚକ୍ରାଣି ତଥା ଗିଳିତାନି ଇତ୍ୟୁପମାନୁଷେନାହ—ତାନି ଅନେକାନି ଚକ୍ରାଣି ତସ୍ୟା ଯୁଧ୍ୟଂ ବିଜ୍ଞାନାନି ବିଶାନ୍ତି  
 ସନ୍ତି ତଥା ବଭୁଃ ଶୁକ୍ରାଭିରେ, ଯଥା ସ୍ବହୁନି ଅତ୍ୟନେକାନି ରବିବିଷ୍ଣୁନି ସୂର୍ଯ୍ୟମଣ୍ଡଳାନି ସନୋଦରଂ ପ୍ରବିଶାନ୍ତ ମନ୍ତି ଭାନ୍ତିତ୍ୟନ୍ୟଃ ( ଅଦ୍ଭୁତୋପମେନ, ଏକଦା

ଶରବର୍ବିତାହାଭୀମୈ-ଭୀମାଂଶ୍ରୀଂ ତାଂ ମହାସ୍ବରଃ । ଛାଦୟାମାସ ଚତ୍ରେଷ୍ଠ ମୁଖଃ ଶ୍ରିଃ ମୁଖଃ ॥ ୧୭ ॥ ତାନି ଚକ୍ରାଣ୍ୟନେକାନି

ବିଶମାନାନି ତନ୍ମୁଖ୍ୟା । ବଭୁର୍ଯଥାକିବିଷ୍ଣୁନି ସ୍ବହୁନି ସନୋଦରା ॥ ୧୮ ॥ ତତ୍ତେ । ଗ୍ରହାମାଂଶ୍ରବା ଭୀଷଂ ଭୈରବନାଦିନା । କାଳୀ

କରାଳବଦ୍ରାନ୍ତ-ହୃଦ-ଦର୍ଶ-ଦର୍ଶନୋଞ୍ଜ୍ଵଳା ॥ ୧୯ ॥ ଉପାୟ ଚ ମହାସିଂ ହଂ ଦେବୀ ଚନ୍ଦ୍ରମାପାବତ । ପୂର୍ବୀୟା ଚାସ୍ୟ କେଶେଷୁ ଶିରଶ୍ଚୁନା-

ବହୁତର-ରବିବିଷ୍ଣୁନାମୁଦୟାମାସନ୍ତବାଂ ; ସହା ଶ୍ରାବ୍ୟକାଳେ ଯୁଗପଂ ଛାଦୟାଦିତୋଦୟାହୁପମେୟଂ, କିନ୍ତୁ ତଦା ସନାତାବାନ୍ଦାହକାଳୀନାକ୍ଷତାନ୍ତେ ବର୍ଷଣୋପକ୍ରମକାଳେ ମଗ୍ଧବତି (ଯ) । ଚକ୍ରାଣି  
 ରବିବିଷ୍ଣୁତୂଲ୍ୟାନି, ନିବିଡ଼ସନମଣ୍ଡଳୀତୂଲ୍ୟାଂ କାଳୀବଦନମ୍ ) ॥ ୧୮ ॥ ତତ୍ତ୍ୱଃ ଇତି । ଚକ୍ରାନ୍ତଦନନ୍ତରଂ କାଳୀ ଆତ୍ମରୁନା ଆତିକ୍ରୋଧେନ ଭୀଷଂ ସହା ଶ୍ରୀତୁଥା ଗ୍ରହାମ ଶ୍ରୀହାମ ଶ୍ରୀହାମ

କ୍ରତବତୀତାର୍ଥଃ । କୀଦୃଶୀ ? ଭୈରବମ୍ ଅତିଭୟହରଂ ନାଦିତୁଂ ଶୀଘ୍ରଂ ଯନ୍ତାଃ ସା ଭୈରବନାଦିନୀ । କରାଳଃ ଭୀଷଂ ସଦ୍ରତୁଂ ତାମ୍ବିଷ୍ଣୁରୁର୍ଯ୍ୟଧ୍ୟୋ ହୁଃସ୍ତେନ ଦୁଃସ୍ତେନ ଦୁଃସ୍ତେନ  
 ଅତିଭୟାନକା ଯେ ଦର୍ଶନାତ୍ମେଷ୍ଠଜ୍ଞା ଅତିଦୀପ୍ତିମତୀ ॥ ୧୯ ॥ ଉପାୟେତି । ଦେବୀ କାଳୀ ହିଂ ଇତି କୋପାହ୍ରିନାକ୍ଷକଂ କୁଞ୍ଜ । ମହାସିଂ ମହାପାଞ୍ଚୁଗାମ୍ ଉପାୟ

(উত্থাপ্য) উদ্ধীকৃত্য চণ্ডং চণ্ডাস্থর-মধাবত । অস্ম্য চণ্ডস্য কেশেযু গৃহীত্ব । তেন অসিনা শিরোরুচ্ছিনচ্চ । অষ্ট্রোঃ কৃতমপি বাখ্যাজ্জর-মরমণীয়দ্বিত্রোপোক্ষিকম্ (দ)  
 “হং প্রাণেহঙ্গীকৃতৌ রোষে” ইতি বিধঃ ॥ ২০ ॥ অর্থোক্তি । অথ চণ্ডবধানস্তরং যুগোহপি চণ্ডং নিপাতিতং দৃষ্ট্ব । তাং কালৌ কৃষ্য তমপি খড়্গগাভিহতং  
 কৃষ্বা ভূমৌ অপাতয়ং ॥ ২১ ॥ হতেতি ॥ ততো যুগবধানস্তরং হতশেষং সৈন্তং ( কৰ্ছ ) মহাবীৰ্য্যঃ মহাবলং চণ্ডং যুগুঞ্চ নিপাতিতং দৃষ্ট্ব । ভয়াতুরং সৎ দিত্ব ॥ ভেজে

সিনাচ্ছিনৎ ॥ ২০ ॥ অথ যুগোহপ্যধাবৎ তাং দৃষ্ট্ব । চণ্ডং নিপাতিতম্ । তমপ্যপ্যভয়দু ভূমৌ ॥ খড়্গগাভিহতং কৃষ্বা  
 ॥ ২১ ॥ হতশেষং ততঃ সৈন্তং দৃষ্ট্ব । চণ্ডং নিপাতিতম্ । যুগুঞ্চ স্মমহাবীৰ্য্যং দিশে ॥ ভেজে ভয়াতুরম্ ॥ ২২ ॥ শিরুচণ্ডস্য  
 কালৌ চ গৃহীত্বা যুগমেব চ । প্রাহ প্রচণ্ডাট্টিহাস-মিশ্রযতোত্য চণ্ডিকাম্ ॥ ২৩ ॥ ময়া তবাত্রোপকৃতৌ চণ্ডমুগ্ধৌ মহাপশু ।

পলায়িতবৎ ( দিশ ইতি বহুবচনং কান্দিনীকতয়া পস্থানং ত্যক্ত্বাপি যথাদৃষ্টদেপং গতিমিতি গম্যতে । হতেভ্যঃ পেষং হতশেষম্ ) ॥ ২২ ॥ শির ইতি । কান্দী  
 চণ্ডস্য শিরঃ, যুগমেব চ লক্ষণয়া যুগাস্থরস্য যুগমিত্যর্থঃ ( বদ । স্থপাং স্থবিতি ব্যবস্থয়া যষ্ট্যর্থঃ দ্বিতীয়া, যুগস্য চ শির ইত্যর্থঃ ) প্রচণ্ডাট্টিহাসমিশ্রং প্রচণ্ডাট্টি-  
 শাসনৌ অট্টৌ মহান্ হাসশেচি তেন নিম্নাং মিশ্রণং যত্র কথনে তং যথা স্যাজ্জথা চণ্ডিকাম্ অজ্যোত্য আভিমুখোনাগত্য গ্রাহ উক্তবতী ॥ ২৩ ॥ কিং প্রাহেণ্ডাহ মর্থোতি ।



অত্র যুদ্ধযজ্ঞে যুদ্ধমেব যজ্ঞঃ ( হিংসায়াং স্বর্গদায়িত্বাৎ ) তত্র, তব সম্বন্ধে চণ্ডমুণ্ডে মহাপশু ময়া উপস্থিতো উপর্টোকির্ত্তে ।  
 হনিষ্যসি মারয়িষ্যসি ( এতেনৈব তাবৎ মহাপশু ইতু্যক্তং, যজ্ঞে পশোরৈবালস্তনাৎ ; হর্ষজনকমিদমুপটৌকনম্ ) ॥ ২৪ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ২৫ ॥ তাবিত । অনন্তরম্

আনীতোঁ তোঁ চণ্ডমুণ্ডো মহাসুরোঁ ( অত্রাপোকদেশে সমুদায়োপচারাৎ ) দৃষ্ট্ৱ। চণ্ডিকা কোষিকী কালীঃ লনিতং মধুরং বচঃ উবাচ (অত্র লনিতমিতি বিশেষণসম্পর্ক স্বায়

যুদ্ধযজ্ঞে স্বয়ং শুভ্রং নিশুভ্রঞ্চ হনিষ্যসি ॥ ২৪ ঋষিরুবাচ ॥ ২৫ ॥ তাবনীতোঁ ততোঁ দৃষ্ট । চণ্ডমুণ্ডোঁ মহাসুরোঁ । উবাচ  
 কালীং কল্যাণী লনিতং চণ্ডিকা বচঃ ॥ ২৬ ॥ যস্মাচ্চণ্ডঞ্চ মূণ্ডঞ্চ গৃহীত্বা ব্রূপাপাত । চামুণ্ডেতি ততোঁ লোকে খ্যাতা  
 দেবি ভবিষ্যসি ॥ ২৭ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে চণ্ডমুণ্ডবধঃ ॥ \* ॥ ৭ অঃ ॥

ধাত্বর্থোপনীতস্যাপি বচ ইত্যাস্যোপাদানম্ ) । কীদৃশী ? কল্যাণী শুভকরী ॥ ২৬ ॥ কিম্বাচেত্যাহ যস্মাদিতি । অং যস্মাদ্ভেতোঃ চণ্ডঞ্চ মূণ্ডঞ্চ গৃহীত্বা উপাপাত।  
 মৎসরীপয়াগত, ততোঁ দেতোঃ হে দেবি লোকে জগতি চামুণ্ড। ইতি খ্যাতা বিক্রতা ভবিষ্যসি (চণ্ডমুণ্ডোঁ বিদোতে অস্যা ইতি চামুণ্ডা, শৈবিকী সিদ্ধিঃ (ত) ; অর্থাপি  
 চণ্ডমুণ্ডাবিতি পূর্ববৎ, লক্ষণয়া বা ) ॥ ২৭ ॥

—  
 ক্রী  
 ক্রী  
 ক্রী

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ চণ্ডে চেতি । ( দ্বাভ্যামন্থঃ ) । চণ্ডে চ নিহতে সতি, যুগে চ দৈত্যে বিনিপাতিতে সতি । বহ্নেযু ভূমিতরেযু চ সৈন্তেযু ক্ষয়িত্তেযু সংস্র, ততোহনন্তরম্ অন্তরেশ্বরঃ শুভঃ কোপপরাধানচেতাঃ ক্রোধপরবশচিত্তঃ সন্ দৈতানাং সর্বদৈতানাং সর্বাণি চ ভানি সৈন্তানি চেতি নিঃশেষাশ্রয়-  
বলানাং, যদ্বা সর্বাণি নিঃশেষাণি সৈন্তানি যেমাং তথাভূতানাং দৈতানাম্ উদযোগং যুদ্ধার্থং সম্ভারন্তম্ আদিদেণ আজ্ঞপ্তবান্ । ই ইতি, স্তবধসম্বোধনে, পাদ

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ চণ্ডে চ নিহতে দৈত্যে যুগে চ বিনিপাতিতে । বহ্নেযু চ সৈন্তেযু ক্ষয়িত্তেযু সংস্রবঃ ॥ ২ ॥ ততঃ

কোপপরাধীন-চেতাঃ শুভঃ প্রতাপবান্ । উদযোগং সর্বদৈতানাং দৈতানা-মাদিদেহ হ ॥ ৩ ॥ অত্র সর্ববলৈর্দৈত্যাঃ  
যড়্ভীতি-রুদায়ুধাঃ । কন্থনাং চতুরশীতি-নির্যাস্ত স্ববলৈরুতাঃ ॥ ৪ ॥ কোটিবীর্ঘ্যাণি পঞ্চাশ-দস্বরূপাং কুলানি বৈ । শতং কুলানি

পূরণে বা । কৌদৃগঃ ? প্রতাপবান্ অতিতেজোযুক্তঃ ॥ ২৩ ॥ কিমাদিদেহেণেত্যাং অদোতি । অত্র অশ্রমহান উদায়ুধা উদ্যতাজ্ঞাঃ সন্তঃ সততং পার্শ্বদিকিম  
ইত্যর্থঃ যড়্ভীতির্দৈত্যাঃ সর্ববলৈঃ সহ নির্যাস্ত নির্গজন্ত । যদ্বা উদায়ুধং জ্ঞকাঃ যড়্ভীতিসংখ্যাকাঃ (মুখ্যানানিয়ং সংখ্যা, এবমুত্তরত্র) । কন্থনাং কন্থসংজ্ঞকং দৈত্যা-  
কুলোৎপন্নানাং তদেদেশোদ্ভবানাং বা যথা চতুরশীতিঃ চতুরশীতিসংখ্যাকাঃ সর্বলৈর্কৃতাঃ সন্তে নির্যাস্ত ॥ ৪ ॥ কোটিবীর্ঘ্যাণি কোটিবীর্ঘ্য-

সংজ্ঞকাস্বরকুলোলোদুবানি অস্বরগাং পঞ্চাশং কুলানি গণাঃ মমাজয়া নির্ধাক্ত। ধৌত্রাগাং ধূত্রবংশোলোদুবানিঃ শতঃ কুলানি নির্গচ্ছন্ত ( প্রথমে লোট  
 “কুলং জনপদে গোত্রে সজাতীয়গণেহপি চ। ভবনে চ তনৌ ক্লাব”মিতি মেদিনী ) ॥ ৫ ॥ কালকা ইতি। কালকাঃ কালকসংজ্ঞাভিধাঃ, দৌহ্রতা  
 দুহ্রতানামাস্বরবংশজাঃ ( দৌহ্রদা ইতি ক্চিৎ পাঠঃ ), মৌর্য। মুরবংশজাঃ, তথা কালকেয়াঃ কালকানামি কশ্যাপপত্নী তদপত্যনি এত চত্বরে  
 গণাঃ সজ্জা গৃহীতসমাহাঃ সন্তঃ মমাজয়া যুদ্ধায় স্বরিতাঃ সংজাতস্বরাঃ সন্তো নির্ধাক্ত ( আজ্ঞয়েত্যত্র “ইকশ্যাসবর্ণে নিভাসমাসবজ্জন্” ইত্যসন্ধিঃ। কালক।

— ত্রুতৌ

১৫

ধৌত্রাগাং নির্গচ্ছন্ত মমাজয়া ॥ ৫ ॥ কালকা দৌহ্রতা মৌর্যাঃ কালকেয়াস্তথাস্বরাঃ। যুদ্ধায় সজ্জা নির্ধাক্ত অস্বর।  
 স্বরিতা মম ॥ ৬ ॥ ইত্যাজ্ঞাপ্যাস্বরপতিঃ শুন্তো ভৈরব-শাসনঃ। নির্জগাম মহাসৈন্ত্য-মহৈশ্রবহুভিব্রতঃ ॥ ৭ ॥ অয়াত্তং

দৌহ্রতা ইতি শিবাদেয়াক্রতিগণস্বাটুণ, তস্তেদনিমিত্তিবিবক্ষ্যাবা ॥ ৬ ॥ ইতীতি। অস্বরপতিঃ শুন্তঃ ইত্যেবমাজ্ঞাপ্য আজ্ঞাং কৃষ্য বহুভির্য়হাসৈন্ত্যমহৈশ্রবঃ সন্  
 নির্জগাম ( আজ্ঞাপোতি “অগ্নেহপি ধাতবঃ ক্চিৎ” দিতি চৌরাদিকো গিঙ, যদ্বা আজ্ঞাপনং বোদনং, বোদমিত্র ইতি বোদনিবক্ষ্যায়াঃ প্রয়োজকে গিঙ )। স্বাদৃক্ ?  
 ভৈরবং ভয়জনকং শাসনমাজ্ঞা যস্য ( অগ্নেব সর্কে ঠৈধব যযুঃ ) ॥ ৭ ॥ অয়াত্তমিতি। চণ্ডিকা কোষিকী অত্র ভৌবগম্ অভিব্যজনকং ত্বং নৈন্ত্যম অয়াত্তম  
 আগতং দৃষ্ট। ধরণীগদনান্তরং ভুবলৌকিকং জ্যায়নৈঃ নৌবীটিকারপরিমিতঃ পুরয়ামাস পরিব্রবতী। যদ্বা গগনপদেন গগনগামিনো দেবঃ উপবক্ষ্যতে,

ধরনীসংহচর্যাং তল্লোকস্ত গ্রহণং, স্বর্গপর্বাস্তুনিভার্থঃ । যদ্বা পতযোজনাস্তুমাকশমিতি কবিসম্প্রদায়োপেক্ষয়া ॥ ৮ ॥ তত ইতি । তে নৃপ, ততঃ অনন্তরং সিংহোহভাব মহা-  
 নাদং কৃতবান্ । অশ্বিক। কোদিক। চ ঘণ্টাশ্বনেন তান্নাদান্ জ্যাশ্বনসিংহধ্বনীন্ উপবৃংহয়ৎ উপবৃংহয়ৎ ( অঙ্গাগবাভাবচ্ছান্দমঃ ) বস্কিতবতী  
 ( অতীবোপাপবৃংহয়ং ইতি ব্যবহিতেনাশ্বয়ে বা ) ॥ ৯ ॥ কাল্যাঃ নাটোপপদ্যাবিক্যমাহ ধৃতবিত্ত । কালী চায়াগ্ৰা ভীষণানিনাদেঃ ধনুর্জ্যাসিংহঘণ্টানি।

চণ্ডিকা দৃফ্ । তৎ সৈন্য-মতিভীষণম্ । জ্যাশ্বনৈঃ পূরয়ামাস ধরনী-গগনান্তরম্ ॥ ৮ ॥ ততঃ সিংহে। মহানাদ-মতীব  
 কৃতবান্ নৃপ । ঘণ্টাশ্বনেন তান্নাদান্-নশ্বিক। চোপবৃংহয়ৎ ॥ ৯ ॥ ধনুর্জ্যাসিংহ-ঘণ্টানাং শব্দাপূরিতদিদৃশু। নিনাদৈ-  
 ভীষণৈঃ কালী জিগেয বিস্তারিতানা ॥ ১০ ॥ তং নিনাদমুপশ্রুত্যা দৈত্যসৈন্যৈশ্চতুর্দিশম্ । দেবী সিংহ-স্তপা কালী সরোঃমঃ

( দ্বিতীয়ায়াং যজ্ঞী ) ধনুর্জ্যাসিংহঘণ্টাঃ ( তদ্ধনীন লক্ষণয়া ) জিগেয অভিভূতবতী ( যদ্বা নাদানিভূতম্ ) ; ধনুর্জ্যাদীনঃ পদ্যানভিভূয তস্তা নাদা  
 অতিমহাস্তো জাত ইত্যর্থঃ । এতৎ প্রতিপাদকং বিশেষণমাহ—শব্দাপূরিতদিদৃশু। শব্দৈঃ আ সম্যক্ পূরিতানি দিদৃশুথানি দিগো দয়া ; বিস্তারিতানা  
 অতিপ্রকটিতমুখী ( অত্র জ্যাধিনির্নাদৈঃ কৰ্ভুভিঃ কালী জিগো ইতি বিদ্যাবিনোদাদিবাখ্যান-বসমীচীনং, পূৰ্ণং তস্তা উপাদানভাবাৎ । জি জি অভিভবেৎ বাভুঃ,  
 আত্মনেপদমার্থম্ ) ॥ ১০ ॥ তন্মিতি । দৈত্যসৈন্যৈঃ ( কৰ্ভুভিঃ ) তং জ্যাধিজনিভং নিনাদম্ উপশ্রুত্যা নয়াপে গ্রহণ। দেবী কোদিকী, সিংহঃ, ( তথাশব্দার্থঃ ) কালী

চতুর্দ্দিশাং চতস্রযু দিগ্ধু পরিবারিতাঃ চতুর্দ্দিগ্ধু আবৃত্য অন্তঃস্থাপিতা ইত্যর্থঃ (দুহাদিত্রাং দ্বিকর্ণকতা) । কৌদৃশৈঃ ? সরোষৈঃ ক্রোধসহিতৈঃ ॥ ১১ ॥ এতস্মিন্মিতঃ ।  
( দ্বাভ্যামঘঃ ) । হে ভূপ, এতস্মিন্নন্তরে অবসরে সুরদ্বিষাম্ অসুরাণাং বিনাশায়, অগরসিংহানাং দেবশ্রেষ্ঠানাং ভবায় উদ্ভবায় সম্পাদে ইতি যাবৎ,  
ব্রহ্মেশগুহবিঘূনাং চতুর্মুখশিবকান্তিকেয়হরীণাং, তথা ইন্দ্রস্য, চকরাং বরাহনৃসিংহযোচ্চ ( যদা বিষ্ণুপদেনৈব তয়োরাপি গ্রহণং বস্তুভেদাৎ ) শক্যাঃ  
পরিবারিতাঃ ॥ ১১ ॥ এতস্মিন্নন্তরে ভূপ বিনাশায় সুরদ্বিষাম্ । ভবায়ামরসিংহানাং-মতিবীর্য্য-বলান্বিতাঃ ॥ ১২ ॥ ব্রহ্মেশ-

১১

১২

গুহ-বিঘূনাং তথেন্দ্রস্য চ শত্রুয়ঃ । শরীরেভ্যো বিনিষ্ক্রম্য তদ্রূপৈশ্চর্য্যকং যযুঃ ॥ ১৩ ॥ यस্য দেবস্য যজ্ঞপং যথা-  
ভূষণ-বাহনম্ । তদ্বদেব হি তচ্ছক্তি-রসুরান্ যোদ্ধুন্মায়বো ॥ ১৪ ॥ হংসযুক্ত-বিমানাগ্রে সাক্ষসূত্র-কমণ্ডলুঃ । আয়াত।

সামর্থ্যরূপা দেব্যাঃ (অর্থাত্ত্রেয়াঃ) শরীরেভ্যো বিনিষ্ক্রম্য নিঃসৃত্য তদ্রূপৈশ্চর্য্যকমিত্যুপলক্ষিতাঃ চাপ্তকং যযুঃ প্রাপ্তবত্যাঃ । কিম্ভূতাঃ ? অতিশয়িতঃ বীযান্  
সাহো বলং সামর্থ্যং চ তাভ্যাম্ অধিতা যুক্তাঃ ॥ ১২ । ১৩ ॥ তদ্রূপৈরিতি যজ্ঞকং, তদ্বিরূপেণৈতি যস্মাত । যস্য দেবস্য যং যাদৃক্ রূপমাক্রুতিঃ, যথাভূষণবাহনং  
ভূষণং কমণ্ডলুফমালভরণাদি বাহনং হংসাদি চ অনতিক্রম্য, তদ্বদেব তাদৃগেব তচ্ছক্তিঃ তস্য দেবস্য শক্তিঃ অসুরান্ যোদ্ধুং প্রহতুং আযবো ( “ রূপং  
স্বভাবে সৌন্দর্য্যো... আকারলোকায়োরপী ” ) তি মেদিনী ॥ ১৪ ॥ উক্তমর্থঃ প্রত্যেকঃ বিবরণেতি সপ্তভিঃ । তংনেতি । অগ্রে প্রাধিক্যং ব্রহ্মণঃ শক্তিরায়াতা

আগত। সা চ ব্রহ্মাণীত্যাভিধীয়তে কথ্যতে। তাং বর্ণয়তি—হংসযুক্তং বিমানং যস্য। অক্ষমূত্রং স্রপমান। (ভ), কমণ্ডলুঃ যতীনাং জলভাজনিবিশেষঃ, তাভ্যাং সহ বর্তমান। ১৫ ॥ মাহেশ্বরীতি। মাহেশ্বরী মহেশ্বরশক্তিঃ প্রাপ্তা আগত। তাং বর্ণয়তি—বৃষাক্রাণ বৃষাক্রাণ। ত্রিশূলবরং ত্রিশূলক্রেষ্ঠং ধৰ্ত্তুঃ শীলং যস্য। সা। মহান্ অহিবলঃ সর্পময়বলয়ে। বাস্যাঃ; যদ্বা মহাহী অশ্বতর-তক্ষকে বলায়ো যন্তাঃ সা। চক্রেবঃ চক্রবণ্ডঃ কৃপণং যন্তাঃ ( রেখাশঙ্কোপাদানাং বালচক্রে লভ্যতে) ॥ ১৬ ॥ কোমারীতি। কোমারী কুমারসম্মিীনী কান্তিকেশ্বরশক্তিরিতি যাবৎ অধিক। গুহ্যকৃপিনী কান্তিকেশ্বরশক্তিরিতি সতী অশ্বরান্

ব্রহ্মণঃ শক্তি-ব্রহ্মাণী সাভিধীয়তে ॥ ১৫ ॥ মাহেশ্বরী বৃষাক্রাণ ত্রিশূলবরধারিণী। গহ্ণিবলয়। প্রাপ্ত। চন্দ্রেণেখাবিভূষণ।

॥ ১৬ ॥ কোমারী শক্তিহস্ত। চ ময়ূরবর-বাহন। যোদ্ধু-মভ্যায়ণো দৈত্য-নশ্বিক। গুহ্যকৃপিনী ॥ ১৭ ॥ তথৈব বৈষয়বা

যোদ্ধু ম্ অভ্যায়ণো অভিমুখোনাগতবর্তী। কীদৃশী? শক্তিঃ শল্যং হস্তে যম্যাঃ। ময়ূরবরো ময়ূরক্রেষ্ঠো বাহনং যম্যাঃ ॥ ১৭ ॥ তথৈবেতি। হৈথব তদ্রূপৈব দৈববাণী বিষ্ণুসম্মিীনী শক্তিঃ অতি আভিমুখো উপ সমীপমায়ণো। কীদৃশী? গহ্ণকৃপাদাশাঙ্গ খজাঃ হস্তে যম্যাঃ (জঙ্ঘস্য বিযাণম্যায়ঃ শাঙ্গঃ, তন্ময়গুপ্তি স্বাৎ লক্ষণয়া খড়্গেগাহিপি শাঙ্গ উচ্যতে কৃষ্ণমারঙ্গপটবৎ, স চামৌ খড়্গশ্চেতি; যদ্বা শৃঙ্গং প্রধানং ষাথে টন, শাঙ্গঃ প্রধানদানো খড়্গশ্চেতি খড়্গশ্রেষ্ঠ ইত্যর্থঃ ত্রিশূলবরবৎ; তথ্যচামরঃ “শৃঙ্গং প্রধানমায়োশ্চে”তি; এবং চতুর্ভুজেষং, যদ্বা অষ্টভুজেষং জেয়। দক্ষযজ্ঞাদৌ তদানীং কচিং কচিং নষ্টভুজ-

বিষ্ণোর্যাবিভাবদর্শনাং, তদা শঙ্খসাহচর্যাং পদ্মাং, শাস্ত্রং ধনুঃ তংসাহচর্যাং শরাশ্চ, খড়্গসাতচর্যাং চর্ম চ গ্রাহ্যং; তথাচ চতুর্থে “শঙ্খাভুচক্রেশরচাপগদাশি-  
চর্মবাঐগ্রহিণয়ভুজৈরিব কর্ণিকারঃ” ইতি ॥ ১৮ ॥ যজ্ঞেতি। অতুলম্ অনুপমং যজ্ঞবাহাং তদ্রূপং রূপং বিব্রতে। ধারয়তো। হরেযা শক্তিঃ, সাপি তত্র যুদ্ধে  
আযযৌ। কীদৃশী? বারাহীং বরাহসম্বন্ধিনীং তন্তুং মূর্তিং বিব্রতী ধারয়ন্তী (যজ্ঞাত্মকে। বরাহঃ যজ্ঞবরাহঃ, তসোদর্শিত টণ, উত্তরপদে বুদ্ধিঃ) ॥ ১৯ ॥ নারৈতি।

শক্তি-গর্বভেড়াপরি সংস্থিতা। শঙ্খাচক্রগদাশাস্ত্র-খড়্গহস্তাভ্যুপায়যৌ ॥ ১৮ ॥ যজ্ঞবাহারাহ-মতুলং রূপং যা বিব্রতে ভরেঃ।

শক্তিঃ সাপ্যায়বৌ তত্র বারাহীং বিব্রতী তন্তুন্ ॥ ১৯ ॥ নারসিংহী নৃসিংহস্য বিব্রতী সদৃশং বপুঃ। প্রাপ্তা। তত্র

সটাক্ষেপ-ক্ষিপ্তনক্ষত্র-সংহতিঃ ॥ ২০ ॥ বজ্রহস্তা। তথৈবেন্দী গজরাজোপরি স্থিতা। প্রাপ্তা। সহস্রনয়না। যথা শক্রস্তথৈব

নারসিংহী শক্তিঃ তত্র প্রাপ্তা। কীদৃশী? নৃসিংহস্য সদৃশং বপুবিব্রতী ধারয়ন্তী। সটাক্ষঃ স্কন্ধস্থদীর্ঘারোমাণি ভাসাং ক্ষেপক্ষচলনং তেন ক্ষিপ্তা উত্তমুক্ত-  
ক্ষালিতা নক্ষত্রসংহতির্যয়া সা (“সটাক্ষকেশরয়ো”রিত্তি মেদিজ্ঞাং দন্ত্যাদৌ পাঠাং সট। দন্ত্যাদিঃ) ॥ ২০ ॥ যজ্ঞেতি। (তথাক্ষকেশরঃ, এবশব্দেইৎ পাদপূর্বণে।  
ঐন্দ্রী চ তত্র প্রাপ্তা। কীদৃশী? বজ্রং হস্তে যম্যাঃ। গজরাজস্য ঐবাবহুসা উপরি স্থিতা। সহস্রং নয়নানি যম্যাঃ। যথা সাদৃক শক্র ইজ্ঞঃ, সাপি তথৈব (এতৎ বিশেষণাত্মাঃ

বিবৃতং; যদ্‌। প্রথমং তথৈবেতি ব্রহ্মাণ্যাদিভিঃ সহাগমনমাদ্যশৃচনায়া কৃতম্ ॥ ২১ ॥ তত ইতি । তত্রোহনন্তরম্ ঈশানঃ পিবঃ তাভির্দেবশক্তিভিঃ পরিবৃতঃ সন্ চণ্ডিকাং গ্রাহ । কিমাহেত্যাহ—মম প্রীত্যা মংপ্রীতিহেতোঃ অম্বরঃ শীঘ্রং হস্তান্তম্ ॥ ২২ ॥ তত ইতি । ততঃ শিবচরনান্তরং দেব্যাঃ কৌণিকাঃ পরায়ান্ অত্যাগ্ৰা অত্যাঙ্কতা চণ্ডিকা কোপনা শক্তিঃ ( চণ্ডিকয়াঃ শক্তিরিতি বা ) তেজঃস্বরূপা বিনিষ্কান্তা নিঃসৃত । কৌণিকী ? অতিভীষণা । শিবাপশত্‌নির্নাদিনী শিবানাং পতং তস্য নিনাদোহস্যা অস্মীতি ( মতর্থায ইন্; পতশব্দোহসংখ্যাপরঃ, একেন পতশঃ শিবঃ তয়া সহ বিদ্যান্তে, তা অপি তয়া সঙ্ক্‌ ফ্রাতি ।

সা ॥ ২১ ॥ ততঃ পরিবৃতস্তাভি-রীশানো দেবশক্তিভিঃ । হন্যন্তামস্বরঃ শীঘ্রং মম প্রীত্যা হ চণ্ডিকাম্ ॥ ২২ ॥ ততঃ ।

দেবীশরীরাত্মু বিনিষ্কান্তাতিভীষণ । চণ্ডিকা শক্তি-রত্নোগ্রা শিবাপশত-নির্নাদিনী ॥ ২৩ ॥ সা চাহ ধূম্রজটিল-মৌলান-

ইতি প্রতিপাদিতম্; অতএব বক্ষ্যতি „তদাগচ্ছত তৃপাস্তু মচ্ছিবঃ পিশিতেন বঃ” ইতি । ২৩ ॥ সা চোঁত । সা অপরাঞ্জিতা সর্পাঙ্গম্বরী ঈশানং শিপদাদি উক্তবতী । কৌণিকম্ ? ধূম্রজটিলং ধূম্রাঃ জটীঃ সন্ত্যস্যেতি ( পিচ্ছাদিষাদিনঃ, অভিধাশক্তিলাক্ষণাশক্তোরভিধাশক্তিগরীয়সীতি জ্ঞায়াং কাম্যারাদ্যপি মস্বখীযঃ নৈমায়িকমতানুসারাং; যতে । নৈমায়িকঃ বহুব্রীহৌ লক্ষণয । অর্থপ্রতিপত্তিমাহঃ; ত্বয়ি বা প্রত্যয়ঃ ) । কিমাহ ? তে ভগবন্ সঙ্কপম্ হে দূত, ত্বং শুভনিশুন্তয়োঃ পার্শ্বঃ গচ্ছ ( দূতত্বম্যারোপিতত্বেন দূতত্বাং সমোধনং ); যদ্‌। শুভনিশুন্তয়োঃ পার্শ্বঃ প্রতি দূতত্বং দূতভাবং গচ্ছ গ্রাহুহি



(অগ্নেয়ামশক্যাস্থাং ত্রমেষ দূতো তৃত্বা গচ্ছতার্থঃ) ॥ ২৪ ॥ ক্রহীতি । শুভ্রং নিশুভ্রঞ্চ অতিগর্ভিতৌ দানবৌ ক্রহি ( বক্ষ্যমাণমিতি শেষঃ ) । তত্র ত্রয়ো পারণে  
যেহগ্নে দানবান্চ যুদ্ধায় যুদ্ধং কর্তুং সমুপস্থিতাঃ সম্যগুপস্থিতাঃ, তানপি ক্রহীতার্থঃ ॥ ২৫ ॥ বলুব্যমুপদির্শতি ত্রৈলোক্যগিতি । ইন্দ্রঃ ত্রৈলোকাং ত্রীন্ লোকান্ লভতাং  
প্রাপ্নোতু । অগ্নে সর্কে দেবাঃ অগ্ন্যাদয়ঃ হবির্ভুজঃ যজ্ঞভাগভোজিনো ভবন্তু । যুয়ং যদি জীপিতুম্ ইচ্ছথ, তদা পাতালং প্রযাত ( প্রশংসোপাদানং সদা বহুভ্য

মপর্যাজিতা । দূত ত্রং গচ্ছ ভগবন্ পার্শ্বং শুভ্রং নিশুভ্রয়োঃ ॥ ২৪ ॥ ক্রহি শুভ্রং নিশুভ্রঞ্চ দানবা-বতিগর্ভিতৌ । যে  
চান্নে দানবাস্তুত্র যুদ্ধায় সমুপস্থিতাঃ ॥ ২৫ ॥ ত্রৈলোক্য-গিন্দ্রে লভতাং দেবাঃ সন্তু হবির্ভুজঃ । যুয়ং প্রযাত পাতালং

বদি জীবিতু-মিচ্ছথ ॥ ২৬ ॥ বলাবলেপাদথ চেদ্ ভবন্তে যুদ্ধকাজিগ্ধঃ । তদাগচ্ছত তৃপ্যন্তু মচ্ছিবাঃ পিশিতেন বঃ  
॥ ২৭ ॥ যতো নিযুক্তো দৌত্যেন তয়া দেব্যা শিবঃ স্যয়ম্ । শিবদূতীতি লোকেহস্মিং-স্ততঃ সা খ্যাতিমাগতা ॥ ২৮ ॥

কুটুম্বা ব্রজত ইতুলুম্ ॥ ২৬ ॥ বিপক্ষে দোষমাহ বলেতি । অথ বাক্যারম্ভে, চেদ্ যদি ভবন্তে বলাবলেপাং সৈন্যগর্ভাং যুদ্ধকাজিগ্ধে যুদ্ধার্থিনো ভবথ, ইদা  
আগচ্ছত । মচ্ছিবাঃ এতা মদীয়াঃ শিবাঃ বো যুস্মাকং পিশিতেন ল্যাংসেন হৃদ্যন্তু তৃপ্তা ভবন্তু ( “অবলোপশ্ব গর্কে স্যাগ্নেপনে দূষণেহপি চে”তি মেদিনী ) ॥ ২৭ ॥  
তস্য্য নাম নির্বাক্তি যত ইতি । ( মেসমো বচনমিদম্ ) । তয়া দেব্যা কোষিদ্ধাদেহভুতয়া যত্নে। ক্রতোঃ দৌত্যেন দূতকর্মণ্য তেতুনা স্বয়ং স্বা ভল্লোণ শিবো নিযুক্তঃ,

ততো হেতোরশ্মিন্ জগতি স। শিবদূতীতি খ্যাতিং প্রসিদ্ধিমাংসং আগতা প্রাপ্তা ( শিবো দূতে যন্যাঃ সা শিবদূতী নদাদিঃ ; দৌত্যমিতি “বর্ণিগদূতাতাং যশ্চ”তি দ্রাব্য )  
 ॥ ২৮ ॥ তেহপীতি । তেহপি মহামুরাঃ শুভ্রাঃ শৰ্ব্বাখ্যাতং শিবেনোক্তং দেবাঃ বচঃ শ্রদ্ধা, অমর্যঃ কোপঃ তেনাপুরিতাঃ সন্তঃ যতো যত্র কাত্যায়না  
 স্থিতা আসীৎ, তত্র জগ্মঃ ॥ ২৯ ॥ তত ইতি । ততো গমনান্তরং প্রথমমেব আদাবেষ অগ্রে পুরতঃ উদ্ধতামর্যঃ উদ্ধতকোপাঃ তে অস্তরাঃ তাঃ দেবীঃ  
 শরশক্তৃঙ্গীনাং বাণশল্যখড়্গবিঘ্নেষণাং ( শূলাদীনামুপলক্ষণমেতৎ উক্তরে বক্ষ্যমাণত্বাৎ ) বৃষ্টিভিঃ সন্ততধারাভিঃ স্বেপনৈঃ ববুর্ষু ববুর্ষু ( গুণ আধ্বানং )

— শুভ্রাঃ শৰ্ব্বাখ্যাতং মহামুরাঃ । অমর্যাপুরিতা জগ্ম-র্যতঃ কাত্যায়নী স্থিতা ॥ ২৯ ॥ ততঃ  
 প্রথমমেবাগ্রে শরশক্তৃগুষ্টি-বৃষ্টিভিঃ । ববুর্ষুৰুদ্ধতামর্য-স্তাং দেবী-মমরারয়ঃ ॥ ৩০ ॥ সা চ তান্ প্রহিতান্ বাণা-গু-ল-চক্র-  
 পরম্বধান্ । চিচ্ছেদ লীলয়া ধাত-ধনুর্মুক্তৈকেন হেবুভিঃ ॥ ৩১ ॥ তস্তাগ্রতস্তথা কালী শূলপাত-বিদরিতান্ । খট্টি-জ-পোথিতাং

॥ ৩০ ॥ সা চেতি । সা দেবী চ প্রহিতান্ অশুরৈঃ প্রেরিতান্ বাগান্ ( এতদপি শলাখড়্গারোহুপলক্ষণং প্রাপ্তকৃত্বাৎ ) শূলচক্রপরম্বধান্ শ্চ ধাতপদেধুর্মুক্তৈঃ  
 সশব্দধনুষা ক্ষিপ্রৈঃ মহেবুভিঃ মহাবাগৈঃ লীলয়া চিচ্ছেদ গ্নাতশব্দোপাদানেন অভিলাষবাৎ সম্বলবিক্ষেপবিরামাভাষঃ সূচিতঃ ) ॥ ৩১ ॥ তস্মৈতি । ইথা  
 তেনৈব প্রকারেণ পুরোক্তরীত্যা তস্য শুভ্রস্য অগ্রতঃ পুরতঃ কালী অরীন্ শূলপাতবিদরিতান্, খট্টিপোথিতাংশ্চ খট্টিজেন মথিতান্ কুর্কতী গজী তদ।

ব্যচরং বিচাচার ( তস্যাঃ কৌয়িক্য। অগ্রত ইতি বার্থঃ ; তদ। বিসর্গলোপেহপি সন্ধিরাযঃ ) ॥ ৩২ ॥ মাতৃগাং যুদ্ধদাহ কম গুঞ্জিতি । ব্রহ্মাণী ব্রহ্মণঃ শক্তিঃ যেন যেন  
প্রাদেশেন ধাবতি স্মু, তেন তেন দেশেন শক্রন্ কম গুঞ্জসাক্ষেপহতবীৰ্য্যান্ কম গুলোজর্লস্য আক্ষেপেণ অর্থাৎ প্রোক্ষণরূপেণ হতং বৌধ্যং শক্তিযেমাং তথাভূতান্  
হতৌজসঃ হতোজমাংশ্চ অকরোৎ ( অত্রাপি সমাসাস্তর্গতকম গুলুজলাক্ষেপপদমত্য়জনীয়ং ; যেমেনিতি করণে তৃতীয়া, “যা দিশা ধাবতি বেধসঃ স্পৃহে”তিবৎ সপ্তম্যাং

শ্চারীন কুর্বতী ব্যচরভদ। ॥ ৩২ ॥ কমগুনু-জলাক্ষেপ-হতবীৰ্য্যান্ হতৌজসঃ । ব্রহ্মাণী চাকরোচ্ছদ্রুন্ যেন যেন স্ম  
ধাবতি ॥ ৩৩ ॥ মাহেশ্বরী ত্রিশূলেন তথা চক্রেণ বৈষণ্ণবী । দৈত্য্যাজ্ঞান কোমারী তথা শক্ত্যাভিকোপনা ॥ ৩৪ ॥

ঐন্দ্রীকুলিশ-পাতেন শতশো দৈত্যাদানবাঃ । পোতুবিদারিতাঃ পৃথ্যাং রুধিরৌব-প্রবর্ষণঃ ॥ ৩৫ ॥ তুণ্ডপ্রহার-বিধবস্ত। দংষ্ট্রাগ্রা-

তৃতীয়া বা ) ॥ ৩৩ ॥ মাহেশ্বরীতি । মাহেশ্বরী শক্তিঃ ত্রিশূলেন দৈত্যান্ জঘান । কোমারী চ শক্রা দৈত্যান্ জঘান । কৌদলী ? অতিকোপনা (সদাসাৎ বিশেষণম)  
॥ ৩৪ ॥ ঐন্দ্রীতি । ঐন্দ্রীকুলিশপাতেন ইন্দ্রশক্তেব জগ্রহাঃ পিদিারিতাঃ শতশো দৈত্যাদানবাঃ পৃথিয়াং পেতুঃ পতন্তি য়। কৌদলাঃ ? রুধিরৌব-প্রবর্ষণঃ  
রক্তপ্রবাহবাহিনঃ ॥ ৩৫ ॥ তুণ্ডেতি । কেচিদ্দৈত্যাঃ ববাহমৃগা। বান্ধা তুণ্ডপ্রহারেণ বিধবস্তাঃ মুখাযাতেন ভাড়িতাঃ সন্তোঃ অপতন্ত্ নিপেতঃ । কেচিৎ  
দংষ্ট্রাগ্রাক্তবক্ষসঃ দস্তাগ্রেণ বিদারিতজদয়াঃ, কেচিচ্চক্রেণ বিদারিতাঃ অপতন্ত্ ইত্যর্থঃ ॥ ৩৬ ॥ নৈপরিতি । নারসিংহী নসিংহশক্তিঃ অ্যাজৌ যুদ্ধে চতোর । কিং

কুর্কতী ? কাংশ্চিদম্মরান্ নৈখোবিদারিতান্ সঙ্কতী । যজ্ঞান্ মহাস্থান্ ভক্ষয়ন্তী । কাদূনী ? নাদাপূর্ণদিগম্বরা নারৈরাপূর্ণানি সম্যক্ পুরিতানি দিশো অঙ্গরাণি  
আকাশানি চ যয় ॥ ৩৭ ॥ চণ্ডেতি । কেচিদম্মরঃ চণ্ডাট্টিহসৈবত্রাভূতমহাহসৈঃ শিবদত্তাভিযতাঃ শিবদৃত্য অভিদূষিতাঃ হতপরাক্রম্যাঃ নৃচ্চিহাঃ নৃঃ  
পৃথিব্যাং পেষুঃ । অথ অনন্তরং তান্ পাতিতান্ সা শিবদূতী তদা চগাদ খাদিতবতা ॥ ৩৮ ॥ উপসংহরতি ইহীতি । ইতি উক্তপ্রকারেণ বিবিদৈরভ্যুগমৈর্নৈখা-

ক্ষত-বৃক্ষসঃ । বরাহমূর্ত্যা ত্যপতং-শ্চক্রং চ বিদারিতাঃ ॥ ৩৬ ॥ নৈখোবিদারিতাংশ্চাত্তান্ ভক্ষয়ন্তী মহাস্থান্ ।  
নারাসংহী চচারাজ্ঞৌ নাদাপূর্ণ-দিগম্বরঃ ॥ ৩৭ ॥ চণ্ডাট্টিহসৈ-রম্মরঃ শিবদৃত্যভিদূষিতাঃ । পেষুঃ পৃথিব্যাং পতিতাঃ-  
স্তাংশ্চখাদাথ সা তদা ॥ ৩৮ ॥ ইতি মাতৃগণং ব্রহ্মক্ষং মদ্যন্তুং মহাস্থান্ । দৃক্‌ভাঙ্গাপায়ৈবিবিদে-নেগুদেবারি-সৈনিকাঃ  
॥ ৩৯ ॥ পলায়ন-পরান্ দৃক্‌ । দৈত্যান্ মাতৃগণাদ্ভিতান্ । যোদ্ধুনুভ্যাবায়ৌ ব্রহ্মেক্সৌ রক্তবাজে মহাস্থরঃ ॥ ৪০ ॥ রক্ত-

স্থরান্ মদ্যন্তুং ব্রহ্মক্ষং মাতৃগণং দৃষ্ট্বা দেবারিসৈনিকঃ অম্মরসেনাপতয়ো নেগুঃ পলায়িতবন্তুঃ ॥ ৩৯ ॥ পলায়নেতি । রক্তবাজে মহাস্থরঃ মাতৃগণাদ্ভিতান্  
মাতৃগণপীড়িতান্ পলায়নপরান্ দৈত্যান্ দৃষ্ট্বা যোদ্ধুন্মাতৃগণো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো যো ভয়ুখো  
পততি, তদা মেদিন্যাঃ সকাশাৎ তৎপ্রনাগন্তুংসাদৃশোহস্থরঃ সন্মুংপতিত সমুংগরো ভবতি (এতেন রক্তমেব বীজং যস্তস্য রক্তবীজ ইতি যৌগিকং) প্রতি-

পাদিতা ॥ ৪১ ॥ যুযুধে ইতি । রক্তবীজো মহাস্বরঃ গদাপাণিঃ সন্ ইন্দ্রশক্ত্য। ঐন্দ্র্য। সহ যুযুধে । অনন্তরম্ ঐন্দ্রী স্ববজ্রেন অসাধারণবজ্রেন রক্তবীজম্ অত্যাড়য়ৎ ॥ ৪২ ॥  
কুলিশেনেতি । কুলিশেন বজ্রেন আহতস্ত তস্ত শোণিতং বক্তম্ আশু শীঘ্রং সূক্ষ্মাব ক্রতবৎ (ক্ষরিতবৎ) । ততস্তস্মাৎ শোণিতাৎ তদ্রূপাঃ তস্ত রক্তবীজস্তা রূপ-  
মিব রূপমাক্রুতির্ঘেমাৎ তদাকার ইত্যর্থঃ, তৎপরাক্রমাঃ তত্ত্বলাবলাঃ যোধাঃ সমুত্তমঃ উথিতবন্তঃ ॥ ৪৩ ॥ যাবন্ত ইতি । তস্তা শরীরাত্ যাবন্তো রক্তবিন্দবঃ পতিতাঃ, তাবন্তঃ

বিন্দূর্যদা ভূমৌ পতত্যস্য শরীরতঃ । সমুৎপতিতি মেদিন্যা-সুৎপ্রমাণস্তুদাস্বরঃ ॥ ৪১ ॥ যুযুধে স গদাপাণি-বিন্দুশক্ত্য।  
মহাস্বরঃ । ততশ্চৈন্দ্রী স্ববজ্রেন রক্তবাজ-মতাড়য়ৎ ॥ ৪২ ॥ কুলিশেনাহতস্যান্ত তস্য সূক্ষ্মাব শোণিতম্ । সমুত্তমুস্ততো  
যোধা-সুদ্রপাস্তুৎপরাক্রমাঃ ॥ যাবন্তঃ পতিতাস্তস্য শরীরাদ্রক্তবিন্দবঃ । তাবন্তঃ পূর্য্য জাতা-স্তুদবীৰ্য্য-বল-বিক্রমাঃ  
॥ ৪৪ ॥ তে চাপি যুযুধুস্তত্র পূর্য্য রক্তসমুত্তবাঃ । সন্মং মাতৃভি-রতুগ্রা-শাস্ত্রপাতাতিভীষণম্ ॥ ৪৫ ॥ পুনশ্চ বজ্রপাতেন

তৎসংখ্যাকাঃ পূর্য্য জাতাঃ । কীদৃশাঃ ? তবীৰ্য্যাবলবিক্রমাঃ তস্মৈব বীৰ্য্যম্ ইন্দ্রিয়শক্তিঃ বলং দেহশক্তিঃ বিক্রম উৎসাহো যোদাঃ তে ( পর্তম-  
শ্লোকোক্তমপার্থং রক্তবিন্দুগমং পাপপূর্ণমোৎপত্তিবিজ্ঞাপনার্থমুকুবানিতি ন পৌনকৃত্যম্ ) ॥ ৪৬ ॥ তে ইতি । তে চাপি রক্তসমুত্তবাঃ রক্তাঙ্গিতাঃ পূর্য্যঃ অত্যাশঙ্ক-  
পাতেন অতিভীষণং যথা। স্যাৎ তথা। মাতৃভিঃ সমং সত তত্র যুযুধঃ যুগ্মবিরে ॥ ৪৭ ॥ পুনশ্চৈতি । পুনশ্চ পুনরপি যদা বজ্রপাতেন (বজ্রাণ্যগ্নিগন্ধিণাৎ ঐন্দ্র্য।) অস্ত রক্ত-

ঐ  
হি  
হি  
হি

রীজস্ত শিরঃ ক্ষতং, তদা রক্তং ববাহু ক্ষরিতবৎ (বহু প্রাপণে, অর্থাৎ উ-আদেশাভাবঃ; যদ্বা বাহু প্রযত্নে ইত্যাদ্যনেকার্থিত্বাৎ রক্ষণং; বহুগতাবিত্যস্ত গুণ্যাদেকর্থা কপাং, নিকৃক্তঞ্চ মনোরমাকারেণ অস্তি বহিঃ প্রকৃত্যন্তরমোষ্ঠ্যাঙ্গিত্যস্ত ববাহুর্হতি; বর্ণাদেশস্তাশরণস্বাদ্ বশ্চতি বা; উৎকলদেবীণাম্ণ ববু ইত্যব্যাক্তশব্দম্ আহ—ভৃক্ভৃক্ ধ্বনিঃ কৃতবদিতি ব্যাচক্ষতে)। ততো রক্তাৎ সহস্রশঃ বহুমহস্রগংখ্যকা স্পষ্টরা জাতা ইত্যর্থঃ ॥৪৬॥ বৈষবীজং চৈব বৈষবীজং চৈব চক্রেণাভিজঘান, হ

ক্ষতমস্ত শিরো যদা। ববাহু রক্তং পুরুষা-স্ততো জাতাঃ সহস্রশঃ ॥ ৪৬ ॥ বৈষবী সমরে চৈব চক্রেণাভিজঘান হ।

গদয়া তাড়য়ামাস ঐন্দ্রী ত-মস্মরেশ্বরম্ ॥ ৪৭ ॥ বৈষবীচক্রভিন্নস্ত রুদ্রিরস্রাবসমুভৈঃ। সহস্রশো জগদ্ ব্যাপ্তং

তৎ প্রমাতৈর্গহাস্তরৈঃ ॥ ৪৮ ॥ শত্ৰু্য জঘান কোমারী বরাহী চ তথাসিনা। মাহেশ্বরী ত্রিশূলেন রক্তবীজং মহাস্তরং

॥ ৪৯ ॥ স চাপি গদয়া দৈত্যঃ সর্দা এবাহনৎ পৃথক্। মাতৃঃ কোপ-সমাবিকৌ রক্তবীজৌ মহাস্তরঃ

(সম্বোধনে পাদপূরণে বা)। ঐন্দ্রী ইন্দ্রশক্তিঃ তন্ অমুরেশ্বরম্ রক্তবীজম্ গদয়া বাচা তাড়য়ামাস তর্জিতবতী (গদনং গদা, ভিদাদেয়াকৃতিগণং বাৎ)। যদ্বা ঐন্দ্রীঃ

দিশম্ ইত্যং গতম্ ঐন্দ্রীতঃ পুরুষদিগবস্থিতং; যদ্বা ঐন্দ্রীম্ ইন্দ্রশক্তিম্ ইত্যং যোদ্ধুঃ প্রাপ্তং তং রক্তবীজং বৈষবী চক্রেণাভিজঘান, গদয়া চ তাড়য়ামাসেত্যম্বয়ঃ ॥ ৪৭ ॥

বৈষবীতিঃ বৈষবীচক্রভিন্নস্ত বৈষবীচক্রাশ্রয়ে ছিন্নস্ত তস্ত রুদ্রিরস্রাবসমুভৈঃ রক্তস্রবণজাভৈঃ সহস্রশঃ বহুনইলৈঃ তং প্রমাতৈর্গহাস্তরং ব্যাপ্তম্ ॥ ৪৮ ॥ প্রমাতৈ-

সঙ্কলমাহ শক্তোতি । রক্তবীজং মহাস্বরং কোমারী শক্য। জঘান । বারাহী চ অসিনা খড়্গেন জঘান । ৪৯ । রক্তবীজগ্ৰাভিক্ষিপ্ৰপ্রদ্বাৰ  
 বং দর্শয়তি স চাপাতি । স চ রক্তবীজে দৈত্যোহপি কোপসমাবিষ্টঃ সন্ সৰ্বা। এব মাতৃঃ পৃথক্ প্রত্যেকম্ অহনৎ তাদিতবান্ (ব্রাতীতিবৎ গণবাতারাং হক্কেঃ  
 শঙ্ক) । বতো মহাস্বরঃ দৈত্যশ্রেষ্ঠঃ (ইতি উচিতপদোপভাসঃ) ॥ ৫০ ॥ হস্তেতি । শক্তিশূন্যাদিত্যবজ্জঘা বহুপ্রকারেণাহংস্ত তস্ত রক্তবীজস্ত ভবি পৃথিবাঃ ৫০। রক্তবীজঃ  
 রক্তপ্রবাহঃ পপাত, তেন রক্তৌষেণ শতশো বহুশতানি যস্তুরা আসন্ ॥ ৫১ ॥ তৈরিতি । অমুরাশ্বকৃসমুত্তৈঃ অমুররক্তসমুত্তৈঃ তৈরমুরৈঃ স কলং জগৎ  
 ॥ ৫০ ॥ তস্মাহতস্য বহুধা শক্তি-শূন্যাদিত্যবী । পপাত যো বৈ রক্তৌষ-শ্তেনাসঙ্কৃতশোহসুরাঃ ॥ ৫১ ॥ তৈচ্ছচামুরাশ্বকৃ-

সমুত্তৈ-রমুরৈঃ স কলং জগৎ । ব্যাপ্তমাসীৎ ততো দেবা ভয়মাজগু-কুণ্ডমন্ ॥ ৫২ ॥ তান্ বিষণ্ণান্ সুরান্ দূর্বান্  
 ব্যাপ্তমাসীৎ । ততশ্চৈভাঃ অমুরৈভাঃ দেবা ইন্দ্রাদিঃ উত্তম-মতিমহৎ ভয়ম্ আজগুঃ প্রাপ্তবন্তঃ ॥ ৫৩ ॥ তানিতি । তান্ বিষণ্ণান্ আপ্তবিষাদান্ সুরান্ দৃষ্ট। চাণ্ডিকা  
 কোষিকী কালীং চামুণ্ডাম্ উবাচ । কৌদূর্শী ? প্রাহসম্বর। প্রাহন্যতেহত্রোতি প্রাহো রণঃ ( "অত্রতোহপি দুর্গাহে" ইতি ৬ঃ ) তত্র দৃষ্ট। স্বপবিত্রা  
 ( তথ্যচ স্বান্দে "রণেন ক'প্তনাজেন শ্রবযো প্রাহলানসঃ" — প্রাহলানসো রণভিগাযী ইতি ) । যজ্ঞ। তান্ সুরান্ বিষণ্ণান্ দৃষ্ট। চাণ্ডিকা পাদসং ( অহো নানি রণণিবিমি  
 স্থিতায়ামপোতে যৎ বিভ্রাতি, ওন্মথাপি বলানভিচ্ছ। ভীরণ এবেতি যজ্ঞ। ইতি ভাবঃ ) । কৌদূর্শী ? স্বরা হরাদিতী ( অর্জ-আজ্ঞঃ ; অর্জাৎ লেখন্ত ইত্যাদিনা ) (ক্ষ) দিঃ

কারবান্ পক্ষে স্বাশঙ্কঃ ; যদ্বা ত্রাবতীতি বক্তব্যেহ তাস্ত্ববানীলহ্যং ত্বপেভ্যোভেদনির্দেশঃ ; যত্রা “কলোচক্রং ভ্রমৌ তিষ্ঠ” যত্রাস্থাশ্মিপদিবর্ণাখ্যায়ং ভ্রমৌভ্যদীতি বক্তব্যেহ তাস্ত্ববানীলহ্যং ভ্রমৌভ্যাক্রমিত । যদ্বা তান্ সুরান্ বিষন্নান্ দৃষ্ট । প্রাচ মা ভৈষ্টেহুত্কৃত্বতী ; অনন্তরং কালীম্ উবাচ । একমুখাচৈতাহ—  
হে চমুণ্ডে, স্বং বদনং বিস্তরং বিততং কুরু ( যজ্ঞাপ “স চ শব্দস্য বিস্তরঃ” ইতি কোষে দৃষ্ট ) ইতি প্রত্নাদাহ ৩, তথাপানি  
আখ্যে ৬ঃ, নঞ যুক্তমনির্ভাষিত দাবস্থরা বা ) ॥ ৫৩ ॥ প্রযোজনমাদির্শাসিত নষ্টশ্রেতি ।

— ১৬ ১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

চণ্ডিকা প্রাহমস্থরা । উবাচ কালীকামুণ্ডে বিস্তরং বদনং কুরু ॥ ৫৩ ॥ মচ্ছদ্রপাত-সমুতান্ রক্তবিন্দূন্ মহাসুরান্ ।  
রক্তবিন্দোঃ প্রতীচ্ছ স্বং বক্তৃণামেন বেগিতা ॥ ৫৪ ॥ ভক্ষয়ন্তী চর রণে তদ্বৎ পন্নান্ মহাসুরান্ । এবমেস ক্ষয়ং নৈত্যং

রক্তবিন্দূন্ অপ্রাপ্তপুরুষাবস্থান্ ( অন্তর্যাক্ষ এবত্রার্থঃ ) রক্তবিন্দোঃ ( হর্গিত জাতাবেকত্বং ) রক্তবিন্দুভোজ্যাহাঃ মহাসুরান্ ( উত্তরত্র উভয়োঃপাপাদাক্রম্যানহাঃ )  
বেগিতা মগী প্রতীচ্ছ ভক্ষয় ( যদ্বা রক্তেন বিন্দতি শরীরাস্তরং লভতে রক্ত-বিন্দুবস্তরঃ তস্য রক্তবিন্দুগ্রহায়ুর্বাণিতি কাষাকারণয়োঃ হেদ বাক্ষ্য ) ; যদ্বা “ভ্রাতী  
তু বিদুরো বিন্দু” রতি স্মরণং রক্তমেব বিন্দুজ্ঞাতি প্রাপী যস্ত ; যদ্বা মচ্ছদ্রপাতসমুতান্ রক্তবিন্দূন্ মহাসুরান্ মহাসুররূপান্ রক্তবিন্দোঃ রক্তবিন্দু-  
রক্তবীজং প্রাপ্য প্রতীচ্ছ অজাতানৈব ভক্ষয়েত্যর্থঃ ) ॥ ৫৪ ॥ ভক্ষয়ন্তীতি । তদ্বৎ পন্নান্ রক্তবিন্দুবান্ মহাসুরান্ ভক্ষয়ন্তী মতী রণে চর বিচর ।



ফলমাহ—এবমেনে প্রকারেণ এব দৈত্যো। রক্তবীজঃ ক্ষীণরক্তঃ সন্ ক্ষয়ং নাশং গমিষ্যতি প্রাপ্যতি ॥ ৫৫ ॥ ভিক্ষ্যতি। ত্বয়া ভক্ষ্যমাণা অপরে উগ্রাঃ অস্তবাঃ  
ন চ নৈব উৎপৎস্যন্তে উৎপন্ন। ন ভবিষ্যন্তি (অত্র পজ্যাক্তে প্রথমশ্চকারত্বার্থঃ, দ্বিতীয় এবার্থঃ, তৃতীয়ঃ সন্ক্ষয়ার্থঃ; বর্তমানাঃ ক্ষয়ঃ গমিষ্যন্তি, অপনে  
নোৎপৎস্যন্তে চেত্যর্থঃ) ॥ ৫৬ ॥ ইতুক্তেতি। দেবী কোসিকী তাং কালীম্ ইতুক্তা। শূনেন তং রক্তবীজম্ অভিজঘান। ততোহনন্তরং কাল। যুথেন রক্ত-  
ক্ষীণরক্তো গমিষ্যতি ॥ ৫৫ ॥ ভক্ষ্যমাণস্তুরা চোগ্রা ন চোৎপৎস্যন্তি চাপরে ॥ ৫৬ ॥ ইতুক্তে। তাং ততো দেবী শূনেনাভি-

জঘান তন্। যুথেন কাল। জগৃহে রক্তবীজম্ শোণিতম্ ॥ ৫৭ ॥ ততোহিসা-বাজঘানিথ গদয়া তত্র চণ্ডিকাম্। ন চাংগ্যা

বেদনাকরেক গদাপাতোহ্লিকামপি ॥ ৫৮ ॥ তস্যাহৃতস্য দেহতু বহু সূক্ষ্মাব শোণিতম্। যতন্তত-স্তদু বক্রৈণ

চামুণ্ডা সন্প্রতীচ্ছতি ॥ ৫৯ ॥ মুখে সমদগতা বেস্য। রক্তপাতান্নাহাগুরাঃ। ভাংকটপাদাথ চামুণ্ডা পপৌ তস্য চ

বীজস্য শোণিতং জগৃহে জগ্রাহ পীতবতী ॥ ৬০ ॥ তত ইতি। (অথশব্দোহপ্যর্গে) ততঃসদনকগম্ অগৌ রক্তবীজোহপি তত্র মুদ্রৈ গদয়া চণ্ডিকাম্ খাজঘান।

গদাপাতঃ গদাপ্রহারোহিয়াঃ চণ্ডিকয়া অ্লিকামপি (মার্থঃ কঃ) অল্পানপি বেদনাং ন চক্রে নৈব উপারিতার্থঃ ॥ ৫৭ ॥ তস্যোতি। আহৃতস্য হারিতস্য

তস্য যতো যস্মাৎ দেহপ্রদেশাৎ বহু শোণিতং সূক্ষ্মাব ক্ষরিতং, ততঃ তস্মাদেব দেহপ্রদেশাৎ তং শোণিতং যুথেন বক্রৈণ চামুণ্ডা হাঃপ্রতীচ্ছতি

সম্যক্ পিবিতি স্তোত্রার্থঃ (মায়াময়মুখদ্বাং) । যদা যতো যস্মিন্ ক্ষণে ক্ষণে, ততস্তন্মিলেব ক্ষণে, ক্ষণসমকালেযেব পানিমিত্যর্থঃ (সপ্তম্যান্তঃসিঃ) ॥ ৫৯ ৫  
মুখে হাত । অস্যাঃ কাল্যাঃ মুপে রক্তপাতাং যে মহাস্তরাঃ সমুদ্ভূতাঃ সমুৎপন্নাঃ, চামুণ্ডা তান্ মহাস্তরান্ চখাদ । অথ অনন্তবৎ তস্য শৌণিতং চ পশৌ পীতবতী  
(শত্রু বগপি ক্ষিতাবেব রক্তপাতাং অস্তুরোৎপাদকৃত্ত্বাযুগে রক্তপাতাদস্তুরোৎপত্তিঃ) নস্তবীতি; তথাপি মূলপ্রকৃত্ত্বাংগভূতায়ান্ তস্যাং সকলপদার্থানাং  
স্বস্বরূপেণাবয়ানাং পৃথগ্যানেব কপিপপাতোহাবিরুদ্ধঃ; ‘অতএব “মুখস্য পানিবজ্র”দিতি বিজ্ঞাবিনোদঃ ॥ ৬০ ৫ দেবীতি । দেবী কোষিকী শুলেন, বজ্রেণ, বাণৈঃ

— ১১ ১২ ১৩ ১৪ ১৫ ১৬ ১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০ ১০১ ১০২ ১০৩ ১০৪ ১০৫ ১০৬ ১০৭ ১০৮ ১০৯ ১১০ ১১১ ১১২ ১১৩ ১১৪ ১১৫ ১১৬ ১১৭ ১১৮ ১১৯ ১২০ ১২১ ১২২ ১২৩ ১২৪ ১২৫ ১২৬ ১২৭ ১২৮ ১২৯ ১৩০ ১৩১ ১৩২ ১৩৩ ১৩৪ ১৩৫ ১৩৬ ১৩৭ ১৩৮ ১৩৯ ১৪০ ১৪১ ১৪২ ১৪৩ ১৪৪ ১৪৫ ১৪৬ ১৪৭ ১৪৮ ১৪৯ ১৫০ ১৫১ ১৫২ ১৫৩ ১৫৪ ১৫৫ ১৫৬ ১৫৭ ১৫৮ ১৫৯ ১৬০ ১৬১ ১৬২ ১৬৩ ১৬৪ ১৬৫ ১৬৬ ১৬৭ ১৬৮ ১৬৯ ১৭০ ১৭১ ১৭২ ১৭৩ ১৭৪ ১৭৫ ১৭৬ ১৭৭ ১৭৮ ১৭৯ ১৮০ ১৮১ ১৮২ ১৮৩ ১৮৪ ১৮৫ ১৮৬ ১৮৭ ১৮৮ ১৮৯ ১৯০ ১৯১ ১৯২ ১৯৩ ১৯৪ ১৯৫ ১৯৬ ১৯৭ ১৯৮ ১৯৯ ২০০ ২০১ ২০২ ২০৩ ২০৪ ২০৫ ২০৬ ২০৭ ২০৮ ২০৯ ২১০ ২১১ ২১২ ২১৩ ২১৪ ২১৫ ২১৬ ২১৭ ২১৮ ২১৯ ২২০ ২২১ ২২২ ২২৩ ২২৪ ২২৫ ২২৬ ২২৭ ২২৮ ২২৯ ২৩০ ২৩১ ২৩২ ২৩৩ ২৩৪ ২৩৫ ২৩৬ ২৩৭ ২৩৮ ২৩৯ ২৪০ ২৪১ ২৪২ ২৪৩ ২৪৪ ২৪৫ ২৪৬ ২৪৭ ২৪৮ ২৪৯ ২৫০ ২৫১ ২৫২ ২৫৩ ২৫৪ ২৫৫ ২৫৬ ২৫৭ ২৫৮ ২৫৯ ২৬০ ২৬১ ২৬২ ২৬৩ ২৬৪ ২৬৫ ২৬৬ ২৬৭ ২৬৮ ২৬৯ ২৭০ ২৭১ ২৭২ ২৭৩ ২৭৪ ২৭৫ ২৭৬ ২৭৭ ২৭৮ ২৭৯ ২৮০ ২৮১ ২৮২ ২৮৩ ২৮৪ ২৮৫ ২৮৬ ২৮৭ ২৮৮ ২৮৯ ২৯০ ২৯১ ২৯২ ২৯৩ ২৯৪ ২৯৫ ২৯৬ ২৯৭ ২৯৮ ২৯৯ ৩০০ ৩০১ ৩০২ ৩০৩ ৩০৪ ৩০৫ ৩০৬ ৩০৭ ৩০৮ ৩০৯ ৩১০ ৩১১ ৩১২ ৩১৩ ৩১৪ ৩১৫ ৩১৬ ৩১৭ ৩১৮ ৩১৯ ৩২০ ৩২১ ৩২২ ৩২৩ ৩২৪ ৩২৫ ৩২৬ ৩২৭ ৩২৮ ৩২৯ ৩৩০ ৩৩১ ৩৩২ ৩৩৩ ৩৩৪ ৩৩৫ ৩৩৬ ৩৩৭ ৩৩৮ ৩৩৯ ৩৪০ ৩৪১ ৩৪২ ৩৪৩ ৩৪৪ ৩৪৫ ৩৪৬ ৩৪৭ ৩৪৮ ৩৪৯ ৩৫০ ৩৫১ ৩৫২ ৩৫৩ ৩৫৪ ৩৫৫ ৩৫৬ ৩৫৭ ৩৫৮ ৩৫৯ ৩৬০ ৩৬১ ৩৬২ ৩৬৩ ৩৬৪ ৩৬৫ ৩৬৬ ৩৬৭ ৩৬৮ ৩৬৯ ৩৭০ ৩৭১ ৩৭২ ৩৭৩ ৩৭৪ ৩৭৫ ৩৭৬ ৩৭৭ ৩৭৮ ৩৭৯ ৩৮০ ৩৮১ ৩৮২ ৩৮৩ ৩৮৪ ৩৮৫ ৩৮৬ ৩৮৭ ৩৮৮ ৩৮৯ ৩৯০ ৩৯১ ৩৯২ ৩৯৩ ৩৯৪ ৩৯৫ ৩৯৬ ৩৯৭ ৩৯৮ ৩৯৯ ৪০০ ৪০১ ৪০২ ৪০৩ ৪০৪ ৪০৫ ৪০৬ ৪০৭ ৪০৮ ৪০৯ ৪১০ ৪১১ ৪১২ ৪১৩ ৪১৪ ৪১৫ ৪১৬ ৪১৭ ৪১৮ ৪১৯ ৪২০ ৪২১ ৪২২ ৪২৩ ৪২৪ ৪২৫ ৪২৬ ৪২৭ ৪২৮ ৪২৯ ৪৩০ ৪৩১ ৪৩২ ৪৩৩ ৪৩৪ ৪৩৫ ৪৩৬ ৪৩৭ ৪৩৮ ৪৩৯ ৪৪০ ৪৪১ ৪৪২ ৪৪৩ ৪৪৪ ৪৪৫ ৪৪৬ ৪৪৭ ৪৪৮ ৪৪৯ ৪৫০ ৪৫১ ৪৫২ ৪৫৩ ৪৫৪ ৪৫৫ ৪৫৬ ৪৫৭ ৪৫৮ ৪৫৯ ৪৬০ ৪৬১ ৪৬২ ৪৬৩ ৪৬৪ ৪৬৫ ৪৬৬ ৪৬৭ ৪৬৮ ৪৬৯ ৪৭০ ৪৭১ ৪৭২ ৪৭৩ ৪৭৪ ৪৭৫ ৪৭৬ ৪৭৭ ৪৭৮ ৪৭৯ ৪৮০ ৪৮১ ৪৮২ ৪৮৩ ৪৮৪ ৪৮৫ ৪৮৬ ৪৮৭ ৪৮৮ ৪৮৯ ৪৯০ ৪৯১ ৪৯২ ৪৯৩ ৪৯৪ ৪৯৫ ৪৯৬ ৪৯৭ ৪৯৮ ৪৯৯ ৫০০ ৫০১ ৫০২ ৫০৩ ৫০৪ ৫০৫ ৫০৬ ৫০৭ ৫০৮ ৫০৯ ৫১০ ৫১১ ৫১২ ৫১৩ ৫১৪ ৫১৫ ৫১৬ ৫১৭ ৫১৮ ৫১৯ ৫২০ ৫২১ ৫২২ ৫২৩ ৫২৪ ৫২৫ ৫২৬ ৫২৭ ৫২৮ ৫২৯ ৫৩০ ৫৩১ ৫৩২ ৫৩৩ ৫৩৪ ৫৩৫ ৫৩৬ ৫৩৭ ৫৩৮ ৫৩৯ ৫৪০ ৫৪১ ৫৪২ ৫৪৩ ৫৪৪ ৫৪৫ ৫৪৬ ৫৪৭ ৫৪৮ ৫৪৯ ৫৫০ ৫৫১ ৫৫২ ৫৫৩ ৫৫৪ ৫৫৫ ৫৫৬ ৫৫৭ ৫৫৮ ৫৫৯ ৫৬০ ৫৬১ ৫৬২ ৫৬৩ ৫৬৪ ৫৬৫ ৫৬৬ ৫৬৭ ৫৬৮ ৫৬৯ ৫৭০ ৫৭১ ৫৭২ ৫৭৩ ৫৭৪ ৫৭৫ ৫৭৬ ৫৭৭ ৫৭৮ ৫৭৯ ৫৮০ ৫৮১ ৫৮২ ৫৮৩ ৫৮৪ ৫৮৫ ৫৮৬ ৫৮৭ ৫৮৮ ৫৮৯ ৫৯০ ৫৯১ ৫৯২ ৫৯৩ ৫৯৪ ৫৯৫ ৫৯৬ ৫৯৭ ৫৯৮ ৫৯৯ ৬০০ ৬০১ ৬০২ ৬০৩ ৬০৪ ৬০৫ ৬০৬ ৬০৭ ৬০৮ ৬০৯ ৬১০ ৬১১ ৬১২ ৬১৩ ৬১৪ ৬১৫ ৬১৬ ৬১৭ ৬১৮ ৬১৯ ৬২০ ৬২১ ৬২২ ৬২৩ ৬২৪ ৬২৫ ৬২৬ ৬২৭ ৬২৮ ৬২৯ ৬৩০ ৬৩১ ৬৩২ ৬৩৩ ৬৩৪ ৬৩৫ ৬৩৬ ৬৩৭ ৬৩৮ ৬৩৯ ৬৪০ ৬৪১ ৬৪২ ৬৪৩ ৬৪৪ ৬৪৫ ৬৪৬ ৬৪৭ ৬৪৮ ৬৪৯ ৬৫০ ৬৫১ ৬৫২ ৬৫৩ ৬৫৪ ৬৫৫ ৬৫৬ ৬৫৭ ৬৫৮ ৬৫৯ ৬৬০ ৬৬১ ৬৬২ ৬৬৩ ৬৬৪ ৬৬৫ ৬৬৬ ৬৬৭ ৬৬৮ ৬৬৯ ৬৭০ ৬৭১ ৬৭২ ৬৭৩ ৬৭৪ ৬৭৫ ৬৭৬ ৬৭৭ ৬৭৮ ৬৭৯ ৬৮০ ৬৮১ ৬৮২ ৬৮৩ ৬৮৪ ৬৮৫ ৬৮৬ ৬৮৭ ৬৮৮ ৬৮৯ ৬৯০ ৬৯১ ৬৯২ ৬৯৩ ৬৯৪ ৬৯৫ ৬৯৬ ৬৯৭ ৬৯৮ ৬৯৯ ৭০০ ৭০১ ৭০২ ৭০৩ ৭০৪ ৭০৫ ৭০৬ ৭০৭ ৭০৮ ৭০৯ ৭১০ ৭১১ ৭১২ ৭১৩ ৭১৪ ৭১৫ ৭১৬ ৭১৭ ৭১৮ ৭১৯ ৭২০ ৭২১ ৭২২ ৭২৩ ৭২৪ ৭২৫ ৭২৬ ৭২৭ ৭২৮ ৭২৯ ৭৩০ ৭৩১ ৭৩২ ৭৩৩ ৭৩৪ ৭৩৫ ৭৩৬ ৭৩৭ ৭৩৮ ৭৩৯ ৭৪০ ৭৪১ ৭৪২ ৭৪৩ ৭৪৪ ৭৪৫ ৭৪৬ ৭৪৭ ৭৪৮ ৭৪৯ ৭৫০ ৭৫১ ৭৫২ ৭৫৩ ৭৫৪ ৭৫৫ ৭৫৬ ৭৫৭ ৭৫৮ ৭৫৯ ৭৬০ ৭৬১ ৭৬২ ৭৬৩ ৭৬৪ ৭৬৫ ৭৬৬ ৭৬৭ ৭৬৮ ৭৬৯ ৭৭০ ৭৭১ ৭৭২ ৭৭৩ ৭৭৪ ৭৭৫ ৭৭৬ ৭৭৭ ৭৭৮ ৭৭৯ ৭৮০ ৭৮১ ৭৮২ ৭৮৩ ৭৮৪ ৭৮৫ ৭৮৬ ৭৮৭ ৭৮৮ ৭৮৯ ৭৯০ ৭৯১ ৭৯২ ৭৯৩ ৭৯৪ ৭৯৫ ৭৯৬ ৭৯৭ ৭৯৮ ৭৯৯ ৮০০ ৮০১ ৮০২ ৮০৩ ৮০৪ ৮০৫ ৮০৬ ৮০৭ ৮০৮ ৮০৯ ৮১০ ৮১১ ৮১২ ৮১৩ ৮১৪ ৮১৫ ৮১৬ ৮১৭ ৮১৮ ৮১৯ ৮২০ ৮২১ ৮২২ ৮২৩ ৮২৪ ৮২৫ ৮২৬ ৮২৭ ৮২৮ ৮২৯ ৮৩০ ৮৩১ ৮৩২ ৮৩৩ ৮৩৪ ৮৩৫ ৮৩৬ ৮৩৭ ৮৩৮ ৮৩৯ ৮৪০ ৮৪১ ৮৪২ ৮৪৩ ৮৪৪ ৮৪৫ ৮৪৬ ৮৪৭ ৮৪৮ ৮৪৯ ৮৫০ ৮৫১ ৮৫২ ৮৫৩ ৮৫৪ ৮৫৫ ৮৫৬ ৮৫৭ ৮৫৮ ৮৫৯ ৮৬০ ৮৬১ ৮৬২ ৮৬৩ ৮৬৪ ৮৬৫ ৮৬৬ ৮৬৭ ৮৬৮ ৮৬৯ ৮৭০ ৮৭১ ৮৭২ ৮৭৩ ৮৭৪ ৮৭৫ ৮৭৬ ৮৭৭ ৮৭৮ ৮৭৯ ৮৮০ ৮৮১ ৮৮২ ৮৮৩ ৮৮৪ ৮৮৫ ৮৮৬ ৮৮৭ ৮৮৮ ৮৮৯ ৮৯০ ৮৯১ ৮৯২ ৮৯৩ ৮৯৪ ৮৯৫ ৮৯৬ ৮৯৭ ৮৯৮ ৮৯৯ ৯০০ ৯০১ ৯০২ ৯০৩ ৯০৪ ৯০৫ ৯০৬ ৯০৭ ৯০৮ ৯০৯ ৯১০ ৯১১ ৯১২ ৯১৩ ৯১৪ ৯১৫ ৯১৬ ৯১৭ ৯১৮ ৯১৯ ৯২০ ৯২১ ৯২২ ৯২৩ ৯২৪ ৯২৫ ৯২৬ ৯২৭ ৯২৮ ৯২৯ ৯৩০ ৯৩১ ৯৩২ ৯৩৩ ৯৩৪ ৯৩৫ ৯৩৬ ৯৩৭ ৯৩৮ ৯৩৯ ৯৪০ ৯৪১ ৯৪২ ৯৪৩ ৯৪৪ ৯৪৫ ৯৪৬ ৯৪৭ ৯৪৮ ৯৪৯ ৯৫০ ৯৫১ ৯৫২ ৯৫৩ ৯৫৪ ৯৫৫ ৯৫৬ ৯৫৭ ৯৫৮ ৯৫৯ ৯৬০ ৯৬১ ৯৬২ ৯৬৩ ৯৬৪ ৯৬৫ ৯৬৬ ৯৬৭ ৯৬৮ ৯৬৯ ৯৭০ ৯৭১ ৯৭২ ৯৭৩ ৯৭৪ ৯৭৫ ৯৭৬ ৯৭৭ ৯৭৮ ৯৭৯ ৯৮০ ৯৮১ ৯৮২ ৯৮৩ ৯৮৪ ৯৮৫ ৯৮৬ ৯৮৭ ৯৮৮ ৯৮৯ ৯৯০ ৯৯১ ৯৯২ ৯৯৩ ৯৯৪ ৯৯৫ ৯৯৬ ৯৯৭ ৯৯৮ ৯৯৯ ১০০০

শৌণিতম্ ॥ ৬০ ॥ দেবী শুলেন বজ্রেণ বাণৈঃ-রসিভিষ্ক স্থিতিঃ । জযান রক্তবীজং তং চামুণ্ডা পীতশৌণিতম্ ॥ ৬১ ॥ স পপাত মহী-

পৃষ্ঠে শস্ত্রসজ্জা-সমাহৃতঃ । নীরকুশচ মহীপান রক্তবীজো মহাসুরঃ ॥ ৬২ ॥ ততস্তে হর্বমতুন-নবাপুস্ত্রিদধা নৃপ । তেবাং মাতৃগণে।

শরৈঃ, অসিভিঃ খট্ভিঃ, তঃ খড়্গাবিশৌনৈঃ সন্ মহাপুস্ত্র পপাত ( “সংঘনার্থো তু জম্ভিঃ” ইত্যনরোক্তয়ান্ যজ্ঞাপি জম্ভসমূহ এব সংঘো বজ্রতে, তথাশ্রুগণকণ্ঠান্  
স ইতি । স রক্তবীজঃ শস্ত্রগজ্জয়মাহৃতঃ সন্ মহাপুস্ত্র পপাত । স কাদৃশঃ ? নীরকুঃ নির্গতশেষকপিধিরঃ ॥ ৬২ ॥ তত ইতি । ততো রক্তবীজবদানন্তরং তে ত্রিদশাঃ দেবাঃ অতুলম্ অতুলম্ সর্বম্  
অপ্রাণিসমূহেৎপ্যগ্র । স কাদৃশঃ ? নীরকুঃ নির্গতশেষকপিধিরঃ ॥ ৬২ ॥ তত ইতি । ততো রক্তবীজবদানন্তরং তে ত্রিদশাঃ দেবাঃ অতুলম্ অতুলম্ সর্বম্  
অবাপুঃ প্রাপ্তবন্তঃ । তেবাং ত্রিদশানাং সকলপাদানাং প্রাপ্তবন্তঃ । তেবাং মাতৃগণঃ অসুগুণদোদীকৃতঃ অসুগুণরক্তং মদ ভাসিব ইব ভোমোদীকৃতঃ

প্রগল্ভঃ সন্ (যদ্য অসুগ্ভিষে মদো মন্ততা তেনোদ্রুতঃ সন্) ননর্ত ; যদা তেষাম্ অসুগ্ভাণাম্ অসুগ্ভাদোদ্রুতঃ জাতো মাতৃগণঃ ইতি সম্বন্ধঃ ( “মদো রেত্রসি  
কন্তুর্বাং গর্ভে হর্ষেভদানয়ো”রিত্তি মেদিনী ) ॥ ৬৩ ॥

রাজোবাচ ॥ ১ ॥ অত্যাশ্চবাং দেবীমাহাত্ম্যং শ্রুত্বা বিশ্বয়েন রাজা মুনিং পৃচ্ছতি বিচিত্রমিতি । হে ভগবন্ অভীজানাপ গজ, মম সম্বন্ধে ইদং বিচিত্রম্  
জাতো ননর্তাসুও মদোদ্রুতঃ ॥ ৬৩ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে নমস্তুরে দেবীমাহাত্ম্যে রক্তবীজবপঃ ॥ \*

৮ অঃ ॥ \* ॥

রাজোবাচ ॥ ১ ॥ বিচিত্রমিদ-মাখ্যাতঃ ভগবন্ ভবতা মন । দেব্যাম্শ্চরিত-মাহাত্ম্যং রক্তবীজ-বপাশ্রিতম্  
॥ ২ ॥ ভূয়শ্শেচছাম্যহং জ্ঞোতুং রক্তবীজে নিপাত্তিতে । চকার শুভ্রো যং কন্য নিশুভ্তশ্চাত্তিকোপমঃ ॥ ৩ ॥

অত্যাশ্রুতং রক্তবীজবপাশ্রিতং রক্তবীজবদবিষয়কং দেব্যাম্শ্চরিতমাহাত্ম্যং চরিতং চেষ্টিতং তস্য মাহাত্ম্যম্ কন্যাম্ আখ্যাতং কথিতম্ ॥ ১ ॥ ইতি ।  
রক্তবীজে নিপাত্তিতে সতি শুভ্রো যং কন্য চকার, নিশুভ্তশ্চ যং কন্য চকার, তদন্তঃ ভূয়ঃ পুনর্বপি শ্রোতুম্ ইচ্ছামি (যদ্বা ভূয়ঃ প্রচুরং বিদ্যুতমিতি যান্তং বপা নাং  
তথা শ্রোতুম্ ইচ্ছামি ; যদা প্রথমং তাবৎ সৈত্বোদ্রোবোগাদিকং যুক্তভূমিদমাগমকং চকার, ইদানীং ভূয়ঃ পুনর্বপি কিং চকারেতি সম্বন্ধঃ) । কৌদুকঃ খ্যাতকোপমঃ

(উভয়োবিশেষণম্) ॥ ৩ ॥ পাবিরুবচ ॥ ৪ ॥ চকারেতি । রক্তসাজে নিপাতিতে সতি দেব্যা । মারিতে সতি, অস্ত্যু চ নৈভোয় আহবে বুদ্ধে ইতিস্ব সংস্কৃ-  
 শুভেঃস্বরঃ অতুলং কোপং চকার । (ন কেবলং সঃ) নিশ্চিন্তোহপি ॥ ৫ ॥ হজ্রতি । অখানন্তরং নিশ্চিন্তঃ হজ্রমানং দেব্যা । মাধ্যমাণং মংদৈজ্যং বিশোক্যে,  
 অময়ং ক্রোধম্ উদ্ধং অধকং ধারয়ন্ মুখ্যয়া প্রদানভূতয়া । অনুরমেনয়া সহ অভ্যাবৎ আদ্যুখেনাশাদত ॥ ৬ ॥ তসোতি । তস্যা নিশ্চিন্তস্ত অগ্রহঃ

পাবিরুবচি ॥ ২ ॥ চকার কোপ-মতুলং রক্তবাজে নিপাতিতে । শুভাস্থরো নিশ্চিন্তশ্চ হতেদ্যেয়ু চাহবে ॥ ৫ ॥ হজ্রমানং মহাসিগ্ধ্যং  
 বিলোক্যনির্মমূদুবহন্ । অভ্যাবাবিশ্চিন্তেহথ মুপ্রায়াম্বরসেনয়া ॥ ৬ ॥ তস্যাগ্রতস্তথা পৃষ্ঠে পার্শ্বরোক্ত মহাস্থরাঃ ।  
 সমদ্যেচৌষ্ঠপূটীঃ ক্রুদ্রা হস্তং দেবী-মুপায়ুঃ ॥ ৭ ॥ সাজগাম মহাবীৰ্য্যঃ শুভেহাপ স্পদৈনর্ভুতঃ । নিহন্তুং চণ্ডিকাং কোপাং  
 কৃত্বা যুদ্ধন্তু মাহুতিঃ ॥ ৮ ॥ ততো বুদ্ধগতাবাসীদু দেব্যা শুভ-নিশ্চিন্তয়োঃ । পরবর্ষ-মতাবেগং মেঘরোরিব বর্ষতোঃ ॥ ৯ ॥

পূর্বতঃ, তথা পৃষ্ঠে পশ্চাৎ, পার্শ্বাশ্রিত পিণবানবোশ্চ সমদ্যেচৌষ্ঠপূটীঃ সমস্তঃ ক্রুদ্রা মহাস্থরাঃ দেবীং হস্তম্ উপায়ুঃ সগৌপম্ আজগুঃ ॥ ৭ ॥ আজগামেতি । স্তম্ভস্থাপ-  
 মাতীতিঃ সত যুদ্ধং কৃত্বা তু আশ্রকং নিহন্তুং কোপাদাজগাম । স কাদিক ? মহাবীৰ্য্যঃ অনাধারণপক্তিঃ ; স্ববৈলিন্জিগৈনৈজ্যপূতো বেষ্টিতঃ ॥ ৮ ॥ তত ইতি । ইতি-  
 হনন্তরং দেব্যা সহ শুভানশ্চিন্তগোবতীব যুদ্ধমাসীৎ । কিম্বৃত্যোঃ ? পতাবোগম্ অগুংকটং পরবর্ষং শরবর্ষং শরবর্ষিং বর্ষতোঃ কুরীতোরিবতীর্থঃ । কয়োরিব ? মেঘরোরিব,

বর্ষভেরিতাত্ৰাপানুযঙ্গনীয়ম্ ; তো মেঘাবিব, নিরন্তরশরনিকরা বৃষ্টিধারা ইব ) ॥৯॥ চিচ্ছেদোঁত । চণ্ডিকা আশু শীঘ্রং শরোঁৎ কঠৈঃ শরদমুহৈঃ তাভ্যাং  
শুভনিশ্চিন্তাত্যাম্ অস্তান্ ক্ষিপ্তান্ শরান্ চিচ্ছেদ । (ন কেবলমেতাবৎ, কিন্তু) শাস্ত্রৌবৈঃ বাণসমুহৈঃ অস্ববেধবৌ শুভনিশ্চিন্তৌ অপ্লেমু তাড়য়ানাম চ (অপ্লেস্থিতি  
বহুবচনোপাদান্য নিরন্তরশরনিকরজঙ্জরিতাস্থৌ তো) চকারেতি গম্যতে । এতেন চণ্ডিকয়া চবনশরনিষ্ক্ষেপলাঘবমু কয় । অশ্লঞ্জরানিগ্ৰহণকার চকার  
ছকাররূপমিলিতবর্ণব্রহ্মাক্ষকোহপি পাঠঃ, “শে কশ্চে”তি শকারস্য ছকারাদেবাৎ ) ॥১০॥ নিশ্চুড় হাত । নিশ্চুদ্রে নিশ্চিহ্নং পাণিহুং বজ্জাং,

বু  
৫

চিচ্ছেদাস্তাঞ্জুরাংস্তাভ্যাং চণ্ডিকাস্তু শরোঁৎ কঠৈঃ । তাড়য়ানাম চাস্প্রেমু শাস্ত্রৌবৈ-রসুরপরৌ ॥১০॥ নিশ্চুদ্রে নিশ্চিহ্নং পাণিহুং

চৰ্ম্ম চাদায় সুপ্রভম্ । অতাতড়য়ানুপ্লি সিংহং দেব্যা বাভননৃন্তমম্ ॥ ১১ ॥ তাদ্ভিত বাভনে দেবী পূরঃপ্রণামি ১১০০ ।

সুপ্রভম্ অতিনির্মলং চৰ্ম্ম ফলককঃ আদায় বৃহদ্বাহু উত্তমং শ্রেষ্ঠং বাহনং সিংহং মুক্তি অশ্রয়ং ॥ ১১ ॥ তাদ্ভিতে ভিত্তি । দেবী পূরঃপ্রণামি, বাহনে  
তাদ্ভিতে সতি খুণেপ্রণ অস্ত্রবশেষেণ নিশ্চুদ্রে উত্তমম্ অর্চিং পজ্ঞম্ অশ্রয়ং শীঘ্রং চণ্ডৈদ ( অর্চয়ে) চন্দ্রাং চন্দ্রাংকারা পণিগণাশ্চন্দ্রক-  
বিশেষমাঃ যত্রোঁতি বহুব্রোণৌ কঃ । পুরঃপ্রোঁতঃ কদর্গবিত্তীর্ষালিপাঠঃ “কদর্গবিত্তীর্ষালিপাঠঃ” ইতি হ্রিবিবঃশরণানং, কয়মুক্তানং “হয়্যে” ইতিগাথৌ

১১০০  
১১০০  
১১০০  
১১০০

ক্ষিপ্ৰমক্ষিক্ষুৰৈশ্চৈবিত্তি পাঞ্জিণতকদৰ্শনাং ॥ ১২ ॥ ছিন্নে তিতি । চৰ্ম্মণি ফলকে পড়ো চ ( অথাদেব্যা ) ছিন্নে দ্যতি মোহস্থেরো নিশ্চয়ঃ শক্তিঃ চিক্ৰেপ । অদ্য নিশ্চয়ন্ত্য তাং শাক্ৰয়পি চক্ৰেণ দ্বিবা চক্ৰে ( অকরণাদেবাবীত জ্ঞেয়ম্ ) । কাদীশীম্ ? আভিমুখগতাং সমুপবাগতান্ ॥ ১৩ ॥ কোপোত । অপানিস্তরং নিশ্চয়েভ্যো দানবঃ কোপাখ্যাতঃ কোপেন জ্বলিতঃ সন্ শূণং জগ্রাহ । দেবী অযাতং তদপি শূণং মুষ্টিপাতেন অদূৰং চূৰিতবতী ॥ ১৪ ॥ আবিধোত । অথ অনন্তরং

নিশ্চয়ন্ত্যাপ্যশু সিচ্ছেদ চৰ্ম্ম চাপ্যটচন্দ্রকন্ ॥ ১২ ॥ ছিন্নে চৰ্ম্মণি পড়েগা চ শক্তিঃ চিক্ৰেপ মোহস্থরঃ । তামস্যস্য দ্বিনা চক্ৰে চক্ৰেণাভিমুখাগতান্ ॥ ১৩ ॥ কোপাখ্যাতো নিশ্চয়েভ্যোহপ শূলং জগ্রাহ দানবঃ । অযাতং মুষ্টিপাতেন দেবী তচ্চাপ্য-চূর্ণয়ং ॥ ১৪ ॥ আবিধ্যাথ গতং মোহপি চিক্ৰেপ চণ্ডিকাং প্রাত । সাপি দেব্যা ত্রিশূলেণ ভিন্না ভগ্নব-বাগতা ॥ ১৫ ॥

মোহপি নিশ্চয়েভ্যহপি গতাম আবিধ্য ভ্রময়িত্বা চণ্ডিকাং প্রতি চিক্ৰেপ । সাপি গদা গিশূলেণ দেব্যা ভিন্না বিদারিতা যিশ্চিতা বা সতী, ভগ্নবহম্ আগতা । শক্তিঃ দ্বিশূলেণেভ্যোহাপ্যনা জ্বলিতভূদিদগাৰ্ঘ্যঃ ( “ভিন্নৌ দারিত্যমাত্মহা” বিবিত কোষঃ ॥ ১৫ ॥ তত উত । ততোহনন্তরং পরশুহস্তম্ অযাতম্ আগচ্ছৎ তং দৈত্যপক্ষং দৈত্যা-শ্রেষ্ঠং দেবী বাণৌবেঃ শরসমূহৈঃ আহন্য ভূলে ( যক্ৰপে তলশক্ ) ভূবি অপাতবত ( গিঙহাদায়ায়নেপদং ; “তনং চাপঃ স্বরূপয়ো” বিবিত কোষঃ ) ॥ ১৬ ॥ কামিগিত্তি তন্মিন্ ভায়াবক্রমে ভয়ানকপরাক্রমে ভ্রাতার সোদরে নিশ্চয়েভ্যো নিপাতিতে সতি ( অর্পাং শ্ৰুন্তঃ ) অতীব সংক্লঙ্ঘঃ সন্ অধিকাং হন্তঃ প্রথমৌ ॥ ১৭ ॥ দ ইতি ।

স শুভঃ বশস্ সন্ অতুর্নৈরতুপমৈঃ অতুর্নৈঃ অতিদীর্ঘং ষ্ঠাতিভূজ-রশেযং সমগ্রং নভো বাপা বভৌ ( অতিশযোক্রঃ ) । কৌদৈশঃ ? গণীতপবমায়ুধৈঃ  
ধৃতশ্রেষ্ঠাঈশ্বঃ ॥ ১৮ ॥ তমিত । দেবো তন্ম আয়ত্তম্ আগচ্ছন্তঃ শুভঃ সমালোক্য শঙ্কম্ অবাদয়ৎ । অতিদূঃসহং ধনুর্বো জ্যাশদক্ষাপি চকার ॥ ১৮ ॥ পূর্বযেতি ।  
নিজঘণ্টাশ্বেনন অসাধারণঘণ্টাশ্বেন ককুভো দিশঃ পুরয়ামাস চ । কৌদৈশেন ? সমস্তদৈত্যৈনান্নাং সমুদৈত্যৈনান্নাং তেজোবধবিধায়িনা তেজসাঃ নাশকারিণঃ

ততঃ পরশুহস্তং ত-মায়াস্তং নৈত্যপুঙ্গবন্ । আহত্য দেবো বাণৌঘৈ-রপাতিরত ভূতলে ॥ ১৬ ॥ ভাস্মিন্মিপিভিতে ভূমৌ

নিশুন্তে ভীমবিক্রমে । প্রাতর্যাতীব সংক্রুদ্ধঃ প্রববৌ হস্তমধিকাম্ ॥ ১৭ ॥ স রথস্থস্তথাহুচ্চৈ-গৃহীতপরমায়ুধৈঃ । ভূজৈ-

রক্কাভি-রতুর্নৈ-র্ব্যাপ্যশেষম্ বভৌ নভঃ ॥ ১৮ ॥ তমায়াস্তং সমালোক্য দেবো শঙ্কমবাদয়ৎ । জ্যাশদক্ষাপি ধনুর্ব-চকা-

রাতীব তুঃসহন্ ॥ ১৯ ॥ পুরয়ামাস ককুভো নিজ-ঘণ্টাশ্বেনন চ । সমস্ত দৈত্যৈসন্মানাং তেজোবধ-বিধায়িনা ॥ ২০ ॥

ততঃ সিংহো মহানাদৈ-স্ত্যাজিতেভ-মহায়ুধৈঃ । পুরয়ামাস গগনং গাং তথোপদিগ্ধো দশ ॥ ২১ ॥

২০ ॥ তত ইতি । ততঃ অনন্তরং সিংহ মহানাদৈর্মদাশৈঃ গগনং পূরয়ামাস । ( তথাশদক্ষার্থঃ ) গাং পৃথিবীক্, তথা দশ উপদিগ্ধঃ সমাপাদ্য দশ  
দিশ ইত্যর্থঃ পুরয়ামাস ( অত্র শব্দানামিতিমতঃ ২ গর্ভত্র বাপ্য) দিক্শাঙ্কব্যঃ জাতিমিবেতুপাশঙ্কার্থঃ ) । কৌদৈশঃ ? ত্যাজিতা ইভ। ত্যক্তনৈঃ মহামনন

অতিশয়দানং গর্বং বা যৈঃ (সিন্ধুস্রোতটনাদ্রাশ্রয়ঃ কবিগণস্তৎক্ষণমেবাবতিতয়ান্মিমাংসাম্ভূতং ব্রহ্মণ্যঃ) ॥২১॥ ততঃ ইতি । ততঃ অনন্তরং কালী গগনং সমুৎপত্য উথায় করাভ্যাং স্মাং পৃথবীম্ অত্যাড়য়ং তাড়িতবতী । তন্নিনাদেন করতাড়নকরণক্ষেপে তে প্রাক্কসনাঃ পূর্বকালীনাঃ সাক্ষাৎ দধীময়ঃ তিরোহিতাঃ আচ্ছাদিতাঃ কৃতঃ ॥ ২২ ॥ অট্টেতি । শিবদূতা অশিবম্ অসাম্পাদং ভয়জনকমিতি যাবৎ অট্টিগদ্যঃ মহাহাসং চকার, হৃ ক্ষুটম্ ( অট্ট-শব্দেতি শব্দক্সদেয়াক্তিগণনং অকারনুৎ ) । তৈঃ পূর্বোক্তাদিতঃ শব্দৈঃ অম্বরাদ্রেহঃ প্রাপ্তঃ (ত্রসৌ উদ্বেগে দাতুঃ) । শুভ্রঃ পরমভিশয়ঃ কোপং ধবৌ প্রাপ্তঃ

— ১৩৩ —

কালী সমুৎপত্য গগনং স্মা-মত্যাড়য়ং । করাভ্যাং তন্নিনাদেন প্রাক্কসনাস্তে তিরোহিতাঃ ॥ ২২ ॥ অট্টেহাস-মশিবঃ শিবদূতী চকার হ । তৈঃ শব্দৈ-রম্বরাদ্রেহঃ শুভ্রঃ কোপং পরং যবৌ ॥ ২৩ ॥ দুরাশ্রংস্থিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ব্যাজহারান্বিকা যদা ।

তদা জয়েত্যভিহিতং দৌব-রাকান-সংস্থিতৈঃ ॥ ২৪ ॥ শুভ্রেনাগত্য যা শক্তি-মুক্তা জ্ঞানতিভাষণা । আয়াস্তী বাহুকুটাভা ॥ ২৩ ॥ দুরাশ্রমিতি । রে দুরাশ্রম্, দুঃস্থতাব, অং তিষ্ঠ তিষ্ঠ ইতি অধিকা যদা ব্যাজহার উক্তদতী, তদা আকাশস্থিতৈর্দেবৈঃ, জয় জয়যুক্তা ভব উৎকর্ষে বদ্ধ ইতি অভিহিতম্ উক্তম্ ( আশিষি লোটে ) ॥ ২৪ ॥ অত্রান্তরে আকস্মিকবিন্দুচিহ্নমাহ শুভ্রেনেতি । শুভ্রেন আগত্য যা শক্তি-বদ্ধা বিশেষো নুজ্ঞা ক্ষিপ্তা, সা আয়াস্তী আগচ্ছন্তী মহোক্ষয়া আকস্মিক্যা নিরস্তা পথি ভগ্নেতি যাবৎ । কাদীনী? জ্ঞানীভিঃ শিখাভিঃ প্রতিভাষণা



অতিভয়দাত্রী । বহুকুটোহ্মিরাশিঃ তদ্বদাভ । যম্যাঃ ॥ ২৫ ॥ সিংহেতি । শুভ্র সিংহনাদেন সাটোপবীরধ্বনিম্ন লোকত্রয়াত্তরং ত্রিলোক্যে  
অন্তরালং ব্যাপ্তং পূরিতম্ । ঘোরোহতিভয়ানকে নির্ঘাতনিশ্বনঃ জিতবান্ জিতঃ (কর্ম্মণি কুবত্বার্থঃ; যজ্ঞাণি কুবত্বোপ কুবত্ববিধানং দৃষ্টান্তে,  
তথাপি বাহুলাৎ কচিং কর্ম্মণি চ দৃষ্টতে, তথাচ ভারবিঃ “নারস্তু গমিতবতৌ ক্ষয়ং পুষ্টৈকত্বং ভানায়ধিপত্তিনা শিলাবিতানে” ইতি, প্রদক্ষিণেনাপি হৈল্লদং দ্যাপ্যন্তঃ;  
কিন্তু ময়া তত্র স্ফীকান্তান্তরং কল্পিতঞ্চ । যদা তদানীয়েব জাতো যোরে। নির্ঘাতধ্বনিঃ জিতবান্ শুভ্র সিংহনাদধ্বনিম্ভিত্তবান্, আকাশ্মৈকাক্ষ ॥ শব্দিনিরাকৃত্য, ইদমপি

সা নিরস্ত। মহোক্রিয়া ॥ ২৫ ॥ সিংহনাদেন শুভ্রস্য ব্যাপ্তং লোকত্রয়ন্তিরম্ । নির্গতানিস্রমে ধোরে। জিত্বানবনাখ্য, তে

॥ ২৬ ॥ শুভ্রমুক্তাঙ্কুরান্ দেবী শুভ্রসুতং প্রতিভাঙ্কুরান্ । চিচ্ছেদ স্বর্গরৈবগ্নৈঃ কাতশোহিত্য মন্থশশঃ ॥ ২৭ ॥ ৩৬ঃ ন।  
চণ্ডিকা ব্রূদ্ধা শূলেনাভিজঘান তন্ । স তদাভিহতে ভূমৌ নৃচ্ছিতো নিপপাত হ ॥ ২৮ ॥ ৩৭ঃ সস্তাপ্য (৬৬ঃ)।

तथा अक्षुब्धस्यैव तन्निमित्तं विद्यजनकं ज्ञेयम् ; अगमिप्रपञ्चस्तैरेः ॥२७॥ शु.सु.ति । देवौ उग्रैर्बलैः स्वशैरेः शुभ्रमुक्तान् शतशः सहस्रशः शतशः शिञ्छेद् । शुभ्रश्च तं प्रहितान् तया देव्या किप्यान् शतशः सहस्रशः शतशः शिञ्छेद् ॥ २१ ॥ तत इति । ततः दानतुरं सा चण्डिका क्रुद्धा सती भूमेन तं शुभ्रं शिञ्छयाम् । स शुभ्रः तदा सति ततः सन् भूमौ गच्छितो निपति । इ. इ. स्वयम् ॥ २८ ॥ तत इति । ततः अनन्तरं निजुष्टं चेतनां संप्राप्य आत्मनि वै । गृहात्तुलां सन्

ଶରୈଦେବୀଂ କୌଷିକୀଂ, କାଳୀଂ ଚାୟୁଂ ଶଂଃ ଚ, ତଥା କେଶରୀଂ ଶିଂହଂ ଆଞ୍ଜୟାନ ॥ ୧୯ ॥ ପୁନଃକ୍ଷତି । ପୁନଃ ପୁନଃ ପି ଦିତିଞ୍ଜୋ ନିଞ୍ଜୁଃ ବାହୁନାୟ୍ ଅୟୁଂ ଦଂଶୟାମି କୁହା-  
 ଚକ୍ରାୟୁଧେନ ଚକ୍ରାମି ଚ ଆୟୁଧାନି ବାଣୀଞ୍ଚ ତଂ ଚକ୍ରାୟୁଧଂ ତେନ (“ସମ୍ରାପିଦବାଜାତିବିଧିବ୍ରହ୍ମାୟ” ଇତି କ୍ରୋଧବୈକଟ୍ୟେ; ଅତଏବ ବ୍ୟକାତି “ଞ୍ଚକ୍ରାମି ମାସିକାଂ-  
 ଶ୍ଚେ”ତି) ଚଞ୍ଚିକାଂ ଛାଦୟାମାସ ( ଚକ୍ରାଧ୍ୟାଶସ୍ତ୍ରୋର୍ଣ୍ଣେତି ବିଦ୍ୟାବିନୋଦଃ ) । ସ କୌଦୃକ୍ ? ଦତ୍ତଞ୍ଜେଶ୍ବରଃ ଦାନଦାନାର୍ଥପିପଃ “ଦିତିଃ ଯାଂ ଥଣ୍ଡେନ ଦଲୋ” ଇତି ବିଷୟଃ; ଦତ୍ତଃ

ମାତ୍ରକାର୍ଯ୍ୟ କଃ । ଆଞ୍ଜୟାନ ଶରୈଦେବୀଂ କାଳୀଂ କେଶରୀଂ ତଥା ॥ ୧୯ ॥ ପୁନଃକ୍ଷ ଚକ୍ରା ବାହୁନା-ନୟୁଂ ଦତ୍ତଞ୍ଜେଶ୍ବରଃ । ଚକ୍ରା-  
 ଯୁଧେନ ଦିତିଞ୍ଜ-ଛାଦୟାମାସ ଚଞ୍ଚିକାୟ ॥ ୨୦ ॥ ତତ୍ତୋ ଭଗବତୀ କ୍ରୁକ୍କା ଦୁର୍ଗା ଦୁର୍ଗାଞ୍ଜିନୀଶମୀ । ଚିଛେଦ ତାନି ଚକ୍ରାମି ଅଶରୈଃ  
 ମାୟକାଂଞ୍ଚ ତାନ୍ ॥ ୨୧ ॥ ତତ୍ତୋ ନିଞ୍ଜୁଞ୍ଜୋ ବେଗେନ ଗଳାମାଦାୟ ଚଞ୍ଚିକାୟ । ଅଭ୍ୟାସାବତ୍ତେ ହସ୍ତଃ ଦୈତ୍ୟେନା-ନମାସ୍ମତଃ ॥ ୨୨ ॥

କଞ୍ଜପଦ୍ମୋ “ଅଦିତିଦତ୍ତଃ କାଞ୍ଚେ” ଗାଦି-ଶ୍ରୀ ଗ୍ରାମତୋକ୍ତଃ ॥ ୨୦ ॥ ତତ୍ତ ଇତି । ତତଃ ଅନନ୍ତରଂ ଭଗବତୀ ଅଦିତ୍ୟାସ୍ବାଶାମିନୀ ନେତ୍ରୀ ଅଶରୈଃ ନିଜସରୈଃ ତାନି  
 ଚକ୍ରାମି, ତାନ୍ ମାୟକାଂଞ୍ଚ ଚିଛେଦ ( ମାୟକୈଶ୍ବରସାଧୈକରିତି ସ୍ଵୟନ୍ଦର୍ଶନାଂ ମାୟାକାଂ ଦକ୍ଷାଦିଃ ) । କୌଦୃକୀ ? ଦୁର୍ଗା ଦୁର୍ଗା ଯୁଗ୍ମକୃତମତି ସାମଂ । ଦୁର୍ଗାଞ୍ଜିନୀଶମୀ  
 ଦୁର୍ଗଃ ସକ୍ଷଟୟ୍ ଅତିଃ ପୀଢ଼ା, ସନ୍ନା ଦୁର୍ଗେ ସକ୍ଷଟେ ନା ଅତିଃ, ତାଂ ନାଶୟାତୀତି ( ଶାନ୍ତାଂ ଶ୍ରବଣେ ) । ଏତେନ ବା ଅକ୍ଷେପାଂ ଦୁର୍ଗାଞ୍ଜିନୀଶମୀତି, ନା ନିଜସ୍ଵାଶାଞ୍ଜାଂ  
 ନାଶୟିଷ୍ୟାତୀତି କିଂ ଚିଦ୍ଭାମିତ୍ୟୁକ୍ତଂ ଭବତି ॥ ୨୧ ॥ ତତ୍ତ ଇତି । ତତଃ ଗନନନ୍ତଃ ନିଞ୍ଜୁଞ୍ଜୋ ଗଳାୟ ଗୁଣ୍ଡିତା ଚଞ୍ଚିକାଂ ହସ୍ତଃ ବେଗେନାପାସତଂ । କୌଦୃକୀ ? ଦୈତ୍ୟ-

সেনয়া সমাবৃত্তো বেষ্টিতঃ ॥ ৩২ ॥ তসোতি । চণ্ডিকা আশু শীঘ্রম্ আপাতত আগচ্ছতস্তস্ম্য গদাঃ শতধারেণ তৌলেন খণ্ডেগন চিচ্ছেদ । অনন্তরঃ  
স চ নিশ্চিন্তে হপি শূলং সমাদদে গৃহীতবান্ ॥ ৩৩ ॥ শূলেতি । চণ্ডিকা শূগহন্তং সমায়ান্তম্ আগচ্ছন্তং নিশ্চিন্তম্ ত্রমরাদিনং দৈত্যং বেগানিচ্ছেন অত্যন্ত-

ক্রমিতেন শূলেন হৃদি বক্ষসি বিবাহ ॥ ৩৪ ॥ ভিন্নসোতি । শূলেণ ভিন্নসা তস্য নিশ্চিন্তস্য হৃদয়াং অপরঃ অগ্নাঃ পুরুষো নিঃসৃতঃ বিনিষ্কান্তবান্ । কিং কুরুন্ ?  
তস্মাপিতত এবাশু গদাং চিচ্ছেদ চণ্ডিক । খণ্ডেগন শিতধারেণ স চ শূলং সমাদদে ॥ ৩৩ ॥ ধূলহন্তং সমায়ান্তুং নিশ্চিন্ত-

মমরাদিনম্ । হৃদি বিবাহ শূলেণ বেগাবিচ্ছেন চণ্ডিক ॥ ৩৪ ॥ ভিন্নস্য তস্য শূলেণ হৃদয়াং নিঃসৃতং হন্তেহি পরঃ । সপাদনো

মহাবীর্য্য-স্তিষ্ঠতি পুরুষো বদন্ ॥ ৩৫ ॥ তস্য নিক্রামতো দেবো প্রহস্য স্মনবৎ ততঃ । শিরশ্চিচ্ছেদ খণ্ডেগন ত্রেহাশমা-

বপতদ্ ভুব ॥ ৩৬ ॥ ততঃ সিংহশ্চথাদোগ্র-দংষ্ট্রাক্ষুশিরোপরান্ । অস্তরাংস্ত্রাংস্তথা কালী শিবদূতৌ তথাপরান্ ॥ ৩৭ ॥

তিষ্ঠতিষ্ঠেত তর্জনাবচনং বদন্ । কৌদূকঃ ? মহাবলঃ অতিশক্তিঃ ; মহাবীর্য্যোত্তমাসাম্যকঃ ॥ ৩৫ ॥ তস্মেতি । ত্রেহাশ্বিনস্তরং দেবো নিক্রামচ্ছতঃ পুরুষস্য  
শিরঃ স্মনবৎ সশব্দং যথা স্মাৎ তথা প্রহস্য খণ্ডেগন চিচ্ছেদ । তর্জনাং নানিগুরম্ অগৌ পুরুষো ভুব অপহৃতঃ ॥ ৩৬ ॥ তত ইতি । ততঃ স্মনবৎ সিংহঃ

উগ্রদংষ্ট্রাভঃ ক্ষুণ্ণা চূর্ণিতা শিরোপরা গ্রীবা যেষাং তথা কুহা অস্তরাংস্ত্রাণাং । তথা কালী চ অগরান্ নমাদ । শিবদূতৌ চ অপরাং পাদ ॥ ৩৭ ॥ পৌমারীতি ।

৩২  
৩৩  
৩৪  
৩৫  
৩৬  
৩৭

কেচিৎসাহস্রাঃ কৌমারীশক্তি-নিভিন্নাঃ কৌমাৰ্যাঃ শত্ৰুঃ। বিদ্যবিভাঃ সন্তঃ নেশুঃ নক্ষত্রাঃ। অগ্রে ব্রহ্মাণীযব্রপূতেন ব্রহ্মাণ্য। আভিচারিকমগ্নেণ সংস্কৃতেন ভোয়েন নিরাকৃতাঃ নিরস্তাঃ সন্তো নেশুঃ ॥ ৩৮ ॥ মাহেশ্বরীত্রিশূলেণ ভিন্না বিদীৰ্ণাঃ সন্তঃ পেতুঃ। কেচিদস্রা বারাহীতুগুধাতেন বারাহাঃ শ্রোথগ্রহায়েণ চূর্ণীকৃতাঃ সন্তো ভূবি পেতুঃ ॥ ৩৯ ॥ যজ্ঞেতি। বৈষব্য। চক্রেণ দানবাঃ যজ্ঞগুং যথা ভবতি তথা কৃতাঃ। তথা ক্রন্দীহস্তাগ্রবিযুক্তেন ক্রন্দ্য। হস্তাগ্রাণ

কৌমারী-শক্তি-নিভিন্নাঃ কেচিন্বেশুগহাস্রাঃ। ব্রহ্মাণী-মন্ত্রপূতেন ভোয়েনাগ্রে নিরাকৃতাঃ ॥ ৩৮ ॥ মাহেশ্বরী-ত্রিশূলেণ ভিন্নাঃ পেতুস্তথাপরে। বারাহী-তুগুধাতেন কেচিদচূর্ণীকৃতা ভূবি ॥ ৩৯ ॥ যজ্ঞগুগুধঃ চক্রেণ বৈষব্য। দানবাঃ কৃতাঃ। যজ্ঞেণ চৈন্দ্রীহস্তাগ্র-বিযুক্তেন তথাপরে ॥ ৪০ ॥ কেচিদ্ বিনেশু-রস্রাঃ কেচিন্নক্ষত্রাঃ কেচিন্বেশু-রস্রাঃ ভক্ষিতাশ্চাপরে কালী-শিবদুতী-মুগাধিপৈঃ ॥ ৪১ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যো নিশ্চিন্তবধঃ ॥ \* ॥ ৯ অঃ ॥ \*

ক্ষিপ্তেন যজ্ঞেণ চ অপরে যজ্ঞগুং কৃতা। ইত্যর্থঃ (যজ্ঞগুগুধঃ) “শ্রুৎ সাদৃশ্চে সমাসবচ্চে”তি দ্বিভুং, সমাসবদ্ধাদ্বিভক্তিলুক্ চ ॥ ৪০ ॥ কেচিদিতি। কেচিদস্রা বিনেশুঃ মূতাঃ; কেচিন্নাহবাহুং মহামুদ্রাং নক্ষত্রাঃ পলায়িতাঃ; অপরে কালীশিবদুতীমুগাধিপৈঃ ভক্ষিতাশ্চ ॥ ৪১ ॥

ঋষিরূবাচ ॥ ১ ॥ নিশুন্তমিতি । শূন্তঃ ক্লুঙ্কঃ সন্ বচোহববৌৎ বক্ষ্যমাণমূবাচ (উক্তার্ণস্মাপি রুচিং প্রয়োগাৎ সচ ইতি কর্মোপাদানম্) । কিং কৃত্বা ?  
 প্রাণসন্মিতং প্রাণতুল্যং ভ্রাতরং নিশুন্তং নিহতং দৃষ্টা, বলং সৈন্যৈশ্চৈব হস্তগতং দৃষ্টা, বলং সৈন্যৈশ্চৈব হস্তগতং দৃষ্টা ॥ ২ ॥ কিমূবাচেত্যাহ বলতি । হে দুর্গে, ত্বং গর্ভম্ অতঃ সঙ্গগ্নিহরীণীত  
 অহঙ্কারং মা আবহ ন কুরু । গর্ভাকরণে হেতুনাহ— হে বলাবলেপদুর্গেই বলং মাতৃগণঃ তস্মাদবলেপো গর্ভবন্তেন দুর্গেই উদ্ধতে ! যা ভ্রম  
 অন্তাসাং বলং সামর্থ্যম্ আশ্রিত্য যুধ্যসে । কীদৃশী ? অতিমানিনী অত্যাহঙ্কারবতী ( “অবলেপস্ব গর্ভে স্মাং লেপনে ভ্রমণেহপি চে”তি মেদিনী । পদমার্গস্ত —  
 বলযোগাঙ্গলং শক্তিমন্তম্ অবলয়তি নিবস্যাভীতি বলাবলা, যদা বলম্ অ। সমাগ্ বলতি বর্দ্ধতে অল্পভাবিণ্যর্গস্মাৎ বর্দ্ধয়তীতি বলাবলা । মর্দ্যাস্ত্যপিনিধাঃ ভক্তান্

ধাষিরূবাচ ॥ ১ ॥ নিশুন্তং নিহতং দৃষ্টা । ভ্রাতরং প্রাণসন্মিতম্ । হস্তগতং বলৈশ্চৈব হস্তং ক্লুঙ্কোহববৌৎ বচঃ ॥ ২ ॥

প্রবলান্ করোতি অভক্তাংশ্চ নির্ধলান্ করোতি, তস্যাঃ সম্বোধনম্ । নতু সঙ্গজনন্যাঃ অন্তঃপ্রহনিগ্ৰহণকণ্ঠৈবমম্যম্ভুচিতিগতি চেত্তব্রাহ—অপদুর্গে অগপতং দুর্গে  
 দৌৰঃ স্বপরভেদরূপঃ যন্যাঃ নিরন্ত-স্বপর-মতিভেদে, তেষাং ভক্তান্তসারেন ফলদানাহ । তথাচ “সেবানুরূপমদুয়ো ন বিপস্যামোহহ” ইতি, “যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে”  
 ইত্যাদি গীতাসু চ । হে দুর্গে হে দুর্গেই হে ননোবচসোরগোচরে, গর্ভম্ উদ্ধতং মা আবহ অণান্নাং মা প্রাপয় অন্তর্ভাবিণ্যর্গস্মাৎ, যদৃক্ । “সংসর্গমানেব  
 ধাতুনাং গান্তান্তর্ভাব ইধ্যতে । আনুকূল্যাং প্রয়োগস্ত স্নেহস্ত ন কণ্ঠকেনে”তি মন্ত্রকৌমুদ্যম্ ; এতেন কৃপণা স্তম্ভাঃ দম্বা মামন্তগৃহাণ উভুক্তম্ । বা ৩ অগ্রাদানিপি

বলং দেহশক্তিযু আশ্রিত্য ভগ্নায়ীভূয় যথাসে সৰ্বশক্তিৰূপত্ৰাং । অতঃ কারণং সা জন্ম-গতিয়ানী অতিমানবেশ্য, কেবলং পূজার্হা ইত্যর্থঃ ; অতো নয়া বলং দেহশক্তিযু আশ্রিত্য ভগ্নায়ীভূয় যথাসে সৰ্বশক্তিৰূপত্ৰাং । অতঃ কারণং সা জন্ম-গতিয়ানী অতিমানবেশ্য, কেবলং পূজার্হা ইত্যর্থঃ ; অতো নয়া

তরঃ মনাংবাত্তম্যৈব বশন্তুঃ প্রাবন্তুঃ গন্তুঃ । বা নাপূজিতান্যথা ।  
 যাজ্ঞিকিঃ ১৫৭৭২৯ ৩ ৥ দেববাচ ৪ ৥ একেবাহ্

বলাবলেপদুকে স্থা মা দুগে গৰমাবহ ।  
 অগ্ন্যমাং বপণাভ্রত যুগে বাত্মানব ॥ ৩৬ ॥  
 দেবো সমস্তমি ॥ ৩৭ ॥  
 বঙ্গাণী

জগত্বে দ্বিতীয়া কা মাপরা ।  
পশ্চৈত্রা দুম্ভ ম্যেব  
বিশন্তো ॥ ৫ ॥ ৩৩  
শদ্ববভুতঃ ৩৩  
নগ্ৰাভা ৩৩  
বজ্জিত-বিত্ত

প্রমুখা লয়ম । তস্য দেব্যাস্তনো  
 জগ্ম-রৌকবসীং তদায়িক ॥ ৬ ॥  
 দেবুবাহ ॥ ৭ ॥ অর্-মুখ্যাহতানক

অনন্তরং তা ব্রহ্মাণী প্রযথাঃ সমস্তাঃ দেবাঃ তস্মা  
দেব্যাস্তনৌ দেহে নরায় একং জগাঃ প্রাপুঃ ।  
তুঙ্গীনা অথকা কোথকা প্রাণবাগাঃ ॥ ৩৬ ॥

৭ অহমিতি। অহং বিভূত্যা উপাষণে বিভূত্বেন ইহ যুদ্ধে বক্তৃতাঃ কপৈঃ নৃত্তিভিঃ যৎ আস্থিত। যদবহুনাং কৃতবতীয়া। তদবস্থানঃ নঃ প্ৰকৃতঃ।

দৃশ্যতে চ ; কিন্তু টীকাকুড়িন' লিখিতম) ॥ ৯ ॥ তত ইতি । (পরেবর্ষচনমিদম) । ততঃ অনন্তরং দেব্যাঃ শুভস্র চ উভয়োযুগ্মং বন্দয়ুক্রমিতি যাবৎ প্রববুতে প্রাবৃত্তম্ ।  
 কীদৃকং ? পশ্যতাং সর্বদেবানাম্ অসুরাণাং চ দারুণং ভয়ানকম্ ॥ ১০ ॥ শরেতি । ভূয়ঃ পুনরপি ভয়োযুগ্মমভূৎ । কীদৃশম্ ? শরবর্ষে বাণবর্ষে,  
 ( তথাশব্দার্থঃ ) শিতেঃ শানিতেঃ শস্ত্রেঃ খড়্গাদিভিঃ, অস্ত্রেঃ শক্ত্যাদিভিঃ, কীদৃশে ? দারুণে ? দারুণৈঃ ভীষণৈঃ, সৰ্বলোকানাং ভয়ঙ্করং ( ভূয়ঃ প্রচুরং ) তথা তথা

রূপৈর্ষদাস্থিতা । তৎ সংহতং ময়ৈকেব তিষ্ঠাম্যাজৌ স্থিরো ভব ॥ ৮ ॥ স্বায়মুবাচ ॥ ৯ ॥ ততঃ প্রববুতে যুগ্মং দেব্যাঃ বৃহস্র  
 চোভয়োঃ । পশ্যতাং সর্বদেবানাং-নমুরাণাঞ্চ দারুণম্ ॥ ১০ ॥ শরবর্ষেঃ শিতৈঃ শস্ত্রে-স্তথাস্ত্রৈশ্চৈব দারুণৈঃ । তয়োযুগ্মমভূদ্  
 ভূয়ঃ সর্বলোক-ভয়ঙ্করম্ ॥ ১১ ॥ দিব্যান্যস্ত্রাণি শতশো মূমুচে যান্থথাস্থিক । বভঞ্জ তানি দৈত্যৈশ্চ-স্তৎ প্রতীযাত-বভূভঃ  
 ॥ ১২ ॥ মুক্তানি তেন চাস্ত্রাণি দিব্যানি পরমেশ্বরী । বভঞ্জ লীলৈর্যেবোগ্র-ভৃঙ্করোচ্চারণাদিভিঃ ॥ ১৩ ॥ ততঃ শরশতৈর্দেবী-

ভয়ঙ্করমিতি বা ; যদা যুদ্ধবিশেষং ভূয়োহতিমহং ) ॥ ১১ ॥ দিব্যানিভ । আশ্বকা যানি শতশো দিব্যানি অঙ্গৌকিকানি আগ্নেয়াদীন অস্ত্রাণি মূমুচে ঐশ্বর্যবতী,  
 অথ অনন্তরং দৈত্যৈঃ তানি তৎ প্রতীযাতকৰ্ত্তৃভিঃ তেনাং দিব্যাস্ত্রাণাং প্রতিঘাতো নিরাকরণং তৎ কারিভিঃ প্রত্যঙ্গিরিতি যাদং ৷ ১৩ ৷ ৷ ১৩ ৷ ৷ দেবদীর্ঘাদিভি-  
 বভঞ্জ নিরস্তবান্ ॥ ১২ ॥ মুক্তানীতি । দেবী তেন শুভেন মুক্তানি দিব্যাংস্ত্রাণি উগ্রভৃঙ্করোচ্চারণাদিভিঃ উল্লিখ্য ৷ ১৩ ৷ ৷ ১৩ ৷ ৷ দেবদীর্ঘাদিভিঃ

(আদিদ্বা ক্রোধদৃষ্ট্যবলোকনাদয়ঃ) । সমর্থয়তি বিশেষণেন—যতঃ পরমেশ্বরী সৰ্বনিয়ন্ত্রী পরমসামর্থ্যাধীনা বা ॥ ১৩ ॥ তত ইতি । ততঃ অনন্তরং সোহসুরঃ শর-  
শতৈব হুভিবৈগৈঃ দেবীম্ আচ্ছাদয়ত (গিঙস্তাদায়নপদম্) । সাপি দেবী কুপিতা সতী ইযুভিঃ বারৈঃ তৎ তানি শরশতানি ধনুশ্চ (অ) চিচ্ছেদ চ ॥ ১৪ ॥ ছিন্নে  
ইতি । অথানন্তরং দৈত্যৈঃ শতঃ ধনুযি ছিন্নে সতি, তথা তেনৈব প্রকারেণ কুপিতঃ সন্নিতি যাবৎ শক্তিঃ আদাদে অগ্রহীৎ । দেবী অস্ত্র শূন্তস্য করস্থিতাৎ

মাচ্ছাদয়ত সোহসুরঃ । সাপি তৎ কুপিতা দেবী ধনুশ্চিচ্ছেদ চেযুভিঃ ॥ ১৪ ॥ ছিন্নে ধনুযি দৈত্যৈঃ শতং শক্তি-মথাদাদে ।

চিচ্ছেদ দেবী চক্রেণ তামপ্যস্য করস্থিতাম্ ॥ ১৫ ॥ ততঃ খড়্গমুপাদায় শতচন্দ্রকঃ ভানুমৎ । অভ্যধাবত্তদা দেবীং দৈত্যানা-

নধিপেশ্বরঃ ॥ ১৬ ॥ তস্যাপতত এবাশু পড়গং চিচ্ছেদ চণ্ডিকা । ধনুম্ তৈঃ শিতৈর্বৈগৈশ্চতুর্ন চার্ককরামলম্ ॥ ১৭ ॥

হস্তস্থানৈব তামপি শক্তিং চক্রেণ চিচ্ছেদ ছিন্নবতী ॥ ১৫ ॥ তত ইতি । অনন্তরং দৈত্যানামধিপেশ্বরঃ দৈত্যগতীনামপি শাস্তা শূন্তঃ (যদ্বা হে অধিপ দে রাজান, দৈত্যানামীশ্বরঃ শূন্তঃ) খড়্গম্ উপাদায় গৃহীয়া ভানুমৎ অতিকিরণশালি শতচন্দ্রং শতচন্দ্রাণ্যং ফলকঞ্চ উপাদায় তাং দেবীং তদা অভ্যধাবৎ (শতং চন্দ্রাঃ চন্দ্রাকারা যর্ণিয়াশ্চন্দ্রকা যত্র তৎ) ॥ ১৬ ॥ তস্ত্রোত্তি । চণ্ডিকা আশু শীঘ্রম্ আপততঃ আগচ্ছতঃ তস্ত্র খড়্গং চৰ্ম্ম চ ধনুম্ তৈলধৰ্ম্মম্। শিতৈঃ (হস্তৈঃ) শরনিরাসায় ধনুঃপদং ) শিতৈর্কারৈশ্চিচ্ছেদ । কীদৃশম্? অৰ্ককরামলং সূর্য্যকিরণবদতিনিৰ্গলম্ (উভয়োর্কিশেষণম্) ॥ ১৭ ॥ হতেতি । স দৈত্যঃ



হতাস্থো হততুরগঃ ছিন্নধৰা বিগতসারথিশ্চ সন্ (এতেন পদাতিরিতি লভাতে) ঘোরং ভয়ানকং মৃদগরং লৌহলগুড়ং জগ্রাহ। কীদৃক্? অঙ্গিকানিধনায় উগ্রাতঃ  
 কৃতোদযোগঃ ॥ ১৮ ॥ চিচ্ছেদেতি। আপাততঃ আগচ্ছতস্তস্য মৃদগরং নিশিতস্তীকৈঃ শরৈশ্চিচ্ছেদ (চণ্ডিকেন তৃতীয়শ্লোকাদযেতব্যম্)। তথাপি অশস্ত্রাঃপি  
 স দৈত্যঃ যুষ্টিম্ উগ্রম্য প্রসার্য বেগবান্ সন্ তাং চণ্ডিকাম্ অভ্যপাবৎ ( “বেগো জবে প্রবাহে চ মহাকালকলেহপি চে”তি মেদিনী ) ॥ ১৯ ॥ বেগবত্বিকলমালি

হতাস্থঃ স তদা দৈত্য-শিছন্নধৰা বিসারথিঃ। জগ্রাহ মৃদগরং ঘোর-মণ্ডিকানিধনোদ্রুতঃ ॥ ১৮ ॥ চিচ্ছেদাপিততস্তস্য মৃদগরঃ  
 নিশিতৈঃ শরৈঃ। তথাপি সোহভ্যপাবভাৎ যুষ্টিমূগ্রম্য বেগবান্ ॥ ১৯ ॥ স যুষ্টিং পাতয়ামাস হৃদয়ে দৈত্যপুঙ্গবঃ। দেব্যা-  
 স্তুষ্কাপি সা দেবী তলেনোরম্যতাড়য়ৎ ॥ ২০ ॥ তলপ্রহারিভিহতো নিপপাত নহীতলে। স দৈত্যরাজঃ মহস। পূনরৈব তথা-  
 স্থিতঃ ॥ ২১ ॥ উৎপত্য চ প্রগৃহ্যৈচ্চ-দেবীং গগনমাস্থিতঃ। তত্রাপি সা নিরাধারা যুগ্মে তেন চণ্ডিকা ॥ ২২ ॥ নিহত্বা

স ইতি। স দৈত্যপুঙ্গবঃ দেব্যা হৃদয়ে তাং যুষ্টিং পাতয়ামাস মৃদ্বা। তাড়িতবানিতাপঃ ( যুষ্টিঃ স্ত্রীপুংসযোগঃ )। সা দেবী তুষ্কাস্থরমপি তলেন তলানিহনঃ। চাপেটৈ-  
 নেতি যাবৎ উরসি অতাড়য়ৎ ॥ ২০ ॥ তলেনিতি। স দৈত্যরাজঃ তলপ্রহার্যভিহতঃ সন্ মহীতলে নিপপাত। তথা মহস। তৎক্ষণমৈব পুনরাগতঃ ॥ ২১ ॥  
 উৎপতেতি। দেবীং প্রগৃহ্য উচ্চৈরুৎপত্য উল্লংগম্বা চ গগনম্ আকাশম্ আপ্তিতোহভূত্বিতি শেবঃ। সা চণ্ডিকা তত্রাপি গগনেহপি নিরাদারা স। তলেনাশ্বরেণ

সহ যুগ্মে ॥ ২২ ॥ নিষ্ক্রমিতি । তদা প্রথমং দৈত্যাঃ চণ্ডিকা চ পরম্পরম্ অগোহতাং প্ৰে আকামৌ নিষুদ্ধাং বাহুবুদ্ধাং চক্রতুঃ । কৌদৃশং যুদ্ধম্ ? সিদ্ধা দেব-  
যোনিবিশেষাঃ ( তথাচ “সম্প্রমাষ্টগুণৈশ্চর্যাঃ সিদ্ধ উচ্যন্তিভীষতে” চণ্ডি ), মনয়ো মননব্যাপারাস্তেগামপি বিশ্বয়কারকং বিশ্বয়জনকম্ । যদা যুদ্ধং কৌদৃশম্ ? প্রথমম্  
অতিশ্রেষ্ঠম্, অতুতপূৰ্ণং বা ( “নিষুদ্ধং বাহুবুদ্ধে স্মা” দৈত্যমরঃ ) ॥ ২৩ ॥ তত ইতি । ততঃ অনন্তরম্ অধিকা তেন শুভেন সহ স্ফটিকং বহুকালং ব্যাপা নিষুদ্ধাং  
বাহুবুদ্ধাং কৃৎস্না উৎপাত্য উদ্ধীকৃত্য ভ্রাময়ামাস ( হৃষাভাব আধঃ ), ধরণীতলে চিক্ষেপ ক্ষিপ্তবতী চ ॥ ২৪ ॥ স ইতি । স শুভঃ ক্ষিপ্তঃ সন্ ধরণীঃ প্রাণা

—  
১৩৩  
১৩৪  
১৩৫  
১৩৬

তদা দৈত্য-শচণ্ডিকা চ পরম্পরম্ । চক্রতুঃ প্রথমং সিদ্ধ-মুনিবিশ্বয়কারকম্ ॥ ২৩ ॥ ততো নিষুদ্ধাং স্ফটিকং কৃৎস্না তেনাধিক

সহ । উৎপাত্য ভ্রাময়ামাস চিক্ষেপ ধরণী-তলে ॥ ২৪ ॥ স ক্ষিপ্তো ধরণীঃ প্রাপ্য মূষ্টিযুদ্ধায়া বোপিতঃ । অভাধাবত দুর্ভায়া

চণ্ডিকা-নিধনেচ্ছয়া ॥ ২৫ ॥ তন্মায়ান্তঃ ততো দেবী সর্বদৈত্যজেন্দ্রবরম্ । জগত্যাং পাতয়ামাস ভিত্তা শূলেন বক্ষসি ॥ ২৬ ॥ স

মূষ্টিম্ উদ্যম্য প্রসার্য বেগিতে জাতবেগঃ সন্ চণ্ডিকনিধনেচ্ছয়া চণ্ডিকায় মারগেচ্ছয়া অভাধাবত । দুষ্টাত্মা হুবুদ্ধিঃ ( দৃষ্টাপ্যবেদাং ) ॥ ২৫ ॥ ভবিষি ।  
ততঃ অনন্তরং দেবী আয়াস্তম্ আগচ্ছন্তঃ তং শুভং শূলেন বক্ষসি ভিত্তা জগত্যাং পাতয়ামাস । কৌদৃশম্ ? সর্কেষাং দৈত্যজনানামীধরম্ ॥ ২৬ ॥ স  
ইতি । স শুভঃ দেবীশূলাগ্রবিক্ষতঃ দেব্যা শূলশ্রেষ্ঠেন বিদারিতঃ সন্ উৰ্ব্বায়া ভূমৌ পপাত । কৌদৃক ? গভাস্তঃ গভ্রাণঃ ( ন তু যুচ্ছিত্ত্বাদিনা ) । কিং

— ଶୁଦ୍ଧି ଶୁଦ୍ଧି

କୁର୍ବନ୍ ? ସକଳାଂ ସମଗ୍ରାଂ ପୃଥିଂ ଚାଲୟନ୍ କମ୍ପାୟନ୍ ( ଆର୍ଷୋ ହସ୍ତାଭାବଃ ; ଯଦ୍ୱା ଚଳନ୍ତଂ ଚାଳଃ ତଂ କୁର୍ବନ୍ ; ଯଦ୍ୱା ଚାଲୟନ୍ ସ୍ଥାନାନ୍ତରଂ ପ୍ରାପ୍ୟନ୍ନିବେତ ନିରତିଶୟଚଳନମେବ  
 ପର୍ଯ୍ୟବସିତମ୍ ) । ସମଗ୍ରତାଂ ଦର୍ଶୟତି—ସାକ୍ଷିଦ୍ୱୀପାଂ ସମୁଦ୍ରଦ୍ୱୀପସାହିତାଂ ; ସମ୍ପର୍କତାଂ ପର୍କିତେଃ ସାହିତାମ୍ ( ଯଦ୍ୱା ଯଂ ଗୁଳଭେଦଚଳନେ ସମଗ୍ରଭୂମିଚଳନାଭାସଦର୍ଶନାତ୍ତଦ୍ୱଦ୍ୱ  
 ଖଞ୍ଜଚଳନାଭାବାୟ ସକଳାମିତ୍ୟାଦି ବିଶେଷଣଂ, ତଥା ଚାନ୍ଦ୍ରତମାଗରଘୃତଭାର୍ଗବୀୟଂ “ବିଂଶତିଶତଂ ବାୟବ୍ୟୋ ଭାଗେଷୁ ନବତିଶ୍ଚଳେଂ । ଅଶ୍ୱିତିସ୍ତ ଚଳେନୈଦ୍ରେ ସମ୍ପ୍ରାତର୍ବିକ୍ରମେ ଚଳେଂ”  
 ଇତି, ବିଂଶତିଶତାଦୀନି ଯୋଜନାନୀତାର୍ଥ ଇତି ତତ୍ର ବ୍ୟାଖ୍ୟାନାଂ ; ଏତତ୍ତୁ ଅନନ୍ତଜ୍ଞାଜଗତ୍ତ୍ୱକମ୍ପାଦିଗ୍ରହ, ତତ୍ର ସମଗ୍ରଚଳନୋକ୍ତେଃ, ତଥାଚ ବୈଷୟେ “ସଦା ସିଦ୍ଧଃ ହୃତେ ଦେବୋ  
 ଗତାତ୍ମଃ ପପାତୋର୍ବିର୍ବ୍ୟାଂ ଦେବୀଶୂଳାଗ୍ର-ବିକ୍ରତଃ । ଚାଲୟନ୍ ସକଳାଂ ପୃଥିଂ ସାକ୍ଷିଦ୍ୱୀପାଂ ସମ୍ପର୍କତାମ୍ ॥ ୨୧ ॥ ତତଃ ପ୍ରାସନ୍ନ-ଗାମିନଂ  
 ହତେ ତସ୍ମିନ୍ ଧୂରାତ୍ମାନି । ଜଗତ୍ ସ୍ୱାସ୍ତ୍ୟମେତୀବାପ ନିର୍ମଳକ୍ଷାଭବତ୍ତଃ ॥ ୨୨ ॥ ଉଂପାତମେଷାଃ ମୋକ୍ଷା ଯେ ପ୍ରାଗାମଂସନ୍ତେ ଶମଂ ଯୟଃ ।  
 ସରିତୋ ମାର୍ଗବାହିନ୍ୟ-ସ୍ତଥାମଂସ୍ତତ୍ର ପାତିତେ ॥ ୨୩ ॥ ତତୋ ଦେବଗଣାଃ ସର୍ବେ ହର୍ଯ୍ୟିର୍ନିର୍ଭର-ମାନସାଃ । ବଭୂବୁନିହତେ ତସ୍ମିନ୍ ଗନ୍ଧର୍ବମ୍ ।  
 ଯଦାୟୁର୍ନିତଲୋଚନଃ । ତଦା ଚଳତି ହୃରେଷା ମୈଶଳବନକାନନା” ଇତି ) ॥ ୨୧ ॥ ତତଃ ଇତି । ତତଃ ଅନନ୍ତରଂ ତସ୍ମିନ୍ ଧୂରାତ୍ମାନି ଶୁଦ୍ଧେ ହତେ ଯତେ ସତି ଶାମିନଂ ଜଗତ୍  
 ପ୍ରାସନ୍ନଂ ସଂ ପ୍ରହଃ ସଂ ଶତୀବ ସ୍ୱାସ୍ତ୍ୟମ୍ ଅବାପ ପ୍ରାପ୍ତବଂ । ନତଃ ଆକାଶାଂ ନିର୍ମଳମ୍ ଅଭବଂ ॥ ୨୪ ॥ ଉଂପାତେତି । ପ୍ରାକ୍ ଯାଃ ମୋକ୍ଷା ଉନ୍ନତାଃ, ସାହିତାଃ  
 ଉଂପାତମେଷା ଉଂପାତମୂଳକା ମେଷା ଉଂପାତମେଷାଃ ( ଶାକପାର୍ଥବାର୍ଦ୍ଧିନୀଂ ) ଆସନ୍ ସ୍ଥିତାଃ, ତସ୍ମିନ୍ ଶୁଦ୍ଧେ ପାତିତେ ମାରିତେ ସତି ଶେଷଂ ଶାନ୍ତିଂ

শৌর্য্যরূপং যযুঃ প্রাপ্তবন্তুঃ । তথা দরিতঃ নৃজঃ গার্গবাহিহ্যঃ অনুলোমশ্ৰোতিসঃ আসন্ । জাতা ॥ ২৯ ॥ তত ইতি । ( সার্কপদ্যম্ ) । ততঃ অনন্তরং তস্মিন্ গুপ্তে নিহতে সতি সর্কে দেবগণাঃ হর্ষনির্ভরমানসা আনন্দপূর্ণচিত্তাঃ বভূবুঃ । গন্ধকাঃ বিশ্বাবস্পদ্রুতয়ঃ ললিতং মনোহরং যথা ভবতি তথা জগৎ । গীতবন্তুঃ । তথা অহো কেচিৎ গন্ধকা অবাদয়ন্ যদঙ্গাদীনিত্যৈশ্চ । অপ্সরোগণাঃ উর্কজাদিযঃ স্বধাঃ শৈত্যমৌগন্ধাতোদ্যম্যতাঃ ।

ললিতঃ জগুঃ ॥৩০॥ অবাদয়ঃ স্তম্ভবান্যে ননুভুচ্চান্দ্রোদগণঃ ॥৩১॥ ববুঃ পূর্ণ্যাস্তথা বাতাঃ স্প্রপ্রভোহভূদ্ দিবাকরঃ । জজ্বল-  
শ্চায়ঃ শান্তাঃ শান্তদিগ্ জনিতযনাঃ ॥৩২॥\* ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বর্গিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে শুভবধঃ ॥১০ অঃ\*॥

জনিতঃ স্নো বৈঃ শুভসূচকদিক্ জ্ঞানিতশব্দাঃ (যদ্য শাস্ত্রা শুভসূচক দিগ্ যেমাং প্রদক্ষিণশিখা। ইত্যর্গ, জনিতঃ স্বনঃ শুভসূচকশব্দঃ ফেটানাদিরহিতো বৈঃ, তে চ তে চেতি ; তথাচ বায়ুপুরাণম্ “অর্চিয়ান শিগুত্রিশথঃ সর্পিঃ কক্ষনাম্নিতঃ। নিকঃ প্রদক্ষিণৈশ্চ বজ্রিঃ স্রাং কাঞ্চাসিক্ষয়ে ॥” অশুভলক্ষণং ব্রহ্মপুরাণে “প্রহ্নে ব্রহ্মে সমুজ্জিহে বামাবস্তে ভয়ানকে। কৃষার্চিষি সহগন্ধে তথা লিহতি মেদিনীম্” ইতি, এতদোষরহিতাঃ। যদ্য শাস্ত্রদিক্ যথা শাস্ত্রথা। জনিতশব্দাঃ ॥ ৩২ ॥

অথ নিঃশেষবিনাশিতাশেষশক্ৰাৎ দেবানাং নির্ভরত্বমিদমসিতশ্রীচণ্ডিকাভক্ত্যুদ্বেকমাহ । ঋষিরবচ ॥ ১ ॥ দেব্যোক্তি । তত্র ত্বমিহ মহাসুরেন্দ্রে অরুণ দেব্য । কং  
সতি সেদ্রাঃ ইন্দ্রসহিতাঃ সুরাঃ তাং কাত্যায়নীং তুষ্টু বঃ স্তবন্তঃ ( কাত্যায়নাশ্রমে প্রাজুত্বান্নম প্রাহুঃ ) । কীদৃশাঃ ? বহিপুরোগমাঃ বহিঃ পবেগমঃ অগ্রগো  
যেমাং ( বহুঃ পুরোগমত্বঃ—ততঃ প্রাক্ ঋষিন্ হতেহপি চক্ৰপ্ৰবোভাশাদৌ লাতভাবাৎ, তস্মিন্ যতে সতি তৎপ্রাপ্তিসম্ভাবনয়া ইত্যতিবেরকাং ) । ইতিলম্ভাৎ  
স্বাভীর্ষ্যপ্রাপ্তেহেতোঃ বিকাশিবক্তৃণাং অন্তর্হযাতিবেরকাং উৎফুল্লবদনাং ( আর্গে। ভূম ) কীদৃশাঃ ? বিকাশিতাশাঃ বিকাশিতা উদ্ভ। গু। আশা।

ঋষিরবচ ॥ ১ ॥ দেব্য। হতে তত্র মহাসুরেন্দ্রে, সেদ্রাঃ সুরা বহিপুরোগমাস্তায় । কাত্যায়নীং তুষ্টু বঃ  
রিকলম্ভাদ্, বিকাশিবক্তৃণাম্ বিকাশিতাশাঃ ॥ ২ ॥ দেবি প্রপন্নভিত্তরে প্রসাদ, প্রসাদ মাতর্জগতোহপিগমস্য ।

দিশো যেমাং ( বদ্রা বিকাশিতাঃ আশা দিশো গৈঃ, তদানীঃ শক্রনাশাং পুনঃ স্বম্বতেজোলাভাৎ উজ্জ্বলীকৃতদিশ ইত্যর্গঃ । বদ্রা প্রথমং ধূম্রলোচনাং বদগম্যঃ আশা।  
স্বাধিকারপ্রাপ্তিবাক্ষা মুকুলিতা ইবাসন্, তদানীঃ শুভে হতে সতি বিকাশিতা প্রসুটিগা আশা বাঞ্জা যেমাম্, অনন্তরমেব কলোৎপত্তেঃ ) ॥ ২ ॥ স্বাভাৎ দেব্যোক্তি ।  
হে দেবি, প্রসাদ প্রসন্ন ভব । হে প্রপন্নভিত্তরে প্রপন্নানাং শরণাগতানাম্ অস্তিঃ তুষ্টুং ত্বাং হরতি ( পচারিঃ ; সম্প্রতি নিঃসৃতঃ ) নিঃসৃতঃ ত্বা  
সম্বোধয়ন্তি ) । হে অখিলশ্র জগতো মাতঃ জননিদ্রি, প্রসাদ ( বদ্রা সম্প্রতি ময়ং দেবাঃ তারিতুংগাঃ পবান্ প্রতি অভিসৃগৌকর্দসিচ্ছি—অর্থাৎ অগ্নিঃ গমীদ । )

হে দেবি বিশেষধরি, ত্বং প্রসাদ, বিশ্বং জগৎ পাহি । নমোত্তময়া কৃতম্, অস্ত্রোঘাৎ পালনায় অগ্ৰঃ কিমিতি ন প্রার্থয়স্বমিতি চেত্তত্রাতঃ—হে দেবি, ( ত্বমোবেতুত্বং ) চরাচরস্ত স্থাবরজঙ্গমাঅকৃত জগতঃ ঈশ্বরী স্বামিনী । অতঃ কমগ্ৰাং প্রার্থয়ামহে ইতি ভাবঃ । অত্র কৃতপরমোপকারণং দেবীমতিশায়িত্ববর্ণনং পুনঃপুনঃ প্রার্থয়ন্তে ইতি ন পৌনরুক্ত্যম্, তথাচ “প্রমাদে বিশ্বয়ে হর্ষে কেপে দৈগ্ৰেহবধারণে । সম্ভ্রমেতপ্যনুত্পন্নোপায়ং পুনরাক্তনং দুৰ্ব্যতী”তি ; ভক্ত্যতিশয়েন বা ) ॥ ৩ ॥ নতু ধারণাপায়ায়নাদিনা অনৈক্যেরেব জগদ্রক্ষাং, কণমহমৈকৈব পাশ্চাত্তমি ইতি চেম, তেষামপি বৃদ্ধপরিদিত্যাহঃ আধারৈতি । ত্বং জগত আধারভূতা আশ্রয়রূপা । ত্বং

১০০

প্রসাদ বিশেষধরি পাহি বিশ্বং, ত্বনীশ্বরী দেবি চরাচরস্য ॥ ৩ ॥ আধারভূতা জগতত্ত্বমেকা, মহাদ্বাররূপেণ যতঃ স্থিতিত্বমিতি ।  
অপাং স্বরূপস্থিতয়া ত্বয়েত, দাপ্যাত্যতে কুংস্ন-মলজ্যবীর্যে ॥ ৪ ॥ ত্বং নৈময়বী শক্তি-রনন্তবীর্য্যা, বিশ্বস্য বীজং

কুতঃ ? যতো মহীষরূপেণ পৃথিবীরূপেণ স্থিতিত্বমিতি । নতু মহা সত পরিক্রিয়ায়া যম আধারাবেশভাদে। ব্যক্ত-এব, কণং তদ্রূপত্বা ইতি চেত্তত্রাতঃ—একা হৃদিশীয়া ( তথাচ শ্রুতিঃ “অজামেকা”মিত্যাदिঃ ) । ( ন কেবলমেতাবৎ, কিন্তু ) তয়া কুংস্নং সমগ্রম্ তত্ত্বজগৎ আপ্যাত্যতে আপ্যায়িত্বং ক্রিয়তে । এতৎ বীজ-স্থিতুং বিশেষণমাহঃ অপাং স্বরূপস্থিতয়েতি । অপাং স্বরূপেণ স্থিতা স্বরূপস্থিতা তয়া জলরূপয়েত্যর্থঃ (“দমন্তজাসমস্তুহন” (দ্য) ইতি সঙ্গতিঃ) । অর্থাৎ অজ-জাতমাহঃ—হে অলজ্যবীর্য্যে অনতিক্রমণীয়শক্তে ॥ ৪ ॥ অমিতি । ত্বং পরমা মাতা উক্তরূপা (৪৮ পৃঃ ১ পং) মহামায়ামিতি ভবতি । নতু মাতা পারমেশ্বরী নীকিঃ

ଅସିଦ୍ଧେବ, କଥମହମିତି ଚେତନାହ—ବୈଷ୍ଣବୀ ବିଷ୍ଣୁସମ୍ବନ୍ଧିନୀ ଶକ୍ତିଃ । କୌଦୂଶୀ ? ଅନନ୍ତବୀର୍ଯ୍ୟା ଧୂରତ୍ୟା । ଅପାରଶକ୍ତିରିତ୍ୟର୍ଥଃ (ତତ୍ତ୍ୱକ୍ତଂ ଶୀତାନ୍ତ “ଦୈବୀ ଶ୍ରେୟଃ ଗୁଣନନ୍ଦୀ ମମ ମାମା ଧୂରତ୍ୟା” ଇତି ) । ଅତଃ ପରମା ପରମ୍ ଈଶ୍ୱରଃ ମାତି କର୍ତ୍ତୃତ୍ୱୋକ୍ତଃ ଭାବେନ ବଶୟତି ଇତି ପରମା ( ତତ୍ତ୍ୱକ୍ତଂ “ସ ଈଶୋ ଯଦ୍ଦେଶେ ମାୟା ସ ଜ୍ଞୀବୋ ଯନ୍ତୁୟାଦ୍ଦିତଃ” ଇତି ) । ଏତଦେବ ଶ୍ଳୁଟୟତି ସନ୍ମୋହିତମିତି । ( ଅର୍ଥାତ୍ତ୍ୱୟା ) ଏତଂ ସମସ୍ତଂ ଜଗଂ ସନ୍ମୋହିତଂ ବିସ୍ତୃତଂ କୃତଂ ( ତତ୍ତ୍ୱକ୍ତଂ ଦଶମେ “ବିଷ୍ଣୋର୍ମାୟା ଭଗବତ୍ତୌ ଯସା ସନ୍ମୋହିତଂ ଜଗ” ଇତି ) । ନ କ୍ଷେବଣ-ମେତାବଂ, କିନ୍ତୁ ଜଗଂ କାରଣମାପି ଅଗିତ୍ୟାହଃ—ସ୍ତଂ ବିଷ୍ଣୁସ୍ତ ବୌଜଂ ସମବାୟିକାରଣଂ ( ତଥାଚୋକ୍ତଂ “ପ୍ରକୃତିର୍ବିଷ୍ଣୋରପାଦାନ” ଇତି ; ନାରଦୀୟେ ଚ “ଭାବାଭାବସ୍ୱରୂପା ଯୋ” ଇତି, —କାର୍ଯ୍ୟକାରଣରୂପେତ୍ୟର୍ଥଃ ) । ମୁକ୍ତିଦାତ୍ରୀ ଚ ଅଗିତ୍ୟାହଃ—ବୈ ନିଶ୍ଚୟେ ସ୍ତଂ ପ୍ରସନ୍ନା ସତୀ ଭୁବି ଜଗତି ମୁକ୍ତିହେତୁଃ ମୁକ୍ତେଃ କାରଣମ୍ ( ଏତତ୍ତୁ ବ୍ୟାଖ୍ୟାତମେବ—୬୨୨ ପୃଃ ୨୫୫ ) ।

ପରମାସି ମାୟା । ସନ୍ମୋହିତଂ ଦେବି ସମସ୍ତମେତଂ, ସ୍ତଂ ବୈ ପ୍ରସନ୍ନା ଭୁବି ମୁକ୍ତିହେତୁଃ ॥ ୫ ॥ ବିଦ୍ୟାଃ ସମସ୍ତାସ୍ତବ ଦେବି ଭେଦଃ, ଭୁବୀତି ତୀର୍ଥାଦିଦେଶବିଶେଷାଗ୍ରହପରିହାରାଯୋକ୍ତଂ, ସ୍ତଂ ପ୍ରସନ୍ନାୟାଂ ସମସ୍ତାସ୍ତବ ମୁକ୍ତିର୍ଭବତି ଇତି, ତତ୍ତ୍ୱକ୍ତଂ “ବିଦ୍ୟାନୟୋ ଯଃ ସ ତୁ ନିତ୍ୟମୁକ୍ତଃ” ଇତି ) ॥ ୫ ॥ ନତ୍ତୁ ବିଦ୍ୟାବିଦ୍ୟାଭ୍ୟାମେବ ବନ୍ଧନୋକ୍ତେ ପ୍ରସିଦ୍ଧୋ, କଥଂ ତସ୍ମା ବନ୍ଧନୋକ୍ତଃ ହେତୁଭିର୍ଯାତି ଚେତନାହଃ ବିଦ୍ୟାଃ ଇତି । ହେ ଦେବି, ସମସ୍ତା ବିଦ୍ୟା ଯତ୍ତବିଦ୍ୟାର୍ଥବିଦ୍ୟାଃ ତ୍ୱବ ଭେଦା ମୁକ୍ତଃ ( ତଥାଚ ବିଷ୍ଣୁପୁରାଣ “ସଞ୍ଜ୍ଞାବିଦ୍ୟା ମହାନିଦ୍ରା ଶୁଦ୍ଧାବିଦ୍ୟା ଚ ଶୋଭନେ । ଆତ୍ମାବିଦ୍ୟା ଚ ଦେବି ସ୍ତଂ ବିମୁକ୍ତିକଳାଦାୟିନୀ । ଆତ୍ମାବିଦ୍ୟା ଚ ଦେବୀ ସାତ୍ତ୍ୱା ଦଶନାତ୍ତ୍ୱମେବ ଚ” ଇତି ; ଅତଃ ପ୍ରସ୍ତୁତିନିବୃତ୍ତବୋଧକ୍ ବିଦ୍ୟାରୂପସ୍ତଂ ବନ୍ଧନୋକ୍ତଃ ହେତୁରିତ୍ୟର୍ଥଃ, ତଥାଚ ଭାଗବତେ “ବନ୍ଧୋଽସ୍ତ୍ରାବିଦ୍ୟାନାନାଦେର୍ବିଦ୍ୟା ଚ ତଥେତରଃ” ଇତି—୫୭୨ ଶ୍ରେୟଃ ମୋକ୍ଷଃ । ଯଦ୍ୱା ବିଦ୍ୟା ଅଫ୍ଟାଦଶ, ତଥାଚ “ଅନ୍ଧାନି ଦେଶାଂ ଚ ହାରୋ ମାୟାଂ ସା ଗ୍ରାସିବିସ୍ତରଃ । ସନ୍ଧ୍ୟାଶାନ୍ତଂ ପୁରାଣକ୍ଷ ବିଦ୍ୟା ହେତାଂ ଚ ତତ୍ତ୍ୱଦିନଃ । ଆତ୍ମାବିଦ୍ୟା ଚ ଦେବୀ ସ୍ତଂ ବିମୁକ୍ତିକଳାଦାୟିନୀ । ଆତ୍ମାବିଦ୍ୟା ଚ ଦେବୀ ସାତ୍ତ୍ୱା ଦଶନାତ୍ତ୍ୱମେବ ଚ” ଇତି ।

শাস্ত্রং চতুর্থস্ত বিজ্ঞা হৃষ্টাদশৈব তু” ইতি, এতেনাপি বন্ধমোক্ষহেতুঃ বিজ্ঞাভেদাৎ ) । জগৎস্থ সকলাঃ ( কলাশ্চতুঃষষ্টিঃ, তৎসহিতাঃ ) দ্বিযুক্ত সমস্তাস্তব ভেদাঃ । নম্বেবমপি “অঙ্গামেকা” মিত্যাदिश्चतिप्रतिपादित-मद्वितीयत्वं तत्रा व्याहृतं, कलासहितानामेव तन्ना द्विहोक्तेरित्याकाङ्क्षायामাহ: अत्रैकयेति । একয়া সজাতীয়বিজাতীয়ভেদরহিতয়া যয়া এতৎ জগৎ পূরিতং ব্যাপ্য স্থিতং ( তদুক্তং নারদীয়ে “যথা হরিদ্র গদ্যাপী তস্তা শক্তিঃস্থথানঘা । দাহ্ণশক্তিবথাস্থারে স্বাশ্রয়ং ব্যাপ্য তিষ্ঠতি । সেয়ং শক্তিঃ পরা বিযেকার্জগৎসর্গাদিকারিণী । ব্যক্তাব্যক্তস্বরূপেণ জগদ্ব্যাপ্য বাবস্থিত্তে”তি ; এতেন সকলা ইতি যদুক্তং, তদুপাভ্রঃ “কুদ্রাণাং শরুরশাস্ত্রা”তিবৎ ) । কিমুতয়া ? অদয়া জগজ্জনয়িত্র্যা ( ঘটেবু যদ্বৎ ) । অতএব তে তব স্ততিঃ কা ? নৈবেত্যর্থঃ । স্ততিস্বরূপমাহঃ স্তব্যোতি

১০৮

দ্বিযঃ সমস্তাঃ সকলা জগৎস্থ । হ্রৈয়েকয়া পূরিতমম্বয়েতৎ, কা তে স্ততিঃ স্তব্যপরাপরোক্তিঃ ॥ ৬ ॥ সর্ববভূতা যদা দেবী

যতস্তব্যস্য স্তবনীযস্য পরাপরোক্তিঃ গোঁশ্চনুখেখ্যক্তিরেব স্ততিঃ, সা তু তব সর্বস্বরূপায়া ন ঘটত এবেতি স্ততিরেব ন ভবতি ; কিন্তু স্বরূপাখ্যানমেব ইত্যর্থঃ ( স্তব্যোতি বিশেষণ কৃচিং সামান্যাবাদনাং যজ্ ) । যদ্বা যতঃ স্তব্যানাং পরেযাং অর্কচীনানাম্ অপরোক্তিঃ অনর্কচীনস্বেক্তিরেব স্ততিঃ ( যথা অক্ষণেঃ রাশি-স্বেহপি সস্ত্ব-প্রধানতাবর্ণনং, যথা বা খণ্ডভূমণ্ডলাধিপস্ত সার্কভৌমত্বেন বর্ণনাদি ) । যদ্বা তব কা স্ততিঃ ? স্ততিরেব ন ভবতীত্যর্থঃ, তর্হি কিমেতদনুবর্ণ্যেতি ইতি চেত্তত্রাহঃ স্তব্যোতি । স্তব্যঃ স্ততিঃ ( ভাবে যজ্ ) স্তব্যঃ স্ততে: পরায়া: পারবত্তিগ্ৰাস্তব অপরোক্তিঃ অন্তবাদমাত্রামিতার্থঃ ( যথানুব্রবমেব বর্ণনাং ) ॥ ৬ ॥ এতদেব



স্পষ্টয়তি পুনঃ সৰ্কেতি । যদা সৰ্বভূতা সৰ্বস্বরূপা, তথা দেবী অবিলপ্তুচিদানন্দস্বরূপা, অতএব স্বৰ্গমুক্তিপ্রদায়িনী ভোগমোক্ষদাত্রী সতী ( এতেন স্বর্গমুক্তিনিদ্রাক-  
 বিজ্ঞাবিজ্ঞারূপতা লক্ষ্যতে ), স্বঃ স্তুতা স্তোতুমারকা ভবসি, তদা স্তুতয়ে স্তুত্যর্থং কাঃ পরমোক্তয়ে। বধার্পা ভবন্তু ? ন কা অপীত্যঃ ( আরোপিত-  
 গুণবৰ্ণনং স্তুতিরिति স্তুতিশব্দার্থান্তপপত্তেঃ ) ॥ ৭ ॥ সৰ্বভূতজ্ঞঃ বিবৃণুতঃ স্ববস্তু সৰ্কেতি । হে নারায়ণ ( নারং তত্ত্বসমূহম্ অয়তে আশ্রয়িত প্রেরয়তি ) ইতি বা  
 নারায়ণঃ তচ্ছক্তিরূপে ( তদুক্তং স্বামিনা “নরাজ্ঞাতানি ত্বানি নারায়ণং পূৰ্বং তেন নারায়ণঃ স্মৃতঃ” ইতি ) । হে সৰ্বপক্ষ জনস্ব হৃদি

স্বৰ্গমুক্তিপ্রদায়িনী । ত্বং স্তুতা স্তুতয়ে কা বা ভবন্তু পরমোক্তয়ঃ ॥ ৭ ॥ সৰ্ববাস্য বুদ্ধিরূপেণ জনস্য হৃদি সংস্থিতে । স্বর্গাপ-  
 বৰ্গদে দেবি নারায়ণি নমোহস্তু তে ॥ ৮ ॥ কলাকাক্ষাদিরূপেণ পরিণামপ্রদায়িনি । বিশ্বশ্রোত্রাপরতো শান্তে নারায়ণ

সংস্থিতে ( নিত্যাপেক্ষদ্বাদসমশ্তুনাপি সঙ্গতিঃ ) । কেন রূপেণে ত্যাহঃ বুদ্ধীতি । বুদ্ধিনিষ্কর্যাদিলক্ষণোহমৃৎকরণবিশেষঃ তদ্রূপেণ । অতএব হে স্বর্গাপবৰ্গদে স্বর্গাপ-  
 বৰ্গে ভোগমোক্ষৌ তৌ দদাতীতি ( বুদ্ধৌরৈব বাবদ্যাবাবদ্যাত্মকং হেন উভয়সামন্যাহং, তদুক্তং গীতাহঃ “যদা তে মোহকলিলঃ বুদ্ধিবর্তিতহারস্যতি । তদা  
 গন্তাসি নির্বেদং শ্রোতব্যম্ শ্রুতম্ ৮” ইতি, “বহুশাপ্য হুনস্তাশ্চ বুদ্ধৌহোহবাবদ্যাত্মকং হেন স্তবন্তু কলোতি । হে পরিণামপ্রদায়িনি  
 ( পরিণামো রূপান্তরপ্রাপ্তিঃ বিকার ইতি যাবৎ ) । কেন ? কলাকাক্ষাদিরূপেণ (অচিদর্শনামোহাত্মকঃ কালঃ কাষ্ঠা ; দিগ্গজঃ কাষ্ঠা-

ত্বকঃ কালঃ কলা, আদিনা ক্ষণমুহূর্ত্তাদীনাং গ্রহণঃ ; তেন রূপেণ । এতেন তজ্জাং পরিণামরাহিতাং প্রতিপাদিতম্ ) । অতএব বিশ্বস্ত্র উপরতো বিনাশে শক্তে নিপুণে ( কালাদেব সৰ্বকমাং বিনাশাৎ, “কালঃ সংহরতি প্রজাঃ” ইত্যুক্তং ) ॥ ৯ ॥ ন কেবলমভাবঃ, অখিলমঙ্গলহেতুং হৈব পালনকর্ত্তাপি স্বমিতি সম্বোধনতঃ স্তবম্ভি সৰ্বক্ৰেতি । হে সৰ্বকমঙ্গলমঙ্গলো ( অভিপ্রেতার্থসিদ্ধিসঙ্গতঃ, মঙ্গলমেব মঙ্গল্যং দণ্ডাদিহাং যং, সৰ্ববিধাং মঙ্গলানাং

মঙ্গলহেতুনাং ব্রাহ্মণাদীনাং মঙ্গলো মঙ্গলজননশক্তিরূপে ( তদ্বক্তং যুক্তে ) “লোকেহস্মিন্ মঙ্গলাচাঠৌ ব্রাহ্মণে গোহৃত্তাশনঃ । তিৰ্য্যাং সর্পির্বাদিত্য আপো রাজা তথাষ্টমঃ” ইতি । যদ্বা সৰ্বমঙ্গলানাং মঙ্গলাহঁ, তত্র সাক্ষীতি বা ; যঙ্গলহেতুনাংপি মঙ্গলকর্ত্তা তথাঃ । সৰ্বকমাং মঙ্গলঃ যেভ্যঃ তেবান্যপি মঙ্গলাঃ

নমোহিস্ত তে ॥ ৯ ॥ সৰ্বকমঙ্গলমঙ্গলো শিবে সৰ্বপার্সাদিকে । শরণ্যে ত্র্যম্বকে গৌরি নারায়ণি নমোহিস্ত তে ॥ ১০ ॥ সৃষ্টি...

ইতি বা বিগ্রহঃ । দন্ত্যসকারবান্ শিববাচী সৰ্বকমোহপাস্তি, তথাচ বাসবদত্তাশ্নেয়ে, “পার্কভীরু মুকুমার সৰ্বভঃপূচাবিণী”তি ; তেন সমস্ত শিবস্ত্র মঙ্গলং যজ্ঞাঃ, সা চাসৌ মঙ্গল্য চেতি ) । তে শিবে কল্যাণহেতে । অতএব সৰ্বার্থসাধিকে সৰ্বপার্সান্ পদার্থকামনোক্ষাপ্যান্ সাধয়ন্তীতি সৰ্বপার্সাদিকা । হে শরণ্যে শরণার্থে, (শরণে সাক্ষীতি বা) । হে ত্র্যম্বকে ত্রীণি অধ্বকানি লোচনানি যজ্ঞাঃ সা, হে ত্রিনেত্রে ( যদ্বা ত্রিভিলোকৈকং, দেবৈঃ ব্রহ্মবিদ্যুশিবৈনা অধ্যতে আক্সিয়তেহসৌ ত্র্যম্বা, স্বার্থে কঃ, ক্ষিপকাদিত্ত্বান্ন অদ্বিঃ ; ত্রিগুণজননীতি বা ) । হে গৌরি ( তদ্বর্গবিশিষ্টং যং ; যদ্বা

১০  
১১  
১২

গৌরীতি সম্বোধনেন যজ্ঞা দেহাদুদ্ভূতা সৈব তুমিতি প্রতিপাদিতম্, অতএব “পুনশ্চ গৌরীদেহা সা” ইতি প্রাপ্তকৃত্য ॥ ১০ ॥ সৃষ্টিতি। হে সৃষ্টিস্থিতিবিনাশানাং শক্তিভূতে শক্তিস্বরূপে ( সৃজতীতি সৃষ্টিব্রহ্মা, তিষ্ঠতি অন্তর্ভাবিণার্থত্বাৎ স্থাপয়তি পালয়তীতি বা স্থিতিক্রিয়ঃ; উভয়ত্র কর্তৃরি ক্রিঃ; বিনাশয়তীতি বিনাশঃ শিবঃ; তেষাং শক্তয়ঃ বিসর্গপালনবিনাশরূপব্যাপারঃ; তৎস্বরূপে। যদ্বা সৃষ্টিস্থিতিবিনাশানাং শক্তিঃ তত্তচ্ছবদন্তঃ। যদ্বা কর্মণি প্রত্যয়েন সৃজ্যপাল্যবিনাশা অভিধেয়াঃ; কার্যরূপা ইতি যাবৎ )। তৎ কৃতঃ ইত্যাহঃ—হে গুণাশ্রয়ে গুণৈরালীযতেহসৌ গুণাধারেত্যর্পঃ। কার্যকারণয়োৱভিন্নতামাহঃ—হে গুণনয়ে গুণস্বরূপে ( দৈশ্যিকৈ-

স্থিতি-বিনাশানাং শক্তিবৃত্তে সনাতনি । গুণাত্ময়ে গুণময়ে নারায়ণি নমোহিস্তু তে ॥ ১১ ॥ শরণাগত-দীনান্তি-পরিদ্রাণ-  
পরায়ণে । সর্বস্যাতিহরে দেবি নারায়ণি নমোহিস্তু তে ॥ ১২ ॥ হংসযুক্ত-বিমানেশ্ব-ব্রহ্মাণী-রূপধারিণি । কৌশান্তঃকারণক-

ময়টু, ছান্দস আং । “ভূতং ক্ষাদৌ পিশাচাদৌ জন্তৌ ক্লীবং ত্রিশৃচিতৈ । প্রাপ্তে পূক্তে সমে সত্যে দেবদোহ্মন্তরে তু না” ইতি মেদিনী ) ॥ ১১ ॥ পরাগো ৩ ॥ হে  
শরুণাগতদীনান্তপরিব্রাণপরায়ণে দীনাদরিদ্র্যভিভূতাঃ আত্র রোগাদ্যভিভূতাঃ শরুণাগতশ্চ তে চ ভে চেতি তেযাং পরিব্রাণং রক্ষণং তদেব পদমসন্মম্ম পদ্যইঃ  
যস্তাঃ ( “পরায়ণমভীষ্টে শ্রাং তংপরশ্রয়োরাপী”তি কোষঃ ) । হে সৰ্বজ্ঞাগ্রহরে সৰ্বজনমা পীড়াহারিণি ॥ ১২ ॥ শাক্তরূপাং স্তবন্তি হংসেতি । হে ব্রহ্মাণ্যাদ্যপ-  
ধারিণি ব্রক্ষণন্তিরুপে । হংসযুক্তং সন্নিমানং তত্র স্থিতৈ । কুশমস্মম্মিগ্ৰগম্ভরিরেক শান্তিজন্মদারিণি ( কুশাগ্রেদং কোণং তচ্চ তং অঙ্গং চ তং অঙ্গং )

ক্ষিপতীতি গকঃ) ॥ ১৩ ॥ ত্রিশূলেনিতি । হে মাহেশ্বরাস্বরূপেণ মাহেশ্বরশক্তিরূপেণ উপলক্ষিতে । তাং বর্ণয়ন্তি হে ত্রিশূলচক্রাহিধরে ( ত্রিশূলক  
চক্রাশ্চ অহিঃ সর্পশ্চ তান্ ধরতীতি পচাদিঃ ) । মহাব্রহ্মে । মাহেশ্বঃ স চাসৌ বাহনকোত্তমোহস্ত্র অস্তীতি । ঈশ, কীলাদৌ বা ণিন্ ) তস্যাঃ সম্বোধনম্ ॥ ১৪ ॥  
ময়ুরেতি । হে কোমারীরূপসংস্থানে কোমারী কুলারশক্তিঃ তস্তা। রূপং যুতিঃ তদ্বৎ সংস্থানং করচরণাদি যস্তাঃ ( অস্তেদে ভেদোপচারাৎ ইদং  
সাধু ), কোমারীরূপেণ সংস্থানং স্থিতিবস্ত্রাঃ ইতি বা । হে ময়ুরকুটবৃত্তে ময়ুরশ্চ কুটশ্চ তাত্য্যং বৃত্তে দেহিতঃ ( “অকণো দয়িতং পূত্রং তাত্রচূড়ং প্রদত্তবান্”

দেবি নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ১৩ ॥ ত্রিশূল-চন্দ্রাহি-ধরে মহাব্রহ্ম-বাহিনি । মাহেশ্বরীস্বরূপেণ নারায়ণি নমোহস্ত তে

॥ ১৪ ॥ ময়ুরকুটবৃত্তে মহাশক্তিরূপেণ নমোহস্ত তে ॥ ১৫ ॥ শঙ্খ-চক্র-গদা-শাস্ত্র-

গৃহীত-পরমায়ুধে । প্রসীদ বৈষ্ণবরূপে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ১৬ ॥ গৃহীতোগ্র-মহাচক্রে দংশ্ট্রাদ্বিতবস্ত্রধরে । বরাহ-

ইতি মহাভারতদর্শনাৎ কুঙ্কটোহপি কাক্ষিকেশস্ত্র বাহনম্, অকণগকড়াভ্য্যং কুঙ্কটময়ুরয়োদ্বিত্যং; যদ্বা সিংহকুটাদিবিদিত ভাগবিভিন্দর্শনাৎ শ্রেষ্ঠদাতা ।  
কুঙ্কটশব্দঃ, ময়ুরশ্রেষ্ঠ ইত্যর্থঃ, তত্র বৃত্তে বর্তমানে, কঠরি ক্রঃ ) । হে মহাশক্তিধরে মহাশক্তিরূপাশ্রয়ঃ তাং ধরতীতি ( পচাদিঃ ) । হে অনয়ে নিম্নোক্তে  
॥ ১৫ ॥ শঙ্খাতি । হে বৈষ্ণবরূপে প্রসীদ, তে তুভ্যং নমঃ নমস্কারোহস্ত । হে শঙ্খচক্রগদাশাস্ত্রগৃহীতপরমায়ুধে ( শাস্ত্রঃ শৃঙ্গময়মুষ্টিবৃত্তঃ খড়্গঃ গদ্যদেবে

সমুদায়োপচারঃ) এইতর্গুহীতপরমায়ুধা ॥ ১৬ ॥ গৃহীতেতি । হে বরাহরূপিণি বরাহসংস্থানযুক্তে । তাং বর্ণযন্তুঃ স্তবন্তি গৃহীতেভ্যাদি । গৃহীতং ধনমুগং ঘোবং মহদসাধারণং চক্রং যয়া । দংষ্ট্রয়া উদ্ধৃতা বস্করা যয়া । শিবে মঙ্গলহেতো ॥ ১৭ ॥ নৃগিংহেতি । উগ্রেন ভয়ানকেন নৃসিংহরূপেন দৈত্যান্ হস্তং কৃত্ব উদারো বদ্র তস্তাঃ সম্বোধনং ( নিত্যাপেক্ষবাদসমস্তনাপি সম্বন্ধঃ ) । ত্রৈলোক্যত্রাণং ত্রৈলোক্যবক্ষ্য তদুপায়ভূতা নৃভিরিত্যর্থঃ তংগাহিত্তে তদন্তে ( যদ্বা ত্রৈলোক্যং ত্রায়ত ইতি কর্তরি গুণটু, দ্বিতেন সহ বদ্রমানা সহিতা, সা চাসৌ সা চেতি । যদ্বা ত্রৈলোক্যস্ত্র ত্রাণং যৈঃ তান্ত্রজ্ঞান তৎসংগো ॥ যদ্বা

রূপিনি শিবে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ১৭ ॥ নৃসিংহরূপেণোগ্রাণ হস্তং দৈত্যান্ কতোজ্ঞমে । ব্রৈলোক্য-ত্রাণমাত্মজং  
নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ১৮ ॥ কীরীটিনি মহাবজ্রে সহস্রনয়নোদ্ভুলে । ব্রতপ্রাণহরে চৈব্ধি নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ১৯ ॥  
শিবদূতী-স্বরূপেণ হতদৈত্য-মহাবলে । ঘোররূপে মহারাবে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ২০ ॥ দণ্ডীকরাল-বদনে শিরোনামা-

ত্রৈলোক্যাকাশগম্ উপচারাৎ তত্তদ্ব্যাপারঃ তৎসহিতে ॥ ১৮ ॥ কিৰীতি । হে ব্রাহ্ম, তে তুভাঃ নমোগম্ । কিৰীটিনি কিৰীটিমুক্তে । মহাদদাম্যবণং বজ্রং যস্তাঃ ॥ ১৯ ॥ ভবিষ্যৎক্বেপি যোগাত্ময়েতদুক্তং, কল্পান্তবীক্ষ্মরণবা, শাক্তিশক্তিমেতোরভিদানং নন্দ্রং এববদ্ধা ॥ ১৯ ॥

নমোহস্ত । দংষ্ট্রাভিঃ করালং ভীষণং বদনং যজ্ঞাঃ । শিবোমালা নরমুণ্ডময়ী মালা সৈব ভূষণং যজ্ঞাঃ । মুণ্ডং মুণ্ডাস্তরং যথু।তীতি (বগাদিত্যং উনঃ) ॥ ২১ ॥ লক্ষ্মীতি ।  
 হে লক্ষ্মি সম্পাদ্রপে, হে লজ্জা জুগুপ্সিতকরণে সুংসারুপে সম্মার্গপ্রবৃত্তিরূপে ইতি যাবৎ (শক্তিবিশেষরূপে বা), হে মহাবিদ্যে “অধ্যাত্মবিদ্যা বিজ্ঞান”মিতি  
 গীতাসূক্তেঃ) উপনিয়দ্রপে (যদা বিদ্যা পঞ্চপর্কী প্রাপ্তুক্তা, তস্মা মহত্ত্বং সম্বশোধনেন মুক্তিপর্যাবসাদিত্বাৎ) । হে অদ্বৈত বেদার্থে দৃঢ়প্রভৌতিরূপে । পুষ্টিকপচবঃ  
 (শক্ত্যাতিত্বাৎ পার্শ্বকর্ক) । স্বধা পিতৃহৃদ্বিশ্বহেতুমহঃ তৎস্বরূপে । ক্রমে নিত্যে । মহারাত্রিঃ প্রলয়লক্ষণা রাত্রিঃ (যদা রাত্রিরিব রাত্রিঃ অবিদ্যা, মহতী

— ১০ —

বিতুষণে । চামুণ্ডে মুণ্ডমথনে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ২১ ॥ লক্ষ্মি লজ্জা মহাবিদ্যা অদ্বৈত পুষ্টি স্বর্গে প্রবে । মহারাত্রি  
 মহাবিদ্যে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ২২ ॥ মেঘে সরস্বতী বরে ভূতি বাত্রাবি তান্মসি । নির্যতে হুং প্রসীদেশে নারায়ণি

সর্বব্যাপিনী, মা চাসৌ সা চেতি) । মহাবিদ্যা মুক্তিলক্ষণা (ব্রহ্মভিষ্ম জগদ্বিতী অদ্বৈতভাবনা, তদুক্তং নারদীয়ে “সর্বেকভাবনা বুদ্ধিঃ সা বিজ্ঞেত্যাভিধীয়তে”  
 ইতি ; পূর্কং মহাবিদ্যাসাধনরূপা, ইহ তু ফলসম্পাদ্তিসিদ্ধিরূপেত্যাপোনকত্রাং ; যদা মহারাত্রীতি যথাক্রমেব, মহাবিদ্যেত্যজ্ঞাকারপ্রশ্নেবঃ, মহতী অবিদ্যা পরম্পর-  
 ভেদসাধনরূপা, তথাচ নারদীয়ে “যদা বিশ্বং মহাবিঘ্নোভিন্নমহেন প্রতীয়তে । তদা হবিদ্যা সংসিদ্ধা ভেদাদ্দুঃখস্ত সাধন”মিতি ; যদা অবিদ্যা পঞ্চপর্কী, তদুক্তং  
 বৈষ্ণবে “ভমোহবিবেকে মোহঃ জ্ঞাদন্তঃকরণবিন্দমঃ । মহানোহস্ত বিজ্ঞেয়ো গ্রাম্যভোগস্তথৈষণ । মরণং হৃদ্বভাবিশ্রং তানিশ্রং ক্রোধ উচ্যতে । অবিজ্ঞা পঞ্চপর্কীয়া

প্রাচীনতম মহাত্মনঃ” ইতি ; “অবিদ্যাশ্মিতাঙ্গদেয়াভিনিবেশাঃ পঞ্চ ক্লেশাঃ” ইতি পাতঞ্জলে চ ॥ ২২ ॥ মেবে ইতি । হে গোপে সকলার্থাবধারণাক্তে, তে সন-  
 যতি বাগ্বেদবতে, বরে শ্রেষ্ঠে, ভূতি ঐশ্বর্য্যরূপে ( পূর্ববৎ ই ), বাত্রাব বৈষণ্ডি ( যদ্বা মাহেশ্বর্য্যি, যদ্বা মর্হতি “বক্রবৈশ্বানরে শূলপাণৌ চ গুরুদ্বন্দ্বজ ।  
 বিশালে নকুলে পুংসি পিঙ্গলে স্তম্ভিষেব” ইতি মেদিনী । বক্রশব্দেন বক্রোপগ উচ্যতে ইতি বিদ্যাবিনোদঃ ) । হে ভূমিসি ততোময়ি । তে নিহত-  
 নিশ্চয়াত্মিকে (যদ্বা নিযতিঃ প্রাচীনং কৰ্ম্ম তদ্রূপে দৈবরূপিণি) । হে ঐশে সকলকরণসমর্থ, হং প্রসীদ ॥ ২৩ ॥ (অত্র পদানুসং কচিং দৃষ্টতে তদনামং, মূলসংনিভায়া-  
 মদৃষ্টত্বাং, কেনাপি টীকাক্তা ন ব্যাখ্যাতহাচ্চ) । সর্কেতি । সর্বস্বরূপে নিপিনকাকাবর্ণনাপি ঐশে নিগদ্য প্রপ্রয়দীতি

নমোহিস্তু তে ॥ ২৩ ॥ সর্বস্বরূপে সর্ববশে সর্বশক্তি-সমপ্তিতে । ভয়েভ্যস্ত্রাহি নো দেবি তুর্গে দেবি নমোহিস্তু তে ॥ ২৪ ॥

যাবৎ (এতেনাদিকারণসমুচ্চয়) । নহেকস্তাঃ কথং নিয়মানিয়ানকং কায্যাকারণাকৃতং না ইতি চেত্তদ্রাহঃ—সর্বশক্তি সমপ্তিতে উক্তানুক্রমগণ্যকৃতক । নহু  
 দৃষ্টত্বেন পরিচ্ছিন্নায়াঃ কথমেবংবিদম্ভমিতি চেত্তদ্রাহঃ—হে তুর্গে তুর্গে অপরিশুদ্ধিরূপে ইত্যর্থঃ (যথা দৃষ্টাসে, নৈতাদৃগেব নব স্বরূপমিত্যর্থঃ) । অতএব প্রার্ণসং-  
 হে দেবি, ভয়েভাঃ সকলভয়হেতুভো । নোহস্থান্ ত্রাহি পালয় ॥ ২৪ ॥ সকলাবয়বপঞ্জাদীনামপি মাধবিলসিত্ত্বাৎ সঙ্গাং সঙ্গাং চকুর্ভিঃ । নহি তে ।  
 কাত্যায়নি, তে তব এতদ্বদনং সর্বভূতেভোহিস্থান্ পাতু রক্ষতু । হে তুভ্যং নমোহিস্তু । কীদৃশম্ ? সৌম্যং মনোবশম্ । পুনঃ কীদৃশম্ ? মোচনশব্দেণ জায়ক-

—  
 তু  
 তু  
 তু  
 তু

(“সৌম্যে জ্ঞে না ত্রিষমুগ্রে মনোজ্ঞে সোনৈদবতে” ইতি মেদিনী) ॥ ২৫ ॥ জ্ঞালোতি । হে ভদ্রকালি, তে তুভাঃ নমোহস্ত । তব ত্রিশূলং ভীতৈর্ভয়াৎ নোহন্যান্  
পাতু । কীদৃশম্ ? জ্ঞাতা অচিচয়ঃ তাভিঃ করালং ভায়ণং ভৃঙ্গং বা । অতুগম্ অভিভয়ানকং লোহিতানিহিত বার্থঃ । অশেষাণামসুরাণাং সুদনঃ নালকম্  
॥ ২৬ ॥ হিনস্তীতি । যা ঘট। স্বনেন শব্দেন জগৎ আপূৰ্য্য দৈত্যভেজাংসি হিনস্তি, সা নোহস্মান্ পাপেভাঃ ক্লেবেতুভাঃ পাতু । কা কানিব ? ভানো মাতা সূতান্  
এতন্তে বদনং সৌম্যং লোচনত্রয়-ভূষিতম্ । পাতু নঃ সৰ্বভূতেভ্যঃ কাত্যায়নি নমোহিস্ত তে ॥ ২৫ ॥ জ্ঞানীকরালনভুগ্ৰ-

মশেষাসুর-সুদনম্ । ত্রিশূলং পাতু নো ভীতে-ভদ্রকালি নমোহিস্ত তে ॥ ২৬ ॥ হিনস্তি দৈত্যভেজাংসি স্বনেনাপূৰ্য্য যা জগৎ ।  
সা ঘট। পাতু নো দেবি পাপেভ্যোহিনঃ সূতানিব ॥ ২৭ ॥ অসুরাস্থগবসাপহ-চর্চিতস্তে করোজ্জলঃ । শুভায় খড়্গেণা ভবতু  
চণ্ডিকে স্বাং নতা বয়ম্ ॥ ২৮ ॥ রোগানশেষা-নপাহংসি ভূফা, বরফা তু কামান্ সকলানভীষ্টান্ । ভ্রামাঞ্জিতানাং ন বিপ-

পুত্ৰানিব (যথা মাতা স্বনোক্তোশঙ্কানি। পুত্ৰক্লেশদান্ নিরস্ত পুত্ৰান্ বধতি তদ্বৎ । “অনো মাতৃশকটয়ো” রিতি কোষঃ) ॥ ২৭ ॥ অস্তুরেতি । হে চণ্ডিকে,  
বয়ং স্বাং নতাঃ মঃ প্রণতাঃ স্বঃ । তে তব খড়্গঃ শুভায় মঙ্গলায় ভবতু (অগাদিস্মাকং, যদ্বা পূর্বক্লোকাৎ নঃ ইত্যন্তব্যভয়াৎ বধাস্তবম্) । কীদৃক্ ?  
অসুরাস্থগবসাপহচর্চিতঃ অস্বক্ রক্তকং বস। মেদশচ তে এব পহঃ (অতিবহলদ্বাং) তেন চর্চিতঃ দিগ্ধঃ । পুনঃ কৌদৃক্ ? কঠোরঃ কিরণৈঃ



উজ্জ্বলঃ দীপ্তঃ (যদা তে তব করেণ হস্তসম্পর্কেণ উজ্জ্বলঃ অতিশয়দীপ্তঃ) ॥ ২৮ ॥ রোষতোযযোঃ ফলং বদন্তঃ স্তবস্তি রোগানিতি । অং তুষ্টা সন্তী অপেশান্ রোগান্ উদেজকান্ অপহংসি নাশয়সি । কষ্টা ক্রুদ্ধা সন্তী অভীষ্টান রাক্ষিতান্ সকলান্ কামান্ অর্থান্ বিনিহংসি (যদা অভীষ্টান্ সর্বত্র ইষ্টান্ অতিমেনোত্তরান্ ; যদা উভয়োকপাদানাং অভীষ্টান্ ইচ্ছাবিষয়ীকৃতান্ ভাবিন ইত্যর্থঃ ; কামান্ বর্তমানোপভোগ্যান্ ইতি ভেদঃ কল্পনীয়ঃ ; তথ্যচ দেবীপূরণঃ “তুষ্টায়াং নৃপ তুর্গায়াং নিমেষাঙ্কেন যং ফলম্ । ন তদ্বক্তুং মহেশোহপি শক্তো বর্ষশতৈরপি শক্তো বর্ষশতৈরপি” ইতি ) । তদেকতানতায়োঃ ফলং বদন্তঃ স্তবাস্তু স্বামিশ্রিতানাং স্বদ্রুতানাং নরাণাং বিপং বিপত্তিন্ ভবতীতি শেষঃ (নরাশচ নরীশচ ইত্যেকশেষঃ । নরাণামিত্যুপলক্ষণং দেবানাঞ্চ, তেযামপি তদ্বর্ণনাং ) । স্বামিশ্রিতা জনাঃ নি নিশ্চিন্তহম্

নরাণাং স্বামিশ্রিতা হ্যশ্রয়তাং প্রয়াস্তি ॥ ২৯ ॥ এতৎ কৃতং যৎ কদনং ত্রয়াদ্য, ধর্মদ্বিযাং দেবি মহাসুরাণাম্ । কুপৈরনৈকৈ-

আশ্রয়তাম্ অন্যেযাম্ আশ্রয়যোগ্যতাং প্রয়াস্তি গচ্ছন্তি ( তথাচাগমঃ “বাক্রানোহপি চ দানত্বং ভজন্তে কিং পরে জনাঃ” ইতি ) ॥ ২৯ ॥ তং কথ্যগামসৌ-  
কিকত্বং বদন্তঃ স্তবন্তি এতদ্বিতি । হে অশ্বিকে জননি, হে দেবি, আনৈকৈঃ কুপৈর্প্রক্ষাণ্যাদিরূপৈশ্চ তুর্গায়াং বজ্রধা বহুপ্রকারাম্ অভাগুন্নিম্ন  
আশ্রনো দেহং কৃত্বা ব্রক্ষাণ্যদিক্রপাং কৃত্তেত্যর্থঃ, ধর্মদ্বিযাং ধর্মকর্মদ্বৈষ্টেণাং মহাসুরাণাম্ অদ্য ত্রয়া বদন্তঃ কদনং ক্রৌঞ্চাঃ নাম উত্তি যাবৎ কৃতং, তৎ ন্যাগা  
ত্বাং বিনা কা প্রকবোতি ? ন কাপীত্যর্থঃ ( সর্কাসাংশকাস্বাৎ ) । যদা, নহু চামুগাদিভির্বর্জীভিরেব দৈতানাঞ্চ কৃতং, কথমেবৈকবাক্যং তদেব ইতি চোক্তবাক্যঃ

এতদিত্যাদি। এতৎ কদনং কা স্বদত্তা করেতি? অপি তু ন কাপি, কিন্তু স্বমেব ইত্যাৰ্থঃ। ননু দৃষ্টমৈব তৎ কথমন্তথা। কথ্যতে ইতি চেত্তত্রাহঃ—অনৈকৈঃ  
রূপৈরায়মুত্ত্বিত্তিঃ নিজদেহমেব বহুধা কৃতং, ন তু তাঃ পৃথক্ ইত্যাৰ্থঃ (‘‘কদনং মৃত্যুতাপয়ো’’রিত্তি মেদিনী ॥ ৩০ ॥ স্বগুণঃখসাধনভূতাস্থ নানাবিদ্যাস্থ প্রযুক্তিরপি  
স্বদ্বীৰ্ণনৈবেদ্যাহঃ বিদ্যা ইতি। বিদ্যা উপবিদ্যা ইন্দ্রজালগারুকাদ্যাঃ, শাস্ত্রাণি তৰ্কদীনি, তেযু। কীদৃশেযু? বিবেকদীপেযু বিবেকং ত্ত্বনঃ  
দীপয়ন্তি উজ্জ্বলীকুবন্তি তেযু। আদ্যেযু বাক্যেযু বেদবাক্যেযু বর্ণশ্রমখাদ্যাবোধকেযু। বহা বিদ্যাস্থ ধনুর্নিদ্যাংদিশু, শাস্ত্রেযু নীতিশাস্ত্রাদিশু,  
বিবেকদীপেযু জ্ঞানবর্ধকেযু বাক্যেযু অনুমানাদিতৰ্কবাক্যেযু ( আদ্যস্তং সংসারচক্রেহেতুত্বং প্রথমোপদেশবিষয়ত্বাচ্চ)। তথা মধ্যগতৈঃ  
বৰ্দ্ধমানভক্তিঃ কতান্নিকে তৎ প্রকাবেতি কান্তা ॥ ৩০ ॥ বিদ্যাস্থ শাস্ত্রেযু বিবেকদীপে, স্বাদ্যেযু বাক্যেযু চ কা স্বদত্তা।

(মমত্ব-মমকীয়ৈ স্বকীয়ত্বাভিমানঃ, তদেব গন্ত্ব ইব গন্তঃ পাত্তেহেতুত্বাৎ); কিন্তু তে? অতিমহাদ্ভিকারের অতিমহান্ অভ্রকীরে। যত্র (অন্ধঃ কৰ্ত্তব্যবিচারহিতং করোতীতি অন্ধকারঃ, তস্তাতিমহত্ত্বং সৰ্কধ্য বিবেকপ্রকাশরাহিত্যাং, ন হি যমতাকুলচেতসাং বিবেকপ্রদোদন্তি, তত্কৃতং সাম্যত্বগ্রহে “দ্বিযয়-বিষ্টচিত্তানঃ বিষয়বশঃ সুহুলভঃ। বাক্কীদগ্গতং বস্ত্র ব্রজমৈত্রীঃ কিমাপ্যুয়াং” ইতি)। এতেষু সৰ্কেষু এতদ্বিশ্বং ব্রদন্ত্য। কা অতীব বিশ্রাশয়তি পুনঃপুনঃ প্রবর্তয়তি (ব্রাস্তগন্ত্যথাবুদ্ধিং বা করোতি)? কিন্তু অমেবত্ৰাথঃ (ইতি বন্ধহেতুত্বং প্রতিপাদিতম্। যদ্ব। শাক্ষেয

তর্কমীমাংসাদিষু, বিবেক আত্মানুবিচারঃ তং দীপয়ন্তি ইতি বিবেকদীপানি উপনিষদাক্যানি তেনু ॥ ৩১ ॥ সর্বত্র হ্রমেনৈবক। নানাক্রপেণ জগৎ পালয়সীতি বদন্তঃ  
স্ববন্তি রক্ষাংসীতি। যত্র রক্ষাংসি রাক্ষসাঃ, যত্র উগবিষা উদ্বগরলাঃ নাগাঃ, যত্র চ অরয়ঃ শত্রুদ্বাপানয়ঃ শত্রবঃ, যত্র চ দুষ্যবলানি বলাদকষাদৌ পনাপহাবক্ষসমূহাঃ,  
যত্র চ দাবানলো বনাগ্নিঃ তত্র, তথাক্ষিগধ্যে নদীনমুদ্রাদিমদ্যো (যথা ইতি সম্ভরণাভ্যুপায়ফল জ্যতয়োক্তং)। স্থিতা সত্তা হুং বিশ্বং জগৎ রাক্ষসাদিত্যঃ ৩০ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯  
পরিপাসি রক্ষসি ॥ ৩২ ॥ নতু তথাবিদপ্রবৃত্তৌ তজ্জাঃ কিং প্রয়োজনং, কথং বা শাক্তিরিতি চেত্তত্রাহঃ বিদ্বোত। যত্ত্বং বিশেষরী সক্ষেযানীধরী, ৩৩ঃ ধারণাং

মমত্বগর্ভেহতিমহাক্ষকারে, বিভ্রাময়তেত্যতঃ দতাব বিশ্বম্ ॥ ৩১ ॥ রক্ষাংসি যত্রোগ্রবিষাশ্চ নাগা, যত্রারয়ো দস্যুবলানি যত্র।

দাবানলো যত্র তথাক্ষিগধ্যে, তত্র স্থিতা হুং পরিপাসি বিশ্বম্ ॥ ৩২ ॥ বিশেষরী হুং পরিপাসি বিশ্বং, বিশ্ণাভ্যাক। ধারণসীতি

বিশং পরিপাসি (জগতোহনন্তনাথত্বাৎ তৎপরিপালনায় সততং প্রদর্ভসে, সর্বেদ্যানীধরীত্বাৎ সর্বতঃ পালনশাক্ষেত্যর্থঃ)। যতো বিশ্বাশ্রিকা জগদ্ধাপা, ইতি ৩৩ঃ  
বিশং ধারণসি (জগতস্তবাংশহৃতত্বাৎ)। যদা, নতু রাক্ষসাদিত্যঃ ততোহিতিকশক্তিযুক্তা ইন্দ্রাদিয়ঃ, দস্যুভ্যো রাজা, অকৌ নৌ, নাগেভ্যো বিষবৈবদ্যঃ পানিভ্যঃ রক্ষাংসি;  
পৃথিবী জগদ্ধাত্রী, তজ্জা অপানন্তঃ পত্তা প্রসিকঃ; কথং মেতি চেত্তত্রাহঃ—বিশ্ণাশ্রিকা রক্ষকধারকাদিসর্বস্বরূপাঃ স্রমেবৈভার্গঃ; সর্বেশ্বরীত্বং সর্বস্বরূপা য় চোক্তম্,  
প্রণামস্ত ফনস্ত অত্যাশ্চ্যাম ইত্যাহঃ—যে স্বয়ি ভক্তিভ্রাতাঃ ভক্ত্যা স্বয়ি প্রণামংলাঃ, তে বিশেষবন্দ্যঃ বিশেষাণাং ব্রহ্মগোহুদিনির্গাপি বন্দ্য। বন্দনীয়ঃ

ভবন্তি । যত এবংভূতং প্রণামকলম্, অতো ভবতঃ বিশ্বশ্রয়ঃ বিশ্বরাক্ষীয়তে সেগতে সৰ্বোপাস্তা । ইত্যর্থঃ ॥ ৩৩ ॥ স্বৰ্ঘা অভিসমুৎকৃতা প্রাপ্যগন্তে দেবীতি ।  
 হে দেবি, প্রসীদ । যথা অধুনা সদাঃ শ্রবণসমকাল এব যস্যুরবধাং নোহস্মান্ পাসিতবতী, তথা নিত্যম্ অবিভীতেঃ পালয় পালয়িসি । সৰ্বজগতাক্ষ পাপানি  
 দুঃখকারণানি আশু শ্বতমাত্রমেব শমং শান্তিং নয় নেয়াসি । উৎপাতে দিব্যাস্তুরীক্ষভৌমরূপঃ, তস্য পাকঃ ফলপরিণতিঃ, তেন জনিতান্ উৎ-  
 পাদিতান্ মহোপসর্গান্ দুভিক্ষমরকাদিলক্ষণান্ শমং নয় নেয়াসি শৰত্ৰ প্রার্থনায়াং লোট, অসাক্ষরায়ঃ, “উপসর্গঃ পুষ্যান্ রোগভেদোপশ্রবদ্রোষপীপসি

— ৩৩ —

বিষম্ । বিশেষবন্দ্য ভবতী ভবন্তি, বিশ্বাস্রয়া বে হ্রয়ি ভক্তিনম্রাঃ ॥ ৩৩ ॥ দেবি প্রসীদ পরিপালয় নোহরিভীতে, -নিত্যং  
 যথাস্থরবধা-দধুনৈব সদ্যঃ । পাপানি সৰ্বজগতাক্ষঃ শমং নয়ান্তু, উৎপাতপাক-জনিতাংষ্টচ মহোপসর্গান্ ॥ ৩৩ ॥ প্রণতানি  
 প্রসীদ ত্বং দেবি বিশ্বান্তিহরিণি । ত্রৈলোক্যব্যাসিনা-নীড্যে লোকানাং বরদা ভব ॥ ৩৫ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩৬ ॥ বরদাহং সুর-

যেদিনী ) ॥ ৩৪ ॥ পুনরপি জগদর্থং প্রার্থয়ন্তে প্রণতানামিতি । হে দেবি, হে বিশ্বান্তিহরিণি জগদুৎপাদনাশীলে, হে ঈড্যে স্তুতো, ত্রৈলোক্যব্যাসিনাং সর্বপঙ্ক-  
 পাতালস্থানাং লোকানাং জনানাং সমন্ধে বরদা অভীষ্টদাত্রী ভব । নম্বেবমস্থরাণামপি তদন্তর্গতদ্বাদভীষ্টদানে পুনরর্থ আসক্তোহ ইতি চেষ্টাহতঃ — প্রণতানাং স্বয়ি  
 প্রণামশীলানাং, যদ্বা বিনীতানাং ( ন হুস্তরাস্তাদৃশা ভবন্তি ) । যদ্বা ত্রৈলোক্যব্যাসিনামীড্যে ইতি সম্বন্ধঃ ॥ ৩৫ ॥ দেবুবাচ ॥ ৩৬ ॥ বরদেতি । হে সুরপণাঃ দেব-

সমূহাঃ, অহং বরদা বরং দদামি । জগতামুপকারকং যং বরং মনসা ইচ্ছথ, তং বৃণুধ্বং, প্রযচ্ছামি দদামৌত্থ্যঃ ( “দেবাদ্বীতে বরঃ ক্রোড়ে” ইতি কোষঃ ) ॥ ৩৭ ॥  
 দেবা উচুঃ ॥ ৩৮ ॥ সর্কেতি । হে অখিলেশ্বরিরি সর্বকেশ, যথা অশ্বদৈবিরিবাশনং ত্বয়া কৃতমিতি শেষঃ, এবমেব ত্রৈলোক্যাস্ত সর্বাবাধাপ্রশমনঃ ত্বয়া কাযাম্  
 ( আ সর্বতো বাধা আবধা, সর্বা চাসৌ আবধা চেতি, তস্তাঃ প্রশমনং প্রকর্ষণ শাস্তিঃ ) ॥ ৩৯ ॥ দেবুবাচ ॥ ৪০ ॥ ভবিষ্যচ্চরিতং কথ্যন্তি বৈবর্তিত ।  
 বৈবস্বতেহন্তরে বৈবস্বতস্য মনোরন্তরে তদধিকারোপলক্ষিতে কালে সপ্তমমবন্তরে ইত্যর্থঃ । তত্রাপি অষ্টাবিংশতিপূরণে যুগে (এতত্তু দিব্যসংখ্যা। জ্ঞেয়ং, তত্র

গণা বরং যং মনসেচ্ছথ । তং বৃণুধ্বং প্রযচ্ছামি জগতামুপকারকম্ ॥ ৩৭ ॥ দেবা উচুঃ ॥ ৩৮ ॥ সর্বাবাধাপ্রশমনং ত্রৈলোক্য-  
 আখিলেশ্বরিরি । এবমেব ত্বয়া কার্য্য-মস্মদ বৈরি-বিনাশনম্ ॥ ৩৯ ॥ দেবুবাচ ॥ ৪০ ॥ বৈবস্বতেহন্তরে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশতিমে  
 যুগে । শুভো নিশ্চিন্তৈশ্চবাণ্ডা-বৃংপংসোতে মহাস্রবো ॥ ৪১ ॥ নন্দগোপগৃহে জাতা বাণোদা-গর্ভসম্ভবা । ততঃ

মাহিষাণাং যুগচতুষ্টয়েন দেবানামেকযুগং ভবতি ) শুভো নিশ্চিন্তশচো মহাস্রবো উংপংসোতে উংপমৌ ভবিষ্যতঃ ( এতেইন-তদগ্নয়নরীযঃ জ্ঞায়তে । অষ্টাবিংশতি-  
 তম ইতি বক্তবো ছান্দসতলুক, “একোনিবংশে বিংশতিমে বৃষ্যৎ প্রাপ্য নানমৌ” --নামনৌ জন্মনৌ ইতি দ্ব্যমৌ --ইতিবং; অষ্টাবিংশতিং জাতি ভতি বা অঃ ; সঙ্গা ভাং-শাসঃ )  
 ॥ ৪১ ॥ ততঃ কিমিত্যাহ নন্দেতি । নন্দগোপগৃহে যশোদাগর্ভসম্ভবা সতী জাতা প্রাহুর্ভূতা অহং ততঃপুত্র । তৌ শুম্ভনিশ্চিন্তৌ নাশরিষ্যামি । কার্য্যনী ? বিজ্ঞাচর্জননিদানমৌ

বিক্ষাপৰ্ণতালয়া । (এবং ফল পুরাণবাক্ত্রা—বিক্ষোতি অতিদৃশ্যোঃ শুভিন্শুভয়োঃ পুরতঃ সাক্ষ্যাদ্ভ্যত, তামতিমনোহররূপাং দৃষ্ট। তৌ মনসিজগৎরজ্জ্ববিতাদৌ প্রার্থয়াৎক্ৰান্তে । যুবয়োৰ্দ্ধম্যে যোহতিবলবান্ তমেব ভজিষ্যামীতি তয়োক্রৌ তৌ পরম্পরদৌহাদিং বিতায়ানোনানং যুক্তা যন্তুরিতি) ॥ ৪২ ॥ পুনর্নিতি । পুনরপি অন্তিরৌদ্রেণ রূপেণ পৃথিবীতলেবতীয়া বৈপ্রাচিভান্ বিপ্রচিত্তেরপত্যানি দানবান্ হনিষ্যামি তু ॥ ৩৩ ॥ নামান্তরকারণং বক্তি ভক্ষেতি । তান্ উগ্রান্ যোরান্

নাশয়িষ্যামি বিদ্যাচল-নিবাসিনী ॥ ৪১ ॥ পুনরপ্যতিরৌদ্রেণ রূপেণ পৃথিবীতলে । অবতীর্য হনিষ্যামি বৈপ্রাচিভাঃশু দানবান্ ॥ ৪৩ ॥ ভক্ষয়ন্ত্যশ্চ তানুগ্রান্ বৈপ্রাচিভান্ মহাসুরান্ । রক্তা দন্তা ভবিষ্যন্তি দাড়িমীকুসুমোপমাঃ ॥ ৪৪ ॥ ততো মাং দেবতাঃ স্বর্গে মর্ত্যলোকে চ মানবাঃ । স্তবন্ত্যে ব্যাহরিষ্যন্তি সততং রক্তদন্তিকাম্ ॥ ৪৫ ॥ ভূয়শ্চ শতবাবিক্যা-

বৈপ্রাচিভান্ মহাসুরান্ ভক্ষয়ন্ত্যাম মহা রক্তা রক্তবর্ণা দন্তাঃ ভবিষ্যন্তি । কৌদৃশাঃ? দাড়িমীকুসুমোপমাঃ দাড়িমপুষ্পতুল্যাঃ (নন্দাদিহাং দ্র) ॥ ৪৪ ॥ তত ইতি । ততো হেতোঃ স্বর্গে দেবতাঃ, মর্ত্যলোকে মানবশ্চ সততং মাং স্তবন্ত্যে রক্তদন্তিকাং ব্যাহরিষ্যন্তি রক্তদন্তিকৈতি কথয়িষ্যন্তি (রক্তা দন্তা যন্তাঃ সা রক্তদন্তিকা, বহুব্রাহৌ কঃ, অদিৎ; রক্তদন্তীশব্দাৎ স্বার্থে কঃ কৃষশ্চেতি বা) ॥ ৪৫ ॥ প্রাদুর্ভাবাস্তুরমাহ ভূয়শ্চেতি । ভূয়ঃ পুনরপি শতবাবিক্যাম্ অনাদৃষ্টাঃ বৃষ্টিপ্রতিবন্ধে মূনিভিঃ সংগৃহ্য সতী অহম্ অনন্তুগি জলসম্পর্ক-বর্জিতায়াং ভূমৌ অশ্যানিহা অকস্মাদেব সন্তবিষ্যামি প্রাদুর্ভাবিষ্যামি (শতবাবিক্যামিতি “তদস্য পরিমাণ”মীত টিপ্ণ) ॥ ৩৩ ॥

তত্ৰৈব নাগাস্তরনির্কচনকারণমাহ তত ইতি । ততস্তদ নেত্রাণাং শতেন যং যস্মাৎ মুনীন্ নিরীক্ষিয্যামি নিরীক্ষিয্যো দ্রক্ষ্যামিতি যাবৎ, অতঃ কাবণাৎ মনুজাঃ

শতাক্ষীম্ ইতি প্রসিদ্ধাং মাং কীৰ্ত্তয়িষ্যন্তি ( শতমক্ষীগণি যস্যাঃ শতাক্ষীঃ মনুজা ইতি দেবাদীনামুপলক্ষণম্ ) ॥ ৪৭ ॥ তত্ৰৈব নাগাস্তরকারণমহেনাদবতাপ্রযোজনাং সাক্ষিপদ্যেন । তত ইতি । ততোহনন্তরং হে স্বরাঃ, অহম্ আত্মদেহসমুদ্ভবৈঃ ( জলাভাবেন ভূগাবুৎপত্ত্যভাবাৎ ) নিজদেহে এব জ্যৈষ্ঠঃ শাকৈকঃ

আ বৃকৈঃ বৃষ্টিপর্য্যন্তম্ অখিলং লোকং ভবিষ্যামি পোক্ষ্যামি । কৌদৃশৈঃ ? প্রাণধারকৈঃ প্রাণরক্ষকৈঃ । তদা দুবি অতঃ শাকন্তরীতি বিখ্যাতং বাস্যামি

কৌ  
দৃ  
শৈ  
কৈ

মনাবৃক্যামনন্তসি । মূনিভিঃ সংস্কৃতা ভূনো সম্ভবিষ্যাম্যেনোনিজা ॥ ৪৬ ॥ ততঃ শতেন নেত্রাণাং নিরীক্ষিয্যামি সম্মুখীন ।

কীৰ্ত্তয়িষ্যন্তি মনুজাঃ শতাক্ষীগিতি মাং ততঃ ॥ ৪৭ ॥ ততোহহমখিলং লোক-আত্মদেহ-সমুদ্ভবৈঃ । ভবিষ্যামি সুরাঃ শাকৈকঃ ।

বৃকৈঃ প্রাণধারকৈঃ ॥ ৪৮ ॥ শাকন্তরীতি বিখ্যাতং তদা বাস্যাম্যহং ভুবি ॥ ৪৯ ॥ তত্ৰৈব চ বসিষ্যামি দুর্গমাখ্যং মহাশ্বরম্ ॥ ৫০ ॥

( শাকেন বিভতি পৃথগীতি শাকন্তরী, করণোপপদেদপি বাহুগ্যাঃ গণ্ড্ ) ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ পুশ্চ কক্ষাশ্বরং কথ্যতি তত্ৰেতি . তত্ৰৈব প্রাণজীবৈ

দুর্গমাখ্যং দুর্গমসংজ্ঞকং মহাস্বরং বসিষ্যামি ( অর্দ্ধপদ্যমাহমেতৎ । দুর্গাদেবীতি বিখ্যাতং তন্মো নাম ভূনিষ্যভীতি অর্দ্ধপদ্যমপিণং কেচিৎ পদ্যেতু, বসিষ্যং,

মূলসংহিতারামদৃষ্টাৎ কেনাপি টীকাকৃত্য অধুতদ্ধাক্ষ ১ ৫০ ১ প্রাহুভানাস্তরনাম দ্বাভ্যাম্ । পুনশ্চিৎ । শতং পুনরপি যদা হিমাচলে ভীষং উদ্যানতঃ রূপং কদা

মুনীনাং ভ্রাণকারণাং রক্ষণহেতোঃ রক্ষাংসি ক্ষয়য়িষ্যামি ( নামনিউজ্জ্বাং লট্ ) তদা সৰ্কে মুনয় আনহম্ভয়ো নম্রাদেহাঃ সন্তো মাং স্তোষ্যন্তি । তন্তুস্মাং ভীমাদেবৌ চ  
বিখ্যাতং প্রসিদ্ধং মম নাম ভবিষ্যতি (বিভেত্তাস্যাঃ ভীমা, “স্বাদেমঃ” ইতি মং, ভীমানায় দেবী ভীমাদেবী, সংজ্ঞাদান পুংসস্তাবঃ) ৫১ । ৫২ ॥ পুনরপাসত্যাস্তমাহ  
দ্বাভ্যাম্ । যদেতি । যদা ত্রৈলোক্যে অরুণাখিটঃ জনকসংজ্ঞোহস্তুরঃ মহাবাখাঃ মহাপীড়াং করিষ্যতি, তদা অহম্ অসংখ্যোঃ ঘটপদাঃ বজ্র এবংভূতঃ

— ১০০ —

পুনশ্চাহং যদা ভীমং রূপং কৃষ্ণা হিমাচলে । রক্ষাংসি ক্ষয়য়িষ্যামি মুনীনাং ভ্রাণকারণাং ॥ ৫১ ॥ তদা মাং মুনয়ঃ  
সৰ্কে স্তোষ্যন্ত্যানহনূৰ্ভয়ঃ । ভীমাদেবাতি বিখ্যাতং তন্মে নাম ভবিষ্যতি ॥ ৫২ ॥ যদারুণাখ্যস্ত্রৈলোক্যে মহাবাখাং  
করিষ্যতি । তদাহং ভ্রামরং রূপং কৃষ্ণাসংখ্যেয়টপদম্ ॥ ৫৩ ॥ ত্রৈলোক্যস্য হিতার্থায় বিখ্যামি মহাস্তুরম্ । ভ্রামরীতি চ  
মাং লোকা-স্তদা স্তোষ্যন্তি সৰ্বতঃ ॥ ৫৪ ॥ ইথং যদা যদা বাধা দানবোথা ভবিষ্যতি । তদা তদাবতীৰ্য্যাহং করিষ্যাম্যরি-

ভ্রামরং ভ্রমরময়ং রূপং কৃষ্ণা, ত্রৈলোক্যস্য হিতার্থায় হিতনিমিত্তং ( উক্তার্থে তাদর্শ্যে চতুর্থী ; “যদভিপ্রেতায় দায়ুর্থঃ” ইত্যনেন বা, হিতরূপমর্থঃ মর্মান কৃষ্ণা  
ইত্যর্থঃ ) তং মহাস্তুরং বধিষ্যামি । তদা চ লোকাঃ সৰ্বতঃ সৰ্কে স্তোষ্যন্তি ( ভ্রামরীতি মে নাম ভবিষ্যতি ) ॥ ৫৩ । ৫৪ ॥ উপাংকরতি



ইখমিতি । যদা যদা ইথমেনেন প্রকারেণ দানবোথা অমুরোদ্রবা বাধা পীড়া ভবিষ্যতি, তদা তদা অহম্ অসতীর্থ্য অরিসংক্ষয়ং রিপুনানং করিষ্যামিতি প্রতিজ্ঞা ॥ ৫৫ ॥ অত্রাপি পুষ্পিকায়াং দেবীমাহাত্ম্যো ইত্যন্তমেব সংহিতায়াং লিখনং দৃষ্টতে ।

অথৈতন্মাহাত্ম্যাস্য সকলপুরুষার্থসাধনতাং শ্রেয়স্কামান্ জনান্ প্রবর্তায়িতুং রূপয়া স্বয়ং প্রকাশযতি । দেবাবাচ ॥ ১ ॥ এতিরিতি । ( অত্র বক্ষ্যমাণং ফলমুপলক্ষণং, বারাহীতন্ত্রাদিবুক্রমন্যাদ্যুপলক্ষণীয়াং, ক্রমেঠৈক্যবৃত্তাদিসহস্রাবৃত্তিপথান্তফলস্য পৃথকপৃথগুচ্চদ্বারং । অথ প্রকৃত্তার্থে ব্যাখ্যায়তে ) । ২ঃ সর্গাহিতঃ

সংক্ষয়ম্ ॥ ৫৫ ॥ \* ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যো দেব্যাঃ স্তুতিঃ ॥ \* ॥ ১১ আঃ ॥ \* ॥

দেবাবাচ ॥ ১ ॥ এতিস্তবৈশ্চ মাং নিত্যং স্তোয়াতে যঃ সর্গাহিতঃ । তস্যাহং সকলাং বাধাং লগ্নয়িম্যাম্যসংক্ষয়ম্ ॥ ২ ॥ মনু

একচিভঃ সন্ এতিঃ স্তবৈবনিভাং মাং স্তোয়াতে, তদা জনস্য সকলাং সর্কাম্ আপ্যাত্মিকাদিকাং বাধাং পীড়াম্ অসংশয়ম্ অসংশয়ং যথা স্তাত্থা লগ্নয়িম্যামি ( অসংশয়ম্ অসংশয়মেতৎ যম বাচ ইতি বার্থঃ, যদ্বা অসংশয়ম্ অত্র সংশয়াভাব এব ; সকলাং নিঃশেষাম্ ইতি বাধাং, নিত্যমিতি অসংশয়ং প্রত্যক্ষিকপাঠে ফলেন ২২ । মনু স্তবৈবিত্যুক্তত্বাং স্তবানামেব পাঠো নিভাং যুক্তঃ, ন তু সকলমাহাত্ম্যাসোতি বাচাং ৭ ন, বারাহীতন্ত্রে সমগ্রগ্রন্থেসৌব স্তবকেনোক্তত্বাৎ, তপাচ “পৃথগ্বেদ- কলুবাদু- দেবানাক যথা হরিঃ । স্তবানামপি সর্কিয়াং তথা সপ্তগভীঃ” ইতি, ইত্যং সপ্তগভা এব পার্থঃ ; অতো যামসে চ “পাঠেদাভঃ সার্বণিকঃ পৃথাকলয়জাদিভঃ । মমাপনোঃ,

কৈটভনাশঞ্চ মহিষাসুর-ঘাতনম্ । কান্তীয়্যাস্তু য়ে তদ্বদ্ বব্ শুস্ত-ন শুভয়ো ॥ ৩ ॥ ভবিষ্যতি ন দারিদ্র্যং  
শ্রোয্যাস্তু চৈব য়ে ভক্ত্য মম মাহাত্ম্যভূতগম্ ॥ ৪ ॥ ন তেমাং দুষ্কৃতং কিঞ্চিদ্ দুষ্কৃতোপা ন চাপদঃ ।  
ন চৈবেষ্টবিয়োজনম্ ॥ ৫ ॥ শত্রুতো ন ভয়ং তস্মৈ দম্যতো বা ন রাজতঃ । ন শস্ত্রানল-তোয়োবাৎ  
কদাচিৎ সম্ভবিষ্যতি

তর্নিন্মিত্তীভূতং কশ্মেতি যাবৎ ন ভবিষ্যতি (অনেন বর্তমানজন্মানি পাপকৰ্ম্মাভাব উক্তঃ, পৰ্হ্মাণি দেবি সকলানি ইত্যাদিপ্রাপ্তক্ৰেঃ) । দুক্ষুতোথাঃ পাপপরি-  
পাকজাঃ আপদো ন ভবিষ্যন্তি (এতেন প্রাচীনকৰ্ম্মণঃ প্রায়শ্চিত্তমেতদিত্যুক্তং ভবতি । পাপপৰ্য্যাপপঠিতোহপি দুক্ষতৰ্ণকঃ উপচাৰাৎ তৎকাৰণে কৰ্ম্মণি চাত্ত  
বৰ্ত্ততে, যথাশ্রুতমর্থো বা) । দারিদ্র্যঃ ধনরাস্তিতাং ন ভবিষ্যতি । ইচ্ছাবিয়েজনঃ প্রিয়বিয়োগপঙ্কট ন ভবিষ্যতি ॥ ৫ ॥ শক্ৰত ইতি । ভগ্নসাম্যোহুঃ শ্রোতুশ্চ

। : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

জনস্ত শত্রুতঃ শক্রভোয়া, দহ্যতো। দহ্যভো বা, রাজতে। রাজভ্যঃ, শস্ত্রানলতোয়ৌবাৎ শস্ত্রাগ্নিজলবেগাৎ ভয়ং কদাচিদপি ন সমুদিস্যতি (অত্র যৎপদং বহুবচনান্তস্ত স্যাপেক্ষিততচ্ছব্দে একবচনস্যানুপপত্তেঃ প্রকৃতার্গশ্চৈব বিবক্ষিতত্বং প্রাথমিকত্বেন যুগ্যতঃ, “যে চাত্র দ্বে” ত্র্যাদিমন্ত্র-তন্মৈ-তে-ইতিবৎ ; ১৭ ভিক্ষু পদ-সাধুত্বার্থিকা। যদ্বা “স্বপাং স্তু” বিতি আমস্থানে ভূম্. তেষামিত্যর্থঃ। অত্রাষ্টম্যামিত্যাদেঃ সামাগ্রাভিদানেন পক্ষবিশেষবান্ভিধানাৎ উভয়োরপি পক্ষয়োঃ পঠিত্বার্থমোঃ ফল-সাম্যাপত্তৌ “একাদশীকোটিসহস্রতুল্যাহিসিতাষ্টমী পৰ্ব্বতরাজপুত্রাঃ। ততোহপি শুক্ল। গুণিত। শতেন পরাশরবাসবশিষ্টমুখো” রিতিস্থত্বাক্রবৎ ক। রতম্যঃ ক্রেতাম্। অপ্রাচ্ছ সক্রদেব কৌর্ভায়িযান্তি শ্রোষ্যন্তি চেতি অবগাৎ যোগ্যতয়া সান্নিধ্যাদ। পঠনশ্রবণয়োঃ রত্নতীরি যুগপৎ ফলসমুচ্চয়োহুৎসর্গ, নন্দার্যা গঙ্গামানফলদঃ; ন তু দর্শনোপায়াসবৎ.

১০  
১১  
১২

॥৬॥ তস্মান্নমৈতন্মাহাত্ম্যং পঠিতব্যং সমাহিতৈঃ। শ্রোতব্যঞ্চ সদ। ভক্ত্যা পরঃ স্বস্ত্যয়নঃ হি ভূতঃ ॥ ৭ ॥ উপসর্গনির্ণেয়ান্ধ

মহামারী-সমুদ্ভবান্। তথা ত্রিবিধমুৎপাতং মাহাত্ম্যং শ্লনয়েন্মগ ॥ ৮ ॥ যত্রৈতৎ পর্য্যতে সম্যঙ্ নিত্য-মায়তনে মগ। সদ। ন

ফলভেদোহুৎসর্গানভেদাদিতি) ॥ ৬ ॥ তস্মাদিতি ॥ যতে। ননৈতন্মাহাত্ম্যমেবংবিধাশচব্যফলদং তস্মাদিত্যর্থঃ, এতন্মগ মাহাত্ম্যঃ সমাহিতৈতোরেকাচৈতৎ সদ। ৯ ৮।  
পঠিতব্যং শ্রোতব্যঞ্চ। হি নিশ্চিতং তৎ পঠনং শ্রবণঞ্চ পরমুৎকৃষ্টং স্বস্ত্যয়নঃ মঙ্গলজনকম্। যদ্বা তি যতঃ তৎ পরং স্বস্ত্যয়নং, তস্মান্নমৈতন্মাহাত্ম্যং সমাহিতৈঃ  
পঠিতব্যমিতি সম্বন্ধঃ। (অত্র সমেদিত জুষ্টম্যাদিকালবিশেষগ্রহপরিহারার্থম্) ॥ ৭ ॥ পরং স্বস্ত্যবনামিতি যতঃ তৎ তদ্ব্যপ্তি। মগ মাহাত্ম্যং (কতু) অণেশান্ উপ  
সর্গান্ উপদ্রবান্, তথা মহামারী সর্কভো। মরকং ততুদ্ভবান্ মাণদীন্ আকস্মিকপ্রাগতরিরোগান্ বা, তথা ত্রিবিধং দিব্যাহুতীক্ষ্মভৌমীখ্যং নদ্র।

আধ্যাত্মিকাত্ম্যংপাতং শময়েৎ “উপশর্গঃ পুমান্ রোগভেদোপশ্লবয়োবপী”তি মেদিনী ) ॥৮॥ যত্নেতি । যদ্র যম আয়তনে গৃহে এতন্নাহাঅ্যঃ সন্যক্ সনীচীনঃ যথা স্ত্রান্তথা ( সন্যক্ সমগ্রং বা ) নিত্যং পঠ্যতে, তৎ আয়তনং ন বিমোক্ষ্যামি ন ত্যক্ষ্যামি । ( অতঃ কারণদিভাধাহায়াং ) তত্র মে যম সান্নিধ্যং সান্নিধ্যাৎ সন্যাসং সরা সর্বদা স্থিতম্ ॥ ৯ ॥ কন্মসাক্ষ্যাসম্পাদকতাক্ষাস্ত্রাহায়াস্ত্রাহ বলীতি । বলিপ্রদানে পশুঘাতাদৌ ( যদ্বা বলিঃ প্রদীয়তেহত্ৰ তৎ বলিপ্রদানং পশুঘাতাদিকন্মসং কন্ম তস্মিন্ ), পূজায়াং তিথিবিশেষাদিবিহিতার্চ্চায়াম্, অগ্নিকার্য্যে হোমযজ্ঞাদৌ, যাহোংসবে গীতনৃত্যাদৌ পুত্রাদিবিবাহাদৌ বা, এতন্মম চরিতং সৰ্বং সমগ্রম্

তদ্ বিমোক্ষ্যামি সান্নিধ্যং তত্র মে স্থিতম্ ॥৯॥ বলিপ্রদানে পূজায়া-অগ্নিকার্য্যে মহোংসবে । সৰ্বং মমৈতচ্চরিত-মুচ্যায়্যং  
 শ্রাব্যমেব চ ॥ ১০ ॥ জ্ঞানতাজ্ঞানতা বাপি বলিপূজাং তথা কৃতাম্ । প্রতীচ্ছিয়াম্যহং প্রীত্যা বহিঃহোমং তথা কৃতাম্ ॥১১॥

উচ্যায়্যং পঠনীয়ং শ্রাব্যঞ্চ শ্রোতব্যম্ এব ( এবকরোণবজ্রকং দ্যোতাতে ) ॥ ১০ ॥ প্রয়োজননাহ জানতেতি । জ্ঞানতা বিধিভেদন, অজ্ঞানতা অবিধিভেদন বা অপি কৃত্যং বলিপূজাং অহং প্রীত্যা প্রতীচ্ছিয়ামি গ্রহীষ্যামি । তথা কৃতং জ্ঞানতাহজ্ঞানতা বা কৃতং বহিঃহোমং প্রতীচ্ছিয়ামি (হোমস্ত বহিঃসাক্ষ্যাহং বহিঃ-পাদেন যজ্ঞাদয়ো লক্ষ্যন্তে; যদ্বা বহিঃহোমে বজ্রাধারকহবিঃপ্রক্ষেপঃ, ন তু ব্রাহ্মণমুখাবিকরণকহবিঃপ্রক্ষেপঃ; তত্র বিধ্যভাবেনাপি দানমাত্রৈণৈব সাক্ষ্যঃ; তত্র হোমপদপ্রয়োগোহপি দৃষ্টতে যথা “মুখে হুতং যৈন ধরামরণাম্” ইতি, চতুর্থে চ “অশ্নাত্যনন্তঃ খলু তত্বেকোবিদেঃ শ্রদ্ধাহুতং যমুখ ইজ্যানামভি”রিতি; যদ্বা অজ্ঞানতা

কৃত্যমপি বলিপূজাং প্রতীচ্ছিম্যামি, জ্ঞানতা বা কৃত্যমিতি দ্যবহিত্তেনাত্ময়ঃ, ইবার্থে বা-শকঃ “বা বিকল্পোপমানয়ো”রিত্তি কোসাস; এতন্মাহাত্ম্যাসাদ্গুণ্যাস ১৭।  
 জ্ঞানতা কৃত্যং প্রতীচ্ছিম্যামি, তথা অজ্ঞানতা কৃত্যমপীতি বাক্যার্থঃ; বৈ নিশ্চয়ে বা, তদা সন্ধিরার্থঃ, ইমেসিচ্ছাদেশশব্দান্দসঃ। নমোত্তেমায়া মাহাত্ম্যায় পাঠ্যমিঃ  
 কল্পাস্থং জ্ঞায়তে প্রাপ্তকেন, বক্ষ্যম্যৈশ্চ পুরুষার্থকত্বং; তদেকশ্চ কল্পাস্থত্বপুরুষার্থকত্বাভ্যাং বিশেষ এব; নৈদং বাচ্যং, সংযোগপূর্ণকল্পায়ৈকজ্ঞায়ৈক উভয়াভ্যক-  
 ত্বস্ত্যবিবোধঃ, খাদিরবং (ই); তথাচ “অজ্ঞানাদ্ভ্যদি বা মোহাং প্রচাবেভাক্ষরেষু যং। অরগাদেব ভদ্রিযেধঃ সম্পূর্ণং স্মাদিত্তি”পবত্বকৃত্বাং লক্ষ্যাপ্রদেশ্যপি  
 শ্রীবিষ্ণুস্মরণশ্চ “পাপক্ষয়শ্চ ভবতি অরতা তমহনিশম্। প্রাতনিশ তথা সন্ধ্যাখধ্যাহ্নাদিষু সংসরন্। নারায়ণবাপোপ্লাবিত সন্ধ্যাঃ পাপক্ষয়ং নরঃ” ইত্যাদিষচলেন্যু

শরংকালে মহাপূজা ক্রিয়তেযা চ বার্ষিক।। তস্তাঃ নৈমিত্ত্যাহাত্ম্যং শ্রুতম্। ভক্তিসমন্বিতঃ ॥ ১২ ॥ সর্বস্বার্থার্থবিবিনিম্নুজে।

পুরুষার্থসাধনত্বঞ্চ জায়তে ইত্যাদোষঃ) ॥ ১১ ॥ নিয়োগবিবোধের অবশ্য কল্পমাহ দ্বাভ্যাম্। শব্দার্থঃ। শরংকালে বার্ষিকী প্রতিবৎকর্তব্য। বা মহাপূজা নিম্নে ১৬,  
 তস্তাং মহাপূজায়াং ভক্তিসমন্বিতঃ সন্ নৈমিত্ত্যাহাত্ম্যং শ্রুতম্। নতুস্বঃ মৎপ্রসাদেন সর্বস্বার্থার্থবিবিনিম্নুজেঃ সম্পাদিত্তিঃ, দণ্ডাত্মত্বাভ্যুত্থিত্তিঃ ভবতি, অত্র মংকঃ মংকঃ  
 ন (ধনং কাঞ্চনাদি, দাত্ত্যাপি ধনত্বে গোবলৌবদ্ধবাত্যা পৃথগ্ভক্তিঃ। অত্র মত্বয়া উত্কৃষ্টত্বাং অবগে মল্লেশমবিকাৰঃ, পাঠে তু ব্রাহ্মণক্ষত্রিয়যোনিপলান পুণ্য, তৎকঃ  
 “নাধোত্ব্যং ন চাত্তেন ব্রাহ্মণঃ ক্ষত্রিয়ং বিন। শ্রোতবান্ধ শূদ্রঃ নারোত্ব্যং কদাচনে”তি। অত্র চ যজ্ঞাপি শব্দেভুক্ত্যকঃ, তথাপি পাঠ্যে নিম্নে পূর্ণাণ্যন  
 সংবাদাং, তথাচ স্বান্দভবিষ্যদোঃ “শারদী চাণ্ডিকা পূজাং ত্রৈবিধা পারগীকৃত্য। সারদী জপযজ্ঞাজৈনৈবেজ্যেণ, শারদীয়া উপবাস্যাস্ত পূর্ণাণ্যন

কীৰ্ত্তিতম্ । পাঠস্তস্মৈ জপঃ প্রোক্তঃ পঠেদেবীমানস্তথা” ইতি ; সংবৎসরপ্রদীপপুস্তক “মাহাত্ম্যং ভগবতাস্মৈ পুরাণাদিবু কীৰ্ত্তিতম্ । পঠেচ্চ শৃণুগান্ধাপি সন্যাসীনাং সমুদ্বয়ে” ইতি , তস্ম্যং শ্রবণেতু্যপনক্ষণম্ । ফলমপি শ্রবণদীপপুস্তকায়ং পাঠে আকীৰ্ত্তিতঃ সন্যাসীনাং বাকারচনাপি সন্যাসীনাং তাদৃশোদ (ঈ) ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ অনিয়তকালিকশ্রবণমাহ শ্রবয়েতি । যথৈবতমাহাত্ম্যং তথা শুভাঃ শুভহেতুভূতাঃ উৎপত্তাঃ প্রাচীৰ্ভাবান্ তৎপ্রতিপাদকগ্ৰন্থান্ চ শ্রবয়, যুদ্ধেয়, পরাক্রমঞ্চ তৎপ্রতিপাদকং গ্ৰহণং শ্রবয়, “তুভু” মনোবরণান্ কামান্নরো যোগকনবাগ্নয়ান্” ইতি ।

ধনধান্যমুতাবিহিতঃ । মনুষ্যোঃ মৎপ্রসাদেন ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ১৩ ॥ শ্রবয় মনৈতমাহাত্ম্যং তথা চোৎপত্তয়ঃ শুভাঃ ।

পরাক্রমঞ্চ যুদ্ধেয় জায়তে নির্ভয়ঃ পুমান্ ॥ ১৪ ॥ রিপবঃ সংক্ষয়ঃ যান্তি কল্যাণং পাপপগতে । নন্দতে চ কুলং পুংসাং

বায়হীতম্ভোক্তেঃ । অত্র গোবলীবর্দরীত ॥ সামান্তবিশেষভায়েন উৎপত্তয় ইত্যাক্তং ; “মৃগাঃ স্ত” বিত্তি এসঃ স্থানে জম্ “গ্ৰাণাঃ বহুগুণা দহু” রিত্তিবৎ । যদ্বা মাহাত্ম্যং মহত্ত্বপ্রকাশকং ত্রিনিমামপি চেতাংসি ইত্যাদি ব্রহ্মাদিস্থতিবাক্যঞ্চ, উৎপত্তীঃ প্রাচীৰ্ভাবান্ জ্ঞানকথনানি, পরাক্রমঃ যুদ্ধেয় । যদ্বা শ্রবয় স্থিতশ্রেত্যধাহার্য্যং শুভা উৎপত্তয়ঃ অপত্যাদানি ভবন্তীতি শেষঃ—কর্ত্তরি ক্রিঃ, যুদ্ধেয় পরাক্রমঞ্চ উৎপত্তিঃ—লোকাক্রময়ঃ ক্রীদয়, ম পুমান্ নির্ভয়শ্চ জায়তে ) ॥ ১২ ॥ রিপব ইতি । ময় মাহাত্ম্যং শৃণুতাং পুংসাং রিপবঃ শত্রবঃ সংক্ষয়ঃ সম্যক্ ক্ষয়ঃ যান্তি, কল্যাণং নন্দনং চোৎপদ্যতে, কুলং মহামানরা

নন্দতে সমৃদ্ধং ভবতি (শূন্যতাম্ ইত্যত্রোপ্যপলক্ষণং, পাঠসম্যাপি কলস্যা গ্রন্থান্তরেসু ক্তদ্বাং; “কুলং জনপদে গোত্রে” ভক্তি মেদিনী) ॥ ১৫ ॥ প্রাচিন্দিগমসিনঃ  
মাহ শাস্তীতি । সৰ্বত্র সৰ্বস্মিন্ শাস্তিকৰ্ম্মণি শাস্তিকৰ্ম্মার্থং (নিমিত্তসম্প্রদায়ঃ; যদ্বা আশ্রয়াশ্রয়িভাবেন বৈষয়িকসম্প্রদায়ঃ; যদ্বা আশ্রয়শ্রয়িভাবেন বৈষয়িকসম্প্রদায়ঃ), “দ্বাঃ বালিকা-  
তন্ত্রে” গ্রহোপশান্ত্যে কৰ্ত্তব্যং পঞ্চাবন্তং বরাননে” ইতি; যদ্বা সৰ্বত্র ইতি সৰ্বেষু উপসৰ্গেষু, উপসৰ্গাঃ শমং যাত্নাতি বক্ষ্যমাণাঃ), তথা দুঃস্বপ্নদৰ্শনং (অনপ্পম্প্রদায়ঃ-  
স্বপ্নদৰ্শনে, উগ্রাসু অতিকটাসু গ্রহপীড়াসু (চকাবাদ্বারাহীতম্ভোক্তানি জ্ঞেয়ানি তেষু চ) মম মাহাত্ম্যং শৃণুয়াং (বিদৌ দ্বিঃ; উপলক্ষণাৎ পঠেচ্চ, যথা পুরাণাণি  
মাহাত্ম্যং মম শৃণুতাম্ ॥ ১৫ ॥ শাস্তিকৰ্ম্মণি সৰ্বত্র তথা দুঃস্বপ্নদৰ্শনে । গ্রহপীড়াসু চোগ্রাসু মাহাত্ম্যং শৃণুয়াম্ ॥ ১৬ ॥

উপসৰ্গাঃ শমং যাত্নাতি গ্রহপীড়াসু চ দাক্ষণ্যঃ । দুঃস্বপ্নাঞ্চ নৃভিদৃষ্টং দুঃস্বপ্ন-মুপলক্ষ্যতে ॥ ১৭ ॥ বালগ্রহাভিভূতানাং বালানি  
শাস্তিকারকম্ । সংঘাতভেদে চ বুগাং মৈত্রীকরণ-মুভয়ম্ ॥ ১৮ ॥ দুৰ্ব্বভূতানাং-মলোদাণাং বনহনিকৰ্ম্মং পরম্ । রক্ষাভূত

॥ ১৬ ॥ কলমাহ উপসৰ্গা ইতি । উপসৰ্গা উপাত্ম্যচিহ্নদোষাঃ, দাক্ষণ্যং অত্যুগ্রা গ্রহপীড়াসু শমং যাত্নাতি । নৃভিদৃষ্টং দুঃস্বপ্নং দুঃস্বপ্নাং জায়তে ভূতং মলং  
জনয়তীত্যর্থঃ (উক্তনিদ্রা কচ্ছিদ্রাভিচারঃ স্বপ্নাঞ্চ কৌবহঃ; নৃভিভাণ্ডাধিকারিবিশেষমুপলক্ষ্যতাম্) ॥ ১৭ ॥ বালগ্রহাভিভূতানাং বালানাং  
বালগ্রহাঃ পূতনাদয়ঃ কুমারবনমুপলক্ষ্যতাম্ তৈরভিভূতানাং বালানাং শাস্তিকারকং, বুগাং সংঘাতভেদে পরস্পরাবিরোধে

চ উত্তমং শ্রেষ্ঠং যৈত্রীকরণং যিত্রাস্বাপাদকম্ এতন্মাহাত্ম্যনিভার্পঃ ( বদ্ধা এতন্মাহাত্ম্য পঠনং অবগচ্ছত্বার্থঃ ) ॥ ১৮ ॥ ত্বপ্তব্রতৈতি । অশেষাণাং ত্বপ্তব্রতানাং  
পর-মতিশয়িতং বলহানিকরণং সামর্থ্যানাশকম্ । ( ন কেবলমেতাবৎ, কিন্তু ) বক্ষ্যেত্বত্ৰীপশাচানাং পঠনাদেব নাশনং ( নাশয়ত্বীতি কত্বরি ওমট । ত্বভাঃ  
গ্রন্থবিশেষাঃ নারকযোনিবিশেষা বা, পিশাচাঃ প্রেতবিশেষাঃ ) ॥ ১৯ ॥ নাতিচিত্রেনেতদুক্তং সৰ্বসন্নিভাত সৰ্বমিতি । ( অৰ্দ্ধপদ্যম্ ) । সৰ্বদেঃ সমগ্র-  
মেতন্মাহাত্ম্যং মাহাত্ম্যপ্রতিপাদকে গ্রন্থঃ যম সন্নিপিকারকং সাম্মুখ্যসম্পাদকং ( যত ইতি ৫৭ হ্রস্ব, অতএবেতৎপঠনে যম সান্নিধ্যাৎ স্মৃত্তরাসেব বক্ষ্যাদানানং নাগোহি-

পিশাচানাং পঠনাদেব নাশনম্ ॥ ১৯ ॥ সৰ্বং মমৈতন্মাহাত্ম্যং যম সন্নিধিকারকম্ ॥ ২০ ॥ পশুপূষ্পার্যদ্যুপেচ্চ পশুদৌগৈ-  
স্তথোত্তমৈঃ । বিপ্রাণাং ভোজনৈর্হোনিঃ প্রোক্ষণীয়ে-রহনিশম্ ॥ ২১ ॥ অত্রোচ্চ বিবিধৈর্ভোগৈঃ প্রদানৈর্বৎসরেণ য় ।

ভিমতলাভশ্চ ভবতীতি ভাষঃ । স্তুতিমাত্রপাঠশ্চৈতৎ ফলমিতি শঙ্ক্যপনোদনাং সৰ্বসন্নিভুক্তম্ ) ॥ ২০ ॥ পূজাদিভোয়াহপি যম তদধিকপ্রীতিজনকমিত্যাত্ত পার্শ্বাৎ ।  
( দ্বাভ্যামমরঃ ) । উত্তমৈঃ পশুপূষ্পার্যদ্যুপেচ্চ পশুদৌগৈঃ প্রোক্ষণীয়েঃ স্তান্নীয়াদিভিঃ স্তান্নৈর্বৎসরেণ । অত্রোচ্চ যত্রোচ্চৈতৎ নিম্নৈঃ  
বহুপ্রকারৈঃ ভোগৈর্ভোগসাদনৈর্দ্রব্যৈঃ প্রদানৈঃ মদুদ্দেশ্যকসুর্বর্গাদিত্যুপেচ্চ অহনিশং নক্লদ্বিবং ব্যাপ্য সংবৎসরেণ যথাযথং দৌরমটনৈঃ ক্রিয়মাটোশ্চ নৈ  
ব্রম য় প্রীতিঃ ক্রিয়তে উৎপাদ্যতে, সা তাদৃশী প্রীতিঃ আশ্বিন্ স্মচরিতে শোভনচরিতে সন্ধদেকবাবং ঋতে সতি ক্রিয়তে ভবতীতি বার্থঃ ( প্রদানৈঃ দাদানীসৈঃ



ভোগৈরিতি সামান্যাদিকরণং বা । অত্র সকৃদिति অবগাদেকবারশ্রবণেনতং ফলম্, অদিকশ্রবণাপত্তৌ তু দয়তুপিকলজ্ঞানবৃদ্ধির্প্ৰতি “ভাব্যঃ স্বয়ং-প্ৰকাশঃ ফলো-বিপাকঃ”-  
 মिति জ্ঞায়ান্ । পশবশ্ছাগাদয়ো বিচিত্ৰাঃ, অর্থাৎ দূর্দাক-তাদি, গন্ধাশ্চ দৌপাশ্চ তৈঃ ; উত্তরৈমি-  
 বি-  
 কলবিশেষমাহ শ্রুতিমিতি । মম জন্মানাং প্রাক্তর্ভাবণঃ ভূতভবিষ্যদ্বর্তমানানাং কীন্তনং ব্যাহরণং শ্রুতং মং পাপানি-  
 ক-  
 ভূতেভো। ধাতকসম্বৃত্তো। বক্ষাঞ্চ কবেতি ( শরণভাগি-  
 ক-  
 ॥ ২০ ॥ যুক্তি-  
 ৥ ২১ ॥ ২২ ॥

—  
 তু  
 তু  
 তু  
 তু

প্রীতির্মৈ-  
 ভূতেভ্যে-  
 নাশকং-  
 ৥ ২৩ ॥

১০  
 ১১  
 ১২  
 ১৩  
 ১৪  
 ১৫  
 ১৬  
 ১৭  
 ১৮  
 ১৯  
 ২০  
 ২১  
 ২২  
 ২৩  
 ২৪  
 ২৫  
 ২৬  
 ২৭  
 ২৮  
 ২৯  
 ৩০  
 ৩১  
 ৩২  
 ৩৩  
 ৩৪  
 ৩৫  
 ৩৬  
 ৩৭  
 ৩৮  
 ৩৯  
 ৪০  
 ৪১  
 ৪২  
 ৪৩  
 ৪৪  
 ৪৫  
 ৪৬  
 ৪৭  
 ৪৮  
 ৪৯  
 ৫০  
 ৫১  
 ৫২  
 ৫৩  
 ৫৪  
 ৫৫  
 ৫৬  
 ৫৭  
 ৫৮  
 ৫৯  
 ৬০  
 ৬১  
 ৬২  
 ৬৩  
 ৬৪  
 ৬৫  
 ৬৬  
 ৬৭  
 ৬৮  
 ৬৯  
 ৭০  
 ৭১  
 ৭২  
 ৭৩  
 ৭৪  
 ৭৫  
 ৭৬  
 ৭৭  
 ৭৮  
 ৭৯  
 ৮০  
 ৮১  
 ৮২  
 ৮৩  
 ৮৪  
 ৮৫  
 ৮৬  
 ৮৭  
 ৮৮  
 ৮৯  
 ৯০  
 ৯১  
 ৯২  
 ৯৩  
 ৯৪  
 ৯৫  
 ৯৬  
 ৯৭  
 ৯৮  
 ৯৯  
 ১০০

প্রস্তাবভেদশ্রবণে কলভেদোক্ত্য। যতাপি তত্ত্বংকাননাবিশিষ্টা তত্ত্বংপ্রকবণশ্রবণমেব প্রতীয়তে, তথাপি পৃথদাটিকাকবাক্যতয়া পাট্যাজ্ঞাতাবিশ্রবণাক্ত সমগ্রৈশ্রব  
মাহাত্ম্যস্ত পাঠো ব্যবসীয়তে; যথা হ্রিব্বংশে মহাদিবংশভেদশ্রবণস্ত বংশোৎপত্তিকলশ্রবণতাবাপি সন্তানকানঃ সন্দামেব সংস্থিতঃ। কিঞ্চ শ্রবত্বেতপ্য  
সমগ্রপাঠশ্রবণে উচিতে, সরস্বতীসুবাদৌ তথাদর্শনং যথা “অবিচ্ছদং পঠেদৌমান্ ধ্যাত্ব দেবীং সরস্বতী”মিত। শক্রদিয়াহাত্ম্যগুণদিনং শিষ্টা যৎ পঠতি, তৎ “বশচ  
মতীঃ স্তবৈবেরিভিঃ স্তোম্যন্ত্যমলাননে” ইত্যাদিনা দেবৈঃ প্রার্থিতস্ত তত্রোক্তকলবিশেষস্ত লাভায় বিশেষাভিধানাং; এবঞ্চ মহাভারতাদৌ প্রতিপন্নোক্তবদবাস্তুর-

জায়তে ॥২৪॥ যুস্মাভিঃ স্তুতরো যাশ্চ যাশ্চ ব্রহ্মযিভিঃ কৃতঃ। ব্রহ্মণা চ কৃতাস্তাস্তু প্রমচ্ছন্তু শুভাঃ মতিম্ ॥২৫॥ অরণ্যে

প্রাস্তরে বাপি দাবাগি-পর্যব্রিতঃ। দম্ভ্যভির্বা বৃতঃ শূন্যে গৃহ্যতো বাপি শক্রভিঃ ॥২৬॥ সিংহব্যান্দ্ৰানুনাভো বা বনে বা

ফলান্তেতানি চরিতভেদোক্তানি ॥ ২৬ ॥ আস্থাং তাবৎ পাঠশ্রবণয়োঃ কলং, মচ্চরিতশ্রবণমপ্যাশ্রয়াকলদগিতাহ চতুর্ভিঃ। অরণ্যে দাবাগিপরি-  
বারিতঃ দাবানলেন বেষ্টিতঃ, অপি বা প্রাস্তরে দুর্শূন্যমার্গে দম্ভ্যভির্বা বৃতঃ, অপি বা শূন্যে নির্জনে সহায়শূন্যে ইতি যাবৎ শক্রভির্গৃহীতঃ  
আক্রান্তঃ ( ইতি যথাযথং যোজ্যং ) নরো মনুষ্যঃ মমৈতচ্চরিতং শ্রবন্ ( তদানীং পাঠ্যেদেবতুষ্ঠানান্নাবাং ) কেবলং মনসা চিস্তয়ন্ সঙ্কটং দাবাগাদেঃ দাবাগাং  
মুচ্যতে ( ইতি চতুর্ধেদান্নয়ঃ ) ॥ ২৬ ॥ সিংহেতি। বনে সিংহব্যান্দ্ৰৈরুচ্যাতঃ বা, বনহস্তিভির্বা অনুগতঃ অনুধাবিত ইতি যাবৎ, ক্রুদ্ধেন রাজ্ঞা



নি। “কলশ্র কৰ্ম্মনিষ্পত্তেষুয়াং লোকবৎ পরিমাণতঃ কলবিশেষঃ শ্রা” দিতি । অস্রার্থঃ যথা । সৌকিককৰ্ম্মগাদীনানং দাত্তল্যেন কলবিধ্যাং, তথা বৈদিকগাষ্ট্রাদীনান-  
মপীতি । যত্র তু কৰ্ম্মবিশেষে আবৃত্তিবিশেষ উক্তস্তত্র তাবতোব্যবৃত্তিঃ, তদাধিকো কলাদিকাঞ্চ । কিক যথোক্তান্ত্রষ্টানেহপি যতাদৃক্ককলাং পত্তিন্ দৃগতে,  
তত্র কালমহিমৈব বীজং; তত্ত্বকং বিষুপূরণে “যদা যদা; দতাং হানির্দৈদমাগ্গিত্তুমারিণাম্ । ভদা ভদা কলৈর্দ্বিরত্নমেঘা বিচকণৈ” রিতি—সানিযগোচিভবৈদিক-  
কৰ্ম্মান্ত্রষ্টানেহপি যথোক্তকলোৎপত্তাভাবঃ, অতোহধিকাবৃত্তিকচিটৈব; নিকক্কাগমে “কলো সংখ্যা চতুর্গুণা” ইতি ) ॥ ৩০ ॥ উপসংহরতি । ঋধিকবাচ ॥ ৩১ ॥

ঋধিকবাচ ॥ ৩১ ॥ ইত্যুক্ত। সা ভগবতী চণ্ডিকা চণ্ডবিক্রমা । পশ্যতামেব দেবানাং তত্রৈবান্তরধীয়ত ॥ ৩২ ॥ তেহপি দেবা  
নিরাতঙ্কাঃ স্বধিকারান্ বথা পুরা । বজ্রভাগভূজঃ সর্বে চক্রবিনিহিতায়ঃ ॥ ৩৩ ॥ দৈত্যাক্ষ দেব্যা নিহতে শুভ্রে দেবরিপৌ

ইতীতি । সা চণ্ডিকা ইতি পূর্বোক্তমুক্ত। দেবানাং পশ্যতামেব মর্যে তত্রৈব ভগ্নিহ্মানে এষ অন্তরধীয়ত অন্তর্হিত। ( যদা চিরকালমবস্থানমিচ্ছতোহপি  
ভাননাদুতোতি; যদা তেষাং সম্বন্ধে ইত্যুক্ত ) । কীদৃশী? ভগবতী অচিষ্টাশ্রয়া; চণ্ডো বিক্রমঃ প্রতাপো বস্যাঃ ( দীঙ অনাদরে দিবাদিঃ, দাতুনামনেকার্থদ্বা-  
দন্তধর্নাধর্তা ) ॥ ৩২ ॥ তেহপীতি । তেহপি ইচ্ছাতাঃ দেবাঃ নিরাতঙ্কা নির্ভয়াঃ সন্তাঃ যথা পুরা যথা পূৰ্বং তথা স্বধিকারান্ স্বস্ববিষয়াশ্চক্রুঃ । কীদৃশাঃ? যজ্ঞভাগভূজঃ ।  
নিরাতঙ্কদেহে হেতুঃ—বিনিহিতায়ঃ দেব্যা নাশিতপত্নবঃ ॥ ৩৩ ॥ অবশিষ্টা দৈত্যাঃ কিমকুরুতেত্যাহ দৈত্যা ইতি । (সাক্ষিনাশ্রয়ঃ) । যুদ্ধে সংগ্রামে তস্মিন্ দেবরিপৌ শুভ্রে

— ৩৩ ৩২ ৩১ ৩০ ২৯ ২৮ ২৭ ২৬ ২৫ ২৪ ২৩ ২২ ২১ ২০ ১৯ ১৮ ১৭ ১৬ ১৫ ১৪ ১৩ ১২ ১১ ১০ ৯ ৮ ৭ ৬ ৫ ৪ ৩ ২ ১

নিশ্চিন্তে চ দেব্যা। নিহতে সতি শেখা দৈত্যাঃ পাতালম্ অ। শয়োগ্ ধনুঃ সন্ধুটীষ্য গতিবন্তুঃ। কৌদুশে ? জগদ্বিশ্বঃ। সিনি জগতাং বিশ্বঃ। সশীলৈঃ ; অঃ। মহোদগে  
অতুল্যক্ৰমে অতুলোৎসাহে ; মহাবীর্যে অতিশক্তিযতি ( উভয়োরেব বিশেষণানি ) ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ প্রভুভাবমুপসংহরতি । সা ভূগবতী। নিরতিশয়শয়-  
শালিনী, দেবী অপ্রচ্যুতস্বরূপা, নিত্য। জন্মান্দিষড়্ বিকাবরহিতাপি পুনঃপুনঃ সমুদয় অবিসৃজ্য জগতঃ পৰিপালনং মৰ্ত্ত্যে। বক্ষ্যং কুরুতে । হে ভূপ শব্দ ॥ ৩৬ ॥  
উক্তমপি মহিমানং অতিনিশ্চয়বোধায় পুনরপি কথয়তি তৎ। তথা দেব্যা। এতদ্বিশ্বং মোহাতে অকলুষো কৰ্ত্তব্যগ্রহং প্রাপ্যতে । সৈব বিশ্বং জগৎ প্রসূয়তে

যুধি । জগদ্বিশ্বঃ। সিনি ভস্মিন্ মোহোৎসাহে। তুল্যবিক্রমে ॥ ৩৪ ॥ নিশ্চিন্তে চ মহাবীর্যে শেখাঃ পাতাল-শায়য়ুঃ ॥ ৩৫ ॥ এতঃ ভূগ-  
বতী দেবী সা নিত্যাপি পুনঃপুনঃ । সমুদয় কুরুতে ভূপ জগতঃ পৰিপালনম্ ॥ ৩৬ ॥ তদৈতন্মোহাতে বিশ্বং সৈব বিশ্ব-  
প্রসূয়তে । সা যাচিতা চ বিজ্ঞানং তুৰ্য্য। শাক্তিঃ প্রযচ্ছতি ॥ ৩৭ ॥ ব্যাপ্তঃ তদৈতৎ সকলং ব্রহ্মাণ্ডং নলুজ্জগদ্র । মহাকাল্য।

জনয়তি ( আদিপ্রকৃতিদ্বাং ) । সা চ সৈবৈতৎ তুৰ্য্য। সত্য। বিজ্ঞানম্ অপারোগ্যজ্ঞানম্ আত্মশাক্তিঃ। কার্যনিতি যাবৎ প্রযচ্ছতি। এতৎ। সৈব  
যাচিতা। সকটমঃ প্রার্থিত। সতী শাক্তিম্। ঐশ্বর্য্যং প্রযচ্ছতি ( ইতি বা। শাস্ত্রোক্তং ; যদ্বা তুষ্ণা। ভক্তা। পরিভোষিত। সা। যাচিতা। যপানধঃ। প্রার্থিত। সত্য। দশাযোগঃ  
বিজ্ঞানম্। শাক্তিঃ প্রযচ্ছতি ; এতেন ভোগযোগ্যপ্রদ। সা। শৰ্মিক।। দেবানামুপায়ং পরং। দদাতীত্যুক্তম্ । “শাস্ত্রোক্তং। ইত্যেচৎ” ভাস্কর্য্যং ॥ ৩৭ ॥ অষ্টাষ্টিক। ওপলয়। কার্যনিতি

সেবেত্যাং ব্যাপ্তমিতি । হে মন্ত্ৰজেশ্বর স্বরথ, মহাকালে প্রালয়সময়ে মহামারীস্বরূপয়া তয়া মহাকাল্যা এতৎ সকলং জগদ্ব্যাপ্তং মরণরূপেণ ব্যাপ্তত্বাৎ নাশিত্বমিহি, যাবৎ (কালয়তি ক্ষিপতি নাশয়তি জগদতি কালী, মহতী সৰ্বদংহত্ৰী চানৌ মা চেতি; কল প্রক্ষেপে ধাতুঃ) । ব্রহ্মাণ্ডবিভক্ত্যনেন প্রাকৃতপ্রলয় উক্তঃ, ন তু দৈর্ঘ্যনিবৎ সৈবেতি । সৈব মহামার্যেবে কালে দ্বিপরাধিবসানে মহামারী মহান্তঃ ব্রহ্মাণ্মপি আরবর্ততি (ণট, ছান্দসতুলুক দীর্ঘশ্চ) ব্রহ্মণোহপি মরণতত্ত্বঃ সৈবেত্যাং (যদ্বা মহাকালে দ্বিপরাধিবসানে অতএব সময়মহত্ত্বং মহচ্ছন্দপ্রয়োগঃ, মহাকাল্যা সৰ্বদংহত্ৰীককালরূপয়া তয়া এতৎ সকলং সমগ্রং ব্রহ্মাণ্ডং ব্যাপ্তং, সৈবেত্যাং)

মহাকালে মহামারী-স্বরূপয়া ॥৩৮॥ সৈব কালে মহামারী সৈব সৃষ্টিভবত্যজ । স্থিতিং কেরোতি ভূতানাং সৈব কালে সনাতনী ॥৩৯॥ ভবকালে নৃণাং সৈব লক্ষ্মীস্ব দ্বিপ্রদা গৃহে । সৈবাতাবে তথালক্ষ্মী-বিনাশায়োপজায়তে ॥৪০॥ স্তুতা সম্-

জ্ঞানচক্ষুনা অতীতপ্রলয়ানামন্তুভবাদভূতপ্রহায়ঃ আপংসয়াং ভবিষ্যতি চ; এতেন ব্রহ্মাণ্ডান্তর্গতসকলনাশাং ব্রহ্মণোহপি স্তুত্যাং নাশহেতুঃ তস্য তদন্তর্গতত্বাৎ; কালে দৈর্ঘ্যনিবৎপ্রলয়সময়ে সৈব মহামারী ত্রিলোকসংহত্ৰী সৈবেতি) । (কালে ইত্যন্তুযজ্ঞনীয়ঃ) কালে সৃষ্ট্যবসরে অজ্ঞা জন্মরহিতাপি সৈব সৃষ্টিঃ সৃজ্যরূপা ভবতি প্রপঞ্চস্তয়া পরিণম্যতীত্যর্থঃ (সমবায়িত্বাৎ; সৃষ্টিরिति কক্ষণি ক্রিঃ) । কালে পালনকালে সৈব ভূতানাং ভৌতিকানাং স্থিতিং পালনং কেরোতি; যতঃ সনাতনৌ নৃত্যো (যদ্বা সনাতনস্য বিেষঃ শক্তিস্তদ্ব্যাপ্যরূপা “সেদং শক্তিঃ পরা বিেষোজ্জগৎসর্গাদিকারিণী”তি নারদীয়াং । উক্তি শ্লোকদ্বয়ার্থঃ) ॥ ৩৮-৩৯ ॥ ভবেতি । নৃণাং

ভবকালে উদ্ভবকালে সম্পদবৃদ্ধিসময়ে গৃহে বৃদ্ধিপ্রদ। লক্ষ্যঃ সৈব ( “উমতি কেচিদাভুস্তাং শক্তিলক্ষ্মীতি চাপরে” ইতি নারদীয়াং ) । সৈব অভ্যাসে  
বিপৎকালে বিনাশায় বিনাশার্থং গৃহে অলক্ষ্মীৰূপ। জায়তে ( “ভাবান্ভাবরূপা সা” ইত্যুক্তঃ ; অলক্ষ্মীভিত্ত্বতানং স্বয়ম্পরিপাকানাভাবেন নশনোংগাতিবিনাশ  
এবেতি ভাবঃ ) ॥ ৪০ ॥ স্তুতেতি । সা স্তুত্বা, তথা পুষ্পধূপগন্ধাদিভিঃ সম্পূজিতা যতী বিত্তঃ ধনঃ দদাতি, পূজান্, চকারাং কলত্রাদিংশ্চ, যস্যৈব নন্দ্যৈঃ স্তুত্বা  
শ্রদ্ধাভক্তিযুতাং নিষ্কামলক্ষণং মতিঞ্চ দদাতি ॥ ৪১ ॥

পূজিতা পুষ্প-ধূপগন্ধাদিভিস্তুত। দদাতি বিত্তং পুত্রাংশ্চ মতিং পশ্যে তথা স্তুতাম্ ॥ ৪১ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সার্বগর্বে  
মন্ত্রস্তরে দেবীমাহাত্ম্যে শুভ্রনিশুভ্রবধঃ সমাপ্তঃ ॥ ১২ ॥ ১২ ॥ ১২ ॥

স্বাধিরবচি ॥ ১ ॥ এতত্তে কণিতং ভূপ দেবীমাহাত্ম্য-মুত্তমম্ । এবম্প্রভাব। সা দেবী যয়েদং বার্যতে জগৎ ॥ ১ ॥

সকলমৈব মাহাত্ম্যামুপসংহরতি । পাবিক্রবাচ ॥ ১ ॥ এতদ্বিহিত । হে ভূপ, এতৎ উত্তমং সকলপুরুষাগমাদিকং দেবীমাহাত্ম্যং তে ভুক্তং কথিতম্ । সা দেবী এতৎ প্রভাব।  
এবমুত্তমঃ প্রভাবো যত্নাঃ । নৈতদত্যাশ্চিহ্ন্যমিত্যাদি—যা দেবী। উদং হপং ব্রহ্মাণ্ডং বার্যতে (সকলজগদাদ্যনিত্যমিস্তমাঃ কিস্যাময়-মস্তববিনাশলক্ষণং লক্ষ্যং মার্গঃ)  
॥ ২ ॥ ন কেবলমেতাবমাত্মং, কিন্তু সা বহুজ্ঞানপ্রদা চেত্বাতি বিদোহি । অপরতো বিদ্যা। তত্ত্বজ্ঞানলক্ষণ। চ যিমতে উৎপাদয়ে,





স্বাভিমান্য্য এবশব্দঃ; তস্মা বিভ্রাময়ত্বাৎ, “বিদ্যাময়ো যঃ স তু নিতামুক্তঃ” ইত্যুক্ত্বাৎ; ভোগ ঐহিকরাজ্যাদিস্বখং, স্বর্গ আনুগমিক ইন্দ্রলোকাদিঃ, অপবর্গে। মোক্ষং দেহদ্বয়ভঙ্গঃ ॥ ৫ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ক্রৌষ্টিকিমিতি শেষঃ ॥ ৬ ॥ তেষাং সংবাদমুপসংহরন্ রাজৈবৈশ্ব্যোবোরনন্তরকর্ত্ত্বাৎ কথয়তি ইত্যুতি । সমুপগম্য নরানপিপঃ তস্মা মেধমঃ ইতি পূর্ব্বোক্তং বচঃ শ্রদ্ধা তন্ম স্বাধিৎ প্রাণিপত্য নমস্কৃত্য সজাতংক্ষণ এব ত্তপসে তপঃ কৰ্ত্তুং জগাম । স পূর্ব্বোক্তো বৈগশ্চ প্রাণিপদ্য জগামেতি (দ্বয়োবস্বয়ঃ) । তং কৌদৃশম্? মহাভাগং নিরতিশযতপঃপ্রভাবযুক্তং; সংশিতবত্তং কৃততীব্রব্রতম্ (অগ্নৈর্দৃশয়িত্বাৎ তীব্রত্বঃ; শংসিত্বং শীতঃ ব্রতঃ)

উবাচ ॥ ৬ ॥ ইতি তস্য বচঃ শ্রুত্ব। সুরথঃ স নরাধিপঃ ।  
 অর্ণিপত্য মহাভাগে ত্বাসিং শংসিতবত্তম্ ॥ ৭ ॥ ঈর্ষিরোগোহি গিমা।

যেন রাজ্যাপহরণে চ। জগন্ম সগ্ৰস্তুপ্ৰসে ন চ বৈকো। মহাহুনে ॥১॥ সন্দর্ভনার্থ-গম্ভয়া। নদীপ্ৰলিনমর্গমৃচ্চ। ম চ

যস্তুতি বা)। কৌদৃশঃ স চ স চ ? অতিমমত্বেন প্রগাঢ়মণ্ডন রাজাপহরণে চ নিবিবৰ্ধঃ কৃত্তান্তুভাপিঃ ( যদ্ভা রাধ্যাপহরণেন কেতুন। রাজ্যস্য শংকণাদীনাং )  
পুনরপহরণায় ইত্যর্থঃ ইতি রাজ্ঞা অনঘঃ; বৈষ্ণাঃ কৌদুক ? নির্দিষ্টো বিবর্ত্তঃ বিষয়স্তপরাঙ্গা, থঃ । যদ্ভা । অতিমমত্বেন গাঢ়মণ্ডন। রা। মাম। মণেন  
শত্রুকর্ত্তুরাজ্যাগ্রহণেন চ নির্বিঞ্চঃ কৃতনির্কেদ ইত্য ভয়োবেব বিশেষণং ), হে মহারাগনে জাহ্নবে ॥ ৭ । ৮ ॥ সমল্লিতোক্তি । গ বাজ। বৈষ্ণাচ্চ নন্দীপূর্ণিনামন্তঃ-? নন্দীভট্টে  
একাগ্রচিত্তঃ স্থিতঃ সন্ তপঃ তোপে কৃত্তবান্ । কিং ক্ষন্ ? পব্রং সকন্ত উৎকর্ষণং দেবীপুঙ্কং ঋগেণোল্কমস্থাবিশেষসং জপব ( পব্রং ক্রেবল্লিগিতি বা, উপ। জপা।

ସ୍ତ୍ରୀନିରାସାୟେଦମ୍ । କିମଥମ୍ ? ଅସ୍ତ୍ରାୟାଃ ଦେବ୍ୟାଃ ସମ୍ବର୍ଣ୍ଣନାର୍ଥମ୍ ॥ ୧ ॥ ପୃଷ୍ଠାଦିପ୍ରକାରମାହ ତାବିତି । ତୌ ରାଜବୈଶ୍ଣୋ ତସିନ୍ ପୁଲିନେ ନଦୀତଟେ ଦେବ୍ୟାଃ ମହିମୟୀଃ । ଦୃଶ୍ୟାଃ ମୂର୍ତ୍ତିଃ ପ୍ରତିମାଃ କୃତ୍ୱା ତସ୍ତା ଦେବ୍ୟା ଅର୍ହଣାଂ ପୂଜାଂ ଚକ୍ରତୁଃ । କୈଃ ? ପୁଷ୍ପଧୂପାଗ୍ନିତର୍ପଣଃ ( ପୁଷ୍ପଧୂପୋ ଅଗ୍ନିହୋତ୍ରଃ ) ; ଯଦା ଅଗ୍ନିପାଦେନ ଆଗ୍ନିସାୟାଃ ହୋମ ଉପନକ୍ଷଣୀୟଃ, ତର୍ପଣଃ କର୍ପୁରାଦିଯୁକ୍ତଜ୍ୱଳେଷୁତର୍ପଣମ୍ ) ॥ ୧୦ ॥ ନିରାହାହ ନିରାହାରାବିତି । କଠିନିରାହାରୋ, କଦାଚିଂ ଯତାହାରୋ ଫଳମୁଲୀଆହାରୋ ( ଇତି ରସନାଜୟଃ ) । ତନ୍ମନକ୍ଷୋ ତସ୍ମାନ୍ନେବ ଯନୋ ଘରୋଃ ( ଇତି ଯନୋନିଗ୍ରହଃ ) । ସମାହିତୌ ଜିତାବିଳିଖେଦିନ୍ଦ୍ରିୟୋ ( ଯନୋରସନୟୋହୃଦୟମାଂ ପୃଥକ୍ପଞ୍ଚାସଃ ; ତତ୍ତୁଳ୍ଲଂ

ବୈଷ୍ଣ୍ୟସ୍ତପାସ୍ତେପେ ଦେବୀସୂକ୍ତଂ ପରଂ ଜପମ୍ ॥ ୧ ॥ ତୌ ତସିନ୍ ପୁଲିନେ ଦେବ୍ୟାଃ କୃତ୍ୱା ମୂର୍ତ୍ତିଂ ମହିମୟୀମ୍ । ଅର୍ହଣାଂ ପୂଜାଂ ଚକ୍ରତୁଃ । ପୁଷ୍ପଧୂପାଗ୍ନିତର୍ପଣଃ ॥ ୧୦ ॥ ନିରାହାରୋ ଯତାହାରୋ ତନ୍ମନକ୍ଷୋ ସମାହିତୌ । ଦଦତୁଷ୍ତୋ ବାଲିକ୍ଷେବ ନିଜମାତ୍ରାୟୁଶ୍ଚକ୍ରିତମ୍ ॥ ୧୧ ॥

“ତାବଜ୍ଜିତେନ୍ଦ୍ରିୟୋ ନ ଶ୍ଚାନ୍ଧିଜିତାତ୍ତେନ୍ଦ୍ରିୟଃ ପୁରୀମ୍ । ନ ଜୟେଦ୍ଦମନାଂ ବାବଞ୍ଜିତଂ ସର୍ବଂ ଜିତେ ରମେ” ଇତି—ରମେ ରମନେନ୍ଦ୍ରିୟେ ; “ଯନୋବଶେହତ୍ତେ ହୃତବନ୍ ଯୁ ଦେବାଃ ଯନଃ ନାଗ୍ରାସ୍ତ ବଶଂ ସମେତୀ”ତି, “ଅସଂଶୟଂ ଯନଃ କୃଷ୍ଣଃ ପ୍ରମାଥି ବଳବଦ୍ଭୃଶମ୍ । ତସ୍ତାହିଂ ନିଗ୍ରହଂ ଯଜ୍ଞେ ବାୟୋରିବ ସ୍ୱହୃକ୍ତଂ”ୟିତୁଃକଥାଂ ) । ଉକ୍ତିକ୍ତିତଂ ପ୍ରୋକ୍ତିକ୍ତିତଂ ନିଜ-ଗାତ୍ରାୟୁକ୍ ଅଙ୍ଗାତ୍ରାୟୁଧିରଂ ବାଲିକ୍ଷେ ଦଦତୁଃ ଦତ୍ତବତ୍ତୌ ( ବ୍ରାହ୍ମଣସ୍ୟାତ୍ରିବିକ୍ରାନ୍ତାଂ ବିହିତସ୍ତ୍ରାଂ ) ॥ ୧୧ ॥ ଏବାସିତି । ଏସ୍ୟୁକ୍ତପ୍ରକାରେଣ ସମାଧାରାଧ୍ୟତୋଃ ସମ୍ୟାପାରାଧନାଂ କୁର୍ବତୋ-ସ୍ତସ୍ୟୋଃ ସମ୍ବନ୍ଧେ ତ୍ରିଭିକ୍ଷୁକ୍ଷେଃ ପରିତୁଷ୍ଟା । ସତୀ ସା ପ୍ରସିଦ୍ଧା ଚନ୍ଦ୍ରିକା ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷଂ ସାକ୍ଷାଦ୍ ଯଥା ଭବତି ତଥା ପ୍ରାହ ଉକ୍ତବତୀ । କୌଦୂଶୀ ? ଜପକ୍ଷାତ୍ରୀ ଜପଜ୍ଞନୀ, ଜଗଦାଧାରରାପେତି

বা, জগৎকর্ত্রীতি বা (সমস্তাভিলষিতসম্পাদকঅনুচিনায় বিশেষণম্) । কিম্বৃতয়োঃ? যতাত্মনোঃ অবহিতমনসোঃ ॥ ১২ ॥ দেবাবাচ ॥ ১৩ ॥ কিনাক্তোঃ

দর্শয়তি যদিতি । হে ভূপ স্বরথ, ত্বয়া যং প্রাথ্যতে, হে কুলনন্দন বৈশ্য, ত্বয়া চ যং প্রাথ্যতে, তং সৰ্বং নতঃ মন্য সকাশাৎ প্রাপ্যতঃ গৃহ্যতামিত্যর্থঃ (অত্র ভূপেতি স্বরথসম্বোধনেন রাজ্যং ত্যক্তা তুগপিতস্য তব পৃথিবীমাত্রদানমায়ং, অতোহদিকনপি দাক্ষ্যনি; কুলনন্দনোহি মধোপনং পদকৈঃ পৃথাদিভিঃ বিনিযুক্ততস্তাংস্তবাবশগানপি বশগান্ বিধাক্ষ্যামিতি কটাক্ষিতম্) । পৰিতুগ্না অহং তং দদামি (ইত্যভ্যুপগমঃ) ॥ ১৪ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ১৫ ॥ ততঃ হি ৩ । ততো দৈবৌ-

এবং সমারাময়তো-দ্বিভিবৈর্ঘতায়নোঃ । পরিতুগ্না জগদ্ধাত্রী প্রত্যক্ষং গ্রাহ চণ্ডিকা ॥ ১২ ॥ দেবাবাচ ॥ ১৩ ॥ যং প্রার্থ্যতে ত্বয়া ভূপ ত্বয়া চ কুলনন্দন । নতস্তং প্রাপ্যতঃ সৰ্বং পরিতুগ্না দদামি তং ॥ ১৪ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ১৫ ॥ ততো বত্রে নৃপো রাজ্য-নবিলংশ্চত্বজমনি । অত্র চৈব নিজং রাজ্যং হতশক্রবলং বলাৎ ॥ ১৬ ॥ মোহপি বৈশ্যাক্তো জ্ঞানং বত্রে

বচনানন্তরং নৃপঃ স্বরথোহনুজমনি ভাবিজ্ঞানান্তরে অবিভ্রংশি বিদ্রংশরহিতং নিবৰ্ণকমিতি যাবৎ রাজ্যং বত্রে, অত্র যস্মিন্ বর্তমানজমনি চ নিজং রাজ্যং বত্রে । কৌদৃশম্? বলাৎ সানর্গ্যাৎ সানর্গ্যাৎ শত্রু হতং শত্রুবলং শত্রুশত্রুঃ যত্র তং (ক্ষত্রিয়ানাং স্বসানর্গ্যং বিনা বাহ্যপ্রাপ্তেয়বশকরহঃ) ॥ ১৬ ॥ মোহপিতি । স বৈশ্যোহপি ততোহনন্তরং জ্ঞানম্ আশ্রয়ক্ষাৎ কাবচাদনং বত্রে । কৌদৃশম্? মনোহিত পুত্রদারাদৌ, অহমিতি দেহে, যঃ সঞ্জ আসক্তি-

25

বা অশকঃ, স্থানিতমুখ ভবিষ্যতি ন ভবিষ্যতীত্যর্থঃ ॥ ১৯২০ ॥ অগ্নজন্মনীতি যৎ প্রার্থিতং তদদমায়ীত্যাহ মুতশ্চেতি । যুতঃ সন্ হুং পুনরপি বিবশ্বতো দেবাৎ সূর্যাৎ জন্ম শংপ্রাপ্য, নাম প্রসিক্তৌ, ভবান ভূবি সাবণিকৌ, মনুভবিষ্যতি সাবণিকনামা মনুস্তরাধিপতিভবিষ্যতীত্যর্থঃ ॥ ২১২২ ॥ বৈশ্বং প্রভ্যাহ বৈশ্যোতি । হে বৈশ্যবর্য বৈশ্ব্যশ্চৈষ্ঠ, স্বয় যো বরোহম্বজোহভিবাঙ্জিতঃ ইচ্ছাবিষয়ীকৃতঃ তত্ত্বজ্ঞানপ্রাপ্তিরূপঃ, তং বরং প্রযচ্ছামি দদামি । তমেবাৎ--সংসিদ্ধৌ

সম্যক্‌সিদ্ধৈর্নির্ব্বাণমোক্ষার্থং তব জ্ঞানং বিবেকে। ভবিষ্যতি ॥ ২৩২৪ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ২৫ ॥ উতীতি। দেবী তয়োৱিতি যথাভিলাষিতম্ অর্চি-  
লাষাল্লকুপং বরং দত্ত্বা তাভ্যাম্ অতিকুতুভা অতিত আভিনুখ্যেন বা স্তুতা সতী সদ্যস্তংগমেব অন্তহিতা বভূব ॥ ২৩২৭ ॥ আখ্যানমূপসংহরতি এবমিতি ১।

জ্ঞানং ভবিষ্যতি ॥ ২৪ ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ ॥ ২৫ ॥ ইতি দত্ত্বা তয়োর্দেবী যথাভিলষিতং বরম্ ॥ ২৬ ॥ বভূবান্তহিতা মগ্নে। ভক্ত্যা

তাভ্যা-মভিকুতুভা ॥ ২৭ ॥ এবং দেব্যা বরং লব্ধ্বা। সুরথঃ ক্ষত্রিয়র্ষভঃ ॥ ২৮ ॥ সূর্য্যাজ্ঞম্ সমাসাদ্য সাবর্ণিভবিত। মনুঃ ॥ ২৯ ॥

(এবং দেব্যা বরং লব্ধ্বা। সুরথঃ ক্ষত্রিয়র্ষভঃ। সূর্য্যাজ্ঞম্ সমাসাদ্য সাবর্ণিভবিত। মনুঃ) ॥ ২৮ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণির্ভেদঃ

অনন্তরে দেবীমাহাত্ম্যং সমাপ্তম্ ॥ \* ॥ ১৩ অঃ ॥ \* ॥ ওঁ তৎসং ॥ \*

ক্ষত্রিয়র্ষভঃ ক্ষত্রিয়শ্রেষ্ঠঃ সুরথঃ দেব্যাঃ শকাশাং এবম্ উক্তপ্রকারেণ বরং লব্ধ্বা। প্রাপ্য, মৃগাঃ স্তম্ভ সমাসাদ্য লব্ধ্বা। সাবর্ণিঃ সাবর্ণিনামাঃ মনুর্ভবিত।  
ভবিষ্যতি (মুই) ॥ ২৮।২৯ ॥ ইতি গয়ষড়্বন্দ্যায়টীকানুসৃত-শ্রীগোপালচক্রবর্ত্তিবিবচিতায়াং চণ্ডীটীকায়াম্ তদ্বৎপ্রকাশিকায়াম্ দেবীমাংসগ্রাং সম্পূর্ণম্ ১

ক্ষন্তুমহঁসি তং তচ্ছতি শেষঃ ॥ ঈরিতম্ উচ্চারিতম্ । প্রসাদতঃ তবেতি শেষঃ ॥ বিন্দুঃ অলুসারঃ, বিন্দুদ্রিত্যঃ বিধগঃ, পদধ্বজঃ সন্ধিঃ সমাসশ্চ ।

ওঁ যদক্ষরং পরিভক্টং মাত্রাহীনঞ্চ যদ্রবেৎ । ক্ষন্তুমহঁসি মে দেবি কস্য ন স্থানিতং ননঃ ॥ যদত্র পাঠে জগদধিকৈ-  
ময়া, বিসর্গবিন্দুক্ষরহীন-মীরিতম্ । তদন্তু সম্পূর্ণতয়াং প্রসাদতঃ, সঙ্কল্পসিদ্ধিশ্চ মদৈব জায়তান্ ॥ যদাত্রা-বিন্দু-  
বিন্দুদ্বিতয়-পদ-পদদ্বন্দ্ব-বর্ণাদিহীনং, ভক্ত্যভক্ত্যাত্মপূর্বকং প্রসভকৃতিবশাদ্ ব্যক্তমব্যক্ত-মশ্ব । নোহাদগ্রনিনতো বা পঠিত-  
মপঠিতং সাম্প্রাতং তে স্তবেহ্মিঃ, -স্তং সর্বং সাক্ষ্যাস্তাং ভগবতি বরদে ত্বংপ্রসাদাৎ প্রসীদ ॥ প্রসীদ ভগবত্যম্ প্রসীদ  
তত্ত্ববৎসলে । প্রসাদং কুরু মে দেবি দুর্গে দেবি নমোহস্তু তে ॥ যস্যার্থে পঠিতং স্তোত্রং ভবেদং শঙ্করপ্রিয়ায় । তস্য  
দেহস্য গেহস্য শান্তিভবতু সর্বদা ॥ \* ॥ \* ॥

অনুপূর্বং পূর্বাধি । ভক্ত্যা অভক্ত্যা বা, অথবা ভক্ত্যা ভক্তিভঞ্জন অভক্ত্যা ইত্যর্থঃ । প্রসভকৃতিঃ হৃষ্টকরিতা, তদ্বশাৎ । ব্যক্তং অপষ্টমুচ্চারিতম্ ।

## টিপ্পনী—টীকামধ্যস্থ-(ক)-ইত্যাদি-চিহ্নানুসারেণ লিখ্যতে ।

- (ক) পুষ্পিকা—অধ্যায়সমাপ্তিসূচকং বাক্যম্ । যথা—ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যো যদুর্কটভবদঃ, ইত্যাদি ।
- (খ) অভিলোপে—সঙ্কল্পবাক্যে ।
- (গ) প্রথমস্কন্ধ-শেষযোঃ—ভাগবতীয়-দ্বাদশস্কন্ধস্তা যদ্বাখ্যায়মারভ্য গ্রন্থসমাপ্তিপৰ্য্যন্তঃ শেষঃ ।
- (ঘ) অনুস্মরণত্যাংপর্য্যায়—বৈদিকপদানুধানপরায়ণতয়া হেতুনা । মুনয়ঃ প্রায়ো বৈদিকপদানুসারেণ প্রয়োগং কুর্কন্তু যতঃ, অতো হেতোঃ ।
- (ঙ) ভাবিনি—ভবিষ্যৎকালে ।
- (চ) সা বা এতস্ত—স। বৈ এতস্ত ইতি ছেদঃ ।
- (ছ) “ন কর্ণধারয়ামস্বযীয়ো বহুব্রীহিচৈদর্থপ্রতিপত্তিকরঃ ।” ইতি ত্রায়াং কর্ণধারয়াং অন্ত্যর্থপ্রত্যয়ো ন ভবতি । কিন্তু “ভূমিনিদা প্রশংসাঃ নিকোদোদে-  
ইতিশায়নে । সমক্ষেহস্তিবিবক্ষায়াং ভবন্তি মৃতুনাদয়ঃ ॥” ইতি বচনাং বাহুল্যাदिवিবক্ষায়াং ভবত্যেব । ভূমি—বাহুল্যম্ ।
- (জ) “নমাসি ভবোশ্চরণাম্মুজঙ্ঘয়ম্” ইতি কাদম্বরীমঙ্কলাচরণম্ । ভৰ্পনম্ বাণভট্টস্তা পুরঃ ।
- (ঝ) “লে লশ্চ” —লে পরে পদানুস্ত নকারস্ত নো ভবতি । নকারস্ত সানুনাগিকত্বাৎ তৎস্থনিজাত্তে । লকারঃ সানুনাগিকঃ ।

- (এ) “কচিঙ্গিঙ্গবিভক্তোঃ”—কচিৎ লিঙ্গবিভক্তোযঃ পরঃ, তদন্তুসারেণ ক্রিয়াদিকং ভবতি। লিঙ্গবিভক্তোরিতি বচনগ্ৰাপুপসংগমঃ।
- (ট) ভমেব বিদিত্বাতি যতুম্যেতি—যতুম্ অতোতি ইত্যম্বয়ঃ। “ছন্দসি পরেহপি ॥ ব্যবহিতাশ্চ ॥” ইতি বৈদিকশূদ্রস্বয়ং বেদে উপসর্গাঃ বাঃ ৩ঃ পরে ব্যবধানে চ প্রযুক্তান্তে।
- (ঠ) যতো বা ইমানি—যতো বৈ ইমানি ইতি ছেদঃ।
- (ড) “ঈক্ষতের্নাশদম্”—ন শব্দাতে উচ্যতে ইতি অশদম্। অশদম্, অব্যক্তং, প্রধানং, প্রকৃতিরিতোক্তে একার্থকঃ পদাঃ। প্রকৃতির্ন জগৎকারণম্। কুতঃ? ঈক্ষতে: “স ঈক্ষত লোকান্ হু হুজা ইতি” প্রত্যৌ ঈক্ষধাতো: প্রয়োগাৎ। জড়া হি প্রকৃতি: পরমেশ্বরশ্চ ঈক্ষণং বিনা কিমপি কর্তুং না শক্নোতি, অতো ন তস্তা: জগৎকারণত্বম্; কিন্তু চৈতন্যধরপশু পরমেশ্বরশ্চৈব।
- (ঢ) অত্রৈব—মার্কণ্ডেয়পুরাণে এব। এবং পরত্রাপি।
- (ত) “বিজ্ঞান্নি ভিদাবাধঃ”—আত্মনি ভিদাবাধঃ ভেদবুদ্ধিরভাবঃ, এক এব আত্মা সর্বভূতেষু বর্ততে ইত্যেবং বোধো বিজ্ঞা।
- (থ) “আত্মা বা অরে”—অরে ইতি সম্বোধনম্। আত্মা বৈ আত্মা এব দ্রষ্টব্যঃ, শ্রোতব্যঃ, নিদিধানিতব্যঃ অল্পক্ষণং চিত্তয়িতব্যঃ।
- (দ) স্বরা অন্নমাসিকা নিরন্ননাসিকশ্চ ভবন্তি। ক্রী হ্রী অনয়ো: ইকারশ্চ সাল্লনাসিকশ্চ ভবন্তি। ক্রী হ্রী ইতি। বুদ্ধিবর্গভবম্ ইকার ইত্যর্থঃ। তস্ত সাল্ল-নাসিকশ্চৈ ই ইতি।



(খ)

হ্রীঃ লজ্জা চেতুর্ভৌ শকৌ একার্থকাপি অত্র তয়োরেবম্ অর্থভেদো জ্ঞেয়ঃ ।

(ন)

“শেযো বুদ্ধাৎ”——যদত্র শাস্ত্রে সৰ্বথা ন সম্ভবতি স শেষঃ । বুদ্ধান্ অভিজ্ঞতরান্ উপদীযা ( শিষ্টপ্রয়োগানুসারেণ ইত্যর্থঃ ) যথাসম্ভবং প্রকৃতিপ্রাতঃ ।

(প)

“তে-মে-শকৌ নিপাতেযু”——হুয়া ময়া ইত্যস্মিন্নর্থ তে মে শকৌ নিপাতেযু ( অব্যয়েসু ) ক্রষ্টবো । ইতি বামনস্মদ্রবৃত্তিঃ ।

(ফ)

ভবতার্থশ্চ——করোতার্থশ্চ ইত্যর্থঃ ।

(ব)

“ভবো ধ্রুবশ্চ সোমশ্চ ধবৈশ্চবানিহো নলঃ । প্রত্নায়শ্চ প্রভাসশ্চ বসবোহষ্টৌ প্রকীৰ্ত্তিতাঃ ॥”

(ভ)

অফমালী——অকারাদিক্কারান্নাঃ একপঞ্চাশৎ মাতৃকাঃ বর্ণমালোক্ত্যুচ্যতে । ক্রপমাল্যা এঈকক। গুটিক। বর্ণক্রেপতি

(ম)

অন্তেহপি ধাতবঃ কচিৎ——চুরাদয়ো ভবহীতাতঃ ।

(য)

লুগ্‌যকারশ্চ, লুগ্‌কারশ্চ, লুগ্‌সর্গশ্চ চ সন্ধিনিষেদো বিধিতঃ ।

(র)

“বিশেষযোগাপি সামান্যং বাধাতে ন কচিৎ কৃতি”——কং প্রকরণে কচিৎ বিশেষসূত্রেণ সামান্যসূত্রস্য বাধা ন ভবতি ।

(ল)

যুক্তধাতোর্বোপাদিকতিঙ প্রত্যয়েন মুহুরিত পুংলিঙ্গক্‌ ইত্যভিপ্রায়েঃ । কীকারিত এবং লিপনং চিত্ত্যম্ ।

(ব)

(শ)

এষ মহিষশ্চ, এতৎ বলঞ্চ ইত্যার্থে এষ চ এতচ্ছক্তি স্ত্রীবাঙ্গীষমোরেক্ষণে স্ত্রীবাঃ নিম্যাতে, স চ একবচনং না ভবাৎ স্ত্রীত্ব এতৎ ।

বিকল্পঃ খ্যাতিবাদিনানিতি । খ্যাতিবাদিনাং বিজ্ঞান-শূণ্ড-মীমাংসা-তর্কদ্বৈতবাদিনাম্ এবমিদম্ এদং বোক্ত যো ভূগবেৎ বিকল্পে সৌভূম্যিতি ইত্যং ।

প্রতি স্ত্রীভগবদ্বাক্যম্ । তত্র খ্যাতিঃ পক্ষবিধা যথা—আত্মখ্যাতি-রসংখ্যাতিরখ্যাতিঃ খ্যাতিপূর্ণা । ইধাহিনিবচনখ্যাতি-রতেত্যং খ্যাতিপূর্ণকং ।

বিজ্ঞান-শূণ্ড-মীমাংসা-তর্কদ্বৈতবিদাং মতম্ ॥ তত্র অন্তরুত্তিরূপবিজ্ঞানপরম্পরৈব তত্ত্বদ্বয়দ্ব্যাক্ষরতয়া বাহভাসতে সাদ্ব্যাক্ষরবয়বদ্বিত্তি বিজ্ঞানবাদিনঃ ।

তে চ স্ত্রীভগবজ্ঞানাদৌ আত্মখ্যাতিং মতান্তে । তস্মাৎ লক্ষণং—রজতাদিবিদ্যাক্ষরে বিজ্ঞানে নভাপ স্বপ্নবদ্রজতাপাদকদৈবাশেষ্যগ্রহণনিতি । ১ ।

শূন্তাদেব সর্বম্ অবিজয়া জায়তে ইতি শূণ্ডবাদিনঃ । তে চ স্ত্রীভগবজ্ঞানাদৌ অসংখ্যাতিং মতান্তে । তস্মাৎ লক্ষণম্—অলোকপদপত্তয়। সঙ্গ-  
মানদ্বয়মিতি । ২ । মীমাংসকা ই স্ত্রীভগবজ্ঞানাদিস্থলে অগ্যাতিং মতান্তে । তল্লক্ষণং যথা—পরম্পরসংক্ষেপেণ খ্যাবল্যাক্ষরং প্রত্যক্ষাত্মকঞ্চ ২২  
জ্ঞানদ্বয়ং তদখ্যাতিরিতি । ইদং রজতং, তত্র ইদন্তাপরামর্শেন প্রত্যক্ষতঃ স্ত্রীভগবজ্ঞানাদৌ অগ্যাতিং মতান্তে । তথাচ জ্ঞানদ্ব-  
মপি সত্যমেব, অভেদেন গ্রহণন্ত মানসদোষাদিত্যর্থঃ । ৩ । ত্যক্তিকা ই স্ত্রীভগবজ্ঞানাদৌ অগ্যাতিং মতান্তে । তথাচ জ্ঞানদ্ব-  
দ্বয়ং পূর্ণমেব জায়তে । অতদ্বিতী তৎপ্রকারেকাহুভবঃ অগ্যাতিখ্যাতিঃ । ২ । সর্বমেব দ্বৈতম্ অনির্দেচনীয়মিতি দ্বৈতভবাদিনঃ । ৩ চ স্ত্রী-  
দ্বৈতান্তে স্ত্রীভগবজ্ঞানাদৌ অনির্দেচনখ্যাতিং মতান্তে । তস্মাৎ লক্ষণং—সদসংস্কৃতম্ সত্যি নরসদাত্মকং স্ত্রীমম্ অনির্দেচনখ্যাতিরিত্যর্থঃ । ১ ।

ভগবন্মতে তু তে চ বিকল্পা যম শক্তিযয়া এবোতি ন পরম্পরম্ অগ্যাপি ব্যুচ্ছিজ্ঞে ।

- ( য ) প্রায়কালে ছাদশাচিত্রা উদিতাঃ অকশতং যাবৎ জগৎ দহন্তি । ততঃ সংবর্ত্তীদয়ে মেঘাঃ প্রাক্কুপ্ত তান্ অবিভ্যন্তি আচ্ছাদ্য দহন্তি ।
- ( স ) কাল্যাঃ সিংহবাণনাভাবাৎ, রণস্থলে অগ্নীদগ্ধবাহনোরোহণস্ত অণৌচিত্যাৎ, “তেনানিশিচ্ছিন্ম” ইত্যস্ত অসঙ্গত্বাচ্ছ মত্ৰাসিচ্ছিন্ম উপাধি ইত্যেতৎ, ন সমীচীনঃ ।
- ( হ ) শৈবকী সিচ্ছিঃ—“শেষো বৃদ্ধা”দিতি যুত্রেণ সিচ্ছিঃ ( ন ) ।
- ( ক্ষ ) “অজাদিহনোহোহীর্ঘাৎ” —অজাদিহনোহোহীর্ঘাৎ বর্ণঃ দ্বির্বা ভবতি, ন তু দ্বীর্ঘাৎ পরঃ । প্রাহসৎ-হরা ইতি স্থিতং ২৩ ইতি দ্বয়মেব বর্ণঃ, “অসং জাদিহনোহোহীর্ঘাৎ” ইত্যস্ত অসঙ্গত্বাচ্ছ মত্ৰাসিচ্ছিন্ম উপাধি ইত্যেতৎ, ন সমীচীনঃ ।
- ( অ ) তৎ —তানি চ তৎ চ ইতি বাক্যে “কীবাকীবয়োঃ ক্লাধঃ স চৈকবদা” ইত্যেনেন একেশমঃ পাক্ষিকরমেকবচনঞ্চ ( ন ) ।
- ( আ ) “সমস্তজ্ঞাসমন্তেন নিত্যোপেক্ষণ মঙ্গতিঃ” —নিত্যোপেক্ষণ অসমস্তপদেন গচ্চ সমস্তপদস্ত অর্থঃ শাস্ত ( পদ্যকহাং সমাদ ইত্যেতৎ ) ।
- ( ই ) “যদিহরে পশুং বপতি । যদিহং বীষাকানসা যৎ পুচ্ছীত” ইতি মৌখ্যাসংশ্লিষ্টভূত্যাং যোগে একদৈম্যব যদিবদ্য ( যদিবকচিন্য ) । নুৎ-পদ্যকচিন্য, যদিহং বীষাকানসা যৎ পুচ্ছীত ইত্যেতৎ, ন সমীচীনঃ ।
- ( ক ) বিকুরোঃ ৩২২ সঙ্গত্ৰ আধিনে শসি অধুকে পক্ষে অমুকতিধাবাত্তা মহানবমীর যাবৎ যদিবকশবৎ কালীনতুর্গমিচ্ছিন্ম উপাধি ইত্যেতৎ, ন সমীচীনঃ ।